प्रेम क्रान्ति

जॉयस मेयर

प्रेम क्रान्ति

प्रेम क्रान्ति

जॉयस मेयर

JOYCE MEYER
MINISTRIES

Nanakramguda, Hyderabad - 500 008

Unless otherwise indicated, Scriptures are taken from the Amplified® Bible.
Copyright © 1954, 1962, 1965, 1987 by the Lockman Foundation.
Used by permission.

Scriptures noted KJV are taken from the King James Version of the Bible.

Scriptures noted The Message are taken from The Message.
Copyright © 1993, 1994, 1995, 1996, 2000, 2001, 2002. Used by permission
of NavPress Publishing Group.

Scriptures noted NIV are taken from the HOLY BIBLE:
NEW INTERNATIONAL VERSION®. Copyright © 1973, 1978, 1984 by
International Bible Society. Used by permission of Zondervan
Publishing House. All rights reserved.

Scriptures noted NKJV are taken from the NEW KING JAMES VERSION.
Copyright © 1979, 1980, 1982, Thomas Nelson, Inc., Publishers.

Copyright © 2009 by Joyce Meyer Ministries - Asia

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or
transmitted in any form or by any means, or stored in a database or retrieval system,
without the prior written permission of Joyce Meyer Ministries - Asia.

Joyce Meyer Ministries - Asia
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008

Phone: +91-40-2300 6777
Website: www.jmmindia.org

The LOVE REVOLUTION - Hindi
First Print - September 2009

Printed in India at:
Caxton Offset Pvt. Ltd.
Hyderabad - 500 004

विषय सूची

	परिचय	vii
1.	संसार में गलत क्या है?	1
2.	समस्या की जड़	22
3.	कोई भी भलाई दुर्घटनावशः नहीं होता है	35
4.	परमेश्वर द्वारा बाधित	53
5.	प्रेम मार्ग पाता है	65
6.	बुराई को भलाई से जीतिए	77
7.	सताये हुओं के लिए न्याय	93
8.	प्रेम मिलनसार है एकान्तिक नहीं	119
9.	लोगों को मूल्यवान महसूस करायें	138
10.	दयालुता के उत्साहपूर्ण कार्य	159
11.	लोगों की जरूरतों को खोजिए और समाधान का भाग बनिए	171
12.	निःशर्त प्रेम	181
13.	प्रेम त्रुटियों का हिसाब नहीं रखता	190

14. प्रेम दिखाने के व्यवहारिक तरीके 199
15. क्या हमें जागृति चाहिए या क्रान्ति? 223

''प्रेम क्रान्ति'' के मेहमान लेखक

डारलेन ज्स्केख 13
मार्टिन स्मिथ 110
पास्टर पॉल स्कैनलॉन 130
जॉन सी. मैक्सवेल 149
पास्टर टॉमी बारनेट 214

परिचय

क्रान्ति / यह शब्द मानवीय शब्दकोश के किसी भी अन्य शब्द से बढ़कर आशा की चिनगारी निकालती, आवेग को प्रदीप्त करती, और वफादारी को प्रेरित करती है। समूचे इतिहास में, क्रान्ति की अवधारणा ने आग में घी का काम किया है और उदास हृदयों में साहस का संचार किया है। क्रान्तियों ने स्वयं से परे जाकर कारणों की खोज में अधिक यात्राएँ की हैं, और पूर्व में लक्ष्यहीन पुरूष और स्त्रियों को एक कारण दिया है जिसके लिये वे मरने को भी इच्छुक थे। वे महान नेताओं को जन्म दिये हैं और महान अनुयायिओं का पोषण किए हैं। इन क्रान्तियों ने अक्षरशः संसार को बदल दिया है।

क्रान्ति एक त्वरित विद्रोहपूर्ण, और यथास्थिति से सम्पूर्ण परिवर्तन है। क्रान्तियाँ प्रायः एक व्यक्ति या लोगों के एक बहुत छोटे से समूह के द्वारा प्रदीप्त की जाती हैं, जो उस प्रकार के जीने के अनिच्छुक होते हैं जैसा उन्होंने भूतकाल में जिया है। वे विश्वास करते हैं कि कुछ बदला जा सकता है या बदला जाना चाहिये और वे अपने विचारों को तब तक फैलाते रहते हैं, जब तक एक अच्छी पृष्ठभूमि तैयार न हो जाए जो अन्ततः परिस्थिति को बदल देती है। यह अक्सर विद्रोहपूर्ण रीति से होता है।

संसार ने भूतकाल में क्रान्तियों का अनुभव पाया है, जबकि नागरिकों का फायदा उठानेवाले सरकारों को क्रान्तियों ने उखाड़ फेंका है। यह अमेरिका की क्रान्ति में हुआ, फ्रान्स की क्रान्ति में हुआ, और रूस की क्रान्ति में भी हुआ (जिसे बोलसेविक क्रान्ति भी कहा जाता है), ऐसे कुछ एक और भी हैं। क्रान्तियाँ ऐसी भी हुई जिसमें पुरातन अप्राथमिक व्यवस्थाओं को या कार्य करने के तरीकों को बदल दिया गया और पुराने तरीके सोचने की जगह नये विचार आये, जैसा कि विज्ञान की क्रान्ति या उद्योगिक क्रान्ति में हुआ। थॉमस

जेफर्सन ने कहा, "प्रत्येक पीढ़ी को एक नये क्रान्ति की जरूरत होती है," और मैं विश्वास करती हूँ कि संसार के अगले क्रान्ति के लिये, यही सही समय है, जो सबसे महान क्रान्ति होगा। हमें उसी समान क्रान्ति की आवश्यकता नहीं है, जिसने संसार के इतिहास को हमारी सामान पीढ़ियों में दागदार बना दिया; हमें एक ऐसी क्रान्ति भी नहीं चाहिये जो राजनीति, अर्थ या तकनीक पर आधारित हो। हमें एक प्रेम क्रान्ति चाहिये।

हमें अपने जीवन में स्वार्थता, आत्मकेन्द्रता के प्रभुत्व को निकाल फेंकने की जरूरत है। हमारे संसार में तब तक कुछ नहीं बदलेगा जब तक हम में से प्रत्येक बदलने को इच्छुक न हों। अक्सर हम यह समझने से रूके बिना कि संसार की दशा हमारे प्रत्येक के जीने के तरीके और प्रतिदिन के चुनावों का परिणाम है। हम अक्सर संसार के बदलने की उम्मीद रखते हैं।

यदि पृथ्वी का हर व्यक्ति यह जानता कि प्रेम कैसे लिया और दिया जा सकता है, तब हमारा संसार निश्चित ही बहुत ही भिन्न होता। मैं सोचती हूँ कि हम सब जानते हैं कि संसार में कुछ न कुछ गलत है, जिसे ठीक किये जाने की जरूरत है, परन्तु ऐसा नहीं लगता कि कोई यह जानता हो कि क्या करना है या परिवर्तन लाने के लिये कहाँ से प्रारम्भ करना है। एक अनियन्त्रित संसार के प्रति हमारी प्रतिक्रिया शिकायत करना और यह सोचना है, कि *किसी न किसी को कुछ न कुछ करना चाहिये*। हम सोचते हैं और कहते हैं कि शायद परमेश्वर या सरकार या अधिकार में बैठे किसी और व्यक्ति को कुछ करने की जरूरत है। परन्तु सत्य यह है, कि हम में से प्रत्येक को कुछ करना है। हमें अब तक के जीवन से भिन्न दृष्टिकोण को अपनाकर जीना सीखने की आवश्यकता है। हमें सीखने, बदलने, और यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि हम समस्या के भाग हैं।

हम तब तक समस्या को हल नहीं कर सकते जब तक हम उसे समझते नहीं हैं, इसलिये हमारी पहली जरूरत समस्या के जड़ को ढूँढ़ना है। अधिक संख्यक लोग क्यों अप्रसन्न हैं? परिवारों में, पड़ोसियों में, शहरों में, देशों में इतनी अधिक हिंसा क्यों है? लोग इतने क्रोधित क्यों हैं? आप सोच रहे होंगे कि ये बातें पाप के कारण होती हैं। आप कहते होंगे, "लोग पापमय हैं। यही समस्या है।" सैद्धान्तिक रूप से मैं सहमत हूँ, परन्तु मैं इस पर व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाना चाहती हूँ जिन से प्रतिदिन हमारा सामना होता है। मैं दृढ़पूर्वक विश्वास करती हूँ कि इन सभी मुद्दों का और बहुत से अन्य

मुद्दों का जड़ स्वार्थता है। निश्चय ही, स्वार्थता, पाप का बाहरी कार्यरूप है। एक व्यक्ति का यह कहना है, "जो मुझे चाहिये वह मुझे चाहिये, और मैं उसे पाने के लिये जो कुछ करने की जरूरत है उसे करने जा रहा हूँ।" जब कभी एक व्यक्ति परमेश्वर के विरूद्ध और उसके रास्तों के विरूद्ध चलता है, तब पाप अस्तित्व में आता है।

हमें "पीछे" की ओर जाने की आदत है – जैसा हमें जीना चाहिये ठीक उसके विपरीत। हम स्वयं के लिये जीते हैं, फिर भी यह कभी रूकता हुआ नहीं दिखाई देता कि हमें कौन सी बात सन्तुष्ट करती हैं। हमें दूसरों के लिये जीना चाहिये और अद्भुत भेदों को सीखना चाहिये कि जो हम देते हैं वह बहुत बार कई गुणा होकर हमारे पास लौटता है। मैं एक प्रसिद्ध चिकित्सक के इस कथन को पसन्द करती हूँ, जिनका नाम लूका था, "अपने जीवन को दे दो; तुम अपने जीवन को वापस पाओगे, जितना दिया उतना ही नहीं – परन्तु उसमें बोनस और आशीषों के साथ पाओगे। देना, पाना नहीं, यही तरीका है। दयालुता को पैदा करता है।" (लूका 6:38 सन्देश)।

बहुत से समाज में, स्वामित्व पाना, सम्पत्ति रखना, और नियन्त्रित करना लोगों का पहला लक्ष्य बन गया है। हर कोई "नम्बर एक बनना चाहता है", जो स्वतः ही यह सूचित करता है कि बहुत से लोग निराश होंगे। चूँकि एक यक्ति ही एक समय और दिये हुए एक क्षेत्र में नम्बर एक बन सकता है। संसार में एक ही व्यक्ति दौड़ में नम्बर एक हो सकता है, कम्पनी का अध्यक्ष एक ही व्यक्ति हो सकता है, या पर्दे पर सुप्रसिद्ध अभिनेता या अभिनेत्री एक ही हो सकता है। उच्चकोटि का लेखक या संसार में सब से उत्तम चित्रकार केवल एक ही हो सकता है। जब मैं विश्वास करती हूँ कि हम सबको लक्ष्यपूर्ण होना चाहिये और अपना श्रेष्ठत्तम कार्य करना चाहिये, तब मैं ये विश्वास नहीं करती कि हमें अपने लिये सब कुछ रख छोड़ना चाहिये और दूसरों की चिन्ता नहीं करनी चाहिये।

इस पुस्तक को लिखते समय मैं पैंसठ वर्ष गुजार चुकी हूँ, और मैं सोचती हूँ कि यह एक मात्र बात कुछ बातें जानने के लिये मुझे योग्य बनाती हैं। कम से कम मैंने इतना अधिक जिया है, कि प्रसन्न होने के बहुत सारे तरीकों को आजमा सकूँ और पृथक करने की क्रिया के द्वारा यह पाया है, कि क्या कार्य करता है और क्या नहीं। स्वार्थता उस प्रकार से जीवन को व्यतीत होने नहीं देती है, जैसा उसे जीना चाहिये, और यह निश्चित ही परमेश्वर की मनुष्य

जाति के लिये इच्छा नहीं है। मैं विश्वास करती हूँ कि मैं इस पुस्तक में प्रमाणित कर सकती हूँ कि स्वार्थता वर्तमान समय की एक बहुत बड़ी समस्या जिसका हम सामना वैश्विक स्तर पर करते हैं, और इसके प्रति हमारा उत्तर इसे जड़ से उखाड़ने के लिये एक उत्साही आन्दोलन चलाना है। हमें स्वार्थता पर युद्ध की घोषणा करने की जरूरत है। हमें एक प्रेम क्रान्ति की जरूरत है।

प्रेम एक सिद्धान्त या एक शब्द से बढ़कर होना चाहिये, यह एक कार्य होना चाहिये। इसे देखा और महसूस किया जाना चाहिये। परमेश्वर प्रेम है! प्रेम है और यह सदा ही उसका विचार रहा है। वह हमसे प्रेम करने के लिये, हमें सीखाने के लिये आया कि उससे कैसे प्रेम करना है, और हमें यह सीखाने के लिये आया कि दूसरों से और स्वयं से कैसे प्रेम करना है।

जब हम यह करते हैं, तब जीवन सुन्दर होता है। जब हम ऐसा नहीं करते हैं तो कुछ भी सही नहीं होता है। स्वार्थता का उत्तर प्रेम है क्योंकि प्रेम देता है जबकि स्वार्थता लेता है। हमें अवश्य ही अपने आप से मुक्त होना चाहिय और यीशु इस उद्देश्य के लिये आया, जैसा कि हम 2 कुरिन्थियों 5:15 में देखते हैं, "और वह इस निमित्त सब के लिये मरा, कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिये न जीएँ, परन्तु उसके लिये जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा।"

हाल ही में, मैं संसार के सभी भयावह समस्याओं को देख रही थी, जैसे कि भूखे रहनेवाले लाखों बच्चें, एड्स, युद्ध, सताव, मानव व्यापार, कौटुम्भिक व्यभिचार, और इत्यादि। मैंने परमेश्वर से पूछा, "आप कैसे इन बातों को संसार में होते हुये देख सकते है, और कुछ नहीं करते हैं?" मैंने अपनी आत्मा में परमेश्वर को कहते हुये सुना, "मैं लोगों के द्वारा कार्य करता हूँ। मैं अपने लोगों के लिये इन्तजार करता हूँ, कि वे उठकर कुछ करें।"

जैसा कि लाखों अन्य लोग करते हैं, आप भी सोच रहे होंगे, कि *मैं जानता हूँ कि संसार में समस्याएँ हैं, परन्तु वे इतनी ज्यादा हैं कि मैं जो कुछ कर सकता हूँ उससे क्या अन्तर आएगा?* यह ठीक वही विचार है जो हमें लकवाग्रस्त बनाए रखता है, जबकि बुराई लगातार विजय पाना जारी रखा है। हमें यह सोचना बन्द कर देना चाहिये कि हम क्या नहीं कर सकते हैं, और जो हम कर सकते हैं उसे प्रारंभ कर देना चाहिये, इस पुस्तक में, मैं और कुछ मेहमान लेखक जिन्हें मैंने मेरे साथ शामिल होने के लिये बुलाया है आपके साथ कई एक विचार और तरीके बांटेंगे कि आप भी एक नए आन्दोलन का

भाग बन सकें जो कि एक आमूलचूल सकारात्मक परिवर्तन लाने की योग्यता रखता है।

मैं बिना कुछ किए और अधिक खड़े रहने से इन्कार करती हूँ, जबकि संसार लगातार नीचे की ओर फिसल रहा है। सम्भव है कि मैं सभी समस्याओं का समाधान करने की योग्य न हूँ, जिन्हें मैं देखती हूँ, परन्तु जो मैं कर सकती हूँ, वह मैं करूँगी। मेरी प्रार्थना यह है कि आप भी अन्याय के विरूद्ध कार्य करने में मेरे साथ शामिल हों और जीवन जीने की आपके तरीके में एक आमूलचूल परिवर्तन लाने को इच्छुक हों। जीवन का मतलब अब यह नहीं होगा कि लोग हमारे लिये क्या करते हैं, परन्तु यह ऐसा होना चाहिये कि हम उनके लिये क्या कर सकते हैं।

प्रत्येक आन्दोलन को एक लक्ष्य की जरूरत या एक विश्वास की जरूरत, या एक वचन की जरूरत है, जिसे दिया जा सके। हम जॉयस् मेयर मिनिस्ट्रीज़ में प्रार्थनापूर्वक एक वाचा का निर्माण किये हैं, जिसे जीने के लिये हम समर्पित हैं। क्या आप हमारे साथ शामिल होंगे?

मैं सम्वेदना को **ग्रहण करता** और अपने **बहानों**
को **त्याग देता हूँ**।
मैं अन्याय के विरूद्ध **खड़ा होता**
और परमेश्वर के प्रेम को जीने के लिये **समर्पित होता हूँ।**
मैं कुछ न करने से **इन्कार** करता हूँ। यही मेरा संकल्प है।
मैं प्रेम क्रान्ति हूँ।

मैं प्रार्थना करती हूँ कि यह शब्द आपके भी विश्वास वचन बन जाएँ – जीवन का नया पद जिसमें आप जीते हैं। आपको यह देखने के लिये ठहरने की जरूरत नहीं है कि अन्य लोग क्या चुनाव करते हैं या आपको यह देखने इन्तजार करने की आवश्यकता नहीं है कि यह आन्दोलन सफल होता है या नहीं। यह कुछ ऐसा है जिसे आपको स्वयं के लिये निर्णय लेना है, एक समर्पण जिसका चुनाव आपको अकेला करना है। स्वयं से पूछिएः ''क्या मैं समस्या का भाग बना रहूँगा या समस्या के हल का भाग बना रहूँगा?'' मैंने निर्णय लिया है कि समस्या के हल का भाग बनूँ। प्रेम मेरे जीवन का मुख्य विषय होगा।

स्वयं से पूछिएः ''क्या मैं समस्या का भाग बना रहूँगा या समस्या के हल का भाग बनूँगा?'' मैंने निर्णय लिया है कि समस्या के हल का भाग बनूँ। प्रेम मेरे जीवन का मुख्य विषय होगा।

आपके विषय में क्या है? क्या आप संसार की आज की समस्याओं को स्थायी रखेंगे? क्या आप उसके अस्तित्व को नकार देंगे या उन्हें अनदेखा करेंगे? या आप प्रेम क्रान्ति में शामिल होंगे?

प्रेम क्रान्ति

अध्याय

1

संसार में गलत क्या है?

मैं केवल एक हूँ, परन्तु फिर भी मैं एक हूँ, मैं सब कुछ नहीं कर सकता हूँ, परन्तु मैं कुछ कर सकता हूँ और चूँकि मैं सब कुछ नहीं कर सकता, इसलिए मैं कुछ करने से इन्कार नहीं करूँगा जो मैं कर सकता हूँ।
एडवार्ड़ एवरेट् हेल

जब मैं बैठकर सुबह की चाय की चुस्की ले रही हूँ, और खिड़की से बाहर के सुन्दर नजारे देख रही हूँ, 963 मिलियन लोग भूखे हैं।

एक अरब से अधिक लोग एक दिन में एक डॉलर से कम की मजदूरी पाते हैं। आज गरीबी के कारण तीस हजार बच्चे मर जाएँगे। वे पृथ्वी पर के कुछ एक गरीबतम गाँव में मरते हैं – जो संसार की जानकारी से बहुत दूर होंगे। इसका तात्पर्य है कि 210,000 प्रति सप्ताह मरते हैं–ग्यारह मिलियन प्रति वर्ष–और उनमें से अधिकतर पाँच साल से नीचे के हैं।

संसार के 2.2 अरब बच्चों में से, 640 मिलियन बच्चे उचित ठिकाने के बिना हैं, 400 मिलियन सुरक्षित पेय जल के बिना हैं, और 270 मिलियन बिना किसी उचित चिकित्सकीय सुविधा जैसी बातों के बगैर हैं।

क्या ये आँकड़े आपको परेशान करनेवाली हैं जैसा मुझे करती हैं? मैं आशा करती हूँ कि ऐसा ही है। ये इस संसार के अचंम्भा करनेवाले जीवन के सीधे – साधे सत्य हैं जहाँ हम रहते हैं। ये बातें हमारे घर में और हमारे नजरों के सामने हो रही हैं। मैं समझती हूँ कि ये आँकड़े जिन्हे अभी आपने पढ़ा है वो आपके शहर या आपके देश जिसमें आप रहते हैं उस पर लागु नहीं होते होंगे। परंतु आज के युग में देखा जाए तो हम सब इस विश्व के नागरिक है। हम एक वैश्विक समुदाय के भाग हैं और हमारे मानवीय परिवार के सदस्य अकथनीय और अशोचनीय रीति से दुःख उठा रहे हैं।

मैं विश्वास करती हूँ कि यह विश्वव्यापी रूप से जाग उठने की पुकार का समय है – जो हमें हमारी आत्म सन्तुष्टि, हमारी अज्ञानता या कठिनाई के प्रति हमारी अरूचि को जगाती है और हमें ऐसे दर्द और गरीबी, हानि और कमी, अन्याय और शोषण, और जीने की शर्तों के प्रति जाग उठने के लिए झकझोरती है जो हमें स्वस्थ मानवीय जीवन या आधारभूत गरिमा नहीं देती है। यथार्थ में, यह एक प्रेम क्रान्ति का समय है।

एक छोटा सा मुँह, छः फोड़ेवाले दाँत

जॉयस् मेयर मिनिस्ट्रीज़ मेडिकल आउट्रीच की कम्बोडिया के एक कैम्प के दौरान एक दन्त चिकित्सक ने जिन्होंने अपना समय सौजन्यभाव से दिया था, उन्होंने एक छोटे से बच्चे इक्कीस दाँत निकाले। उनमें से छः दाँत सढ़े हुए थे। इस घटना के बारे में सोचना मुझे अपने पति के उस बुरे दिनों को याद दिलाता है जब उन्हें बहुत बुरा दाँत का दर्द होता था जब हम आस्ट्रेलिया की यात्रा पर थे। ये सचमुच में बहुत अधिक कष्टमय दिन थे क्योंकि वे एक हवाई जहाज में थे और कोई ईलाज़ नहीं पा सकते थे। जैसे ही हम रात के दस बजे जहाज से उतरे किसी ने उनके लिए एक दन्त चिकित्सक से मिलने में सहायता की और वे सहायता पा सके। लेकिन उस छोटी बच्ची और उसके जैसे हजारों लोगों का क्या होता है जब वे प्रति दिन ऐसा दर्द सहते हैं, और उन्हें कोई चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध नहीं होती है? कुछ क्षण लें और इसकी कल्पना करें। यह कैसा महसूस होता है जब ईक्कीस सढ़े हुए दान्त हों और दर्द से उबल रहे हों?

इस प्रकार की अकल्पनीय तकलीफें उपस्थित हैं; संसार के दूरस्त इलाकों में प्रतिदिन वास्तविक लोगों के साथ ऐसी बातें होती हैं। हममें से अधिकांश

लोग उनके बारे में नहीं जानते हैं या, सबसे श्रेष्ठ यह है, कि हम उनमें से कुछ एक की तस्वीरें टेलिविजन पर देखते हैं। हम कहते हैं, "कीतनी शर्म की बात है। किसी को इस विषय में कुछ ना कुछ करना चाहिये," और तब हम अपने सुबह की चाय की चुस्पी लेना जारी रखते हैं और प्राकृतिक नजारों का आनन्द उठाते रहते हैं।

जहाँ कचरा खजाना है

एक दस वर्षीय लड़की जिकी कम्बोडिया के एक कूड़ा फेंकनेवाले जगह पर रहती है। वह वहाँ तब से रह रही है जब वह चार साल की थी। उसके माता–पिता उसकी परवरीश (भरण पोषण) नहीं कर पाते थे, इसीलिए उन्होंने उसकी बड़ी बहन से उसे ले जाने के लिए कहा, और उन दोनों के लिए जीने के लिए एक मात्र तरीका उस कूड़ा फेंकनेवाली जगह पर रहना और काम करना था। जिकी सप्ताह में सातों दिन एक लोहे के धातु के टुकड़े के साथ अपने हाथों से उस स्थान पर खोदती रहती है और अपने खाने के लिए भोजन खोजती है या कुछ धातु के या प्लास्टिक के टुकड़े ढूँढ़ती है जिसे वो बेचकर भोजन के लिए कुछ धन पा सके। वह उस कचरे के स्थान पर छः सालों से रह रही है; वहाँ कई एक लोग और भी पहले से रह रहे हैं।

आपकी समझ के लिए यहाँ पर यह बता दूँ कि यह शहर कूड़ों का शहर है, और प्रति रात कूड़ा फेंकनेवाले ट्रक, शहर के लोगों के कचरे और कूड़े इकट्ठे करके यहाँ पर लाकर फेंकते हैं। बच्चे रात को अन्धेरे में सिर पर लाईटवाले हेलमेट पहनकर काम करते हैं, क्योंकि सबसे अच्छा कूड़ा तभी मिलता है जब वह सबसे पहले ढूँढ़ा जाए।

उस कचरे के स्थान पर मेरे दौरे के पश्चात् एक इन्टरव्यू लेनेवाले ने मुझ से पूछा कि मैंने इसके बारे में क्या सोचा है। जब मैंने अपने विचारों का वर्णन करने का प्रयास किया, तब मैंने महसूस किया कि परिस्थिति इतनी भयानक थी कि मैं नहीं जानती थी कि किस प्रकार इस पर सोचना है। परिस्थिति की गहराई इतनी अधिक थी कि मैं अपने मन के साथ इस पर सामान्य नहीं बैठ पाई कि इसके विषय में वर्णन कर सकूँ। परन्तु मैंने यह निर्णय लिया कि मैं इस पर कुछ न कुछ करने का प्रयास अवश्य करूँगी।

बहुत से लोगों को इस मुद्दे पर सम्बोधित करने और अपने सेवकाई के सहभागियों से धन की अपेक्षा करने और साथ ही साथ डेव और मेरे

व्यक्तिगत धन को इकट्ठा करने में हमें एक साल के लगभग समय लग गया। परन्तु हमने दो बड़े बसों को लेकर उन्हें एक चलित रेस्टोरेन्ट में हम बदल सके, उन्हें हम उस कचरे के स्थान तक ले गए, बच्चों को बस में चढ़ाए, और उन्हें एक अच्छा भोजन प्रदान किए, और यहाँ तक कि उन्हें एक अच्छे भविष्य के लिए तैयार करने के लिए पाठ और गणित भी पढ़ाए। निश्चय ही हम प्रभु यीशु के प्रेम को उनके साथ बाँटते हैं। परन्तु हम उन्हें केवल ये नहीं बताते हैं कि उनसे प्रेम किया जाता है। परन्तु हम उनके जीवन के व्यवहारिक आवश्यकताओं को पूरा करने के द्वारा यह दर्शाते हैं।

अच्छी भावनायें काफी नहीं है

मैंने एक मनुष्य की कहानी सुनी है जिसने लोगों को प्रभु यीशु मसीह के प्रेम के बारे में बताने की अच्छी इच्छा के साथ रूस को गया। अपने दौरे के दौरान उसने बहुत से लोगों को भूखा देखा। जब उसने लोगों को बड़ी उम्मीद के साथ रोटी पाने के लिए लाईन लगे हुए देखा, तो वह अपने हाथों में सुसमाचार के पर्चे लिये उनके पास गया और लाईन के साथ चलते हुए उन्हें यीशु के प्रेम के बारे में बताता गया और उनके हाथों में उद्धार के सन्देश का पर्चा देता गया। निश्चय ही, वह उनकी सहायता करने का प्रयास कर रहा था, परन्तु एक महिला ने उनकी आँखों में देखा और कड़वाहट के साथ बोली, "तुम्हारे शब्द अच्छे हैं, परन्तु वे मेरे खाली पेट को नहीं भर सकते हैं।"

मैंने देखा है कि कुछ लोग सुसमाचार सुनकर चोट पहुँचाते हैं कि परमेश्वर उनसे प्रेम करता है, उन्हें अवश्य इसका अनुभव करना चाहिये और ऐसा होने का एक उत्तम तरीका हमारे लिये यह है कि हम उनकी व्यवहारिक आवश्यकताओं को पूरा करते और उसके साथ उन्हें बताते कि उनसे प्रेम किया जाता है।

हमें यह सोचने से अवश्य सावधान होना चाहिये कि शब्द ही काफी हैं। यीशु ने निश्चय ही सुसमाचार का प्रचार किया, परन्तु उससे वह भलाई करता

> हमें यह सोचने से अवश्य सावधान होना चाहिये कि शब्द ही काफी हैं।

और सताये हुओं को चंगा करता गया (प्रेरितों 10:38 देखें)। बात करना खर्चीला नहीं है, ना ही इसमें अधिक प्रयास लगता है, परन्तु वास्तविक प्रेम

मूल्यवान है। परमेश्वर को इसके लिए अपना एकलौता पुत्र देना पड़ा, और अपने में वास्तविक प्रेम को बहने देने की वास्तविक कीमत चुकानी पड़ेगी। शायद हमें कुछ समय, धन, प्रयास या संपत्ति का निवेश करना पड़े – परन्तु इसकी कीमत होगी!

परमेश्वर हम पर नजर रखता है

मैं बहुत जल्द अपने घर को छोड़ने जा रही हूँ कि अपने पति के साथ कॉफी पीऊँ और बाद में दोपहर का भोजन करूँ। हम सम्भवतः दो घण्टे तक साथ रहें और इस दौरान अनुमानतः २४० बच्चे यौन अपराध के गर्त में धकेल दिये जाएँगे। इसका अर्थ है प्रति मिनट दो बच्चों की जिन्दगी किसी के स्वार्थ और लालच के कारण नाश कर दी जाएँगी, यदि हम कुछ नहीं करते हैं। हम क्या कर सकते हैं? हम सम्भाल सकते हैं; हम जानकारी पा सकते हैं; हम प्रार्थना कर सकते हैं; और हम इसके विरूद्ध कुछ कर सकते हैं। हम ऐसी संस्थाओं और सेवकाईयों की सहायता कर सकते हैं जो बच्चों और महिलाओं को ऐसी भयानक स्थिति से उभारने के या बचाने के प्रामाणिक आँकड़े पेश करती हों, या यदि परमेश्वर हम से कहे तो हम ऐसे क्षेत्रों में काम करने का चुनाव भी कर सकते हैं। यदि पूर्ण कालीक कार्य एक विकल्प नहीं है तो हम किसी प्रोजेक्ट के आधार पर कुछ करने का विचार कर सकते हैं या काम करने या अल्पकालिक मिशन ट्रिप में जाने का विचार कर सकते हैं।

यौन गुलामी

जब आप अँधेरी गलियों में चलते हैं, तो सढ़ाहट और सर्वनाश को अंधकार से चिरते हुए देख सकते हैं। धातु की जालियाँ और पत्थर के मकानों को एक साथ रखते हैं। सड़े हुए कबाड़ और मानवीय गन्दगी की दुर्गन्ध हवा में फैली हुई है। विकृत अग्रभाग के पीछे आप किसी बच्चे का रोना या क्रोध से चिल्लाना, और विद्रोह या क्रोधोन्माद और बहुत से कुत्तो की कर्णभेदी चीख को सुनते हैं जो इस क्रूर गली में घूमते रहते हैं।

आपके किसी भी इन्द्रिय से बढ़कर आप जो महसूस करते हैं उसके प्रति आप निश्चित होते हैं। कोई सन्देह नहीं ..... यह स्थान बुरा है। आपकी कल्पना के लिए भी बहुत ही कठिन है, यह ऐसा स्थान है

जिसको दुष्ट और अनैतिक मनुष्यों ने बनाया है जो बच्चों को यौन अपराध के लिए बेचते हैं।

जब सामरावर्क मात्र सात वर्ष की थी तब यह नरक उसका घर बन चुका था। जब वह बारह साल की उम्र में एक बस स्टेशन में बचाई गई, तब तक वह एक जीवनरहित छोटी लड़की के कंकाल के रूप में विकृत हो चुकी थी – जिसमें केवल चमड़ी और हड्डियाँ थी। उसकी भावनाएँ मर चुकी थी, जिसकी खोखली आँखे कुछ भी अभिव्यक्त करने में असमर्थ थी। पाँच वर्षों तक वह उन लोगों की यौन विकृतियों की शिकार रही जिन्होने अधिक कीमत देकर उसकी मासूम देह के साथ खिलवाड़ करने का अवसर पाया था। उसकी छोटी उम्र के कारण वे एक डॉलर की जगह तीन डॉलर कीमत अदा करते थे।

उसके स्त्रैण अंगों के लिए यह दण्ड इतना भयानक था कि एक सामान्य जीवन जीने के लिए उसे एक गहन शल्य चिकित्सा की आवश्यकता थी। परन्तु उसकी शारीरिक आवश्यकतायें उसकी उन आत्मिक और भावनात्मक नुकसान की तुलना में बहुत अधिक कम थी।

साम्रावर्क को एचआईवि पीड़ित पाया गया। वह अनाथ थी और उसके पास माँ बाप का कोई स्मरण नहीं था। उसके जैसे अनेको के समान वह भी अकल्पनीय बुराई के अन्धकार में धकेल दी गई थी।

आँकड़े कहते हैं

- 1.2 मिलियन बच्चे प्रतिवर्ष यौन व्यापार में धकेले जाते हैं। यह संख्या उन बच्चों से जुड़ी है जो पहले से ही इस व्यापार में पहुँच चुके हैं।
- प्रति दो मिनट में एक बच्चा यौन शोषण के लिए तैयार किया जा रहा है।
- अनुमानतः 30 मिलियन बच्चे यौन शोषण के कारण पीछले तीस वर्षों में अपना बचपन खो चुके हैं।

जिस दन्त चिकित्सक का वर्णन मैंने इस अध्याय में पूर्व में किया था वे जॉयस् मेयर मिनिस्ट्रीज़ मेडिकल आउटरीच के हमारे एक कैम्प में भाग लिए

जो तीसरी दुनियाँ के देशों में संचालित की जाती हैं। उनमें हमारे कुछ एक कार्यकर्ता कार्य करते हैं जिन्हें तनख्वाह दी जाती है, परन्तु उनमें से अधिकांश सौजन्यभाव से कार्य करनेवाले होते हैं जो अपनी नौकरी से समय निकालकर और अपने तनख्वाह और स्वयं के खर्चे से हमारे साथ जाते हैं। वे बारह से सोलह घण्टे प्रतिदिन कार्य करते हैं सामान्यतः ऐसे स्थानो पर जहाँ पर तापमान बहुत ऊँचा होता है, जितना कि उनकी आदत नहीं होती है, जहाँ पर कोई ऐसी या वातानुकुलित वातावरण और शायद पंखा भी नहीं होता है। वे दूरस्त ग्रामों में तम्बूओं में काम करते हैं और ऐसे लोगों की सहायता करने में सक्षम हैं जिन्होंने कभी किसी प्रकार चिकित्सकीय सुविधा प्राप्त नहीं की होती है। हम उन्हें जीवन रक्षक और दर्द निवारक दवाईयाँ देने में सक्षम हैं, हम उन्हें विटामिन देते हैं, उन्हें भोजन देते हैं, और उन्हें बताते हैं कि यीशु उन्हें यतार्थ में प्रेम करता है। बच्चे को यीशु को स्वीकार करने का अवसर दिया जाता है और उनमें से अधिकांशतः ऐसा करने का चुनाव करते हैं। मैं अपने आँखों में आँसू पाती हूँ जब मैं उन चिकित्सकों, दन्त चिकित्सकों, नर्सों और अन्य चिकित्सा स्टाफ के बारे में सोचती हूँ जिन्होंने महान भावना के साथ हमें यह बताया है कि इस प्रकार की यात्राएँ कैसे उनके जीवन को हमेशा के लिए बदल दी है। हमें धन्यवाद देते हैं कि हमने जीवन की वास्तविकता के प्रति उनकी आँखों को खोला।

हमारी सेवकाई के लिए काम करनेवाले हमारे एकाउन्टेन्ट को हम एक बार कम्बोडिया की यात्रा पर ले गए। और यद्यपि वह अक्सर मिडिया में हमारे आउटरीच की प्रस्तुतिकरण का कार्य देखती थी, उसका जीवन जो भी उसे व्यक्तिगत रूप से देखा वास्तविक रूप से प्रभावित हुआ। उसने कहा, "मैं वास्तव में एक बुलबुले के समान अपनी पूरी जिन्दगी जीती रही।" उसका तात्पर्य था कि वह वास्तविकता से कोसों दूर थी और मैं सोचती हूँ कि हममें से अधिकांश लोग ऐसे ही हैं। मैं समझती हूँ कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति तीसरी दुनियाँ के देशों में ये देखने के लिए नहीं जा सकते कि वहाँ के लोग कैसे मजबूर जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु हम कम से कम यह स्मरण करने का प्रयास कर सकते हैं जब हम पढ़ते हैं या उन्हें टेलिविजन पर देखते हैं कि जो कुछ हम देख रहे हैं वह किसी ना किसी के साथ – या बहुत से लोगों के साथ हो रहा है। परमेश्वर इन लोगों को प्यार करता है और इसके विषय में परमेश्वर हमसे लेखा लेता है।

कुपोशण

मेहरट संसार को एक भिन्न पहलु से देखती है। अंगाचा के एक छोटे से इथिओपियन गाँव में, वह अन्य बच्चों के समान रहने का भरसक प्रयास करती है, परन्तु वह अन्य के समान नहीं है।

मेहरट स्वस्थ पैदा हुई, परन्तु प्रतिदिन कुपोषण उसके शरीर को खाता गया, उसके परिणाम स्वरूप उसका रीड़ टेढ़ेमेढ़े रीति से बढ़ने लगा, उसे चलने में भी कठिनाई होने लगी, दौड़ना और मित्रों के साथ खेलना उसके लिए असम्भव था। उसके पीठ पर माँस का एक बहुत बड़ा एक टुकड़ा बढ़ने लगा – जो इतना बड़ा था कि छुपाया नहीं जाता, और इतना दर्दनाक था कि उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता था। उसकी हड्डियाँ कमजोर हैं, और वह भी कमजोर है।

यदि कोई मेहरट के दर्द को जानता है, तो वह उसके पिता, अबेबा हैं। एक बात जो वह सबसे अधिक चाहते हैं वह अपने बच्चों का पेट भरना है.....*और अपनी बहुमूल्य पुत्री को फिर से चंगा करना है।* यदि मेहरट अपनी जरूरत के पोषक भोजन को प्राप्त करना शुरू कर सकती है, तो उसके शरीर की विकृति बढ़ना रूक सकती है। परन्तु वर्तमान में ऐसी कोई आशा नजर नहीं आती।

दिन प्रतिदिन, अबेबा इस अपराध भावना से लड़ता रहता है कि वह अपने बच्चों का लालन पालन नहीं कर पा रहा है। वह जानता है कि यदि स्थिति कुछ नहीं बदलता है तो मेहरट की स्थिति बत्तर हो जाएगी। जल्द ही वह चलने फिरने लायक नहीं रहगी और क्रमशः वह मर जाएगी।

आज मेहरट भूखा महसूस करने के दर्द को जानती है.....और अन्य सभों से अलग होने के दर्द को भी जानती है। और वह जानती है कि प्रत्येक नया दिन उसके लिए पहले से अधिक कठिन होगा।

इन्टरनेश्नल क्राइसीस ऐड के साथ सहभागिता में, जॉयस् मेयर् मिनिस्ट्रीज़ में उसकी मेहरट की जरूरत का भोजन उसे जीने और रिड़ की विकृति को आगे बढ़ने से रोकने के लिए देने का प्रबन्ध प्रारंभ किया है। परन्तु और भी बहुत सारे बहुमूल्य बच्चे हैं.....मेहरट के समान और भी बहुत से बच्चे.....उन्हें कुपोषण के विरूद्ध लड़ाई लढ़ने की हमारी सहायता की जरूरत है।

आंकड़े कहते हैं :

- इस समय, संसार में 963 मिलियन लोग भूखे हैं।
- प्रतिदिन, लगभग 16,000 बच्चे भूख से संबन्धित कारणों से मर जाते हैं – एक बच्चा प्रत्येक पाँच सैकेण्ड में।
- 2006 में, लगभग 9.7 मिलियन बच्चे अपना पाँचवां जन्मदिन मनाने से पहले मर गए। इनमें से अधिकांश मृत्यु विकासशील देशों में हुई। इनमें से पाँच में से चार हिस्सा सब–सहारान आफ्रिका और साउथ एशिया में हुआ, ये दोनो क्षेत्र जो भूख और कुपोषण की संख्या में सबसे ऊपर हैं।

संसार के नीव में एक दरार

मुझे यह दिखता है कि संसार के सिस्टम में, उसके नीव में एक दरार है और हम सब उसे गिरते चुपचाप बैठे देख रहे हैं। यदि आप ध्यान पूर्वक सुनें तो आप लोगों को यह कहते हुए हर कहीं देखेंगे, "संसार गिर रहा है" हम समाचार में और सामान्य बातचीत में उसे सुनते हैं। यह ऐसा प्रतीत होता है कि हर व्यक्ति संसार में हो रहे अन्याय के प्रति बात कर रहा है, परन्तु बिना कार्य के बातचीत कुछ भी परिणाम नहीं लाता है। मेरा प्रश्न है, "कौन अन्याय के विरूद्ध विद्रोह करेगा, और गलत चीजों को सही करने के लिए कार्य करेगा?" मैंने निश्चय किया है कि मैं करूँगी। मैं हजारों ऐसे अन्य लोगों को जानती हूँ जिन्होंने ऐसा ही करने का निर्णय लिया है, परन्तु हमें ऐसे हजारों के सैकड़ों गुणा लोग चाहिए जो हमारे साथ इस कार्य करने के लिए सहभागि बनें।

जो कुछ आप कर सकते हैं वह महत्वपूर्ण है

आप सोंच रहे होंगे, कि जॉयस्, मैं जो कर सकता हूँ वह संसार के सागर में एक बून्द भी नहीं होगा। मैं जानती हूँ कि आप कैसा महसूस करते हैं, क्योंकि एक समय में मैं भी ऐसा सोंचती थी। परन्तु यदि हम सब ऐसा सोंचते हैं, तो कोई भी कुछ भी नहीं करेगा और कुछ भी परिवर्तन नहीं होगा। यद्यपि हमारे व्यक्तिगत प्रयास समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते, हम सब एक

साथ मिलकर एक बड़ा परिवर्तन कर सकते हैं। जो हम नहीं कर सकते उसके लिए परमेश्वर हमसे लेखा नहीं लेगा, परन्तु जो हम कर सकते थे उसके लिए परमेश्वर हमसे लेखा लेगा।

हाल ही में मैं भारत की यात्रा से लौटी और जिम में थी वहाँ एक महिला थी जिसे मैं अक्सर देखा करती थी उसने मुझसे पूछा, कि इन यात्राओं के लिए मैंने जितने भी परिश्रम किए वे किसी भी समस्या को सुलझानेवाले थे, क्योंकि लाखों लोग अब भी भूखें हैं, चाहे हमनें कितनों को भी भोजन खिलाया हो। मैंने उसे बताया कि परमेश्वर ने मेरे हृदय में क्या रखा है–कुछ ऐसा जो मेरे लिए हमेशा के लिए मुद्दे को सुलझानेवाले है। तीन दिन से खाना नहीं खाने के कारण यदि मैं और आप भूखे हों और कोई हमें एक समय का खाना दे, जो हमें पेट के दर्द को एक दिन के लिए कम करेगा, क्या हम उस भोजन को ग्रहण करेंगे और खुश होंगे? हाँ, निश्चय ही ऐसा करेंगे। और जिनकी हम सहायता करते हैं वे भी इसी प्रकार हैं। हम उनमें से कईयों के लिए लगातार ऐसे कार्य करने के लिए सक्षम हैं, परन्तु हमेशा एक या दो लोग ही होंगे जो इस प्रकार सहायता कर सकते हैं। फिर भी मैं जानती हूँ कि इस प्रकार के बाहरी कार्यक्रम उपयोगी हैं। यदि हम एक भूखे बच्चे को एक भोजन दे सकते हैं तो यह उपयोगी बात है। यदि हम किसी एक व्यक्ति को एक दिन दर्द के रहने में सहायता कर सकते हैं, तो यह भली बात है। मैंने यह निर्णय लिया है कि हमेशा वह करूँ जो मैं कर सकती हूँ और स्मरण करूँ कि परमेश्वर ने मुझे क्या कहा है, "यदि आप किसी के दर्द को एक घण्टे के लिए कम कर सकते हैं, फिर भी यह भली बात है।"

संसार ने अपना स्वाद खो दिया है

मैं सोचती हूँ कि यह कहना सुरक्षित होगा कि संसार जो कुछ प्रस्तुत करता है उनमें से अधिकांश स्वादरहित होते हैं – और मैं भोजन के विषय में बात नहीं कर रहीं हूँ। उदाहरण के लिए, होलीवूड निकलनेवाले अधिकांश मूवी नितान्त स्वादरहित होते हैं। बहुत सारे बातचीत और बहुत सारे दृश्य चित्र स्वादरहित स्थिति में होते हैं। सामान्यतः जब हम किसी भी प्रकार के व्यवहार को देखते हैं जो स्वादरहित होता है तो हम जल्द ही उसे "संसारिक" कहके आरोप लगाते हैं। हम कुछ इस प्रकार कह सकते हैं, "संसार किस तरफ जा रहा है?" अब भी संसार का अर्थ उन लोगो से है जो "संसार" में रहते हैं।

यदि संसार ने अपना स्वाद खो दिया है, तो ये इसलिए है कि लोग अपने स्वाभाव और कार्य में स्वादरहित हो गए है। यीशु ने कहा कि हम पृथ्वी के नमक हैं, परन्तु यदि नमक अपना स्वाद खो दे (अपनी ताकत और शुद्धता), तो वह किसी काम का नहीं है (मत्ती 5:13 देखें), उसने यह भी कहा कि हम जगत की ज्योति हैं जिसे छिपाया नहीं जाना चाहिए (मत्ती 5:14 देखें)।

इसके विषय में इस प्रकार सोचें: प्रतिदिन जब आप अन्धेरे और स्वादरहित संसार को जाने के लिए अपने घर को त्यागते हैं, तब आप उस ज्योति और स्वाद को ले जा सकते हैं जिसकी उसे जरूरत है। लगातार एक अच्छा व्यवहार रखने के निर्णय लेने के द्वारा आप अपने कार्य स्थल पर आनन्द ले सकते हैं। छोटी बातें जैसे शिकायत करने के बजाय धन्यवादी होना (जैसा कि अधिकांश लोग शिकायत करते हैं) धीरजवन्त होना, दयालु, माफ करने में त्वरित होना, नम्र होना और उत्साहित करनेवाला होना जैसी छोटी – छोटी बातों के द्वारा। स्वादरहित समाज में मुस्कुराहट रखना और दोस्ताना व्यवहार रखना भी उपयोगी है।

मैं आपके बारे में नहीं जानती, परन्तु मैं नरम भोजन पसन्द नहीं करती हूँ। एक बार मेरे पति को पेट में समस्या हुई और चिकित्सक ने उन्हें कुछ दिनों के लिए नरम भोजन पर रखा। जब मैं उसे स्मरण करती हूँ, वे भोजन लेते हुए भी नहीं दिखते थे। डेव शिकायत करनेवाले नहीं हैं, परन्तु प्रत्येक भोजन के समय मैं उन्हें बार बार कहते सुना, "इस भोजन में कुछ भी स्वाद नहीं है।" इसमें थोड़ा सा नमक और थोड़ा मसाला चाहिए–और सचमुच में यही संसार की जरूरत है।

प्रेम और उसकी सभी उल्लेखनीय विशेषताओं के बगैर जीवन स्वादरहित है और जीने लायक नहीं है। मैं चाहती हूँ कि आप ये प्रयोग करने का प्रयास करें। केवल सोचें: *आज मैं संसार में जाकर जानने और उसमें और चीजों में स्वाद डालने जा रही हूँ।* तब अपने मन को कमरे के बाहर जाने से पहले स्थिर कर लेवें कि आप परमेश्वर के राजदूत के रूप में बाहर जा रहे हैं और आपका लक्ष्य एक देनेवाला बनना है जो लोगों से प्यार करें और उनके जीवन में अच्छे स्वाद को लाए। दिनभर में मिलनेवाले लोगों की ओर देखकर मुस्कुराने के द्वारा आप प्रारंभ कर सकते हैं। मुस्कुराहट स्वीकार करने या ग्रहण करने का चिन्ह है और जिसकी संसार में लोगों को अत्यधिक जरूरत है। अपने आप को परमेश्वर के साथ निवेश करें और भरोसा करें कि दूसरों

को आशीष बनने के निर्णय लेने के द्वारा जहाँ कहीं आप जाते हैं वहाँ पर भले बीजों को जब आप बोते हैं तब आपकी देखभाल करेगा।

परिवर्तन आपके साथ प्रारंभ होता है

मैं जानती हूँ कि आप सब कुछ नहीं कर सकते हैं; मैं इस पर प्रश्न भी नहीं उठाती हूँ। कुछ बातों के प्रति आपको ना कहना चाहिये अन्यथा आपका जीवन तनाव से भर जाएगा। मैं बच्चों को पढ़ाने या बूढ़ों को भोजन देने के योग्य नहीं हूँ, परन्तु मैं अन्य बहुत से कार्य करती हूँ जो संसार में सकारात्मक परिवर्तन लाता है। मैं सोचती हूँ कि जिस प्रश्न का हममें से हर एक को उत्तर देना चाहिए वह है, "किसी दूसरे के जीवन को बेहतर बनाने के लिए मैं क्या कर रहा हूँ?" और शायद एक अच्छा प्रश्न यह है, "आज मैंने किसी के जीवन को बेहतर बनाने के लिए क्या किया?"

कभी कभी यह पुस्तक पढ़ने में कठिनाई हो सकता है, क्योंकि मुझे आशा है कि यह पुस्तक ऐसे मुद्दो को उठाती है जो हमें असुविधाजनक लगता है। परन्तु इन्हें हममें से हर एक के द्वारा सम्बोधित किया जाना चाहिए। कुछ भी भला अचानक नहीं होता है। यदि हम क्रान्ति का भाग बनना चाहते हैं तो इसका तात्पर्य है कि चीजों को बदलना चाहिए, और चीजें तब तक नहीं बदल सकती हैं जब तक लोग नहीं बदलते हैं। हममें से प्रत्येक को कहना चाहिएः परिवर्तन मुझसे ही प्रारंभ होता है!

कुछ भी भला अचानक नहीं होता है। यदि हम क्रान्ति का भाग बनना चाहते हैं तो इसका तात्पर्य है कि चीजों को बदलना चाहिए, और चीजें तब तक नहीं बदल सकती हैं जब तक लोग नहीं बदलते हैं। हममें से प्रत्येक को कहना चाहिएः परिवर्तन मुझसे ही प्रारंभ होता है!

प्रेम क्रान्तिकारी

डारलेन जस्केख

हृदय की यात्रा सबसे जटिल भेदों में से एक है। उल्लास और दुख, आशा और इन्तजार, ऊँचा और नीचा ....और बहुत से लोगों के लिए दुःख, अकथनीय निराशा जो शब्दशः हृदय को एक स्थान पर पाते हैं जहाँ वह काम तो करता है परन्तु अब कुछ भी महसूस नहीं करता है। जब कोई परमेश्वर के उस महान प्रेम के समझ के बगैर होता है, जिस पर हम आश्रित हो सकते हैं और बल पा सकते हैं, तब मानवीय हृदय सामना करने, व्यवस्था करने, या जीवित रहने, या कठिन से कठिन वास्तविकता में भी जीवित रहने का मार्ग प्राप्त कर लेता है। और यही वह स्थान है जहाँ असंख्य लोग आज स्वयं को पाते हैं, जब लोग धनवान से गरीबतम हो रहे हैं जब कि हृदय की गरीबी इस बात में भेदभाव नहीं करती कि वह कहाँ पर अपना घर बनाती है।

यशायाह भविष्यद्वक्ता यशायाह 61:11 में एक अधिकारिक प्रेम क्रान्ति के विषय में बात करता है, जबकि वचन एक ऐसे दीनता वर्णन करता है जब प्रेम लोगों में ऐसा परिणाम लाएगा कि लोग अपने न्याय को प्राप्त करेंगे.....और यीशु जंगल में मार्ग बना रहा है। "क्योंकि जैसे भूमि अपनी उपज को उगाती, और बारी में जो कुछ बोया जाता है उसको वह उपजाती है, वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के सामने धार्मिकता और धन्यवाद को बढ़ाएगा।"

एक प्रेम क्रान्ति एक महान विचार ही नहीं है, परन्तु संपूर्ण अनिवार्यता की एक अवधारणा है.....विशेष करके यदि हम आज पृथ्वी पर चारो तरफ हो रहे दुःखद अन्याय को देखने में विश्वास कर रहे हैं.....जिसमें से सबसे बड़ी दुःखद बात मानवता का टूटा हुआ हृदय है।

इस टूटेपन को बार बार एक बच्चे को दूध पिलाती हुई एक जवान माँ के स्वरूप में हमारे ध्यान में लाया जाता है, जिसका स्वयं का शरीर बीमार और एचआईवी/एड्स के कारण बर्बाद हो चुका है। वह अपना सर्वोत्तम कर रही है परन्तु विकल्प का सामना भी करती है। क्या वह अपने बच्चे को दूध पिलाए और जान बूझकर अपनी बीमारी उस बच्चे को भी दे या वह अपने बच्चे को दूध के बदले में अन्य भोजन की कमी से भूखा रहते हुए देखे? इस माँ का हृदय

टूटेपन से भी कहीं अधिक है। वह मेरे ही समान एक माँ है, जो अपने बच्चे को अपने सामने बढ़ते हुए देखने का आनन्द प्राप्त करना चाहती है।

जवान स्त्री और पुरूषों को बिना भोजन, बिना पानी, निरूद्देश्य खड़े देखना, हृदय को तोड़नेवाली बात है, और यह हृदय को निरन्तर मोहभ्रम से भर देता है। उनके हृदय और मन असंख्य स्वप्नों से भरे हुए हैं, परन्तु यदि वे स्कूल जानें का कोई रास्ता प्राप्त कर पाते या कुछ खाने के लिए खरीद पाते।

यह अद्भुत है कि निराशा मनुष्य से क्या कुछ करवा सकती है, वह उन्हें और नुकसान पहुँचाने और एक दूसरे के प्रति हिंसक होने का कारण बनाती है.....जब लोग लगातार अत्यधिक गरीबी का सामना करते हैं तब लोग मानवीय जीवन को कितना मूल्यवान समझते हैं। परन्तु एक हृदय बहुत कुछ दर्द ही सह सकता है।

एक चौदह वर्षीय बालक अपने छोटे भाई और बहन और छोटे भतीजे का पालन – पोषण करता है और सब – सहारन आफ्रिका के छोटे से टिन के बने हुए झोपड़ी में रहता है, जिसे वह अपना घर कहता है, जहाँ वह दिनभर एक छोटे से फार्म में कार्य करता है और उन सब का और अपना पेट भरने का प्रयास करता है, और उन्हें स्कूल भेजने का प्रयास करता है, ताकि वे प्रतिदिन मजबूत बने रहें। उसके माता–पिता एच्आईवी के कारण मर गए और उनके शहर में बच्चों को इस भय से बाहर निकाल दिया कि उन्हें भी ये बीमारी हो जाएगी। प्रतिकुल परिस्थितियाँ बहुत ऊँची हैं और वह अब तक उन्हें चखा नहीं हैं और यह चौदह वर्षीय अद्भुत हृदय कठिन परिश्रम, बीमारी और अनिश्चयता के कारण निराशा के गर्त में डूबता जा रहा है।

अस्ट्रेलिया के सिडनी में एक जवान माता, जिसने अपना जीवन अपने पति और बच्चे में उण्डेल दिया, उसने केवल यह पाया कि उसका पति बहुत – बहुत महीनों से उसे धोखा देते आ रहा है और किसी नई महिला से विवाह करना चाहता है। यह महिला अकेला, अमूल्यवान, अपमानित, महसूस करती है, और अब उसे एक ऐसे भविष्य का सामना करना है जिसे न केवल उसका पति नहीं है, परन्तु बहुत दिनों तक बच्चों से भी दूर रहना है, क्योंकि उसका पति बच्चों पर अधिकार के लिए अदालत के दरवाजे खट्खटा रहा है। उसका हृदय इतना टूटा हुआ है कि साँस लेना कठिन है, और आगे उसे कोई रास्ता नहीं सूझता।

युगान्डा के बाहरी प्रदेशों में बच्चों के बीच में कार्य करनेवाले एक अगुवे के साथ बैठकर हुई बातचीत को मैं स्मरण करती हूँ, जब बात करते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि वे कुछ क्षेत्र के अनाथ बच्चों को बचाने के लिए बहुत कुछ कर रहे हैं, परन्तु उनकी पहुँच की अन्दर के बच्चे जो जिनके पास जीने के लिए कुछ भी नहीं हैं वे असंख्य हैं। मैं खड़ी हुई और उसके थके हुए कन्धों को सहलाने लगी जब वह अपने टूटे हुए हृदय से बात करना जारी रखी और वह अपनी उस निराशा को व्यक्त करने लगी और बहुत जल्द ही उसके शब्द शुश्किकयों में बदल गए। वर्षों तक संसाधनों को खींचतान करके जीना और जहाँ तक संभव हो मनुष्य तक पहुँचना और फिर भी यह देखना और सुनना कि बच्चे लगातार बिस्तरों पर भूखे और अकेले सोने जाते हैं, यह उन्हें अब तब बहुत परेशान करती थी।

जीने के लिए संघर्ष करनेवाले लोगों की कहानियाँ आफ्रिका की गहराईयों से अत्यधिक जनसंख्यावाले एशिया तक, यूएस से ओस् तक और यहाँ से अनन्तता तक आती रह सकती है। यह ऐसा लगता है कि जहाँ कहीं आप देखते हैं, टूटे हुए हृदय की बहुत बड़ी दीवार है जो कई ट्रक भोजन के पैकेटों, और दवाईयों, परामर्शदाताओं और स्वास्थ्य कर्ताओं के द्वारा पूरा नहीं होगा, हमें इस चक्र को तोड़ने के लिए और बहुत कुछ की जरूरत है। एक प्रेम क्रान्ति.....यही वह स्थान है जहाँ हम अपने जीवन के उद्देश्य को पाते हैं।

लूका 4 ये सन्देश बहुत स्पष्ट और बहुत जोर से देता हैः

> प्रभु की आत्मा मुझ पर है क्योंकि
> उस ने गरीबों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ। और प्रभु में प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ (लूका 4:18–19 देखें)।

प्रत्येक बार जब मैंने इस भाग को पढ़ा और पुनः पढ़ा मुझे यह स्मरण दिलाया गया, कि दूसरों के जीवनों को उठाने के अपने प्रयासों पर मैं केन्द्रित होऊँ और स्पष्ट होऊँ.....छोटी सी बात से बड़ी सी बात तक.....क्योंकि यह हमारे लिए खड़ा होने का समय है। जब हम अपने सामाजिक स्तर से बाहर निकलते, अपने आरामदायक और स्वार्थी जीवन से बाहर निकलकर और स्वयं को अपने उन भाईयों बहनों तक ले जाते जिन्हें पृथ्वी पर हमारी जरूरत है।

एक महान शब्द है जो सचमुच में सबसे अधिक ताकतवर शब्दों में से एक है, जो वास्तव में जीवन लाता है.....और वह शब्द आशा है। वचन कहता है. ....वह आशा हमारे प्राण के लिए ऐसा लंगर है (इब्रानियों 6:19 देखें).....और भजन 39:7 कहता है....."और अब हे प्रभु, मैं किस बात की बाट जोऊँ? मेरी आशा तो तेरी ओर लगी है।" आशा सदा जीवित है, चाहे परिस्थितियाँ कठोर या असंभव प्रतीत हो। हमारा उद्देश्य चोट खाये हुए लोगों में वह आशा देना है जो विश्वास और प्रेम के साथ आता है।

मेरा हृदय इतना अधिक तनावग्रस्त और खींचा हुआ था जब मैं ऐसे लोगों के लिए समाधान खोज रही थी, जो सबसे खराब, गरीबतम माहौल में रहते हैं, परन्तु जब आप उनके साथ बैठते हैं, जिनके पास कुछ नहीं है, और परिस्थिति आशाहीन दिखती है, आप परमेश्वर के करूणा के ऐसी सामर्थ को अनुभव करते हैं, जो ऐसे अद्भुत लोगों के बीच में रहता है। जब वे संघर्ष करते और अपनी जीवन यात्रा लेके बने रहने के लिए तनाव लेते हैं, तो परमेश्वर पुनः चमकता है या महिमा पाता है। मैंने बहुत से "आशा के बन्दियों" को देखा या पाया है, जैसा कि जकर्याह 9:12 में वचन कहता है (मैं इस विचार को प्यार करती हूँ).....जिसने बहुत सरल रीति से और फिर भी संपूर्ण रीति से विश्वास करता और जानता है कि केवल परमेश्वर ही उनका उत्तर और प्रबन्ध करनेवाला है।

मेरे व्यक्तिगत विचार से प्रभु को प्यार करना और अपने संपूर्ण जीवन से उसकी आराधना करना मेरे आत्मिक जीवन में सबसे ऊँची प्राथमिकता है..... उसे खोजना, उसे प्यार करना और उसकी सेवा करना। परमेश्वर के सभी कार्यों के लिए जो उसने किये हैं और जो कर रहा है एक उचित धन्यवाद देने के लिए हमें एक संपूर्ण अनन्तता की हमें निश्चय ही जरूरत होगी। एक विश्वास का गीत गाने और युद्ध के मध्य में यीशु को महिमा देने के लिए सिखा हुआ अनुशासन एक ऐसा पाठ था जिसे मैंने अपने हृदय की गहराई से सीखने का भरसक प्रयास किया। परन्तु जो सबक मैंने सीखना जारी रखा वह यह था कि प्रभु आराधना के द्वारा वास्तव में हमसे क्या चाहता है। और मैं सम्पूर्ण धर्मशास्त्र में इस विषय पर उसके हृदय की धड़कन सुनाई देती है कि आराधना उन गीतों से बढ़कर है परन्तु मानो इस ग्रह पर उसके हाथ और पैर होने के लिए अपने जीवन को उंडेल दें।

बहुत वर्षों पूर्व, मैंने अफ्रीका के एक एउस आश्रम में कुछ सुंदर बच्चों से मुलाकात की, उनमें से सभी अनाथ थे, और फिर भी वे सभी ऐसे लोगों के

उत्साह से भरे थे जिनके पास आशा थी। वे खड़े हुए और मेरे लिए गीत गाने लगे.....सब कुछ सम्भव है, जिससे मैंने बहुत अधिक चुनौती प्राप्त की और उनकी छोटी आवाजें जो माहौल में जीवन और आनन्द को भर दिया था उससे मैंने प्रेरणा प्राप्त की। एक अविस्मरणीय क्षण, और अपने जीवन में परमेश्वर के वचन की सामर्थ की और एक अविस्मरणीय यादगार।

इब्रानियों 13:15 यह कहता हैः "इसलिए हम उसके द्वारा स्तुति रूपी बलिदान, अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें।" आगे पद 16 कहता है, "पर भलाई करना और दयालु होना, उदार होना और (अवतार और संगति के प्रमाण के रूप में कलीसिया के) जरूरतमंद को देना और सहयोग करना न भूलो और अनदेखा न करो; क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न रहता है।"

परमेश्वर का एक गीत गाना, अनन्तता की महान गीत में शामिल होना, पृथ्वी पर के महान आनंदों में से एक है। सामर्थी होकर हम परमेश्वर के उपस्थिति से इन्धन प्राप्त करते हैं कि महान आज्ञा को जी सकें.....इन्धन से भरे हुये अपने हाथों को स्वर्ग की ओर उठाकर.....और तब अपने हाथों को सेवा के लिए तैयार रखते हैं। जैसा कि अगस्टिन ने कहा, "हमारा जीवन सिर से लेकर पाँव तक हाल्लेलुय्याह होना चाहिये।"

इस पर भी, गीत में आराधना करना स्वर्ग और पृथ्वी को बनानेवाले परमेश्वर की अपेक्षा के हिसाब से केवल एक प्रारंभिक बिन्दु मात्र है। चालीस बार से अधिक बार हमें एक नये गीत गाने के लिए निर्देश दिये गए हैं, और उससे अधिक भी हम बलिदान और परमेश्वर के सम्मुख मूल्यवान आज्ञाकारिता के लिए निमन्त्रित हैं, परन्तु लगभग 2,000 बार ऐसे संदर्भ दिये गये हैं जिसमें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिये कहा गया है जबकि हमारा जीवन बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया जाये, उन लोगों को देखकर जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संघर्ष करते हैं। यह स्मरण करना अच्छा है कि, बिना प्रार्थना के समय के, परमेश्वर के वचन पर मनन के और पूर्ण नरम और आश्चर्यजनक और मसीह के साथ गहरे संबन्ध के आश्चर्यजनक क्षणों के.....हमारे सेवा के कार्य जिनकी हम सेवा करते हैं उनसे अधिक स्वयं पर ध्यान देने से यूहीं "कार्य आधारित" हो सकते हैं।

आराधना करने के जानबूझकर बिताये गये समय निश्चय ही आपके हृदय को परमेश्वर की उपस्थिति के साथ सामना करने, परिवर्तित होने और फल पाने की

स्थिति तक पहुँचाती है। चूँकि मसीही चाल की यह संपूर्ण यात्रा हृदय की एक यात्रा है, तब आप देख सकते हैं कि अपनी संपूर्णत्व के साथ आराधना करना, सीखना क्यों इस प्रकार के कठिन कदम हैं। परमेश्वर ने हमेशा सत्य की इच्छा की है, जब यह उसके सेवा के संबन्धित बात होती है..... और सत्य आपके हृदय में आकार लेता है, जिसके कारण हमारे हृदय की सही दशा परमेश्वर के संबन्ध में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

"सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि
जीवन का मूल स्त्रोत वही है।"
(नीतिवचन 4:23)।

मैं कभी भी पास्टर बिल हाईबेल्स की चुनोती को नहीं भूलूँगी जो उन्होंने चिकागों के पास विलो क्रिक कम्यूनिटि चर्च में कुछ वर्षों पूर्व हमें दिया था, उनका कहना था कि मसीहियों और मसीही अगुवों के रूप में अन्याय के विषय में बात करना और अन्याय से संबन्धित डिविडि (DVDs) देखना ही काफी नहीं है, उन्होंने कहा कि हमें गरीबी को अनुमति देना चाहिये कि वह हमें छुए, वह हममें शामिल हो.....ताकि जीने की सुगन्ध और वास्तविकतायें हमारे लिये सच्च बनें कि हम सुविधाजनक स्थिति में उन्हें कभी भी भूल न जायें, या केवल उन्हें पैसा भेजकर वह महसूस करें कि हमने अपना काम कर दिया है। परन्तु परमेश्वर के महान प्रेम के कारण कार्य करने हेतु बुलाये जाने के कारण–कि हम उसके प्रेम को और उसके जीवन को बाँटते हैं, और हम उस पर भरोसा रखते हैं कि वह एक रास्ता बनाएगा, हाँ, यही एक यात्रा है जिस पर चलने के लिए हमें बुलाया गया है। और यही वह स्थान है जहाँ पर हमारा प्रेम कार्य में और हमारी आराधना हमारे संपूर्ण जीवन में दिखाई देती है।

"और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को
ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है।"
(मत्ती 18:5)।

"कौन मेरे बच्चों की देखभाल करेगा?" मरती हुई माँ, यह सोचकर रोती है कि बहुत जल्द ही उनके बच्चे पृथ्वी के उन करोड़ों बच्चों में शामिल हो जाएँगे जो अपनी नई माँ का इन्तजार करेंगे। मैंने ऐसे मित्रों को देखा है जो

कैंसर के कारण ऐसी प्रार्थनायें करते हैं। मैं इससे बढ़कर हृदय की टूटन के विषय में या गहरे अन्धकार के समय में निकली सिसकी के विषय में नहीं सोच सकती। मैं उससे जोर से कहना चाहती हूँ, "हम देखरेख करेंगे।" निश्चित रूप से यह ऐसा क्षेत्र है जहाँ हम अपने बाहों के ऊपर चढ़ते हैं, कठिनाई से निकलते हैं, प्रार्थना और विश्वास करते हैं, और विश्वास में कदम उठाते हैं। इन अनाथों को ढूँढ़ने के लिए जिन्हें परिवार की जरूरत है, आपको तीसरी दुनियाँ के देशों में रहने की जरूरत नहीं है, या उन अकेले लोगों को ढूँढ़ने के लिये जो मित्रता की खोज करते हैं; हममें से प्रत्येक शहर में रहते हैं जहाँ बच्चे सरकारी व्यवस्था के बीच में पीसते हैं और अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपना अच्छा प्रयास करते हैं, जिसे हम या कलीसिया आसानी से पूरा कर सकते हैं।

मैं कलीसिया से प्रेम रखती हूँ.....यह निश्चित ही इस भूभाग पर बड़े आत्मविश्वास और चमक के साथ बढ़नेवाली है। परन्तु कलीसिया अपनी उज्वल किसी में तब है, जब वह सबसे पहले प्राथमिकता के साथ परमेश्वर से प्रेम करे और अपने संपूर्णत्व के साथ जो उसके पास है.....और तब कलीसिया जिस जख्म भरे समाज और इस टूटे संसार की सेवा के लिये अपनी बाहें फैलाये खड़ी होगी कि वह लोगों को यीशु और इन सब बातों से संबन्धित करे। गरीबों का न्याय की ये आलोचना किये बिना केवल उनसे प्रेम रखना.....और प्रेम रखना मूल्यवान है, यह एक क्रिया शब्द है, न कि संज्ञा। साथ साथ, हम सचमुच में उन लोगों के लिये एक रिक्त स्थान में खड़े हो सकते हैं, जिनकी कोई आवाज़ नहीं है.....कि हमारे परमेश्वर प्रभु से प्यार अपने संपूर्ण हृदय, संपूर्ण मन, और संपूर्ण शक्ति के साथ प्रेम करने और अपने समान अपने पड़ोसियों से प्रेम करने के लिये। सच्च में भौचक्का करनेवाला है!

इसलिये इस विशालकार्य आशाहीनता का सामना कैसे करते हैं? किस प्रकार से हम उन लोगों के लिये द्वार खोलते हैं जो इस खतरनाक कैद खाने में बन्द हो गये हैं?

हममें से कोई भी इसका सामना स्वयं नहीं कर सकते हैं। यहाँ तक कि संसार की सबसे बुद्धिमान और मानवप्रेमियों को भी अधिक दूसरों की जरूरत होती है और विशेषज्ञों का समूह जो एक साथ मिलकर अधिक से अधिक लोगों को अधिक से अधिक लाभ देने के लिये काम करते हैं। परन्तु हमें एक प्रारंभ करने की जरूरत है; हमें एक बच्चे को गोद लेना चाहिये, हमारे समाज

के अन्य टूटे हुये लोगों की भी आवाज बनें, किसी ना किसी प्रकार से यदि आप सक्षम हैं तो इस आपात व्यवस्था में सहायता करें, (उदहरण के लिये, आपात चिकित्सा, अल्पकालिक या दीर्घकालिक देखरेख, सप्ताहम की कार्य योजनायें गठबन्ध), चैरिटी के लिये धन इकट्ठा करें या अपने हृदय की किसी जरूरत के लिये धन इकट्ठा करें, अपनी कलीसिया के पहल के परे जायें और सक्रिय हों, कुछ और सामान्य तरीके से जीवन बीतायें – मन से देने के लिये जीयें, केवल खर्च करने के लिये नहीं.....यह सूची अन्तहीन है।

परन्तु तुल्य रूप से महत्वपूर्ण है, कि हम यह सुनिश्चित करें कि हमारा स्वयं का हृदय और जीवन इन्धन से भरे और जीवित हैं कि चाहे जो भी अवसर प्रतिदिन की हिसाब से आते हैं चाहे वे वैश्विक हो या स्थानीय हों .....ठीक नेक सामरी की कहानी की समान, जो अपने पदवी से परे जाकर, अपने रास्ते से अलग जाकर उस व्यक्ति के लिये सहायता और हल ले आया जहाँ पर अन्य लोग यूहीं चले गये। ये सामरी दया से भरपूर हुआ.....और वह न केवल भावनात्मक रूप से चलायमान हुआ परन्तु वह सक्रिय रूप से प्रतिक्रिया भी दी।

और क्या मैं यह कहूँ कि यदि आप एक ऐसे मौसम से गुजर रहे हैं जहाँ आपको सेवकाई की जरूरत है, न कि एक देनेवाले बनें, तो उत्साहित हों। अपने आपको आराधना और स्तुति के एक ऐसे माहौल में रखें, अपने घर को संगीत से भर दें जो आपके हृदय को प्रेरणा देती हो, अपने कार को परमेश्वर के वचन की सि.डि.यों से भर दें, अपने परिवार, कलीसिया या समाज में रहें जहाँ आप जानते हैं कि आपको पोषण और प्रोत्साहन मिलेगा.....और प्रभु की आत्मा को लगातार आपको अन्दर बाहर भरने के लिये अनुमति दें। चाहे आपको चंगाई की जरूरत हो या कोई एक आर्थिक आवश्यकता हो, या एक संबन्ध के विषय में चमत्कार हो,.....हमारा परमेश्वर सक्षम है। अपने आपको प्रभु के सुरक्षित बाहों में जानें दें जो हमारा बल है, क्योंकि वह कभी भी आपको न तो त्यागेगा न छोड़ेगा; उस पर भरोसा करना सबसे बड़ा आनन्द और आशा है, जो आपके पास है। परन्तु मैं आपको इस महान स्मरणसूचक के साथ छोड़ती हूँ.....अपने संपूर्ण हृदय, संपूर्ण मन और बल के साथ प्रभु परमेश्वर को प्यार करना और अपने समान अपने पड़ोसी को प्यार करना। आप संपूर्ण रूप से मूल्यवान और धनी हैं, ये कभी ना भूलें!

सम्पूर्ण हृदय के साथ
डारलेन जेड़

हृदय की यात्रा सबसे जटिल भेदों में से एक है। इसमें आनन्द भी है, दुःख भी है। आशा करना और प्रतीक्षा करना भी है, और बहुतों के लिय यह अकथनीय निराशा है जो हमें और कुछ महसूस करने देना चाहता है। जब हम परमेश्वर के उस महान प्रेम को नहीं समझते जो हममें आने और हमें सामर्थ देने के लिए है, हमारे हृदय सामन्जस्य बिठाने, व्यवस्था करने या कठोर सच्चाईयों को जीने के लिये अन्य रास्ते अपनाता है, और यही वह स्थान है जहाँ धनी से गरीब तक, बहुत से लोग आज स्वयं को पाते हैं क्योंकि एक घर की अपनी खोज में हृदय की गरीबी कोई भेदभाव नहीं करती।

जैसा कि डारलेन ज्स्केख ने हमें स्मरण दिलाया है, यशायाह भविष्यद्वक्ता एक क्रान्तिकारी प्रेम के विषय में यशायाह 61:11 में कहता है, जब वह एक ऐसे दिन का वर्णन करता है, जिसमें प्रेम के कारण लोग अपने न्याय को प्राप्त करेंगे और यीशु उनके लिये जंगल में रास्ता निकालेगा। "क्योंकि जैसे भूमि अपनी उपज को उगाती, और बारी में जो कुछ बोया जाता है उसको वह उपजाती है, वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के सामने धार्मिकता और धन्यवाद को बढ़ाएगा।"

एक महान विचार से बढ़कर

प्रेम क्रान्ति एक बड़ा विचार ही नहीं है, परन्तु एक अनिवार्यता भी है यदि हम कुछ एक विपदापूर्ण अन्याय को संसार में आज देखते हैं, जिसमें मानवजाति की सबसे बड़ी विपत्ति भी शामिल है – अर्थात मनुष्य की मानवता का टूटा हुआ हृदय। भजन 27:3 कहता हैः "चाहे सेना भी मेरे विरूद्ध छावनी डाले, तौभी मैं न डरूँगा; चाहे मेरे विरूद्ध लड़ाई ठन जाए, उस दशा में भी मैं हियाव बांधे निश्चित रहूँगा।" यही सब मनुष्यों के हृदय में होने की जरूरत है।

अध्याय

2

समस्या की जड़

प्रसन्नता की कुन्जी प्रेम किया जाना नहीं है, परन्तु
प्रेम करने के लिये किसी का होना है।
अज्ञात

किसी वस्तु का जड़ उसका श्रोत होता है – यह प्रारंभ है, यह नीव का आधार है। जड़ हमेशा अन्दर होती है। और उसके कारण अक्सर हम उन्हें अनदेखा कर देते हैं और केवल उन बातों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं जो हम धरातल पर देख सकते हैं। एक व्यक्ति जिसे दान्त का दर्द है उसे रूट केनाल इलाज की आवश्यकता होती है। दाँत की जड़ सढ़ी हुई होती है और अवश्य ही उसका इलाज़ किया जाना चाहिये अन्यथा वह दाँत का दर्द कभी भी नहीं रूकता है। दाँत की जड़ दिखाई नहीं देती है, परन्तु आप जानते हैं कि वह है क्योंकि दर्द बहुत अधिक होता है। संसार जख्म देनेवाला है और वह दर्द कभी नहीं रूकता जब तक हम समस्या के जड़ तक नहीं पहुँचते हैं। जो व्यक्ति विशेष को और समाज को महामारी में जकड़ लेता है। मैं विश्वास करती हूँ कि वह जड़ स्वार्थता है।

एक ऐसी समस्या के बारे में सोचने का प्रयास किया है, पर मैं ऐसी कोई भी समस्या नहीं ढूँढ़ पाई हूँ। लोग अपनी इच्छापूर्ति करने या उसे पाने के

मैंने एक ऐसी समस्या के बारे में सोचने का प्रयास किया है,
पर मैं ऐसी कोई भी समस्या नहीं ढूँढ़ पाई हूँ।

लिये दूसरों की जिन्दगी नाश करने के विषय में अधिक नहीं सोचते हैं। एक शब्द में कहूँ तो, स्वार्थता संसार के सभी समस्याओं की एक मात्र जड़ है।

स्वार्थता के हजारों चेहरे होते हैं

स्वार्थता के हजारों चेहरे होते हैं और शायद इसीलिये हम नहीं पहचान पाते हैं कि वह निश्चित रूप से क्या है। यह हम शिशुओं में देख सकते हैं जो अपनी चाहत की वस्तु न पाने पर चीखते चिल्लाते हैं और ऐसे बच्चों में पातें हैं जो दूसरों के खिलौने छीनते हैं। यह हमारी ऐसी इच्छाओं में भी प्रगट है जो हम दूसरों से करने का प्रयास करते हैं। स्वार्थता सब बातों में आगे रहने की इच्छा रखना भी है, और जब श्रेष्ठत्तम तरीके से कार्य करने के लिये इन्तजार करने में कुछ भी बुरा नहीं है, तब यह देखकर आनन्द मनाना बुरा है जब लोग पराजित होते हैं ताकि हम सफलता प्राप्त करें।

मैं विश्वास करती हूँ कि हर प्रकार का स्वार्थ बुरा है और यह समस्या उत्पन्न करता है। इस भाग में, मैं आपका ध्यान तीन विशेष प्रकार के स्वार्थ की ओर खिंचना चाहती हूँ जो आज के संसार में सर्वसाधारण है, और उन नकारात्मक परिणामों की ओर जो ये उत्पन्न करते हैं।

यौन दुर्व्यवहार ऐन तेरह वर्षीयी लड़की है। उसके पिता उसे कहते हैं कि वह अब एक महिला बन चुकी है और इसलिये उसे भी वह सब कार्य करना चाहिये जो एक महिला करती है। एक महिला होने का अर्थ क्या है यह जब उसके पिता उसे दिखा चुके होते हैं तो वह शर्मिन्दा, भयभीत और गन्दा महसूस करती है। यद्यपि उसके पिता उसे निश्चय दिलाते हैं कि जो भी वह करते हैं वह अच्छा है, तो उसे आश्चर्य लगता है कि तो फिर क्यों इसे गुप्त रखने की बात करते हैं और उसे यह क्यों इतना बुरा लगता है। वर्षों तक गुजरने पर उसके पिता उसके साथ लगातार यौन दुर्व्यवहार करते हैं और उसका बलात्कार करते हैं, ऐन भावनात्मक रूप से मर जाती है अतः अब वह कोई दर्द महसूस नहीं करती है। ऐन के पिता ने उसका बचपन, उसका

कौमार्य, उसकी मासुमियत, और परमेश्वर के हस्तक्षेप के, उन्होंने उसका जीवन अपहरण कर लिया है – जो कुछ वह चाहते थे वह उससे पाने के लिये।

ऐसे कौटुम्बिक व्यभिचार की कहानियाँ सुनकर हमें बुरा लगता है, परन्तु सत्य यह है कि 90–95 प्रतिशत घटनायें सामने नहीं आ पाती है। अपने पिता के द्वारा मैंने वर्षों तक यौन दुर्व्यवहार सहा था। मैंने दो विभिन्न समयों पर किसी से कहा कि मेरे साथ क्या हो रहा है, और चूँकि उन्होने मेरी सहायता नहीं की, और तब तक मैंने यह सब सहा जब तक मैं बड़ी नहीं हो गई और अन्ततः अपनी कहानी बोलने और परमेश्वर से चंगाई पाना प्राप्त नहीं की। मेरे पिता छयासी वर्ष की उम्र में बिना अपराध की दण्ड का उचित दण्ड पाये, मर गये। वे लोग जो वे उनके साथ काम करते थे, और पार्टियों और पिकनिक जाते थे, वे कभी नहीं जानते थे कि वह अपनी बेटी का बलात्कार करते हैं, क्योंकि उनकी बेटी बहुत ही छोटी थी।

हम वह देखते हैं जो लोग करते हैं और उनका न्याय करने में जल्दी करते हैं। परन्तु हम जदाकदा ही यह जानते हैं कि उनके व्यवहार का मूल कारण क्या है। बहुत सी महिलायें जो "समाज में समस्या" बनती हैं वे कौटुम्बिक व्यभिचार के शिकार होते हैं। उदाहरण के लिये,

- 66 प्रतिशत वेश्यायें गौतम्भिक व्यभिचार के शिकार होते हैं।
- 36.7 प्रतिशत यू.एस्. की महिला कैदियों बचपन में यौन दुर्व्यवहार का शिकार हुई होती हैं।
- यौन दुर्व्यवहार और तिरस्कृत बच्चों में से एक तीहाई बच्चे बड़े होकर अपने स्वयं के बच्चों से दुर्व्यवहार करते और उनका तिरस्कार करते हैं।
- यौन दुर्व्यवहार के शिकार हुये बच्चों में से 94 प्रतिशत बच्चे बारह साल की कम उम्र की होती हैं।

हमारे संसार में कौटूम्भीक और यौन दुर्व्यवहार के द्वारा उत्पन्न दुःख या दर्द मात्र ही सन्न कर देनेवाला है और यह सब कुछ इसलिये प्रारंभ हुआ क्योंकि लोग स्वार्थी थे और इसकी परवाह नहीं करते थे कि वह किसे चोट पहुंचा रहे हैं जब तक उन्हें जो चाहिये उसे पा ना लें।

निश्चित ही, शायद आप किसी की हत्या न करें, चोरी न करें, झूठ न बोलें, या बच्चों के प्रति हिंसक कार्य न करें, परन्तु अभी भी अवसर है कि आप कई

तरीकों से स्वार्थी हों। यदि हम अपने स्वयं के स्वार्थी व्यवहार को माफ करने का साहस करें उन लोगों की ओर उंगली उठाकर जिनका अपराध हमसे बढ़कर होता है तब हम कभी भी सफलतापूर्वक आज की समस्याओं का निराकरण नहीं कर सकते हैं। हममें से प्रत्येक को अपने स्वार्थी व्यवहार का निराकरण करने के लिये उत्तरदायित्व अवश्य लेना चाहिये, चाहे वह किसी भी स्तर पर हो या चाहे हम कैसे भी अभिव्यक्त करते हों।

लालच स्वार्थता क्रमशः लालच का रूप ले लेती है। लालच एक ऐसी आत्मा है जो कभी सन्तुष्ट नहीं होती है और हमेशा और चाहती है। आज हमारा समाज उपभोक्तावाद का शिकार बन चुका है। मुझे आश्चर्य होता है जब मैं अपने वाहन चलाते हुये चारो तरफ ऐसे मल्स् को देखती हूँ जो बहुत सारे बन गये हैं। हर कहीं हम देखते हैं कि प्रत्येक खरीदारी पर कुछ ना कुछ ऑफर दिया जा रहा है। और सामान, और सामान, और अधिक सामान – और यह सब एक प्रकार का भ्रम है। यह एक आसान जीवन तथा अधिक आनन्द का वादा करता है परन्तु बहुत से लोगों के लिये यह कर्ज का बोझ बन जाता है।

अधिक से अधिक खरीदारी करने का दबाव और परीक्षा हमें स्वार्थता में बनाये रखता है। परन्तु सुसमाचार यह है कि यदि हम वास्तव में चाहते हैं तो बदल सकते हैं। आईये हम वह खरीदना सीखें जिसकी हमें जरूरत है, और कुछ वे चीजें जो हम चाहते हैं और तब आईये हम अपनी बहुत अधिक संपत्तियां देना सीखे। विशेष करके तब जब हम उसे इस्तेमाल नहीं करते, ऐसे किसी के पास जिससे हमसे कम हैं। आईये देने का अभ्यास तब तक करें जब तक वह प्रथम और सबसे अधिक स्वाभाविक बात न हो जाये जो हम प्रतिदिन अपने जीवन में करते हों। बहुसंख्यक लोगों के लिये यह एक जीने का क्रान्तिकारी तरीका सच में हो सकता है।

बाइबल कहती है धन का मोह सब प्रकार की बुराई का जड़ है (1 तिमुथियुस 6:10 देखिये)। लोगों द्वारा धन से प्रेम करने का एक मात्र कारण और इसे पाने के लिये कुछ भी करने के लिये तैयार होने का एक मात्र कारण ये है कि वे धन से सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं। वे विश्वास करते हैं कि इससे प्रसन्नता खरीदी जा सकती है। लोग लगतार हत्याएँ करते हैं, चोरी करते हैं, और धन के लिये झूठ बोलते हैं – और यह सब कुछ स्वार्थता की बीमारी में जड़ पकड़ा हुआ है। हाल ही में मैंने एक प्रसिद्ध अभिनेता का विश्वास करते हैं, कि यदि उनके पास वो सब कुछ हो जाये जो उन्हें चाहिये तो प्रसन्न

होंगे। परन्तु यह एक झूठी प्रतिज्ञा है। उन्होंने आगे कहना जारी रखा कि उनके पास सब कुछ था जो एक मनुष्य को चाहिये था, और ये वस्तुयें अब भी उन्हें प्रसन्न नहीं कर सकती थी। क्योंकि एक बार एक व्यक्ति यदि संसार में सब कुछ पाने के लक्ष्य तक पहुँच जाए उसके बाद वे स्वयं के साथ ही रहते हैं।

तलाक स्वार्थता तलाक का भी मूल कारण है। अधिकांशतः लोग या अक्सर लोग गलत व्यवहार के विषय में गलत विचारों के साथ विवाह करते हैं। हममें से बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं कि जीवन साथी एक ऐसा है जो हमें प्रसन्न रखना चाहिये, और जब इस प्रकार नहीं होता है, तब लड़ाई शुरू होती है। बातें कितनी भिन्न होती यदि हम विवाह करते और अपने जीवन साथी को प्रसन्न रखने के लिये जो कुछ कर सकते हैं उसे करने के लिये अपने मन को व्यवस्थित करें।

इस समय आप सोचते होंगे, *मैं ऐसा नहीं करता क्योंकि मुझे मालूम है कि इससे मेरा फायदा उठाया जाएगा।* मेरा प्राथमिक वर्षों में मैं यह मान ली होती। परन्तु लगभग बुरा जीवन जीने के पश्चात् मैं विश्वास करती हूँ कि सचमुच में बाइबल सत्य है, ये सीखाती है कि प्रेम कभी पराजित नहीं होता (1 कुरिन्थियों 13:8 देखिये)। यह ये भी कहती है कि एक मनुष्य जो कुछ बोता है, "वही और केवल वही" वह काटता है (गलातियों 6:7)। यदि मैं बाइबल में विश्वास करती, और मैं ऐसा करती हूँ, तो मैं विश्वास करती हूँ कि मैं अपने जीवन की फसल काटने का उत्तरदायी हूँ, क्योंकि ये उन बीजों से आया है जिन्हें मैंने बोया है। यदि हम दया को बोते हैं तो दया को काटते हैं; यदि हम नम्रता को बोते हैं तो नम्रता को काटेंगे।

मेरे मन में हमेशा मैं थी

जब मैं पीछे मुड़कर डेव के साथ अपने विवाहित जीवन को देखती हूँ तो मुझे विस्मय होता है कि मैं कितनी अधिक स्वार्थी थी, विशेष करके प्रारंभिक दिनों में। मैं ईमानदारी पूर्वक कह सकती हूँ कि मैं कुछ भी अच्छा नहीं जानती थी। घर में जहाँ पर मैं बड़ी हुई जो कुछ मैंने देखा है वह स्वार्थ था और मुझे इससे भिन्न सिखाने के लिये कोई नहीं था। यदि मैं जानी होती कि लेनेवाले के बदले में देनेवाला कैसे बनते हैं तो मुझे निश्चय है कि विवाह के प्रारंभिक वर्षों के दिन उससे अच्छे होते जितने कि वे थे। चूँकि परमेश्वर मेरे जीवन में

था, मैंने चीजों को बदलते हुए और पुराने जख्मों को भरते हुये देखा है। परन्तु मैंने बहुत से वर्षों को बेकार कर दिया है जो मैं वापस नहीं पा सकती।

मेरी परवरिश जिस रीति से हुई उससे एकदम भिन्न डेव एक मसीही परिवार में बड़े हुये। उनकी माता एक भक्त महिला थी जो प्रार्थना करती और बच्चों को देना सीखाती थी। अपने परवरिश के परिणाम स्वरूप डेव ऐसी विशेषताओं को लेकर बड़े हुये जिसे मैंने अपने संपूर्ण जीवन तक नहीं देखा था जब तक मैं उनसे न मिली थी। उनका उदाहरण मेरे लिये अद्‌भुत रूप से किमती था। वे बहुत अधिक धीरजवन्त थे, जो प्रेम का एक पहलु है, तो मुझे निश्चय है कि हमारा विवाह नहीं टिक पाता, परन्तु मैं परमेश्वर का धन्यवाद करती हूँ कि वह टिक गया। और विवाह के चालीस वर्षों के पश्चात् मैं ईमानदारी पूर्वक कह सकती हूँ कि वह हर समय अच्छा होता जाता है। मैं किसी भी समय से अधिक आनन्दित हूँ क्योंकि मैं अपने संबन्ध में हर कभी से बढ़कर समय व्यतीत करती हूँ। मैं सचमुच में डेव को अपने पसन्द के कार्य करते हुये आनन्द पाते हुये देखकर आनन्दित होती हूँ, और ये मेरे उस स्वाभाव से बढ़कर भिन्न है जब मैं प्रत्येक बार क्रोधित होती थी जब मेरे तरीके से बातों को न होते हुये देखती थी।

मेरे मन में हमेशा मैं रहती थी, और ये सब कुछ तब तक नहीं बदला जब तक मैं इस मैं और मैं की भावना से परेशान न हुई। यीशु बन्दियों को खोलने और कैदियों को छुड़ाने आया (यशायाह 61:1 देखें)। उसने मुझे बहुत सी बातों से छुड़ाया, उसमें से सबसे बड़ा मैं की धारणा थी। मैं स्वयं से छुड़ाई गई! मैं इस स्वतन्त्रता में लगातार बढ़ती हूँ, परन्तु मैं यह समझकर धन्यवादी हूँ, कि वास्तविक आनन्द हमेशा स्वयं के रास्ते में चलने में नहीं होता है।

संभवतः मेरे समान, आपके जीवन में भी ऐसे बड़े उदाहरण थे और कुछ बातों को भूलने की आवश्यकता है जिनको आपने पुराने दिनों में सिखा है। ईमानदार बनें: जब आपको जो चाहिये वह नहीं मिलता है तब आप किस प्रकार प्रतिक्रिया दिखाते हैं? क्या आप क्रोधित होते हैं? क्या आप कुड़कुड़ाते या शिकायत करते हैं? क्या आप परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं कि वह आपकी देखभाल करेगा या आप भय में जीवन व्यतीत करते हैं कि यदि आप अपनी चिन्ता नहीं करेंगे, तो कोई नहीं करेगा? यह विश्वास करना कि आपको आपकी देखभाल करनी है आपको स्वार्थता की ओर ले जाता है, जो एक अप्रसन्न जीवन तक पहुँचाता है। मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप स्वार्थता से आज ही मुड़ जायें और अन्य लोगों को सचमुच में प्रेम करना और उनकी देखभाल करना, और उनके अहमियत को समझना प्रारंभ करें।

स्वार्थता एक चुनाव है

हममें से अधिकांश लोग सोचने, बात करने, और अपने लिये योजनायें बनाने में अधिक समय व्यतीत करते हैं। यद्यपि मैं सत्यरूप से सिखाती हूँ कि हमें स्वयं से एक संतुलित रीति से प्रेम करना चाहिये, मैं विश्वास नहीं करती कि हमें स्वयं से इतना अधिक प्रेम करना चाहिये कि हमारी दुनियाँ का केन्द्र हम ही बन जायें और हम केवल इन बातों की चिन्ता करें कि हमें क्या चाहिये। हर प्रकार से हमें अपनी देखभाल करनी चाहिये क्योंकि पृथ्वी पर परमेश्वर की योजना में हम बहुत अधिक किमती हैं। उसने हमें जीवन दिया इसलिये हमें इसका आनन्द उठाना चाहिये (यूहन्ना 10:10 देखें)। इसलिये हमें ऐसा करना चाहिये, परन्तु हमें यह समझने में पराजित नहीं होना चाहिये कि प्रसन्नता का सही मार्ग स्वयं के जीवन को पकड़े रखने से अधिक स्वयं के जीवन को दे देना है।

यीशु कहता है कि यदि हम उसके चेले बनना चाहते हैं तो हमे स्वयं को भूलना चाहिये, स्वयं के दृष्टि को खोना चाहिये, और अपने स्वयं के इच्छाओं को छोड़कर उसके पीछे चलना चाहिये (मरकुस 8:34 देखें)। अब, मैं स्वीकार करती हूँ कि यह एक डरावना विचार है, परन्तु मुझे इससे लाभ है क्योंकि मैंने बहुत लम्बा जीवन व्यतीत किया है और सच में प्रयास भी किया है और पाया है कि यह कार्य करता है। यीशु आगे कहता है कि यदि हम ''तुच्छ'' जीवन (स्वार्थता का जीवन) छोड़ देते हैं, तो हम उच्च जीवन प्राप्त करेंगे (निस्वार्थ का जीवन), परन्तु यदि हम तुच्छ जीवन को बनायें रखते हैं तो हम अपने उच्च जीवन को खो देंगे (मरकुस 8:35 देखिये)। वह हमें चुनाव करने का विकल्प देता है कि हम किस प्रकार जीएँगे। वह हमसे कहता है कि क्या भला होगा और तब हमें निर्णय करने का विकल्प देता है कि हम क्या करते हैं और क्या नहीं करते हैं। मैं स्वार्थी बना रह सकता हूँ और आप भी ऐसा हो सकते हैं, परन्तु सुसमाचार यह है कि हमें ऐसा करने की जरूरत नहीं है। हमारी सहायता के लिये हमारे पास परमेश्वर की सामर्थ उपलब्ध है कि वह हमसे बचाकर किसी की भलाई करने के लिये जीवन व्यतीत कर सकें।

यात्रा

स्वार्थता सीखा हुआ व्यवहार नहीं होता है; हम उसके साथ पैदा होते हैं। यह हमारे स्वाभाव का एक अन्तः प्रजात भाग होता है। बाइबल इसे "पापमय

स्वभाव" की संज्ञा देती है। आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरूद्ध वह काम करते हुये पाप किया जिसको न करने के लिये उसने कहा था, और पाप का यह सिद्धान्त जिसे उन्होंने स्थापित किया वह हमेशा के लिये हर व्यक्ति में आता है जो पैदा होता है। परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को पाप हेतु मरने के लिये भेजा, और हमें उनसे छुड़ाये। आदम ने जो किया उसे खोलने के लिये वह आया। जब हम यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं वह हमारे आत्मा में रहने के लिये आता है, और यदि हम अपने निर्णयों पर उस नवीनीकृत भागों को शासन करने देते हैं, तब हम उस पापमय स्वभाव पर विजय पा सकते हैं जो हमारी देह में है। यह जाता नहीं है, परन्तु वह महान जो हममें जीता है प्रतिदिन हमें उस पर विजय पाने में हमारी सहायता करता है (गलातियों 5:16 देखिये)। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि हम कभी पाप नहीं करते, परन्तु हम अपने जीवन भर उन्नति और बढ़ती पा सकते हैं।

मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकती कि मैंने स्वार्थता पर संपूर्ण रूप से विजय पा लिया है, और मुझे सन्देह है कि कोई ऐसा कह सकता है। ऐसा कहना यह कहने के समान होगा कि मैं कभी पाप नहीं करता, क्योंकि सभी पाप किसी ना किसी प्रकार के स्वार्थता में से उत्पन्न होता है। मैंने स्वार्थता पर संपूर्ण विजय नहीं पायी है, परन्तु मुझे प्रतिदिन उन्नति की आशा है। मैं एक यात्रा पर हूँ और यद्यपि मैं पहुँची नही हूँ मैंने निर्णय लिया है कि जब यीशु मुझे घर ले जाने आता है, तब वह मुझे अपने लक्ष्य तक पहुँचा हुआ देखेगा (फिलिप्पियों 3:12–13 देखिये)।

प्रेरित पौलुस ने इस प्रकार से कहा हैः ''अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह (मसीहा) मुझ में जीवित है'' (गलातियों 2:20)। पौलुस का तात्पर्य था कि वह अब आगे को अपने लिये और अपनी इच्छा के लिये नहीं जीता है, परन्तु परमेश्वर और उसकी इच्छा के लिये। एक दिन मैं बहुत अधिक प्रोत्साहित हुई, जब मैंने अध्ययन के दौरान यह पाया कि पौलुस ने लगभग अपने मन परिवर्तन के बीस वर्ष के पश्चात् ये कथन कहे। निःस्वार्थ जीवन व्यतीत करना सीखना उसके लिये एक यात्रा थी, ठीक उसी प्रकार जैसा किसी अन्य के लिये है। पौलुस ने यह भी कहा, "मैं प्रतिदिन मरता हूँ (मैं प्रतिदिन मृत्यु का सामना करता और स्वंय में मरता हूँ)" (1 कुरिन्थियों 15:31)। दूसरे शब्दों में, अन्य लोगों को सबसे पहले रखना एक प्रतिदिन की लड़ाई थी, और इसमें प्रतिदिन के निर्णय शामिल थे। हममें से प्रत्येक को निर्णय लेना चाहिये कि

हमें किस प्रकार जीना है और हमें कैसे जीना है, और अब से बढ़कर ऐसा करने के लिये और उत्तम समय नहीं है। आपके और मेरे पास जीने के लिये एक ही जीवन है और देने के लिये भी एक ही जीवन है, इसलिये एक ही प्रश्न है: "तब हम किस प्रकार जीएँगे?" मैं निश्चित रूप से विश्वास करती हूँ कि हममें से प्रत्येक दूसरों की भलाई में अपना भाग सबसे पहले करें, तब हम देखे और एक ऐसे क्रान्ति के भाग हो सकते हैं जिसके पास संसार को बदलने की सामर्थ है।

कोई भी मनुष्य एक द्वीप नहीं है

मुझे निश्चय है कि आपने जॉन डॉन की यह प्रसिद्ध पंक्ति सुनी होगी, "कोई भी मनुष्य एक द्वीप नहीं है।" ये शब्द इस सच्चाई को अभिव्यक्त करने का एक तरीका मात्र है कि लोगों को एक दूसरे की जरूरत होती है और वे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। ठीक उसी प्रकार मेरे पिता के जीवन ने मेरे जीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया और डेव के जीवन ने मुझे सकारात्मक रूप से प्रभावित किया, हमारा जीवन लोगों को प्रभावित करता और कर सकता है। यीशु ने हमसे दूसरों से प्रेम करने के लिये कहा, क्योंकि यही एक मात्र तरीका है संसार उसके अस्तित्व को जानें (यूहन्ना 13:34–35 देखिये)। परमेश्वर प्रेम है, और जब हम अपने शब्दों और कार्यों में प्रेम दर्शाते हैं तो हम लोगों को यह दिखाते हैं कि परमेश्वर किस प्रकार है। पौलुस ने कहा कि हम परमेश्वर के राजदूत हैं, उसके व्यक्तिगत प्रतिनिधि, और वह हमारे द्वारा संसार से बात करता है (2 कुरिन्थियों 5:20)। प्रत्येक बार जब मैं इस वचन पर विचार करती हूँ तो मैं इतना कह सकती हूँ, "वाह! कितना बड़ा सुअवसर और उत्तरदायित्व।"

बहुत से पाठों में से एक जो मुझे अपने जीवन में सीखना था वह था कि बिना उत्तरदायित्व के मुझे अवसर प्राप्त नहीं होता है। यह हमारी वर्तमान समाज की समस्याओं में से एक है। लोग वह चाहते हैं जिसके वे लायक नहीं हैं! स्वार्थ कहता है, "यह मुझे दो। मुझे यह चाहिये और मुझे यह अभी चाहिये।" बुद्धि कहती है, "मुझे कुछ भी न दो मैं इतना परिपक्व नहीं हूँ कि इसका सही इस्तेमाल कर सकूँ।" संसार में धन्यवादी लोग कम हैं और यह इसलिये क्योंकि हम इन्तजार करना या किसी बात के लिये त्याग करना नहीं चाहते हैं। मैंने चीजों को प्राप्त किया है और जिनके लिये मैं बहुत अधिक धन्यवादी हूँ वे ऐसी वस्तुयें हैं जिनके लिये मैंने बहुत अधिक परिश्रम किया

और बहुत इन्तजार किया है। बातें जो आसानी से आती हैं उनकी हमारे लिये अधिक कीमत नहीं होती है।

बहुत सी रीति से, हम बच्चों की एक ऐसी पीढ़ी को बढ़ा रहे हैं जो स्वार्थी है, क्योंकि हम उन्हें बहुत जल्दी बहुत कुछ दे देते हैं। हम उनकी साइकिल चलाने के एक साल पहले ही उनके लिये साइकिल खरीद देते हैं या सोलह साल की उम्र पूरी करने से पहले हम उनके लिये कार खरीद देते हैं। जब उनका विवाह होता है तो उनके लिये घर खरीदते हैं, और उन घरों को महँगी वस्तुओं से भर देते हैं, तब जो हमारे बच्चे आर्थीक परेशानी में फँस जाते हैं, तो यदि संभव हो तो हम उन्हें उसमें से बाहर निकालते हैं, और उनकी जरूरत के हर समय हम उनके लिये उपस्थित होते हैं। हम प्रेम के नाम से यह सब कुछ करते हैं, परन्तु क्या हम सचमुच अपने बच्चों से प्रेम करते हैं या हम केवल उनसे लाड़ प्यार कर रहे हैं। कभी–कभी ऐसा करने के द्वारा माता–पिता अपने उस समय के लिये भूगतान करने का प्रयास करते हैं जो उनके बचपन में वे उनके साथ नहीं गूजार पाये। बच्चों को बहुत कुछ देना उनकी अपराध भावना को शान्त करता है, और यदि यह एक विकल्प है, तो माता–पिता के लिये अपने व्यस्त जीवन में पैसा फेंकना बहुत आसान लगता है।

हम सब अपने बच्चों को आशीष देना चाहते हैं, परन्तु हमें इस बात में अनुशासनता अनुभव करना चाहिये कि हमे उनके लिये कितना करना चाहिये। राजा सुलैमान हमें "बुद्धि की शिक्षा" इस्तेमाल करने की सलाह देता है (नीतिवचन 1:3 देखिये)। कभी "ना" कहना भी बच्चों के लिये श्रेष्ठ उपहार होता है जो हम उन्हें दे सकते हैं, क्योंकि यह उन्हें अवसर और उत्तरदायित्व के मूल्यवान पाठ सीखाने में सहायता कर सकता है।

आदर्शउदारता

न केवल अपने बच्चों के सामने परन्तु अन्य लोगों के सामने भी एक आदर्श उदारता का जीवन व्यतीत करें जिनके आप संपर्क में आते हैं। यदि आप जीवन में एक लेनेवाले से बढ़कर देनेवाले होते हैं, तो उन्हें ये समझने में अधिक समय नहीं लगता है कि आप अन्य लोगों से अलग हैं जिनके साथ उनकी आदत है। तब जब वे आपके आनन्द के गवाह होते हैं वे रिक्त स्थान को भरने और यह समझने में सक्षम होते हैं कि देना एक व्यक्ति को स्वार्थी होने के परे आनन्दित बनाता है। लोग देखते हैं और मैं आश्चर्यचकित हूँ, कि वे क्या कुछ ध्यान देते और याद रखते हैं।

पौलुस ने कहा, कि सब लोगों को तुम्हारी निःस्वार्थता, तुम्हारी विचारशीलता और तुम्हारी सहनशीलता आत्मा को देखने और जानने दो (फिलिप्पियों 4:5)। यीशु ने हमें उत्साहित किया कि तब लोग हमारे अच्छी और भलाई और हमारे दयालुपूर्ण कार्य को देखें ताकि परमेश्वर को पहचाने और उसकी महिमा करें (मत्ती 5:16 देखिये)। यीशु का तात्पर्य यह नहीं था कि हम दिखावे के लिये कुछ करें; वह हमें यह समझने के लिये प्रोत्साहित करना चाहता था कि हम अपने चारों तरफ के लोगों को कितना अधिक प्रभावित करते हैं। निश्चय ही नकारात्मक व्यवहार दूसरों को प्रभावित करता है, जैसा कि मैंने कहा, परन्तु उदारता भी हमारे चारो ओर के लोगों को बहुत ही सकारात्मक रीति से प्रभावित करता है और हमें आनन्दित लोग बनाता है।

मेरे विषय में क्या?

ठीक इस समय, आप सोच रहे होंगे, *मेरे विषय में क्या? मेरे लिये कौन कुछ करने जा रहा है?* यह सामान्यतः हमें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीने में रोकनेवाली बात है, जैसा कि वह चाहता है कि हम जीयें। यह हमेशा "मैं" पर आकर रूक जाता है। मेरे विषय में क्या, मेरे विषय में क्या, मेरे विषय में क्या? हम अपनी इच्छाओं को सन्तुष्ट होते हुये देखने के इतने आदि होते हैं, कि एक दिन के लिये भी अपने बारे में भूल जाने का विचार हमें डरावना लगता है। परन्तु, यदि हम ऐसा करने का प्रयास करने का साहस करें तो हमें वह स्वतन्त्रता और आनन्द जो हम अनुभव करेंगे उससे बहुत अधिक आश्चर्य होगा।

मेरे जीवन के अधिकांश दिनों में, मैं प्रतिदिन सुबह उठकर मेरे बिस्तर में लेटे–लेटे ही स्वयं के लिये योजनायें बनाती थी। मैं विचार करती थी कि मुझे क्या चाहिये और मेरे लिये क्या उत्तम होगा और मेरे परिवार और मित्रों को मेरी योजना में सहभागि होने के लिये कैसे कायल करूँगी। मैं स्वयं को अपने मन में रखकर बिस्तर से उठती और अपना दिन व्यतीत करती और प्रत्येक बार जब बातें मेरे अनुरूप नहीं होती, मैं निराश हो जाती, अधैर्यवान हो जाती, और निरूत्साहित और यहाँ तक कि क्रोधित भी हो जाती। मैंने सोचा कि मैं इसलिये अप्रसन्न हूँ, क्योंकि जो मुझे चाहिये वह मुझे नहीं मिलता है, परन्तु वास्तव में मैं अप्रसन्न इसलिये थी, क्योंकि जो कुछ मैं करती थी वह केवल अपनी इच्छा को पाने का प्रयास ही था, जिसमें अन्य लोगों के लिये कोई भी विचार नहीं था।

अब मैं यह खोज रही हूँ कि आनन्द का रहस्य अपने जीवन को पकड़े रखने से अधिक उसे दूसरों के लिये दे देने में है, अब मेरी सुबह भिन्न हो गई हैं। इस सुबह इस अध्याय से प्रारंभ करने से पहले मैंने प्रार्थना किया और उन सभी लोगों के विषय में सोचने के लिये कुछ समय लिया जिन्हें मैं जानती थी या आज जिनके संपर्क में मैं आती हूँ। तब मैंने रोमियों 12:1 के द्वारा प्रार्थना किया, जो स्वयं को परमेश्वर के सामने जीवित बलिदान के रूप में समर्पित करने और अपने शरीर के सारे अंगो को उसके इस्तेमाल के लिये देने के विषय में कहती है। जब मैंने लोगों के विषय में सोचा जिनके साथ मैं काम करती या शायद आज उन्हें देखती मैंने प्रभु से कुछ ऐसा दिखाने के लिये कहा, जो मैं उनके लिये कर सकती हूँ। मैंने अपने मन को उन्हें प्रोत्साहित करने के लिये व्यवस्थित किया और उनके लिये शुभ होने के लिये। निश्चय ही हम सब एक अच्छी बात अपने मिलनेवाले प्रत्येक व्यक्ति से कहने के लिये पा सकते हैं। मात्र इतना करने का प्रयास करना अपने मन को अपने से दूर रखने या अहम् से दूर रखने में हमारी सहायता करेगी। मैं भरोसा करती हूँ कि प्रभु आज के दिन मेरी अगुवाई करेगा।

यदि आप अपने आपको परमेश्वर के हाथों में सौंपना चाहते हैं कि वह आपको दूसरों से प्यार करने और सहायता करने में इस्तेमाल कर सके, मैं आपको सलाह दूँगी कि आप इस प्रकार से प्रार्थना करें, "प्रभु, मैं अपनी आँख, कान, मुँह, हाथ, पैर, हृदय, धन, उपहारें, अपनी गुण, योग्यतायें, समय और सामर्थ, अपनी ऊर्जा आपको देता हूँ। आज जहाँ कहीं भी मैं जाऊँ वहाँ आशीष बनने के लिये मेरा इस्तेमाल करें।"

> ''प्रभु, मैं अपनी आँख, कान, मुँह, हाथ, पैर, हृदय, धन, उपहारें, अपनी गुण, योग्यतायें, समय और सामर्थ, अपनी ऊर्जा आपको देता हूँ। आज जहाँ कहीं भी मैं जाऊँ वहाँ आशीष बनने के लिये मेरा इस्तेमाल करें।''

जब तक आप वास्तव में प्रयास नहीं करते हैं, आप कभी भी इस प्रकार के जीने के आनन्द को नहीं जानेंगे। मैं इसे "एक पवित्र" आदत कहती हूँ और अन्य सभी आदतों के समान इसे भी अपनी आदत बनाने का अभ्यास करना चाहियें। कभी कभी मैं अपने में इतना व्यस्त हो जाती हूँ कि अपनी नई आदत का अभ्यास करना भूल जाती हूँ, परन्तु तुरन्त ही मुझे याद दिलाया जाता है,

जब मैं अपने आनन्द और जीवन के लिये उत्साह को खो देती हूँ कि मैं पुनः अपने मार्ग से हट गई हूँ।

मैं इस प्रकार से जीने का प्रयास बहुत वर्षों से कर रही हूँ, और यह ठीक एक लड़ाई के समान रहा है। हमारे अस्तित्व के प्रत्येक कोशिश में "स्वयं का जीवन" बहुत गहराई तक बैठा हुआ है और वह आसानी से मरता नहीं है। मैंने प्रेम के विषय में किताबें पढ़ी है, बाइबल में इसके विषय में देखा है कि बाइबल इसके विषय में क्या कहती है और इसके विषय में प्रार्थना की है। मैंने इसके विषय में मित्रों से बात की है, इस विषय में प्रचार किया है, और इसे अपने विचारों में बनाये रखने के लिये जो कुछ कर सकती हूँ उसे किया है। जब मैं यह महसूस करती हूँ कि मैं स्वार्थी हो गई हूँ, मैं निराश नहीं होती क्योंकि स्वयं से निराश होना भी मुझे स्वयं से व्यस्त रखता है। जब मैं पराजित होती हूँ, मैं परमेश्वर से क्षमा की प्रार्थना करती हूँ और पुनः प्रारंभ करने के लिये कहती हूँ, और मैं विश्वास करती हूँ कि यह सबसे उत्तम रीति है। हम अपने द्वारा की गई गलतियों के लिये बुरा महसूस करने में बहुत अधिक समय व्यतीत करते हैं–और यह समय की बर्बादी है। केवल परमेश्वर ही हमें क्षमा कर सकता है और वह ऐसा करने को इच्छुक भी है, यदि हम उसे ऐसा करने को कहें।

हाँ, मैं दृढ़तापूर्वक विश्वास करती हूँ कि संसार की समस्याओं की जड़ स्वार्थता है, परन्तु फिर भी संसार में रहें, और संसार के समान बनने से इन्कार कर दें। यदि आप मेरे साथ एक प्रेम क्रान्ति को प्रारंभ करने में शामिल होते हैं, यदि आप एक आमुलचुल संपूर्ण परिवर्तन अपने जीने के तरीके में करेंगे और उत्साहपूर्वक प्रेम करने के लिये जीना प्रारंभ करेंगे ना कि प्रेम किये जाने के लिये, तब आप समस्या के हल के भाग बन सकते हैं, ना कि समस्या के भाग। क्या आप प्रारंभ करने के लिये तैयार हैं?

अध्याय

3

कोई भी भलाई दुर्घटनावश: नहीं होता है

तब यहोवा ने मुझ से कहा, तुझे ठीक दिखाई पड़ता है, क्योंकि मैं अपने वचन को पूरा करने के लिये जागृत हूँ।
यिर्मयाह 1:12

कोई भी क्रान्ति जिसने दुनियाँ को बदला दुर्घटनावशः नहीं हुई है। कुछ घटनाओं में वे मात्र कुछ लोगों की बातचीत से प्रारंभ हुआ जिसमें वे उन परिवर्तनों के बारे में बात करते थे, जिनकी जरूरत थी। चाहे ये ऐतिहासिक घटनायें सामान्य विद्रोह का परिणाम थी या भली भाँति योजना बनाकर क्रान्ति थी, वे यूहीं नहीं हुये, वे जानबूझकर योजनाबद्ध रीति से साथ ही प्राय भावपूर्ण और जोश के साथ हुए। वे इसलिये हुये क्योंकि किसी ने कुछ नहीं करने से मना किया, किसी ने भाग्य भरोसे बैठने से मना किया, किसी ने सुस्त और निष्क्रिय होकर बैठने से मना किया, जब अन्याय अपने चरम पर हो। क्रान्तियाँ इसलिये घटित हुई क्योंकि किसी ने कुछ करने का निर्णय लिया।

अभी कार्य करें!

बाइबल हमारे लिये सक्रिय होने के निर्देशों से भरी हुई है। निष्क्रिय होने की तुलना में परन्तु लाखों लोग इसे यूहीं अनदेखा कर देते हैं। संभवतः वे सोचते हैं कि बातें अपने आप ठीक हो जाएँगी, परन्तु वे नहीं होती। कुछ भी भला दुर्घटनावशः नहीं होता है, एक बार जब मैंने इसे सिखा, तब मेरा जीवन उत्तम के लिये बदल गया।

किसी बात के होने की इच्छा करना हमारी इच्छित परिणाम नहीं लाता है, परन्तु हमें इसके लिये उत्साहपूर्वक परिश्रम करने की जरूरत है कि उन्हें प्राप्त करें। हम कभी भी एक ऐसे सफल व्यक्ति को नहीं पा सकते हैं, जिसने अपना जीवन सफल होने की इच्छा करते हुये बिताया हो और प्राप्त भी कर लिया हो। ना ही हम किसी ऐसे व्यक्ति को पा सकते हैं, जिसने कुछ नहीं किया और वह किसी ना किसी प्रकार सफल हो गया हो। यही सिद्धान्त सफल प्रेम क्रान्ति का भाग होने के विषय में भी लागू होता है। यदि हम लोगों से ऐसा प्यार करना चाहते हैं जैसा मसीह ने किया, तो हमें उद्देश्य के साथ ऐसा करने की जरूरत होगी, यह दुर्घटनावशः नहीं होगा।

बाइबल कहती है कि हमें दयालु और भला बनने की खोज करनी चाहिये (1 थिस्सलुनिकियों 5:15 देखिये)। खोजना एक मजबूत शब्द है जिसका अर्थ है, "लालायित होना, खोज में लगे रहना और पीछा करना।" यदि हम अवसरों की खोज करते हैं तो निश्चित ही हम उन्हें पाते हैं, और वह हमें आलसी और निष्फल होने से बचाएगा। हमें अपने आप से अवश्य पूछना चाहिये, कि हम सतर्क हैं और सक्रिय हैं या निष्क्रिय और अकर्मक हैं, परमेश्वर सतर्क और सक्रिय है। मैं खुश हूँ कि वह ऐसा है, अन्यथा हमारे जीवन में बातें बहुत जल्दी बिगड़ जाती। परमेश्वर ने न केवल संसार को बनाया, परन्तु जो कुछ हम देखते हैं उसे भी बनाया और उसमें आनन्द प्राप्त करता है। वह सक्रिय रूप से उसकी देखरेख भी करता है, क्योंकि वह जानता है कि भली बातें यूहीं नहीं होती हैं, वह सही कार्य के परिणाम स्वरूप घटित होती है (इब्रानियों 1:3 देखिये)।

परमेश्वर द्वारा प्रेरित और संतुलित कार्य हमें सुस्त होने और निष्फल रहने से बचाता है और इसलिये हमारे लिये एक सुरक्षा कवच के रूप में काम करता है। सक्रिय बने रहना, सही कार्य करते रहना हमें बुरे कार्य करने से रोकेगा। ऐसा लगता है कि हमें गलत कार्य करने के लिये बहुत अधिक परिश्रम करने

की आवश्यकता नहीं है। हमारा प्राकृतिक स्वभाव हमें उस दिशा में ले जाता है, यदि हम सही करने का चुनाव नहीं करते हैं।

उदाहरण के लिये, हमें बीमारियों का चुनाव करने की जरूरत नहीं है, हमें केवल इतना करने की आवश्यकता है कि उसके चारो तरफ घूमें और हम उसे पकड़ सकते हैं। परन्तु हमें स्वास्थ्य का चुनाव करना चाहिये। स्वस्थ होने के लिये मुझे निरन्तर व्यायाम, नींद और पोषण के विषय अच्छा चुनाव करना है। मुझे चिन्ता नहीं करने या व्याकुल नहीं होने का चुनाव करना है, क्योंकि मैं जानती हूँ कि यह मुझे थका देता है और संभवतः मुझ में शारीरिक लक्षण भी उत्पन्न कर सकता है। स्वस्थ होने के लिये मुझे सही रूप से अपने स्वास्थ्य में निवेश करना चाहिये, परन्तु मैं स्वयं की देखरेख न करने के द्वारा, आसानी से बीमार पड़ सकती हूँ।

शरीर आलसी है

प्रेरित पौलुस स्पष्ट रूप से सिखाता है कि शरीर आलसी है, वासनाग्रस्त है, और बहुत सी बुरी अभिलाषाओं का इच्छुक है (रोमियों 13:14 देखिये)। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हम शरीर से बढ़कर हैं। हमारे पास एक आत्मा भी है, और मसीह का एक आत्मिक भाग ऐसा भाग है जहाँ पर परमेश्वर का स्वभाव निवास करता है। परमेश्वर भला है, और यह सत्य है कि वह हममें रहता है, इसका तात्पर्य है हममें भलाई निवास करती है। हमारी आत्मा के साथ, हम अपने शरीर को अनुशासित कर उस पर शासन कर सकते हैं, परन्तु इसमें प्रयास की जरूरत है, इसमें पवित्रआत्मा के साथ सहयोग की जरूरत है जो हमें मजबूत करता और अच्छी बातें करने के लिये हमें योग्य बनाता है। पौलुस कहता है, हम शरीर के लिये व्यवस्था करने के लिये नहीं हैं और मैं विश्वास करती हूँ, कि कुछ ना करना भी शरीर के लिये व्यवस्था करने का एक तरीका है।

कुछ नहीं करना एक नशा है, जितना अधिक हम कुछ नहीं करते हैं, उतना ही अधिक हम कुछ नहीं चाहते हैं। मुझे निश्चय है कि आपको भी ऐसा अनुभव होगा, जब आप घर में यूहीं पड़े रहे हों, और यह पाया हो कि जितना अधिक आप लेटे रहते हैं, उतना अधिक उठना मुश्किल होता है। जब आप पहले–पहले उठते हैं, आपको जकड़न और थकान महसूस होती है। परन्तु जब आप लगातार अपने आप पर दबाव बनाते हैं, आपकी ऊर्जा वापस आती है।

आज मैं एक खराब मुड़ पर जाग उठी। संपूर्ण सप्ताहभर मैंने कॉन्फरेन्स में बहुत मेहनत की थी और मैं अभी भी थकी हुई हूँ, साथ–साथ मैंने एक व्यक्तिगत निराशा का भी अनुभव किया था, क्योंकि मेरी आशा की अनुरूप कोई बात नहीं हुई थी। मुझे ऐसा लगा कि मैं दिनभर बिस्तर में लेटी रहूँ और अपने लिये खेद व्यक्त करती रहूँ, परन्तु ऐसा करने का मेरा वर्षों का अनुभव है और मैंने इससे निष्फल पाया है, मैंने निर्णय लिया है कि मैं कोई अन्य चुनाव करूँ। मैंने आगे बढ़ने और क्रियाशीलता पर इस अध्याय को लिखने का निणर्य लिया। मेरे शरीर ने जो महसूस किया उसके विरूद्ध मैं लड़ाई लड़ने का यह मेरा अपना तरीका था। जितनी देर तक मैं रूकती हूँ उतना ही मुझे अच्छा लगता है।

ऐसी परिस्थितियों में जब हमें शरीर सुस्त होने की परीक्षा में डालता है, तब हम परमेश्वर से सहायता माँगने और सुश्त बैठने के बजाय सक्रिय होने के निर्णय लेने के द्वारा इस पर विजय पाना प्रारंभ कर सकते हैं। तब जब हम आगे बढ़ते हैं और अपने निर्णयों पर कार्य करते हैं, हम पायेंगे कि हमारी भावनायें उनके साथ एक हो जाती हैं। परमेश्वर ने मुझे एक अनुशासन और आत्मनियन्त्रण की आत्मा आपके समान बहुत दिनों से दी है, परन्तु यह मुझ पर है कि मैं उसका इस्तेमाल करूँ जिसे परमेश्वर ने मुझे दिया है, मात्र शरीर के मार्गो का अनुकरण करूँ।

"पौलुस शारीरिक मसीहियों" के विषय में भी लिखता है, जो ऐसे लोग हैं, जिन्होंने यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता ग्रहण किया है, परन्तु कभी भी आत्मिक परिपक्वता के विकास के लिये पवित्रआत्मा के साथ कार्य नहीं करते हैं। 1 कुरिन्थियों 3:1–3 में पौलुस ने मसीहियों से कहा, कि उसे उनसे अनात्मिक शारीरिक मसीहियों के समान बात करना पड़ा जो शारीरिक स्वाभाव के गुलामी में रहते हैं। यहाँ तक वह उन्हें कठिन बातें भी नहीं सिखा सका था, परन्तु उन्हें सरल बातें सीखानी पड़ी थी जिसे वह नये बच्चों का "निर्मल दूध" कहता है। उसने उनसे कहा कि वे अनात्मिक थे, क्योंकि उन्होंने सामान्य बातों को अनुमति दिया कि वे उन्हें नियन्त्रण में रखें। क्या आप इन शारीरिक बातों को अनुमति देते हैं कि वे आप पर नियन्त्रण करें? आज मैं बहुत अधिक परिक्षित हुई कि अपनी शारीरिक इच्छाओं को अपने ऊपर नियन्त्रण रखने दूँ, और सच में मुझे सम्भवतः दिनभर अपने आपको सक्रिय रखने के द्वारा और कुछ ऐसा करने के द्वारा जिनके विषय में मैं सोचती हूँ कि यह अच्छा फल लायेगा, इस परीक्षा का सामना करना होगा। मैं अपनी भावनाओं के हाथों नाच नहीं सकती क्योंकि मेरे पास बर्बाद करने के लिये एक दिन नहीं है।

अकर्मण्यता के लिये कोई फल नहीं

बिना कुछ किये बैठे रहकर हममें से कोई भी अपने दिन को बर्बाद नहीं कर सकता हैं। परमेश्वर अकर्मण्यता का प्रतिफल नहीं देता है, अकर्मक अपनी इच्छा शक्ति का इस्तेमाल ऐसा काम करने के लिये नहीं करते हैं जिसे वे सही समझते हैं। परन्तु वे कुछ करते हुये इन्तजार करने को महसूस करते हैं या किसी के द्वारा या किसी रहस्यात्मक बाहरी ताकत द्वारा प्रोत्साहित किये जाने का इन्तजार करते हैं। वे चाहते हैं कि कुछ भला हो, विशेष करके उनके साथ और वे कुछ भी ना करने के लिये समर्पित होते हैं जबकि वे यह देखने का इन्तजार करते हैं कि क्या ऐसा होता है या नहीं। परमेश्वर इस स्वभाव की प्रशंसा नहीं करता है; वास्तव में यह स्वभाव बहुत ही खतरनाक होता है।

कुछ नहीं करने का निर्णय भी एक निर्णय है और यह हमें कमजोर से कमजोर बनाता जाता है। यह शैतान को हम पर नियन्त्रण करने के लिये अधिक से अधिक अवसर प्रदान करता है। खाली स्थान फिर भी एक खाली स्थान है, और परमेश्वर का वचन सिखाता है कि यदि शैतान आता है और खाली स्थान पाता है तो तुरन्त उस पर कब्जा कर लेता है (मत्ती 12:43–44 देखें)। निष्क्रियता सूचित करता है कि हम इसके साथ सहमत हैं, और जो कुछ हो रहा है उसके साथ पूरी सहमति हमारी है। अन्ततः यदि हम इसे बदलने के लिये कुछ नहीं करते हैं तो हमें अवश्य यह सोचना चाहिये कि जो कुछ हो रहा है वह अच्छा है।

कुछ कीजिये

हमने विभिन्न लोगों को अत्यधिक जरूरतमन्द लोगों की सेवकाई करने के लिये मिशनट्रीप में ले गये हैं, परन्तु वे सभी एक प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं देते हैं। हर एक व्यक्ति तरस की भावना महसूस करते हैं जब वे लोगों की भयानक दशा को देखते हैं, जिसमें से आफ्रिका, भारत और संसार के अन्य देशों में दूरस्त ग्रामों में रहते हैं। बहुत से रोते हैं, बहुत से लोग अपने सिरों को झटकते हैं और सोचते हैं कि ये परिस्थितियाँ बहुत भयानक हैं, परन्तु वे सभी इन परिस्थितियों को बदलने के लिये कुछ करने का निर्णय नहीं लेते हैं। बहुत से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर कुछ करे और खुश होते हैं कि हमारी सेवकाई कुछ कर रही है। परन्तु वे कभी भी उत्साहपूर्वक इस विषय में परमेश्वर की खोज करने का विचार नहीं करते हैं कि वे स्वयं क्या कर सकते

हैं। मैं यह कहने का जाखिम लेती हूँ कि उनमें से अधिकांश लोग घर लौटे गये, पुनः अपने जीवनों के साथ व्यस्त हो गये, और बहुत जल्द ही भूल गये कि उन्होंने क्या देखा था। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो उन कुछ लोगों का जिन्होंने भिन्नता लाने के लिये मार्ग ढूँढ़ने का निर्णय लिया। स्मरण रखें: अभिन्नता बाहनें तलाशती, परन्तु प्रेम मार्ग ढूँढ़ता है। हर एक व्यक्ति कुछ ना कुछ कर सकता है!

स्मरण रखें: अभिन्नता बहाने तलाशती, परन्तु प्रेम मार्ग ढूंढता है।

मैं एक महिला को स्मरण करती हूँ, जिसने किसी प्रकार से सहायता करने के लिये निर्णय लिया। क्षणभर के लिये वह यह समझ ना पाई कि वह क्या करे क्योंकि उसके पास सहयोग करने के लिये अतिरिक्त धन नहीं था और वह जाकर मिशन क्षेत्र में रह नहीं सकती थी। परन्तु जब उसने परिस्थिति के विषय में लगातार प्रार्थना किया, परमेश्वर ने उसे उत्साहित किया कि उसके पास जो है, उस पर वह नजर डाले, ना कि उस पर जो उसके पास नहीं है। उसने जाना कि वह केक्, पीज्ज़, और कुकीस् बनाने में बहुत अच्छी थी। अतः उसने अपने पास्टर से कहा, कि क्या वह सप्ताह के दौरान केक् बनाकर रविवार को कलीसिया के पश्चात् उसे बेच सकती है जब तक उसका पैसा मिशन क्षेत्र में जाता रहे। यह उसके लिये और अन्य कलीसियाई सदस्यों के लिये मिशन में शामिल होने का एक रास्ता बन गया और इस बात ने उसे किसी की सहायता करने के लिये और कुछ करने हेतु सक्रिय बनाये रखा।

मैं और एक महिला को भी जानती हूँ, जो कुछ करने के लिये बहुत अधिक इच्छुक थी कि उसने अपने सुन्दर केशों को कटवा डाला और अनाथों की सहायता करने के लिये उसे बेच डाला। यह अतिवादी लग सकता है, परन्तु मैं निश्चित रूप से कह सकती हूँ कि कुछ न करने से यह बहुत अच्छा है। कुछ न करना खतरनाक है, क्योंकि यह हमारे जीवन में सक्रिय होने के लिये शैतान के लिये द्वार खोलता है।

एक और महिला जिसका मैंने साक्षात्कार लिया, वह एक मसाज़ करनेवाली चिकित्सक है और हमारे किसी एक सम्मेलन में भाग लेने के पश्चात् जहाँ मैंने दूसरों तक पहुँचने के विषय में बात की थी, उन्होंने एक विशेष कैम्प का आयोजन किया और निर्णय लिया कि सारा एकत्रित धन गरीबों की सहायता के लिये जाएगा। उसने एक हजार डॉलर मिशन के लिये इकट्ठा किया और

यह गवाही भी दी कि यह देने का अनुभव उसके लिये और जो शामिल हुये उनके लिये जीवन बदलनेवाला था। उसने बताया कि साथ काम करनेवाले कितने अधिक उत्साहित हुये वे गरीब और जरूरतमन्द लोगों की सहायता करने के लिये काम कर रहे हैं।

हम सब को प्रेम किये जाने की जरूरत है, परन्तु मैं विश्वास करती हूँ कि हमारा व्यक्तिगत आनन्द दूसरों से प्रेम करने में दृढ़ रूप से संबन्धित है। जब हम देते हैं तो हमारे हृदय में सुन्दर घटित होता है।

बेकारी शत्रु को आमन्त्रण देती है

बिस्तर पर लेटे–लेटे या आराम कुर्सी पर सिर टिकाये परमेश्वर से सब कुछ को सम्भाल लेने के लिये कहना बहुत आसान है, परन्तु यह हमें आलसी और निष्फल बना देता है और शैतान के आक्रमण के लिये द्वार खोलती है। यदि हमारे मन अच्छे विचारों से खाली है, शैतान आसानी से उसमें बुरे विचार भर सकता है। यदि हम बेकार और निष्क्रिय हैं, वह हमें आसानी से गलत करने के लिये और यहाँ तक कि पापमय कार्य करने के लिये बहका सकता है। बाइबल कहती है कि लगातार कार्य करते रहें, क्योंकि यह हमें आलसी होने और निष्फल होने से बचाए रखेगा। यदि हम उत्साहपूर्वक सोचें कि हम दूसरों के लिये क्या कर सकते हैं तो हमारे मन में गलत विचारों के लिये स्थान नहीं होगा।

बेकार लोग आसानी से निराश, हताश और स्वयं पर तरस की भावना से भर जाते हैं। वे हर प्रकार के पाप में गिर सकते हैं। प्रेरित पौलुस ने यहाँ तक कहा कि यदि एक जवान महिला विधवा हो जाती है तो उसे पुनः विवाह करना चाहिये। अन्यथा, वह एक बकबक करनेवाली और दूसरों के कामों में हस्तक्षेप करनेवाली बन सकती है (1 तिमुथियुस 5:11–15 देखिये)। पौलुस वास्तव में इतना अधिक यह कहने के लिये कहता है कि कुछ जवान विधवायें निष्क्रियता के कारण पहले ही शैतान के पीछे चलना प्रारंभ कर चुकी हैं। सक्रिय बने रहना कितना महत्वपूर्ण है? मैं विश्वास करती हूँ कि पौलुस के लेख बताते हैं कि यह बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

वास्तव में, संपूर्ण पवित्रशास्त्र में परमेश्वर हमें उत्साहित करता है कि हम निष्क्रिय ना हों। पुराने नियम के समय में, जब एक व्यक्ति की मृत्यु होती थी, तब इस्राएली लोगों को अपने उस प्रिय व्यक्ति के लिये सिर्फ तीस दिनों तक

विलाप करने की अनुमति थी (व्यवस्थाविवरण 34:8 देखिये)। पहली बार, यह असम्वेदनशील लग सकता है, परन्तु परमेश्वर ने यह नियम इसलिये बनाया क्योंकि वह जानता है कि लम्बे समय तक विलाप करना लोगों को निष्क्रिय बना देगा और यह गम्भीर समस्या उत्पन्न कर सकता है।

हमें अवश्य सक्रिय बने रहना चाहिये – इसमें अतिशय रूप से हमें शामिल नहीं होना है ऐसा न हो कि हम अपना हाथ जला बैठे – परन्तु इतना शामिल हों कि हम स्वयं को सही दिशा की ओर आगे बढ़ा सकें। सन्तुलन बहुत महत्वपूर्ण है। हम अपना सारा समय दूसरों की सहायता करते हुये नहीं बिता सकते हैं, परन्तु दूसरी तरफ, कोई भी समय इस प्रकार ना बिताना बड़ी समस्या उत्पन्न कर सकता है। यदि आप किसी के विषय में सोचते हैं जिसे आप जानते हैं जो बेकार, निष्क्रिय और अकर्मक है, तब आप सम्भवतः यह भी जानेंगे कि वे बहुत ही अप्रसन्न हैं क्योंकि निष्क्रियता और आनन्द की कमी साथ–साथ चलती है।

बहुत वर्षों पूर्व मेरी ऑन्टी को एक सुविधा सम्पन्न निवास में जाना था। पहले तीन या चार वर्ष उन्हें कुछ भी नहीं करना था। वह उदास थी कि उन्हें अपना घर छोड़ना था और नये जीवन जो उनके लिये उपलब्ध था उसमें भाग लेने की कोई इच्छा उनमें नहीं थी। यद्यपि बहुत सारी गतिविधियाँ उपलब्ध थी और दूसरों की सहायता करने का अवसर भी, परन्तु वह कुछ न करने पर अड़ी रही। दिन प्रतिदिन वह अपने अपार्टमेन्ट में बैठी रहती और निरूत्साहित रहती थी। वह शारीरिक रूप से बुरा महसूस करने लगी, और उन्हें इधर उधर जाना भी कठिन लगता था। अन्ततः उन्होंने निर्णय लिया कि वह केवल बिना कुछ किए बैठी न रहेगी, और वह बाइबल अध्ययन में शालिम हुई और बगल की ही नरसिंग होम में मिलने जाने लगी। वह गेन्द खेलती, पार्टियों में जाती, और बहुत सारे मित्र बनाए। बहुत जल्द वह मुझसे कह रही थी कि वह अपने जीवनभर में सबसे अधिक आनन्दित थी और शारीरिक रूप से अच्छा महसूस कर रही थी।

एक निष्क्रिय व्यक्ति की दशा बहुत बदत्तर होती जाती है, जब तक वह उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करना प्रारंभ न कर दे। वह अकर्मण्यतापूर्वक स्वयं को अपनी परिस्थितियाँ और माहौल के द्वारा आगे पीछे आलोड़ित होने देता है। वह अपनी भावनाओं को अपनी अगुवाई करने देता है और वह कभी भी कुछ करने जैसा महसूस नहीं करता है, वह केवल देखता और शिकायत करता रहता है जबकि उसके जीवन का स्तर नीचे गिरता जाता

है। वह बहुत ही बातें करना चाहता है फिर भी वह इस भावना से जलता हुआ होता है, जो करीब–करीब वर्णन के लायक नहीं होता। वह सुस्ती महसूस करता है और उसके पास कोई रचनात्मक विचार नहीं होता है। यहाँ तक कि वह यह भी सोचना शुरू कर देता है कि शारीरिक रूप से उसमें कुछ कमजोरी भी है, और इसलिये उसमें ऊर्जा नहीं है। उसके लिये जीवन समस्याओं का एक पहाड़ बन चुका है।

स्वयं को निष्क्रिय होने देना अकसर किसी निराशा के श्रृंखला को अनुभव करने के पश्चात् होता है या जब कोई दुर्घटना या विपत्ति आती है, जिसका मैं अध्याय के अन्त में वर्णन करूँगी। जब ऐसी बातें होती हैं हम हार मानना चाहते होंगे, परन्तु जब हम ऐसा करते हैं, तो शैतान परिस्थिति का लाभ उठाने का इन्तजार करता रहता है। हम किसी भी कारणवशः अकर्मण्यता के कारण शत्रु को हमारे जीवन में प्रवेश करने का अवसर नहीं दे सकते।

सक्रिय रहना मुझे खराब दिन को मात देने में सहायता करता है

आज जबकि मैं अपना "खराब दिन" व्यतीत कर रही हूँ, संसार में लाखों लोग ऐसे हैं जो मेरे दिन को अपनी परिस्थितियों की तुलना में पार्टी सोचते होंगे। दो दशकों से अधिक समय से, पूर्वी आफ्रिका में, एक विद्रोही सेना बच्चों को जबरन एक ऐसे युद्ध में सैनिक बनाने के लिये गुलाम बनाते रहे हैं, जो एक गौरिल्ला मनुष्य के द्वारा प्रारंभ किया गया, जो स्वयं को प्रभु की प्रतिरोधक सेना कहती है। ये गौरिल्ला यूगाण्डा के उत्तरी भाग में आतंक फैलाये हैं; वे बच्चों को यहाँ तक कि सात साल की उमर में ही अपहरण कर लेते हैं, और उन्हें सैनिक या यौन गुलाम बनाने के लिये दबाव डालते हैं, और निम्न दर्जा के कार्य करने के लिये। कुछ गणनायें कहती हैं कि तीस हजार से चालीस हजार बच्चे अपहरण हो चुके हैं। शासन करनेवाली सरकार के विरोध में शुरू हुआ विद्रोह आज मासूम लोगों का भूचड़खाना बन चुका है, जिसका सेनापति दावा करता है कि वह एक ऐसा समाज बनाना चाहता है, जो दस आज्ञाओं पर आधारित है, जबकि वह उनमें से प्रत्येक का उलंघन करता है।

यह मनुष्य, जोसेफ कोनी एक समय एक कैथोलिक वेदी पर कार्य करनेवाला लड़का था। अब वह पुराना नियम को कुरान और परम्परागत संस्कारों के साथ मिलाकर स्वयं का एक सिद्धान्त बना चुका है। उसकी रणनीतियाँ कठोर रही हैं। इस लेख से एक सन्धि विराम किया गया और

बहुत सारे बच्चे मुक्त किये जा रहे हैं। परन्तु अधिकांश घटनाओं में माता–पिता मार दिये गये हैं, अतः उनके पास वापस जाने के लिये घर नहीं है। बहुत सारे बच्चे नशा लेने के लिये मजबूर किये गये हैं, और अब वे उनके आदि हो चुके हैं। उन्हें ऐसे हिंसक कार्य करने के लिये मजबूर किये गये हैं, जो एक वयस्क व्यक्ति के लिये भी अविश्वस्थनीय है, फिर बच्चे की बात क्या करें। छोटे बच्चों को मजबूर किया गया है कि वे अपने संपूर्ण परिवार को गोली मार दें। उन्हें अब क्या करना है? धूलभरी सड़कों में भटकते हुये जो कुछ उन्होंने किया है उसे भूलने का रास्ता तलाशते हैं। उन्हें सहायता की जरूरत होगी और आज मैं प्रार्थना कर सकती और मुझे इस्तेमाल करने के लिये परमेश्वर से कहती हूँ। मैं अपने मन से उद्देश्यपूर्वक निकाल सकती हूँ, और ऐसे लोगों के विषय में सोच सकती हूँ जिनका अभी मैंने वर्णन किया है–ऐसे लोग जिनके पास सचमुच में समस्या है।

मैं लोगों की उस आशाहीन दृष्टि को याद कर सकती हूँ, जिसे मैंने लोगों के चेहरे पर तब देखा जब मुझे यूगाण्डा की यात्रा का अवसर मिला और मैं लगातार उन्हें सहायता भेजने का हर संभव प्रयास कर सकती हूँ। मैं उनके छोटे चेहरों पर क्रोध के स्थान पर मुस्कुराहट रखने के प्रयास करने की कल्पना कर सकती हूँ, जब मैं पहली बार वहाँ पहुँची। मैं कल्पना कर सकती हूँ कि एक नए गांव का निर्माण करने में सहायता करने के पश्चात् उनका जीवन किस प्रकार का होगा जहाँ पर वे उनके पास गोद लेनेवाले माता–पिता, अच्छे भोजन, प्यार, और शिक्षा साथ–साथ यीशु की और उनके जीवन के लिये उसकी योजना के विषय में शिक्षा भी होगी।

बाल सैनिक

''कृपया, परमेश्वर, अब और हत्या नहीं। आज नहीं। मैं और अधिक नहीं देख सकता।'' वह इसी प्रकार प्रार्थना करता रहा।

दूर से एल्लेन रोने चिखने की आवाजें सुन सकता है, गोलियों की कान छिदनेवाली आवाजें और आतंक की कपकपी उसे टकराने लगी। वह इन आवाजों के अर्थ को अच्छी रीति से जानता है। वह इन्हें कैसे कभी भूल सकता है? ये वही आवाजें थीं जो उसने अपने सैनिकों के द्वारा गांव पर आक्रमण करने से पूर्व सुना था और उन्होंने क्रूरतापूर्वक मारते हुये उसके माता–पिता को मौत के मुँह में ढ़केल दिया था, कि अन्य अपहर्ताओं को भयभित करे।

उस भयानक दिन में विद्रोह में एल्लेन को पीछे छोड़ दिया, परन्तु झाड़ियों में अन्य पाँच लड़कों के साथ हफतों तक छुटे रहने के, बिना पानी, बिना भोजन के जमीन पर सोने, के पश्चात् विद्रोहियों ने उन्हें ढूँढ़ निकाला। एल्लेन मात्र दस साल का था।

अपहरण के क्षणों से वह दिन में दो या तीन बार मारा जाता और थोड़ा सा भोजन और पानी दिया जाता। *"उठ, लड़के। यह तुम्हारे मित्रों को मरते हुये देखने का समय है।"* विद्रोही सैनिक ने एल्लेन को पुचकारा। उसे असहाय होकर देखने के लिये मजबूर किया जाता था, जब सैनिक लोग उसके मित्रों के सिर पर अंधाधुध लाठियों से तब तक प्रहार करते थे, जब तक वे अपने ही खून के तलाब में गिरकर अचेत न हो जाते। मृत्यु के भय के मध्य, विद्रोही उसे नीच बुरे काम करने के लिये मजबूर भी करते थे। वह अपने ह्रदय को अन्धकार की ओर जाते हुए महसूस करता था.....

आज की रात, जब एल्लेन के जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करने के लिये भेजा गया, वह भाग निकलने की योजना बनाता है। वह बहुत तेज दौड़ेगा.....वह तब तक दौड़ेगा जब तक वह अचेत नहीं हो जाता। स्वतन्त्रता उसका सपना है। और यदि वो पर्याप्त दूर दौड़ लेता है, वह एक दिन बिना हत्या के रह सकता है और शायद चंगाई भी प्रारंभ हो जाये।

वर्तमान एल्लेन यूगाण्डा के एक नये गाँव गुलु में रहता है, जो बाल सैनिकों की सहायता के लिये बनाया गया है। वाटोटो मिनिस्ट्रीज़ के साथ सहभागिता में जॉयस् मेयर मिनिस्ट्रीज़ इस गाँव को प्रभावित बच्चों तक पहुँचने के लिये विकसित कर रहा है।

आंकड़े कहते हैं:

- लॉर्ड रेसिस्टैन्स आरमी (एल्.आर्.ऐ.) ने तीस हजार बच्चों को सैनिक के रूप में या यौन गुलाम के लिये काम करने में यूगाण्डा में अपहृत किया।
- 2007 के अनुसार, 250,000 बच्चे संसारभर में बाल सैनिक के रूप में थे।

जब मैं निर्णय ले रही थी कि क्या मुझे इस क्षेत्र में पूरा दिन रहना है। मैंने कुछ मित्रों से एक ई–मैल प्राप्त किया, जिन्होंने परमेश्वर की पच्चीस वर्ष से अधिक सेवा की थी। यह उनके बाईस वर्षीय पुत्र के विषय में, ताजा समाचार था जो बहुत ही गंभीर अवस्था में था, और उसे मृत्युकारक थाईरॉड कैंसर था। यदि मैं अपने से पीछे मुड़कर देखूँ और महसूस करती हूँ कि मुझसे परे एक संसार में बहुत बड़ा कार्य चल रहा है। क्रमशः मैं अपनी समस्या को कम महसूस करने लगी और मैं आशीषों के लिये और अधिक धन्यवादी हुई।

मैं आश्चर्यचकित होती हूँ, जब मैं सोचती हूँ कि कैसे हमारी बहुत सी समस्यायें हमारे सोच से संबन्धित होती हैं। जब तक मैं यह सोचती कि मैंने क्या चाहा और मुझे नहीं मिला, तब मेरा मुड़ खराब होता जाता है और वह निम्न स्तर पर जा पहुँचता है। परन्तु मैं सोचती हूँ कि मेरे पास क्या है और ये विपत्तियाँ जिनका लोग सामना करते हैं, मैं महसूस करती हूँ कि मेरे पास तो कोई समस्या ही नहीं है। दयनीय होने के बदले मैं धन्यवादी हो सकती हूँ।

मैं अनन्ततापूर्वक धन्यवादी हूँ कि परमेश्वर मुझे स्मरण दिलाता रहता है कि मैं कुछ भलाई करते हुये सक्रिय रहूँ, क्योंकि स्मरण करें हम भलाई से बुराई को जीतते हैं (रोमियों 12:21)। क्या किसी ने आपसे दुर्व्यवहार किया है? क्यों नहीं उनके लिये प्रार्थना करें? यह आपको अच्छा महसूस होने देगा। क्या आपके साथ कोई निराशाजनक बात हुई? परमेश्वर से ऐसे लोगों को दिखाने की प्रार्थना कीजिये जो आपसे अधिक निराश हों और उन्हें उत्साहित करने का प्रयास कीजिये। यह सब समय आपको अच्छा महसूस कराने में उनकी सहायता करेगा।

संसार हर समय अधिक क्रूर होता जा रहा है। जब मैं अपना लेखन जारी रखती हूँ, मैंने एक अन्य सन्देश प्राप्त किया है, जिसमें बताया गया कि एक अन्य शहर में पीछली रात एक कलीसिया में बहुत अधिक गोलाबारी हुई, दो लोगों की मृत्यु हुई और पाँच लोग घायल हुये। मत्ती 24 में बाइबल जो कहता है, वह मुझे स्मरण हुआ, जिसमें अन्त समय के चिन्हों के बारे में बताया गया है। और यह कहता है कि सभी हिंसाओं के बीच में, और बहुत अधिक जरूरत में, लोगों का प्रेम ठण्डा पड़ जाएगा। यही है जिसके विरूद्ध हमें लड़ना है। हम प्रेम को अदृश्य नहीं होने दे सकते हैं, क्योंकि यदि हम ऐसा करते हैं, तो हम संसार को दुष्ट के हाथ में छोड़ रहे हैं।

जब मैंने कलीसिया में गोलाबारी के बारे में सुना, तब मैं कह सकती थी, "ओह्, यह बहुत ही बुरा हुआ।" मैं कुछ समय के लिये बुरा महसूस करती और

तब मैं अपनी निराशा में वापस आ जाती। परन्तु मैंने ऐसा करने से इन्कार किया, क्योंकि मैं ऐसे स्वभाव के साथ नहीं जीने जा रही हूँ। इस विपत्ति को सुनने के पश्चात्, मैंने कुछ क्षण तक इस पर सोचा और निर्णय लिया कि अपने पुत्र को बुलाकर उस पास्टर को फोन करने के लिये कहूँ, ताकि ये पूछे कि हम उनके सहायता के लिये क्या कर सकते हैं। सम्भव हो कि वे परिवार जिन्होंने अपने प्रिय को खो दिया, उनकी कुछ आवश्यकतायें हो या शायद यह जानना है कि कोई उनकी चिन्ता करता है और उनकी सहायता करना चाहता है।

मुझे आश्चर्य होता है जब मैं सोचती हूँ कि कैसे हम अधिकांशतः कठिन समयों से होकर गूजरते हैं और कोई एक फोन भी नहीं करता है। मैं विश्वास करती हूँ कि सब लोग ऐसा करते हैं, इसलिये कोई नहीं करता है।

यह किसका कार्य है?

यह एक कहानी है जिसे मैंने वर्षों पहले सुना था, जो चार लोगों के विषय में हैं, जिनके नाम सब लोग, कुछ लोग, कोई भी और कोई नहीं। एक महत्वपूर्ण कार्य था और जिसे किया जाना था और सब लोग निश्चित थे कि कुछ लोग उसे करेंगे। कोई भी उस कार्य को कर सकता था, पर किसी ने नहीं किया। कुछ लोग इस विषय में क्रोधित हुये क्योंकि यह सबका कार्य था। सब ने यह सोचा कि कोई भी इसे कर सकता है, परन्तु किसी ने यह नहीं समझा कि सब लोग इसे नहीं करेंगे। अन्त में सब लोगों ने कुछ लोगों पर आरोप लगाया कि किसी ने इसे नहीं किया जिसे कोई भी कर सकता था।

एक बार मैंने एक सन्न करनेवाली घटना सुनी, जो दिखाता है कि इस कहानी का सिद्धान्त कार्य करता है – दुःखदपूर्वक – वास्तविक जीवन में। 1964 में कैथेरिन् गेनोवेस् को चाकू मारा गया और लगभग पैंतीस मिनट के अन्तरान में वह मर गये, जबकि उनके अड़त्तीस पड़ोसी यह घटना देख रहे थे। उनकी प्रतिक्रिया का वर्णन ठण्डा और देखरेख न करनेवालों के रूप में किया गया, जो शहरी अलगाव और दूराव का परिणाम था। बाद में लाटेन और डारली यह प्रकट किया कि किसी ने केवल इसलिये सहयता नहीं की क्योंकि वहां पर बहुत सारे देखनेवाले थे। देखनेवालों ने एक दूसरे को अगुवाई के लिये ढूँढ़ा कि क्या करना है, क्योंकि कोई भी कुछ नहीं कर रहा था, इसलिये उन्होंने निर्णय लिया कि किसी को कुछ नहीं करना है।

लोगो के लिये जरूरत के समय सहायता पाना असंभव होता है, जब उनको आस्था देखनेवाले अधिक हों। मिर्गी का दौरा पड़नेवाला एक छात्र 85 प्रतिशत सहायता प्राप्त करता है, जब उसके चारो तरफ एक ही व्यक्ति देखनेवाला हो, परन्तु जब एक ही व्यक्ति उसे देखनेवाला हो तो 31 प्रतिशत सहायता पाता है।

यह अध्ययन बताता है कि अधिक लोग कुछ नहीं करते हैं, और अधिक लोग कुछ नहीं करेंगे, परन्तु यदि समर्पित लोगों का एक छोटा समूह अन्य लोगों तक पहुँचना प्रारंभ करें, उनकी देखभाल करें, और उनसे प्यार करें और उन्हें मुस्कुराहट दें, उनकी प्रशंसा करें, और उनका आदर करें इत्यादि, तो यह गतिविधि बढ़ सकती है और बढ़ेगी।

अध्ययनों से प्रमाणित यह है कि हमारे चारों ओर के लोग जो करते हैं उससे हम बहुत अधिक प्रभावित होते हैं। हम एक दूसरे की ओर नेतृप्त के लिये देखते हैं, चाहे हम संपूर्ण रूप से अनजान हों कि हम उसे कर रहे हैं। अधिकांश लोग बहुमत के साथ सहमत होते हैं, चाहे वे वास्तव में सहमत न भी हों। वे केवल समूह का भाग बने रहने के लिये ऐसा करते हैं।

यदि हम प्रेम क्रान्ति के भाग बनना चाहते हैं, तो मसीहियों के रूप में हमें संसार की व्यवस्था में पिघलने वाले बनने बजाय दूसरों के लिये उदाहरण बनना चाहिये। यदि कोई ऐसा साहसी होता कि कुछ करते या इतना प्रेमी होते कि सहायता करते तो कैथरिन् गेनोवेस् का जीवन बचाया जा सकता था।

क्या आप ऐसी प्रार्थनाएँ कर रहे हैं जिनका परमेश्वर उत्तर दे सकता है?

आपके दैनिक प्रार्थना जीवन में जोड़ने के लिये मैं आपको कुछ सलाह देना चाहती हूँ। प्रतिदिन परमेश्वर से पूछिये कि आप उसके लिये क्या कर सकते हैं। तब जब अपने दिन को बीता रहे होते हैं, तो कार्य करने के लिये अवसरों को देखते रहें, जिनके बारे में आप विश्वास करते हैं कि यीशु यदि इस पृथ्वी पर एक शरीर में होता तो क्या करता। यदि आप एक मसीही हैं, तो वह आपमें जीता है और आप उसके राजदूत हैं, इसलिये यह सुनिश्चित करें कि आप उसको प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। मैंने बहुत सारे वर्ष अपनी सुबह की प्रार्थनाओं में प्रभु से यह कहने में व्यतीत किया है कि मेरी आवश्यकता क्या

है कि वह मेरे लिये करे, परन्तु बहुत समय के बाद में मैंने इस नये भाग को जोड़ा है, "परमेश्वर, मैं आज आपके लिये क्या कर सकती हूँ?"

हाल ही में, मैं एक मित्र की सहायता करने के लिये परमेश्वर से कह रही थी, जो बहुत कठिन परिस्थिति से होकर गुजर रही थी। उसकी कुछ जरूरतें थी, इसलिये मैंने परमेश्वर से उसके लिये कुछ प्रबन्ध करने के लिये कहा। मुझे आश्चर्यचकित करते हुये मेरे लिये उसका उत्तर था, "आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये मुझसे प्रार्थना करना बन्द करो; मुझसे यह दिखाने के लिये कहो कि तुम क्या कर सकती हो।" मैं जागरूक हुई कि मैं अक्सर परमेश्वर से मेरे लिये चीजों को करने के लिये कहती हूँ, जब वह चाहता है कि मैं उन कार्य को स्वयं करूँ। वह यह अपेक्षा नहीं करता है कि मैं उसकी सहायता के बिना कुछ करूँ, परन्तु ना ही वह मेरे लिये सब कुछ करेगा जबकि मैं चुपचाप बैठी हुई हूँ। परमेश्वर चाहता है कि हम खुले रूप से सम्मिलित हों। वह चाहता है कि हम अपने श्रोतों का उपयोग लोगों की सहायता के लिये करें, और यदि उनकी जरूरतें पूरी करने के लिये हमारे पास जो उपलब्ध है वो पर्याप्त नहीं हो, तब हम दूसरों को सम्मिलित होने के लिये उत्साहित कर सकते हैं, ताकि एक साथ हम जरूरतों को पूरा करने के लिये कार्य कर सकें।

परमेश्वर चाहता है कि हम खुले रूप से सम्मिलित हों।

मैं आपको ऐसी प्रार्थनायें करने को उत्साहित करती हूँ जिनका परमेश्वर उत्तर दे सके। आप और वह सहभागी हैं और वह *आपके साथ और आपके द्वारा* कार्य करना चाहता है। उससे यह दिखाने के लिये कहें, कि आप क्या कर सकते हैं, और न केवल रचनात्मकता देने के लिये परन्तु करने हेतु स्त्रोतों के लिये भी उस पर आश्रित रहिये।

भयभीत न हों, जब मैं कहती हूँ, "अपनी संसाधनों का उपयोग करो।" मैं धन से बढ़कर बात कर रही हूँ। हमारे संसाधनों में हमारी ऊर्जा, समय, योग्यतायें, और भौतिक संपत्तियाँ और साथ ही साथ हमारा धन शामिल है। किसी की सहायता करने में धन शामिल हो सकता है, परन्तु इसमें अक्सर समय शामिल होता है। और मैं सोचती हूँ कि हम अपने समाज में समय की कमी से हम इतना अधिक जूझते हैं कि हम अक्सर किसी जरूरतमन्द व्यक्ति की सहायता करने के बजाय चैक लिख देते हैं। मैं इस विश्वास तक पहुँची हूँ कि "साथ में होने" की सेवकाई ही अक्सर लोगों की जरूरत होती है।

मेरा एक मित्र एक ऐसे बड़े शहर में रहता है जहाँ पर बेघर होना एक बहुत बड़ी समस्या है। एक सर्द रात वह कार्यरत से घर की ओर लौट रही थी और एक व्यक्ति उनसे धन मांगने लगा। उस समय बहुत ठण्ड थी और अन्धेरा था, और दिनभर व्यस्त रही थी और जल्द से जल्द घर पहुँचना चाहती थी। उस असुरक्षित दशा में वह अपने पर्स को नहीं खोलना चाहती थी और वह अपने पर्स में कुछ चिल्हर पैसे टटोलने लगी। जब उसकी उंगुलियाँ यूहीं ढूँढ़ रहीं थी, वह व्यक्ति कहने लगा कि पिछली रात को जहाँ पर वह सोया था, वहाँ पर उसका कोर्ट चोरी हो गया और उसने कुछ और तकलीफों का भी वर्णन किया। अब भी कुछ एक कोठरियाँ ढूँढ़ने का प्रयास करते हुये, उसने सिर को हिलाया और कहा, "यह तो बहुत ही बुरा हुआ"। अन्ततः जब उसने चिल्हर पाया और उस व्यक्ति के कटोरे में डाला उस व्यक्ति ने मस्कुराकर कहा, "मुझ से बात करने के लिये धन्यवाद।" मेरे मित्र ने कहा कि उस रात उसने समझा कि जो पचास पैसा उसने उस व्यक्ति को दिया उसकी प्रशंसा तो होगी परन्तु उस व्यक्ति के लिये सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि किसी ने उसकी सुनी और उसे उत्तर दिया।

हमारी सेवकाई में हमारे पास लोगों का एक ऐसा समूह है, जो ऐसे लोगों की सहायता करने का प्रयास करता है, जो पूलों के नींचे सुरंगो में रहते हैं। उन्होंने यह पाया है कि उनमें से प्रत्येक के पास इस सुरंग के पहले भी एक जीवन था और उन सब के पास अपनी कहानियाँ थी। उनके साथ कुछ दुःखद घटित हुआ जिसके परिणाम स्वरूप वे आज की परिस्थिति में पहुँच गये। वे उन नाश्तो और कलीसियाई भवन में नहाने के लिये धन्यवाद देते हैं, परन्तु अधिकत्तर वे इस बात की प्रशंसा करते हैं कि कोई उनकी सुन रहा है, इतनी चिन्ता करता है कि वे उनसे बात करें, कि यह पायें कि वे कौन हैं और उनके साथ क्या घटित हुआ।

आप दूसरों की सहायता के लिये जो कुछ कर सकते हैं उसे करने के लिये मुझे आपको उत्साहित करने दीजिये। यदि वे केवल चाहते हैं कि आप वहाँ साथ में रहें, तब ऐसा करने के लिये समय निकाले। परमेश्वर से पूछें कि वह क्या चाहता है कि आप करें – और क्योंकि वह आपकी प्रार्थना का उत्तर देगा इसलिये आप कर सकते हैं।

उत्साहपूर्ण भलाई का अभ्यास कीजिये

क्या आप विश्वास करते हैं कि संसार अन्याय से भरा हुआ है? क्या आप विश्वास करते हैं कि भूखे बच्चों के लिये कुछ किया जाना चाहिये? क्या किसी को उन 1.1 मिलियन लोगों की सहायता करनी चाहिये, जिनके पास पीने का साफ पानी नहीं है? क्या लोगों को सड़क पर पूलों के नीचे रहना चाहिये? एक परिवार जिनके साथ आप वर्षों तक कलीसिया गए, किसी विपत्ति से गुजर रहे हों और उन्हे किसी से एक फोन कॉल भी प्राप्त न हो कि पिछले तीन माह से वे कलीसिया में क्यों नहीं आये?। आपके शहर की कोई अन्य कलीसिया यदि जला दी जाती है, तो क्या यह उचित है कि हम उसके लिये प्रार्थना करें और व्यवहारिक रूप से कुछ ना करें? क्या आप सोचते हैं कि कोई इस अन्याय के विषय में कुछ करेगा? मैं सोचती हूँ कि आपने इन सभी प्रश्नों का सही उत्तर दिया है, इसलिये मेरे पास एक अन्तिम प्रश्न है। आप क्या करने जा रहे हैं? क्या अब वह "कुछ लोग" बनेंगे जो वह कार्य करते हैं जिसे करने की जरूरत है?

जब मैं आपसे पूछती हूँ कि आप क्या करने जा रहे हैं, तब क्या आप भय महसूस कर रहे हैं, क्योंकि इसे "कुछ करने" में क्या खर्च आएगा? मैं इस प्रकार की भय की भावना समझती हूँ। अन्ततः यदि मैं वास्तव में अपने आप को भूलने का प्रयास करती और उत्साहपूर्वक सहायता करने का प्रयास करती हूँ तब मेरे साथ क्या होगा? कौन मेरी चिन्ता करेगा, यदि मैं स्वयं की चिन्ता नहीं करती? परमेश्वर ने कहा कि वह करेगा, इसलिये मैं सोचती हूँ कि हमें यह पता करना चाहिये कि उसने जो कहा वास्तव में ऐसा करता है। हम "स्वयं की देखभाल" से निलम्बित क्यों नहीं हो जाते हैं, और यह क्यों नहीं देखते हैं कि परमेश्वर मुझसे अच्छा कार्य कर सकता है। यदि हम उसके कार्य की चिन्ता करते हैं, जो कि यातना सहनेवालों की सहायता करना है, मैं विश्वास करती हूँ कि वह हमारी सहायता करेगा।

आगे बढ़ते रहिये

जब मैं इस अध्याय को समाप्त करती हूँ मुझे यह कहने दीजिये कि मैं समझती हूँ कि जीवन में जो घटनायें होती है वह हमें संसार से कुछ क्षण के लिये निलम्बित करना चाहती है। मैं समझती हूँ कि बड़े जीवन परिवर्तन में पुनः व्यवस्थापन का एक दौर की आवश्यकता होती है और मैं समझती हूँ

कि वह नुकसान या सदमा लोगों को ऐसा बना देती है कि वह बात करना या दूसरों के सामने जाना पसन्द नहीं करते हैं। मैं इन बातों के विषय में सहानुभूति रखती हूँ और यदि आपने किसी प्रकार का नुकसान उठाया है, और इसमें आपको जड़वत कर दिया हो, और आपको ऐसा लगता है कि कुछ ना करें तो मैं समझती हूँ कि आप ऐसा महसूस करते हैं। परन्तु में आपको आगे बढ़ते रहने के लिये अपने आप पर दबाव डालने हेतु उत्साहित करना चाहती हूँ। शैतान आपको अकेला कर देना चाहता है, क्योंकि आपके पास उसके झूठ को पराजित करने के लिये ताकत नहीं होगी। मैं जानती हूँ कि जाकर किसी और की सहायता करने के लिये कहना हास्यास्पद लग सकता है, परन्तु मैं अपने संपूर्ण हृदय के साथ विश्वास करती हूँ कि ऐसा करना आपके लिये सुरक्षा कवच है, साथ ही साथ संसार की समस्याओं का उत्तर भी है।

मुझे इसे फिर से कहने दीजिये, मैं दृढ़ता पूर्वक विश्वास करती हूँ कि हमें एक प्रेम क्रान्ति की जरूरत है। हम सबने स्वार्थता, हतोत्साह, निराशा और स्वयं पर तरस खाने का प्रयास किया है – और हमने इसका फल भी देख लिया है। संसार इनके फलों से भरा हुआ है। आईये ये सब बात में सहमत हों कि हम परमेश्वर के तरीके से जीवन व्यतीत करेंगे। दूसरों के लिये आशीष बनने की बात हमेशा मन में रखें (गलातियों 6:10 देखिये)। प्रेम को पहिन लें (कुलुसियों 3:14 देखिये)। इसका तात्पर्य दूसरों तक पहुँचने के उद्देश्य के साथ सक्रिय होने से है। अवसरों के लिये जागृत रहो और प्रार्थना करते रहो। परमेश्वर के लिये जागृत होना। यीशु प्रतिदिन उठता और भलाई करता रहा (प्रेरितों 10:38 देखिये)। ऐसा लगता है कि यह बहुत ही सामान्य बात है। मुझे आश्चर्य होता है कि हमने कैसे इन चीजों को छोड़ दिया।

अध्याय

4

परमेश्वर द्वारा बाधित

यही स्वीकृत समय है, कल नहीं ना ही कोई और सुविधाजनक मौसम। आज ही है, जब हमारा उत्तम कार्य किया जा सकता है और न कि कोई आनेवाला दिन या आनेवाला वर्ष।
डब्ल्यू.ई.बी. डुबॉईस्

अपनी सेवकाई यात्रा के दौरान मैं होटलों में रूका करती हूँ, और जब मैं अपने कमरे में होती हूँ, तब मैं हमेशा "परेशान ना करें" का बोर्ड़ का चिन्ह लगाती हूँ, इसलिये कोई मेरी परवाह नहीं करेगा। इस प्रकार का एक चिन्ह होटल के दरेवाजे पर लगाना स्वीकारयोग्य है, परन्तु मेरे जीवन पर नहीं।

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि परमेश्वर हमेशा हमारे समयसारीणि के अनुसार या हमारी सुविधा के अनुसार कार्य नहीं करता है? पौलुस ने तिमुथियुस से कहा कि परमेश्वर के सुसमाचार के एक सेवक के रूप में उसे अपने कर्तव्य को पूरा करना है, चाहे वह सुविधाजनक हो या असुविधाजनक (2 तिमुथियुस 4:2 देखिये)। मुझे सन्देह है कि तिमुथियुस सुविधाओं का अधिन था जैसा कि आज हम हैं। फिर भी पौलुस ने सोचा कि उसे यह स्मरण दिलाना महत्वपूर्ण है कि वह असुविधाजनक या परमेश्वर के द्वारा बाधित होने पर भी तैयार पाया

जाये। यदि तिमुथियुस को यह सुनने की आवश्यकता थी तो मुझे निश्चित है कि हमें भी इसे सुनने की आवश्यकता है, क्योंकि हम सम्भवतः तिमुथियुस से अधिक सुविधा से जुड़े हुये हैं। मैं सुविधा को कितना महत्व देती हूँ इसे पहचानने के लिये केवल इतना करना है कि मेरी उन शिकायतों पर ध्यान दें जब मैं अपने छोटे से छोटे उपकरणों पर काम करने पर करती हूँ–बर्तन धोनेवाली मशीन, ऐयर कन्डिशनर, हेयर ड्रायर, कपड़े सुखानेवाली मशीन, माईक्रोवेव ओवन, और अन्य असंख्य वस्तुयें।

अमेरिका में मैं अपने सम्मेलन के दौरान मैं लोगों को देखती हूँ कि शिकायत करते हैं क्योंकि उन्हें सम्मेलन स्थल से कुछ दूर गाड़ी खड़ी करनी पड़ती है, फिर भी भारत में लोग एक बाइबल सम्मेलन में भाग लेने के लिये तीन दिनों तक पैदल चलते हैं। मैं देखती हूँ कि अमेरिका में लोग बाथरूम जाने, या एक ग्लास पानी लेने, या एक फोन उठाने के लिये अपने चारों तरफ के लोगों को परेशान करते हैं, परन्तु भारत में लोग सच में धूल में बैठे रहते हैं, और उठने का विचार भी नहीं करते। मेरे देश में यदि बहुत ठण्डी हो या बहुत गर्मी हो तो लोग शिकायत करते हैं, परन्तु जब मैं भारत जाती हूँ तो लोगों को शिकायत करते सुनती हूँ कि मैं अपने साथ गर्मी भी लेके आई हूँ।

मैं विश्वास करती हूँ कि हमें सुविधाओं की आदत है। मैं यह सलाह नहीं देती कि हम अपनी आत्मिक सुविधाओं को निकाल दें, और मैं निश्चत रूप से समझती हूँ कि जिन चीजों के हम आदि हो चुके हैं उनकी इच्छा होती है, परन्तु हमें सुविधा के विषय में उचित सामन्जस्य बैठाने की आवश्यकता है। यदि हम ऐसा करते हैं तो वास्तव में परमेश्वर का धन्यवाद दें, परन्तु यदि ऐसा नहीं कर सकते हैं तो कभी भी परमेश्वर जो करने के लिये कहता है उससे यह बातें हमें कभी रोकनी नहीं चाहिये।

वर्षों पूर्व का एक समय मैं याद करती हूँ जब एक अन्धे दम्पत्ति जब हमारे बुधवार की रात की सभा में यहाँ आना चाहते थे, जो एक बड़े सन्त लूईस नामक होटल में आयोजित किया गया था। सामान्यतः वे बस पकड़ते हैं, परन्तु उनका सामान्य रूट बदल गया था, उनका एक मात्र तरीका यह रह गया था कि कोई उन्हें लेकर आये और वापस घर पहुँचाए। कितना बड़ा अवसर! मैंने सोचा कि लोग उनकी सहायता करने के लिये पंक्तिबद्ध खड़े होंगे, परन्तु कोई भी करने का इच्छुक नहीं था, क्योंकि वे एक ऐसे स्थान पर रहते थे, जो शहर से दूर था।

दूसरे शब्दों में इस दम्पत्ति के लिये वाहन का प्रयोग करना असुविधाजनक होता। मुझे स्मरण है कि हमने अपने एक कार्यकर्ता का प्रबन्ध यह करने के लिये किया जिसका तात्पर्य था कि हमें उसे भूगतान करना था। यह कितना अद्‌भुत है कि हम "सहायता" करने के लिये कितने अधिक तैयार रहते हैं, यदि हम उसके बदले में धन प्राप्त करते हैं। हमें स्मरण रखना चाहिये कि धन का प्रेम सभी बुराईयों का जड़ है। हम धन को अपने जीवन में मुख्य प्रेरणाकारक नहीं बना सकते हैं। हम सबको धन की जरूरत है, परन्तु हमें दूसरों के लिये काम करने की भी जरूरत है। और यह सच्चाई भी कि दया के यह कार्य कभी–कभी हमारे लिये असुविधाजनक होता है, यह कभी हमारे लिये असुविधाजनक होना वास्तव में अच्छा होता है। अकसर ऐसे अवसर "परख के समय" होते हैं, जब परमेश्वर हमें परखता है कि हम समर्पित हैं या नहीं। यदि आप किसी के लिये दया दिखाना चाहते हैं, जिसमें कोई भूगतान ना करना हो और कोई श्रेय ना लेना हो, तो यह इस बात का सकारात्मक चिन्ह है कि आपका आत्मिक हृदय अच्छी स्थिति में है।

जब परमेश्वर ने देखना चाहा कि क्या इस्त्राएली लोग उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, उसने उन्हें जंगल के लम्बे और कठिन मार्ग में ले गया (व्यव. 8:1–2 देखिये)। कभी कभी वह हमारे साथ भी ऐसा ही करता है, जब आसान होता है और हमें तुरन्त प्रतिफल मिलता है तो हम परमेश्वर की मानने के लिये बहुत इच्छुक होते हैं, परन्तु जब असुविधाजनक हो, जब ये हमारी योजना के अनुसार ना हो, जब उसमें अपने लिये कुछ नहीं दिखता हो, सबके विषय में क्या है? हम तब कितने आज्ञाकारी होते हैं? ये सभी प्रश्न है जिन्हें हमें स्वयं से पूछना चाहिये, क्योंकि हमारे समर्पण विषय में ईमानदार होने के लिये यह बहुत महत्वपूर्ण है। कलीसिया में खड़े होकर "सबकुछ मैं देता हूँ" गीत गाना बहुत आसान है, परन्तु जब देने की बात गीत से बढ़कर हो और यह एक वास्तविक बात हो तो हम क्या करते हैं?

परमेश्वर, यह एक अच्छा समय नहीं है

बाइबल एक मनुष्य की कहानी बताती है जिसने परमेश्वर का अनुसरण नहीं किया क्योंकि ऐसा करना उसके लिये असुविधाजनक था। यह मनुष्य, जिसका नाम फेलिक्स था, पौलसु से कहा कि वह आकर उसके सुसमारचार प्रचार करे। परन्तु जब पौलुस ने उसे सही जीवन की पवित्रता और इच्छाओं पर

नियन्त्रण के विषय में बात करने लगा, तब फेलिक्स चेतावनी पाकर भयभीत हो गया। तब उसने पौलुस से कहा कि तुम अभी चले जाओ बाद में मैं अपनी सविधा से बुलावा भेजूँगा (प्रेरितों 24:25 देखिये)। मैं इसे मन बहलाव की बात पाती हूँ, इसलिये नहीं कि यह मजाक की बात है, परन्तु इसीलिये कि यह स्पष्ट रूप से बताती है कि हम क्या हैं। हम यह सुनने की परवाह नहीं करते हैं कि परमेश्वर हम से कितना प्रेम करता है, हमारे जीवनों के लिये उसकी अच्छी इच्छायें क्या है, परन्तु जब वह हमें डाँटने या किसी प्रकार से सुधारने का प्रयास करता है, तब हम उसे कहने का प्रयास करते हैं कि "अभी" अच्छा समय नहीं है। मुझे सन्देह है कि वह हमारे विचार के अनुरूप सभी समय का चुनाव करता हो, "एक अच्छा समय," और मैं सोचती हूँ कि वह ऐसा उद्देश्य के साथ करता है!

जब इस्त्राएली लोग जंगल से होकर यात्रा कर रहे थे, तो एक मेघ दिन के समय, और आग रात के समय उनकी अगुवाई करता था। जब मेघ चलता था जब उन्हें चलना होता था, और जब मेघ रूक जाता था, तो वे जहाँ होते थे वहीं रूक जाते थे। रोचक बात यह है कि कोई ऐसी योजना या तरीका नहीं था, जिसे वह जानते कि बादल कब चलने लगेगा। जब बादल चलने लगता था तब उन्हें भी चलना होता था (गिनती 9:15–23 देखिये)। बाइबल कहती है कि कभी कभी यह दिन के समय चलता था, और कभी कभी यह रात के समय चलता था। कभी कभी ये कुछ दिनो के लिये आराम करता था, और कभी कभी यह एक दिन के लिये रूकता था। मैं गम्भीरता पूर्वक यह सन्देह करती हूँ कि रात में वे सभी अपने तम्बूओं के द्वार पर "परेशान ना करें" का चिन्ह लगा के रखते हों, ताकि परमेश्वर जानें कि वे असुविधा नहीं चाहते हैं। जब वह निर्णय करता था तो यह समय होता था कि वे अपने सामानों को लेकर उसके पीछे चलने लगते, और जब वह निर्णय लेता है कि हमारे लिये यही समय है जब उसमें यात्रा के अगले पड़ाव की ओर चल पड़ें, हमें कभी नहीं कहना चाहिये, "यह तो अच्छा समय नहीं है।"

क्या यह भला होता यदि परमेश्वर एक माहवार कैलेण्डर देता जिसमें चलने के दिनों को बताया जाता ताकि वे मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक रूप से तैयार होते? मुझे आश्चर्य है कि उसने ऐसा क्यों नहीं किया? क्या केवल इसलिये कि वह हमें उद्देश्य के साथ हस्तक्षेप करता है यह देखने के लिये हम कैसी प्रतिक्रिया देते हैं?

परमेश्वर श्रेष्ठ बात जानता है और उसका समय हमेशा सही होता है। यह सच्चाई कि मैं तैयार महसूस नहीं करता कि अपने जीवन में यह कार्य करूँ इसका तात्पर्य है कि मैं तैयार नहीं हूँ। परमेश्वर "मार्गों और माध्यमों" की समिति का मुखिया है। उसके मार्ग हमारे मार्ग नहीं हैं, परन्तु वे ऊँचे और हमारे मार्गों से श्रेष्ठ हैं (यशा. 55:9 देखिये)।

यह आसान क्यों नहीं है?

यदि परमेश्वर चाहता है कि हम, लोगों की सहायता करें, तो वह उसे आसान और सस्ता क्यों नहीं बनाता है? मुझे इस प्रश्न का उत्तर एक और प्रश्न द्वारा देने दीजिये। क्या यीशु ने हमारे लिये पाप और बन्धन से स्वतन्त्रता खरीदने के लिये कुछ बलिदान दिया? मुझे आश्चर्य होता है कि क्योंकि परमेश्वर ने उद्धार की योजना को आसान नहीं बनाया। अन्ततः वह, कोई भी योजना बना सकता था, और कहता "इससे काम हो जाएगा"। ऐसा लगता है कि परमेश्वर के अर्थशास्त्र में कोई सस्ती बात नहीं है। राजा दाऊद ने कहा, वह परमेश्वर को ऐसा कुछ नहीं देगा जो उसके लिये कोई कीमत नहीं रखता (2 शमु. 24:24 देखिये)। मैंने सीखा है कि सच्चा देना तब तक नहीं होता है जब तक मैं उसे महसूस नहीं करती। अपने सभी पुराने कपड़ों और घर की वस्तुओं को दे देना और अपने आपको खाली कर देना अच्छा दिखता है परन्तु यह वास्तविक देने के बराबर नहीं है। वास्तविक देना तब होता है जब मैं वह वस्तु देती हूँ जिसे मैं स्वयं रखना चाहती हूँ। मुझे निश्चय है कि आपके पास भी ऐसे परख के समय आए होंगे जब परमेश्वर आपसे कुछ ऐसा देने के लिये कहता है, जिसे आप पसन्द करते हैं। उसने हमें अपना एकलौता पुत्र दिया क्योंकि वह हमसे प्यार करता है इसलिये प्रेम के कारण हम क्या करेंगे? क्या हम किसी जरूरतमन्द की सहायता करने के लिये कम से कम असुविधा कभी–कभी महसूस करेंगे?

हाल ही में मैंने टेलीविजन में एक कहानी एक जवान दम्पत्ति के विषय में देखी जो बहुत ही प्रेम में थे और जल्द ही विवाह करनेवाले थे। दुःखदायक यह थी, कि वह एक कार दुर्घटना में पड़ गई और महीनों तक कोमा में चली गई। पुरूष दिन ब दिन उसके सिरहाने बैठा रहता था और अन्ततः वह होश में आ गई, परन्तु उसे दिमागी चोट आई थी और वह हमेशा के लिये लकवाग्रस्त और अपने लिये बहुत सी बातों को करने में असमर्थ हो जाती। उस जवान ने विवाह का विचार छोड़ देने के विषय में भी नहीं सोचा। वह

वहाँ से एक व्हीलचेयर में वापस गई और अपनी चोट के कारण कुछ भी स्पष्ट नहीं बोल पाती थी, परन्तु प्रगट रूप से अद्‌भुत रीति से आनन्दित थी। अपने शेष जीवनकाल में उस व्यक्ति ने उसे सम्भाला और उन्होंने एक साथ जीवन का आनन्द लिया। उसकी सहायता से और प्रोत्साहन से यहाँ तक कि वह विशेष ओलम्पिक में भाग भी ले सकी और अद्‌भुत कार्य करने के योग्य भी बन सकी।

यह बहुत आसान होता और यहाँ तक कि हममें से बहुतों के लिये समझने योग्य भी होता कि वह जवान उसे छोड़कर चल देता। आखीर, उसके साथ रहने का मतलब था अपने आपको असुविधा में डालना और प्रतिदिन बलिदान देना। फिर भी वह उसे छोड़कर नहीं गया जैसा बहुत से लोग करते हैं जब वे असुविधाजनक स्थिति का सामना करते हैं। वह ठहरा रहा और अपनी सभी सम्भावनाओं में अधिक से अधिक आनन्द अनुभव किया जैसा कि हममें से अधिकांश करते हैं।

यदि आप मेरे समान हैं, तो आप वास्तव में ऐसे लोगों के विषय में पढ़ने में आनन्द पायेंगे जिन्होंने दूसरों के लिये बहुत अधिक बलिदान दिया, परन्तु मैं सन्देह करती हूँ कि परमेश्वर चाहता है कि मैं और आप कहानियाँ पढ़ने से अधिक करूँ। शायद परमेश्वर चाहता है कि आपकी अपनी एक कहानी हो।

किसी और की सुविधा के लिये असुविधाजनक होना

परमेश्वर एक व्यक्ति को रोकेगा और उससे कुछ असुविधाजनक करने के लिये कहता है, ताकि किसी और के जीवन को सुविधाजनक बना सके। हमें अवश्य ही परमेश्वर के रास्तों को समझना चाहिये या हम उन बातों का विरोध करेंगे जिन्हें हमें गले से लगाना चाहिये। सामान्य सच्चाई यह हैः हमें देना चाहिए ताकि प्रसन्न हों और देना सच्चा देना नहीं होगा यदि हम उसमें त्याग या बलिदान को महसूस ना करें।

पतरस, आन्द्रियास, याकूब, यूहन्ना और अन्य शिष्यगण बहुत अधिक आदरप्राप्त थे। वे बारह शिष्य होने के लिये चुने गये थे, वे लोग जो यीशु से सीखते और तब सुसमाचार को संसारभर में लेकर जाते। जब यीशु ने उन्हें बुलाया तब वे सभी व्यस्त थे, उनके पास जीवन था, परिवार था, और व्यवसाय था जिसकी देखरेख उन्हें करनी थी। बिना किसी चेतावनी के यीशु

ने उन्हें देखकर कहा, "मेरे पीछे चले आओ।" बाइबल कहती है कि जब यीशु ने उन्हें बुलाया तब पतरस और आन्द्रियास झील में जाल डाल रहे थे और उन्होंने अपने जालों को छोड़ा और यीशु के पीछे हो लिये (मत्ती 4:18–21 देखिये)। एक हस्तक्षेप के विषय में बात कीजिये! उसने उनसे नहीं कहा कि उन्हें इस के लिये प्रार्थना करनी चाहिये या इस पर विचार करें या घर जाओ और अपनी पत्नी और बच्चों से इसके विषय में बात करो, उसने मात्र इतना कहा, "मेरे पीछे चले आओ।"

उन्होंने यह नहीं पूछा कि उन्हें कितनी दूर जाना होगा या कितनी तनख्वाह मिलेगी। उन्होंने लाभ के विषय में नहीं पूछा, यात्रा भत्ता के विषय में नहीं पूछा, या वे किस प्रकार के होटल में रूकेंगे। उन्होंने उससे यह भी नहीं पूछा कि उनके कार्य क्या क्या होंगे। उन्होंने सब कुछ छोड़ दिया और उसके पीछे हो लिये। जब मैं इसके विषय में अब पढ़ती हूँ, तो मुझे अवश्य यह स्वीकार करना चाहिये कि यह एक प्रकार की सेवा लगती है, परन्तु शायद जितना बड़ा अवसर होता है उतना ही बड़ा बलिदान होता है।

मैं एक ऐसे समय को याद करती हूँ जब मैं कुछ एक बातों के विषय में शिकायत करती थी, जिनके विषय में लगता था कि परमेश्वर मुझ से चाहता है, क्योंकि मैंने महसूस किया कि अन्य लोगों में इस प्रकार की बातें नहीं है। उसने ऐसा कहा, "जॉयस्, तुमने मुझ से बहुत सी बातें माँगी है। क्या तुम्हें वे चाहिये या नहीं?" मैं पूछ सकती थी कि संसार भर के लोगों की सहायता करने के लिये मुझे सक्षम बनायें और मैं सीख रही थी कि ऐसा करने का अवसर सामान्यतः असुविधाजनक और गैर आरामदायक होता।

बिना बीज बोये फसल काटना असम्भव है। राजा सुलैमान ने कहा कि यदि हम इन्तजार करते हैं कि बीज बोने से पहले सभी परिस्थितियाँ अनुकुल हो तो हम कभी फसल नहीं काटेंगे (सभो. 11:4)। दूसरे शब्दों में, हमें देना और परमेश्वर की मानना चाहिये जब यह सुविधाजनक ना हो यह महँगा हो। शायद ये बारह व्यक्ति ऐसे चुने हुये व्यक्ति थे क्योंकि वे ऐसे कार्य करने को तैयार थे जो अन्य लोग करने को तैयार नहीं थे। यद्यपि बाइबल नहीं कहती कि यीशु ने किसी को बुलाया और जिसने इन्कार किया हो, शायद ऐसा हुआ हो। शायद, बारहों को पाने के लिये उसे हजारों से बात करनी पड़ी हो। कम से कम मैं सोचती हूँ कि आज ऐसा ही होता है। लोग जो त्याग करने के लिये असुविधाजनक भोगने के लिये और अपनी योजनाओं को बाधित होने देने को इच्छुक हों, थोड़े ही हैं। बहुत से यीशु के प्रति अपने प्रेम के गीत गाते

हैं और यह अच्छा है, परन्तु हमें यह भी अवश्य स्मरण रखना चाहिये कि यद्यपि गीत गाना रूचिकर है, परन्तु इसमें बलिदान की आवश्यकता नहीं है। सच्चा प्रेम बलिदान चाहता है।

मैं विश्वास करती हूँ कि संसार में सच्चा प्रेम बहुत अधिक प्रगट नहीं किया जाता, क्योंकि इसमें प्रयास लगता है और हमेशा कुछ कीमत चुकानी पड़ती है। यदि हम गम्भीरतापूर्वक प्रेम क्रान्ति में भाग लेने जा रहे हैं, तो हमें इस वास्तविकता को स्मरण रखना चाहिये। किसी भी प्रकार का समर्थन करने से पहले कीमत लगा लेना बुद्धिमानी है, अन्यथा हम उस कार्य को पूरा नहीं कर पायेंगे जिसे हम प्रारंभ करते हैं।

परमेश्वर द्वारा बाधित

जितना अधिक मैं बाइबल के पुरूषों और स्त्रीओं के विषय अध्ययन करती हूँ जिन्हें हम "महान" कहते हैं, उतना अधिक मैं देखती हूँ कि उन सबने बड़े बड़े बलिदान किये और परमेश्वर ने जो कुछ उनसे करने के लिये कहा उसमें कुछ भी सुविधाजनक नहीं था।

अब्राहम को अपना देश, अपने रिश्तेदार और अपने घर को छोड़ना था और एक देश को जाना था जिसके विषय में परमेश्वर उसे तब तक कहा भी नहीं था जब तक वह वहाँ नहीं गया। शायद उसने सोचा हो कि वह किसी महल में एक राजा के रूप में या कुछ ऐसा ही अपने यात्रा को अन्त करेगा, परन्तु वह एक जगह से दूसरी जगह भटकता रहा, और अस्थाई तम्बूओं में रहता रहा। उसने अपनी यात्रा को अकाल के दौरान मिस्त्र में समाप्त किया – एक ऐसा देश जो गुलाम बनानेवाल था (उत्पत्ति 12:10)। यद्यपि बलिदान बड़ा था अब्राहम को एक ऐसा व्यक्ति बनने का सुअवसर दिया गया जिसके साथ परमेश्वर वाचा बान्धे और उसके द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाने का अवसर प्राप्त करें (उत्पत्ति 22:18 देखिये)। *वाह!*

यूसुफ ने एक देश को भूखमरी से बचाया, परन्तु उसे हिंसक पूर्वक उसकी सुविधाजनक घर से हटाया गया जहाँ पर वह अपने पिता का प्रिय बेटा था और उसे एक असुविधाजनक जगह पर बहुत वर्षों तक डाल दिया गया। परमेश्वर ने ऐसा इसलिये किया ताकि यूसुफ को सही समय पर, सही स्थान पर पहुँचा सके। परन्तु यूसुफ इसे केवल बाद में ही जान सका। हम अकसर

नहीं जानते हैं कि हम क्यों हैं, कहाँ हैं, और कैसे हैं, और कहते हैं, "परमेश्वर, मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ?" मैं जानती हूँ कि मैंने परमेश्वर से ऐसा कई बार कहा है और यद्यपि उसने उस समय उसका उत्तर देने की परवाह नहीं की, मैं पीछे मुड़कर अब देख सकती हूँ और समझ सकती हूँ कि प्रत्येक स्थान जहाँ पर मैं थी और आज जहाँ मैं हूँ उसका भाग बना है।

एस्तेर ने यहूदियों को विनाश से बचाया, परन्तु परमेश्वर ने निश्चित रूप से ऐसा करने के लिये उसकी योजनाओं में बाधा डाली। वह एक जवान लड़की थी, जिसके पास निःसन्देह उसकी भविष्य की योजनायें थीं जब अचानक, बिना चेतावनी के, राजा के हैरम में पहुँचने के लिये कहा गया और उसकी कृपा दृष्टि पाने के लिये कि वह दुष्ट हामान की योजनाओं को प्रकट कर सके, जिसने यहूदियों की हत्या की योजना बनाई।

उसे ऐसी बातें करने के लिये कहीं गई जो उसके जीवन को खतरे में डालनेवाली थी, परन्तु उसके चाचा ने बुद्धिमानी पूर्वक कहा, "क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नष्ट होगी। क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपद मिल गया हो?" (एस्तेर 4:14)।

क्या उसने बलिदान नहीं किया, क्या परमेश्वर किसी और को नहीं पाता, परन्तु अपने लोगों को बचाना उसकी मंजिल थी। यह उसके जीवन का उद्देश्य था। केवल इसलिये अपने जीवन के उद्देश्य को खो न दें क्योंकि आप नहीं चाहते कि परमेश्वर आपकी योजनाओं में हस्तक्षेप करे।

ऐसे लोगों की सूचि जिन्होंने त्यागपूर्ण आज्ञाकारिता में प्रवेश किया लम्बी से लम्बी होती जाती है। बाइबल उन्हें ऐसे कहती हैं, "संसार जिनके योग्य नहीं था" (इब्रा.11:38)।

ये लोग जिनके विषय में हम पढ़ते हैं वे असुविधायुक्त थे, ताकि किसी और का जीवन आसान बन जाए। यीशु मरा कि हम जीवन पायें और बहुतायत से पायें। सैनिक मरते हैं ताकि नागरिक अपने घरों में सुरक्षित रहें। पिता काम पर जाते हैं ताकि परिवार अच्छा जीवन व्यतीत करे और मातायें प्रसव पीड़ा सहती हैं ताकि संसार में एक और जीवन लेकर आयें। यह बहुत ही प्रकट दिखता है कि किसी के किसी लाभ के लिये कोई असुविधा या दर्द का अनुभव करता है।

यह अध्याय बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रेम क्रान्ति का भाग होना यदि आपके लिये एक अच्छी विचार हो जो अच्छी भावना प्रदान करता है, तो आप अपने मन को इसके भाग होने के विषय में बदल डालेंगे जब आप जानेंगे कि आपको प्रेम में चलने के लिये कुछ न करने के बदले में कुछ करने की जरूरत है। आपको किसी को गले लगाना होगा जिससे आप भागते हों क्योंकि प्रेम दूसरों को पराजय और कमजोरियों का बोझ उठाता है। आपको ऐसे जगह पर रहना पड़ सकता है जो बहुत अच्छा न हो क्योंकि आप ही अन्धेरे में एक मात्र ज्योति है। आपको एक स्थान छोड़ना पड़ सकता है क्योंकि चारों ओर की बातें आपको पाप करने के लिये परीक्षा में डालती हैं। वास्तव में अब्राहम मूर्ति पूजकों के मध्य में रह रहा था जिसमें उसका परिवार भी शामिल था। इसलिये यह आश्चर्यजनक नहीं है कि परमेश्वर ने उससे उस स्थान और लोगों को छोड़ने के लिये कहा। कभी कभी परमेश्वर हमें अपने परिचित बातों से अवश्य अलग करता है कि हमें वह दिखाये जो हमें वह दिखाना चाहता है।

यदि आप निर्णय लेते हैं कि आप असुविधा और हस्तक्षेप की परवाह नहीं करेंगे तब परमेश्वर आपको इस्तेमाल कर सकता है। आप संसार में एक अन्तर ला सकते हैं, परन्तु आप यदि अपने सुविधा के आधि बने रहते हैं तो परमेश्वर

यदि आप निर्णय लेते हैं कि आप असुविधा और हस्तक्षेप की परवाह नहीं करेंगे तब परमेश्वर आपको इस्तेमाल कर सकता है।

को आपको छोड़कर किसी और मजबूत पेटवाले को लेना पड़ेगा जो जीवन के कठिनाई को पचा सके।

सदोम और अमोरा

सम्भवतः आपने सदोम और अमोरा और उन शहरों की भयानक दुष्टता के विषय में सुना है। परन्तु वास्तव में उन्होंने जो किया वह परमेश्वर को अप्रसन्न करनेवाला था? हम अकसर ऐसा विचार रखते हैं कि उनके यौन विकृतियाँ अन्ततः परमेश्वर को उन्हें नाश करने का निर्णय लेने के लिये बाध्य किया, परन्तु वास्तविक परिस्थिति इससे भिन्न थी जो उसे इनके विरूद्ध कार्य करने के लिये उकसाया। उनके विनाश के कारणों की सच्चाई को जब मैंने देखा तो मैं सन्न रह गई। मैंने इसे धर्मशास्त्र में गरीबों को भोजन खिलाने की

आवश्यकता खोजते हुये पाया। "देख, तेरी बहिन सदोम का *अधर्म यह था,* कि वह अपने पुत्रियों समेत घमण्ड करती, पेट भर भरके खाती और सुख चैन से रहती थी; और दिन दरिद्र को न संभालती थी। अतः वह गर्व करके मेरे सामने घृणित काम करने लगी, और यह देखकर मैंने उन्हें दूर कर दिया" (यहेज. 16:49–50)।

सदोम और अमोरा की समस्या यह थी कि उनके पास बहुतायत से था और जरूरतमन्दों के साथ वे बाँटते नहीं थे। वे आलसी थे, और अत्यधिक सुविधाजनक जीवन व्यतीत करते थे, जिसने उन्हें घृणित कार्य करने के लिये प्रेरित किया। हम इससे यह देखते हैं कि बेकारी और बहुत अधिक सुविधा हमारे लिये अच्छी नहीं है और यह हमें और कठिनाई की ओर ले जाती है। हमारे पास जो है उसे उन लोगों के साथ बाँटते में पराजित होना जिनके पास कम है, हमारे लिये अच्छा नहीं है और वास्तव में यह खतरनाक भी है। क्योंकि यह स्वार्थीपन का जीवनचर्या बुराई को बढ़ने के लिये द्वार खोलती है। न केवल ये बातें हमारे लिये अच्छी ही नहीं है, परन्तु वे परमेश्वर के नजर में अपराध भी है। वह हमसे अपेक्षा करता है कि हम उसकी आशीषों को बहाने वाले बने न कि अपने तक उन्हें सीमित रखनेवाले।

हम हर सुविधा की प्रशंसा करते हैं जो आज हमारे लिये उपलब्ध है, परन्तु इसी रीति से मैं सोचती हूँ कि शैतान इस्तेमाल करता है कि किसी असुविधाजनक बात के दशा में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने की हमारी इच्छा को वह नाश करता है या अन्य लोगों की सहायता करने में हमारी इच्छा का नाश करता है। हम आराम के आदि हो गये हैं और हमें बहुत अधिक सावधान होना है। अधिकांश लोगों के समान मैं अच्छे और आरामदायक बातें पसन्द करती हूँ, परन्तु मैंने एक ऐसा प्रयास भी विकसित किया है कि जब मैं इन चीजों को अपने रीति से न पाऊँ तो शिकायत भी न करूँ। मैं यह भी समझती हूँ कि असुविधा हमेशा दूसरों की सहायता करने का भाग होता है और मैं जानती हूँ कि मैं लोगों की सहायता करने के लिये परमेश्वर के द्वारा बुलाई गई हूँ और इसे अच्छे स्वभाव के साथ करती हूँ।

लिखते समय मैं हस्तक्षेप किया जाना पसन्द नहीं करती। यह मेरे लिये बहुत असुविधाजनक महसूस होता है यदि मैं वाधित होती हूँ क्योंकि मुझे फिर से इस प्रवाह में आने के लिये बहुत से प्रयास करना पड़ता है। कुछ समय पहले मेरी परख हुई, मेरी फोन की घण्टी बजी और वह एक महिला थी जिसे

मैं जानती थी कि उसे मेरी जरूरत है कि मैं कुछ देर के लिये उसके विवाहित जीवन की समस्याओं के विषय में उसे सुनूँ। मैं अनिवार्य रूप से रूकना नहीं चाहती थी परन्तु मैं ने महसूस किया कि मुझे रूकना चाहिये क्योंकि यह विशेष महिला एक जानी पहचानी व्यक्ति है जिसके पास और कोई नहीं है जिससे वह भरोसे के साथ बात कर सके। केवल इसलिये कि एक व्यक्ति बहुत जानी मानी है, इसका ये अर्थ नहीं है कि वह अकेली नहीं हो सकती है। वह अकेली है, अर्न्तराष्ट्रीय रूप से प्रसिद्ध है जिसके पास समस्या है और परमेश्वर प्रेम के वास्तविक अभ्यास के विषय में मेरे लेखन को बाधित करना चाहता है! कल्पना करें....परमेश्वर चाहता है कि हम जो विश्वास करते हैं उसका अभ्यास करें।

अध्याय

5

प्रेम मार्ग पाता है

यदि मैं सफल होने के प्रति दृढ़ निर्णय लिया हूँ
तो पराजय मुझ पर हावी नहीं हो सकता।
ओग मैनडीनो

अभिलाषा एक शक्तिशाली प्रेरक है। अन्ततः मैंने इस सत्य का सामना किया है कि यदि मैं ईमानदारी पूर्वक कुछ करना चाहती हूँ, तो मैं उसे करने का कुछ रास्ता भी पाऊँगी। लोग अकसर मुझसे पूछते हैं कि मैं जो करती हूँ वह सबकुछ कैसे करती हूँ, और इतना ही कहती हूँ, "क्योंकि मैं करना चाहती हूँ।" मैं जानती हूँ कि परमेश्वर ने मुझे अनुग्रह दिया है और मेरे हृदय में अभिलाषा रखी है, परन्तु यह एक सच्चाई है कि मैं कुछ बातें करना चाहती हूँ जो वो मुझे करने के लिये प्रेरित करती हैं। परमेश्वर जो चाहता है कि मैं करूँ वह मैं करना चाहती हूँ; मैं लोगों की सहायता करना चाहती हूँ, और मैं अपने लक्ष्य तक पहुँचना चाहती हूँ या जैसा प्रेरित पौलुस ने कहा, "मैं अपनी दौड़ को पूरी करना चाहता हूँ।"

आप शायद पूछ सकते हैं, "यदि मुझ में वह अभिलाषा नहीं है तो क्या होता?" आप निश्चय ही परमेश्वर की इच्छा को करने के लिये अभिलाषा रखते या इस पुस्तक के पहले अध्याय को पढ़ने के पश्चात् इसे आप नीचे रख देते।

यदि परमेश्वर के साथ मसीह के द्वारा आपका संबन्ध है, तब आपके हृदय में अच्छा करने की इच्छा होती हो क्योंकि उसने आपको अपना हृदय और अपनी आत्मा दी है। यहेजकेल 11:19 प्रतिज्ञा करता है कि: "और मैं उनका हृदय एक कर दूँगा, और उनके भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और उनकी देह में से पत्थर सा हृदय निकालकर उन्हें माँस का हृदय दूँगा।" हम सुस्त, निष्क्रिय, या स्वार्थी हो सकते हैं और इन मुद्दों पर कार्य करने की जरूरत है, परन्तु विश्वासी के रूप में यह असम्भव है कि हम परमेश्वर का हृदय रखें और उसकी आज्ञा का पालन न करना, और लोगों की सहायता न करना चाहें।

मैं अनुमान लगाती हूँ कि प्रश्न यह है, आप कितना इसे चाहते हैं? क्या आप उसकी इच्छा अपनी इच्छा से बढ़कर करना चाहते हैं? क्या आप उसके बदले में अन्य वस्तुओं का बलिदान करना चाहते हैं?

हाल ही में मुझ से एक जवान ने कहा कि वह कितना अप्रसन्न था। उसने मुझसे कहना जारी रखा कि वह जानता है कि परमेश्वर उसे एक ऊँचे स्थान के लिये बुला रहा था, परन्तु उसने महसूस किया कि वह उसके लिये आवश्यक बलिदान करने को इच्छुक नहीं था। मैंने उसके लिये दुःख महसूस किया क्योंकि मैं नहीं चाहती कि वह उस आनन्द को खोए जो बलिदान के दूसरी तरफ उसके लिये उपलब्ध था। मैं प्रार्थना करती हूँ कि वह अपने मन को बदल डाले।

यदि हम वास्तव में कुछ करना चाहते हैं, तो हम उसके लिये रास्ता भी ढूँढ़ निकालते हैं। जब तक हम इस बात को स्वीकार नहीं करते तब तक हम अपने बहानों से धोखा खाते हुये अपने जीवन को व्यतीत करेंगे कि हम क्यों काम नहीं कर सकते हैं। बहाने बहुत खतरनाक होते हैं, और मैं विश्वास करती हूँ कि इच्छित उन्नति न करने के मुख्य कारणों में से एक यही है। सम्भवतः आप व्यायाम करना चाहते हैं, परन्तु आप एक बहाना करते हैं कि आप क्यों नहीं ऐसा कर सकते हैं। सम्भवतः आप अपने परिवार के साथ अधिक समय व्यतीत करना चाहते हैं, परन्तु ऐसा न करने के आपके अपने बाहाने हैं। आप समझते होंगे कि लोगों की सेवा में आपको और अधिक स्वयं को देने की जरूरत है और आप ऐसा करना चाहते भी हैं परन्तु ऐसे बहुत सारे हमेशा कारण होते हैं कि आप वास्तव में ऐसा क्यों नहीं कर पाते। शैतान वो है जो हमें बहाने देता है; जब तक हम समझते नहीं है कि बहाने हमें धोखे में रखता

है और अनाज्ञाकारी बनाता है, हम परिणामतः आनन्दविहिन, और फलविहिन जीवन में पहुँच सकते हैं।

एक अच्छा पड़ोसी

यीशु ने कहा, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख (लूका 10:27)।" उसने व्यवस्थापक से कहना जारी रखा कि वह कहना चाह रहा है कि यदि वह ऐसा करता है, तो वह जीएगा। जिसका तात्पर्य है कि वह क्रियाशील, आशीषित और परमेश्वर के जीवन में अन्तहीन जीवन का आनन्द उठाएगा। अपने आपको किसी भी सुधार से बचाते हुये व्यवस्थापक कहता है, "मेरा पड़ोसी कौन है?" वह यह जानना चाहता है कि वे लोग कौन हैं जिनके प्रति उसे प्रेम दिखाना है और एक कहानी कहने के द्वारा यीशु ने इस पर प्रतिक्रिया दी।

एक व्यक्ति जो यात्रा कर रहा था डाकूओं द्वारा आक्रमण किया गया, और जिन्होंने उसके सब वस्तुओं को ले लिया और उसके साथ मारपीट की, और उसे सड़क के किनारे अधा मरा छोड़ दिया। कुछ समय पश्चात् वहाँ से एक याजक आया (एक धार्मिक व्यक्ति), जिसने देखा कि एक जरूरतमन्द व्यक्ति जिसे सहायता चाहिये वह पड़ा हुआ है, और वह सड़क के दूसरे किनारे से निकल गया। मैं नहीं जानती कि वह पहले से सड़क के दूसरी तरफ था या सड़क पार किया, ताकि घायल व्यक्ति उसे देख न सके और उसे मदद न माँगे, परन्तु उसने यह बात सुनिश्चित की वह उस घायल व्यक्ति के पास से न गुजरे। तब एक और धार्मिक व्यक्ति लेवी वहाँ से निकला और सड़क के दूसरी तरफ से चला गया। शायद ये धार्मिक व्यक्ति चर्च जाने के लिये जल्दी मचा रहे थे, और उनके पास ये कार्य करने के लिये समय नहीं था, जो वास्तव में चर्च करने के लिये हमें सिखाता है। धार्मिक व्यक्ति बहुधा धार्मिक शब्दों के द्वारा अपनी जरूरत के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, परन्तु व्यवहारिक रूप से कुछ भी नहीं करते हैं। मैं विश्वास करती हूँ, कि यह हमारे मसीही जीवन में आज की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। जो हमें जानना चाहिये उसके प्रति हम गर्वित महसूस करते हैं, परन्तु बहुत बार उस ज्ञान के साथ हम बहुत कुछ नहीं कर पाते हैं जिसे हमें करना चाहिये। हम बहुत बात करते हैं, परन्तु हम लोगों को नहीं दर्शाते हैं कि उन्हें क्या देखने की जरूरत है—और यह कार्यरूप में प्रेम है।

इन दोनों धार्मिक व्यक्तिओं के उस व्यक्ति के पास से निकल जाने के पश्चात् जिसे सहायता की बहुत आवश्यकता थी, एक सामरी व्यक्ति जो कोई खास धार्मिक नहीं था, वहाँ से यात्रा कर रहा था। जब उस जरूरतमन्द व्यक्ति को देखा, तो वह दया और तरस से भर गया और उसके पास गया और उसके चोटों पर पट्टी बान्धी, तत्पश्चात् उसने उसे अपने घोड़े पर बैठाया और उसे एक स्थानीय सराय में ले गया और उस सराय के मालिक को दो दिन की मजदूरी दी और उससे कहा कि इस व्यक्ति की देखभाल तब तक करें जब तक कि वह वापस नहीं आता है, तब वह आकर बाकी के हिसाब चुक्ता कर देगा। यीशु ने तब उस व्यवस्थापक से पूछा कि उन तीनों में से किसने पड़ोसी होने का धर्म निभाया (लूका 10:27–37 देखिये)।

इस कहानी के बहुत सारे पहलुओं ने मेरा ध्यान खींचा। पहला, जैसा कि मैंने पहले भी कहा, धार्मिक व्यक्तियों ने कुछ नहीं किया। हमें कुछ नहीं करने से इन्कार करना है! चाहे जो हम कर सकते हैं वह छोटा ही क्यों न हो, परन्तु हमें कुछ करने के लिये रास्ता निश्चय ही निकालना चाहिये जब उन जरूरतों को पूरा करने की होती है जब परमेश्वर हमें बताता है। मैं स्वीकार करती हूँ कि ऐसे समय आते हैं जब हम केवल प्रार्थना कर सकते हैं, या शायद कुछ शाब्दिक उत्साह की बातें कह सकते हैं, परन्तु हमें कम से कम इतना उत्साहित होना चाहिये कि हम सहायता के रास्ते ढूँढें। कम से कम हमें इसके विषय में इतना ही सोचना चाहिये और केवल कल्पना करना ही नहीं कि हम क्या नहीं कर सकते हैं, या इससे भी बुरा, कुछ नहीं करने के बहाने ढूँढ़ना क्योंकि हम इसकी परवाह नहीं करना चाहते हैं।

अगली बात जो इस कहानी में आघात पहुँचाता है वह है कि सामरी व्यक्ति इस व्यक्ति की सहायता करने के लिये कुछ कष्ट उठाता है। मैं कल्पना करती हूँ कि उसने कुछ प्रकट रूप से अपने यात्रा में विलम्ब किया, प्रकट रूप से वह कहीं जा रहा था जहाँ उसे जाने की जरूरत थी, क्योंकि उसने उस व्यक्ति को छोड़कर अपने कार्य पर जाने का निश्चय किया इससे पहले कि वह वापस आये। उसने समय और धन का निवेश किया और वह बाधित होने का इच्छुक था, ताकि जरूरत में किसी जरूरतमन्द की देखभाल करे।

मैं यह भी देखती हूँ कि सामरी व्यक्ति ने उसके मूल उद्देश्य में इस आपस स्थिति से कोई रोक होने नहीं दिया। यह भी महत्वपूर्ण है क्योंकि लोग

अपनी भावनात्मक रूप से इतने अधिक चलायमान होते हैं, कि वे अपने लक्ष्यों को पूरा करने पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर सकते हैं। हमारी बेटी सान्ड्रा लोगों की सहायता करना इतना अधिक पसन्द करती है और वह एक अच्छी बात है, परन्तु कल ही उसने मुझ से फोन पर बात किया और कहा कि मैं उसके लिये प्रार्थना करूँ कि वह इस बात में सन्तुलन रख सके कि किसकी सहायता करनी है और किस हद्द तक करनी है। उसके पास दो जुड़वा बच्चे हैं, जिनकी उसे देखरेख करनी है। वह एक पालनपोषण से सम्बन्धित कक्षा अपनी चर्च में लेती है और उसके पास कुछ और कार्य भी हैं जिसके विषय में वह सोचती है, कि उसे करने में विश्वस्त होना चाहिये और फिर भी वह लोगों के जरूरत के विषय में सुनती है और वह हमेशा सहायता करना चाहती है। अधिकांशतः वह बिना सोचे समझे सहायता करने में जुट जाती है, कि उसका क्या तात्पर्य होगा या अपनी अन्य प्राथमिकताओं को अनदेखा किये बिना कैसे सहायता कर सकती है। परिणाम यह है कि उसकी सहायता करने की अच्छी अभिलाषा में वह कभी कभी निराशा और भ्रम में पहुँच जाती है, जो कभी परमेश्वर की इच्छा नहीं है।

मैंने सान्ड्रा को प्रोत्साहित किया कि वह वही करे जो यीशु की कहानी में सामरी ने किया, और मैं आपको भी इसी बात के लिये प्रोत्साहित करती हूँ। अपनी योजना को बदलने और असुविधाजनक होने के लिये इच्छुक होईये और कुछ धन और समय यदि आवश्यक हो तो इच्छुक रहिये कि दूसरों की आवश्यकता में सहायता करें। परन्तु सबकुछ स्वयं करने का प्रयास मत कीजिये जब सहायता करने के लिये अन्य लोग भी हों। सामरी ने सराय के मालिक को सहायता करने की सूचि सौंपी और अपने ध्यान को उन कामों की ओर केन्द्रित किया जिसे करने के लिये वह अपनी यात्रा पर था।

सड़क के इधर–उधर चलने पर शैतान ज्यादा परवाह नहीं करता है जब तक हम सड़क के मध्य में नहीं चल रहे हैं। दूसरे शब्दों में लोग या तो कुछ नहीं करते हैं या वे सबकुछ करने का प्रयास करते हैं और तब निरूत्साहित हो जाते हैं या क्रमशः महसूस करते हैं कि उनका फायदा उठाया जा रहा है। हमारे जीवन के सभी पहलू में सन्तुलन की आवश्यकता है चाहे वह दूसरों के सहायता करने का क्षेत्र ही क्यों न हो। मैंने देखा है कि मैं सबकुछ नहीं कर सकती हूँ, और किसी चीज को अच्छी रीति से कर सकती हूँ और ये हम सबके साथ भी सही है। परन्तु बहुत अधिक किसी कार्य में शामिल होने का भय मुझे बिना कुछ किये बैठे रहने भी नहीं दे सकता है।

मैं यह भी देखती हूँ कि सामरी ने इस बात की कोई सीमा नहीं रखी कि वह इस सेवा को किस कीमत तक करना चाहता है। उसने सराय की मालिक से कहा कि उस घायल व्यक्ति के इलाज़ में जो कुछ भी धन लगे वह लौटने पर उसे दे देगा। बिरले ही हम किसी ऐसे व्यक्ति को पाते हैं जो *जो कुछ* जरूरत है वैसा करने को इच्छुक हों।

जैसा कि मैंने कहा, कभी कभी हमें अपनी अन्य प्राथमिकताओं को बचाने के लिये सीमा रखनी चाहिये, परन्तु इस घटना में व्यक्ति के पास बहुत धन था, इसलिये उसे किसी सीमा को बान्धना जरूरी नहीं था। उसने एक दयालुपूर्ण व्यक्ति के समान काम किया न कि एक भयभीत व्यक्ति के समान। सम्भव है कि परमेश्वर किसी एक समस्या का समाधान करने और किसी जरूरत को पूरा करने के लिये हमसे न कहे, परन्तु वह चाहता है कि हममें से प्रत्येक जो कर सकते हैं वह करें और यदि वह हमसे सब कुछ करने के लिये कहता है, तब हमें सब कुछ करना चाहिये। अपना सब कुछ देना चुनौतीपूर्ण है और यह हमारे विश्वास को नये स्तर तक ले जाता है, परन्तु यह जानने की स्वतन्त्रता भी लाता है कि इस संसार में किसी बात का हम पर नियन्त्रण नहीं है।

मैं एक समय स्मरण करती हूँ जब परमेश्वर ने मुझ से अपने सभी व्यक्तिगत बचत को दे देने के लिये कहा, जिसमें मेरे उपहार सार्टिफिकेट भी शामिल थे। सब कुछ बलिदान करने का यह नया स्तर बहुत कठिन था, क्योंकि मैं बहुत लम्बे समय से धन का बचत कर रही थी और सही समय पर खरीदारी करने जाने की मेरी योजना थी। सब से कठिनतम उपहार के सार्टिफिकेट था। मेरे पास बहुत सारे सुन्दरवाले थे, जिसे मैंने अपने जन्मदिन में पाया था और मैं यह जानकर ही आनन्दित थी कि वह मेरे लिये उपलब्ध हैं और मैं उसे इस्तेमाल करना चाहती थी। मैं देने की आदि थी परन्तु सब कुछ दे देना एक नया स्तर था। परमेश्वर के साथ कुछ देर विवाद करने के पश्चात् और जितना बहाने मैं सोच सकती थी उतना बनाने के पश्चात् अन्ततः मैंने आज्ञा का पालन किया। अपनी सम्पत्ति को जाने देने का दुःख क्षणिक था परन्तु आज्ञापालन का आनन्द और यह ज्ञान की सम्पत्ति का मुझ पर कोई नियन्त्रण नहीं है, अनन्त था।

यह पहली बार था जब मेरी इस प्रकार की परख हुई परन्तु यह अन्तिम बार नहीं था। परमेश्वर परख के समय का चुनाव करता है और यह हमारे

लाभ के लिये अनिवार्य होता है। यह हमें वस्तुओं से बहुत अधिक मोह रखने से बचाता है। परमेश्वर चाहता है कि वह जो हमें देता है उसका हम आनन्द उठायें परन्तु वह यह भी चाहता है कि स्मरण रखें कि हम भण्डारी हैं मालिक नहीं है। वह स्वामी है और उसे हम अपने सारी हृदय, सारे आनन्द और जो स्त्रोत हमारे पास है उससे उसकी सेवा करना हमारा काम है।

मेरा पड़ोसी कौन है?

आपको किसकी सहायता करनी चाहिये और आपका पड़ोसी कौन है? यह चाहे कोई भी जरूरतमन्द व्यक्ति आपके मार्ग पर हो सकता है। या कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो चाहता है कि आप उसकी सुनें, या शायद कोई ऐसा व्यक्ति हो जो आपसे एक प्रशंसा या प्रसन्न पाना चाहता हो। या कोई ऐसा भी हो सकता हो जो आपका थोड़ा सा समय चाहता हो या शायद कोई ऐसा जिसके लिये आप आर्थिक सहायता का प्रबन्ध कर सकते हैं या आर्थिक सहायता पाने में सहायता कर सकते हैं। हो सकता है आपका पड़ोसी कोई ऐसा व्यक्ति हो जो अकेला महसूस करता हो और और आपसे केवल दोस्ताना व्यवहार रखना चाहता हो।

डेव ने हाल ही में मुझ से कहा कि परमेश्वर ने उनके साथ दोस्ताना व्यवहार में समय खर्च करने के बारे में बात किया था। मैंने हमेशा सोचा था कि वो मित्रवत हैं, परन्तु वो महसूस करते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि वे इसमें अधिक समय व्यतीत करें। उन्होने लोगों से उनके बारे में बहुत सारी बातें सिखाने के लिये कहता है, जो यह दर्शाया कि वह उनके विषय में एक व्यक्तिविशेष रूप में चिन्ता करते हैं। बहुत से लोग जिनके साथ वे समय व्यतीत करते हैं उन्हें वह जानते भी नहीं हैं, और शायद ही कभी नहीं देखेंगे। कभी कभी वो बुजुर्ग होते हैं या अन्य देशों के लोग होते हैं जो अच्छे रीति से अंग्रेजी नहीं बोलते और अपने स्थान पे जुदा महसूस कर सकते हैं। उन्होंने हाल ही में मुझ से एक विकलांग व्यक्ति के बारे में कहा, जिसे लोग एक कॉफी दुकान में घूरकर देख रहे थे। डेव ने उस व्यक्ति के साथ बात करने के लिये समय निकाला, यद्यपि उसके विकलांगता ने उसके बातचीत को कठिन बना दिया था।

हम अक्सर ऐसे लोगों को अनदेखा करते हैं जो हमसे किसी न किसी प्रकार अलग होते हैं क्योंकि वे हमें असुविधाजनक या अक्षम महसूस कराते

हैं। शायद हमें इस विषय में और अधिक सोचना चाहिये कि वे कैसा महसूस करते हैं न कि यह करें कि हमारे लिये क्या सुविधाजनक है।

अपने अच्छे पड़ोसी होने की तरीकों की सूचि शायद अन्तहीन हो, परन्तु यदि हम लोगों की सहायता करना चाहते हैं और एक आशीष होना चाहते हैं हम एक रास्ता पायेंगे। स्मरण रखें, उदासीनता बहाने बनाता है, परन्तु प्रेम मार्ग पाता है।

बड़े प्रभाव डालनेवाली छोटी बातें

यीशु ने अपना समय बर्बाद नहीं किया, अतः हम कल्पना कर सकते हैं कि हर बात जो उसने की वे बहुत ही अर्थगत थे और उसमें बड़े सीखनेयोग्य सबक थे। आईये समय के बारे में सोचिये जो उसने शिष्यों का पाद धोने का निर्णय लिया (यूहन्ना 13:1–17 देखिये)। यह किस विषय में था? उसके मन में बहुत सारे सबक थे जो शिष्यों को सीखाना चाहा रहा था, जिनमें से एक दूसरे की सेवा करने की जरूरत थी। यीशु परमेश्वर का पुत्र था और है। वास्तव में वह परमेश्वर है जो त्रिएकता के दूसरे व्यक्ति में प्रकट हुआ है। इसलिये यह कहना पर्याप्त होगा कि वह वास्तव में महत्वपूर्ण है और निश्चित रूप से किसी के पैर नहीं धोना था। विशेष करके उन लोगों की नहीं जो उसके छात्र थे, परन्तु उसने यह किया क्योंकि वह सीखाना चाहता था कि वे अधिकार में होंगे फिर भी उसी समय सेवक भी होंगे। बहुत से आज इस महत्वपूर्ण सबक को सीखने में पराजित हो गये हैं।

यीशु के दिनों में लोगों के पैर बहुत ही गन्दे हुआ करते थे, लोग धूल भरी सड़कों में यात्रायें करते थे, और ऐसे चप्पल पहना करते थे जो कुछ भी पट्टियों से बन्धा हुआ करता था। उन दिनों की प्रथा यह थी कि जब मेहमान घर में प्रवेश करते थे तो उनके पैर धाए जाते था, परन्तु यह कृति सेवकों द्वारा किया जाता था न कि स्वामी के द्वारा। यीशु ने वास्तव में अपने कपड़े को उतारा और एक सेवक के तौलिया को लपेट लिया। यह एक सबक सिखाने का एक और तरीका था। वह दर्शाना चाहता था कि हम अपने "पदों" को जीवन में एक तरफ रख सकते हैं, कि किसी की सेवा करें और उसे खोने का भय न रखें।

पतरस, जो सबसे मुखर शिष्य था, ने मना किया कि यीशु उसके पैरों को

धोए, परन्तु यीशु ने कहा, कि यदि वह पतरस के पाँव को नहीं धोएगा तो वे दोनों सच्चे मित्र नहीं बन सकते हैं। दूसरे शब्दों में अपने संबन्धो को स्वस्थ और मजबूत बनाए रखने के लिये उन्हें एक दूसरे के लिये कार्य करते रहना था। यदि विवाहित दम्पत्ति इस सिद्धान्त को अपने जीवन में लागू करते तो कितने विवाह बचाए जा सकते थे या कम से कम संबन्ध मजबूत हो सकते थे।

कुछ वर्षों पूर्व मैंने निर्णय लिया कि मैं अब और अधिक एक तरफा संबन्ध नहीं रखने के इच्छुक हूँ–ऐसे संबन्ध जिसमें मैं सबकुछ देती रहती हूँ और दूसरा व्यक्ति केवल लेता रहता है। इस प्रकार का संबन्ध वास्तविक संबन्ध नहीं है और यह हमेशा धीरे–धीरे ठहराव या कड़वाहट में बदल जाता है। न केवल हमें एक दूसरे के लिये कार्य करना है, परन्तु हमें वास्तव में ऐसा करने की जरूरत है। यह अच्छे सम्बन्ध को बनाए रखने का भाग है।

> न केवल हमें एक दूसरे के लिये कार्य करना है,
> परन्तु हमें वास्तव में ऐसा करने की जरूरत है।

हम अपने बच्चों के लिये बहुत कुछ करते हैं, परन्तु वे भी हमारे लिये कार्य करते हैं। वे जो हमारे लिये करते हैं वे शायद हम आराम से अपने लिये कर सकते हैं, परन्तु हमसे पाने के साथ साथ उनसे हमें देने की भी जरूरत है और हमें उन्हें ऐसा करने देने की जरूरत है।

देना हमेशा एक बहुत ही जरूरत की प्रतिक्रिया को ऐसी जरूरी नहीं है। लोगों के लिये कुछ करने के लिये हमें अगुवाई प्राप्त हो सकती है, जिनके विषय में नहीं लगता है कि उन्हें किसी बात की जरूरत है जो हम उनके लिये कर सकते हैं। यदि कोई जरूरत नहीं है तो हमें क्यों करना है? केवल इसलिये कि किसी प्रकार का प्रोत्साहन देना और लोगों को महसूस कराना कि उनसे प्रेम किया जाता है, और हम सबको भी प्रेम किये जाने की जरूरत है, चाहे हमारे पास कितनी ही वस्तुएँ क्यों न हो। आशीष बनने के लिए अपने संसाधनों का उपयोग कीजिए और आपके संसाधनों में कभी कमी नहीं होगी।

पैर धोना एक निम्न दर्जे का कार्य था जो सेवकों के लिए आरक्षित था, परन्तु इसमें एक बड़ा सबक था। अपने आप को दीन करो और छोटे कार्यों को करने के इच्छुक हों जो बड़ा प्रभाव छोड़ता हो।

छोटी वस्तुओं का बहुत महत्व होता है

एक मिशन यात्रा में डेलीरियस बैण्ड के ड्रॅम वादक स्टु को हम अपने साथ भारत ले गये। और उस समय उसे एक छोटी लड़की के द्वारा एक छोटा सा ब्रेस्लेट दिया गया जो वह पहनी थी। प्रेम का यह एक छोटा सा प्रगटीकरण, जिसके पास बहुत थोड़ा ही था, स्टु के लिये जीवन परिवर्तन करनेवाला था। उसने सार्वजनिक रूप से कहा था, कि जब तक वह जीवित रहेगा, उस सबक को नहीं भूलेगा जो इस घटना ने उसे सिखाया था। यदि कोई व्यक्ति अपने छोटे से साधन को भी देने की इच्छा रखता हो, तो वह क्या कुछ नहीं कर सकता था? हाँ, छोटी वस्तुयें बड़ा प्रभाव डाल सकती हैं।

आप कौन सी छोटी सी बात कर सकते हैं? यीशु ने पैरों को धोया और कहा, यदि हम उसके आदर्शो पे चलते हैं तो हम आशीषित और प्रसन्न होंगे। नीचे कुछ ऐसी बातों की सूचि आंशिक रीति से दी गई है, जिसके विषय में बाइबल कहती है कि हमें एक दूसरे के लिये करना चाहिये।

- एक दूसरे का ख्याल रखो।
- एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो।
- दूसरों के लिये आशीष बनों।
- दूसरों के प्रति दया दिखाने की खोज में रहो।
- मित्रवत और आतिथ्य सत्कार करनेवाला बनों।
- एक दूसरे के साथ धीरजवन्त बनों।
- दूसरों की गलतियों और कमजोरियों को सह लो।
- दूसरों को सन्देह का लाभ दो।
- एक दूसरे को क्षमा करो। एक दूसरे को सात्वना दो। विश्वासयोग्य बनों। ईमानदार बनों। एक दूसरे का निर्माण करो – दूसरों को उत्साहित करो। वे जो कमजोर महसूस करते है, तब उन्हें उनके सामर्थ स्मरण दिलाओ।
- लोग जब आशीषित होते हैं, तब उनके लिये प्रसन्न हों। एक दूसरे को प्राथमिकता दो (किसी को अपने आगे जाने दो या उन्हें किसी बात का सबसे श्रेष्ठ दो)।
- एक दूसरे का विचार रखो। लोगों की भेदों को अपने तक रखो और उनकी गलतियों को सबको न बताओ।
- एक दूसरे के प्रति सबसे अच्छी बात का विश्वास करो।

इसलिये कि जैसा मैंने कहा, यह एक आंशिक सूचि है। प्रेम के बहुत सारे पहलू हैं, या तरीके हैं जिससे इसे देखा जा सकता है। उनमें से अधिकतर पर हम इस पुस्तक में वार्तालाप करेंगे। ये विचार जिनकी मैंने यहाँ सूचि बनाई है, वे सामान्य बातें हैं, जिसे हम सब यदि इच्छुक हैं तो कर सकते हैं। हमें उनमें से अधिकांश के लिये विशेष कार्य योजनायें बनाने के लिये जरूरत नहीं है, परन्तु उन्हें दिनभर कर सकते हैं जब हम अवसरों से सामना करते हैं।

इसलिये जहाँ तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें;
विशेष करके विश्वासी भाईयों के साथ
(गलातियों 6:10)।

प्रेम को अवश्य स्वयं को अभिव्यक्त करना चाहिये

हम अधिकांशतः प्रेम को एक वस्तु के रूप में सोचते हैं, परन्तु शब्द एक क्रिया है। प्रेम बना रहने के लिये कुछ अवश्य करना चाहिये। प्रेम की प्रकृति का भाग यह है कि यह अभिव्यक्ति चाहता है। बाइबल कहती है कि यदि हम किसी जरूरत को देखते हैं और अपने हृदय को दया दिखाने से बन्द कर देते हैं, तो परमेश्वर का प्रेम किस प्रकार हम में जीता और बना रह सकता है (1 यूहन्ना 3:17 देखिये)। यदि प्रेम का प्रदर्शन नहीं किया जाता है तो वह कमजोर से कमजोर होता जाता है। वास्तव में वह पूरी रीति से निष्क्रिय हो जाता है। यदि हम लक्ष्य के साथ क्रियाशील रहते हैं, तो हम स्वार्थी होने, निष्क्रिय होने, और निष्फल होने से बचे रह सकते हैं। प्रेम का यह अति–अनिवार्य कार्य यह है, जो यीशु ने हमारे लिये अपने जीवन का बलिदान कर दिया है। और हमें भी एक दूसरे के लिये अपनी जीवन का त्याग करना चाहिये। यह उग्र विचार लगता है ना? स्वभाग्य से, हम में से बहुमत लोग कभी भी अपने भौतिक जीवन को किसी के लिये देने के लिये बुलाये नहीं जाएँगे, परन्तु प्रतिदिन हमारे पास दूसरों के लिये जीवन देने का अवसर है। एक बार जब आप अपनी अभिलाषा को एक तरफ रख दें, या अपने जरूरतों को एक तरफ रख देते और उसके बदले में दूसरी बात को रखते हैं किसी के लिये प्रेम कारण, तब आप अपने जीवन को किसी के लिये या क्षण के लिये, या एक घण्टे के लिये, या एक दिन के लिये त्यागते हैं।

यदि आप पूरी रीति से परमेश्वर के प्रेम से भरे हुए हैं, और हम हैं क्योंकि पवित्रात्मा हमारे हृदय को नया जन्म के समय भर देता है, तब हमें प्रेम को

अपने में से बहने देना चाहिये। प्रेम निष्क्रियता के कारण प्रवाहहीन हो जाता है, तो यह किसी काम का नहीं है। परमेश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दिया (यूहन्ना 3:16 देखिये)। क्या आप इसे समझते हैं? परमेश्वर के प्रेम ने उसे देने के लिये वाध्य किया। यह कहना व्यर्थ है कि हम लोगों से प्यार करते हैं, यदि हम उनके लिये कुछ नहीं करते हैं। अपने घर में एक बहुत बड़ा चिन्ह लगाईये, शायद बहुत सारे जगहों पर जिसमें लिखा हो, "आज किसी की सहायता करने के लिये मैंने क्या किया है।" यह आपको किसी लक्ष्य को स्मरण दिलाने के काम आएगा, जब आप नई आदतों को विकसित कर रहे हैं, और एक प्रेम क्रान्तिकारी बन रहे हैं।

प्रेम कार्य से भरा हुआ है। यह एक सिद्धान्त या केवल शब्द नहीं है। शब्द महत्वपूर्ण है और वास्तव में हम अपने शब्दों को लोगों से प्यार करने के एक विधि से कर सकते हैं, परन्तु हमें प्रत्येक सम्भव माध्यमों का उपयोग अपने बीच में प्रेम दिखाते रहने के लिये इस्तेमाल करना चाहिये।

आज आप क्या करेंगे किसी को प्रेम दिखाने के लिए। इसके लिए समय निकालकर सोचिए और एक योजना बनाइए। किसी के आनंद को बढ़ाए बिना अपना दिन ना बिताए।

अध्याय

6

बुराई को भलाई से जीतिए

बुराई के विजय के लिए अतिअनिवार्य बात भले मनुष्यों
को कुछ नहीं करना है।
एडमण्ड बुरके

कुछ नहीं करना आसान है, परन्तु यह बहुत खतरनाक भी होता है। जहाँ पर बुराई का विरोध नहीं होता है, वह बढ़ता है। हम सब अकसर शिकायत करने के चाल में फस जाते हैं कि हमारे समाज में और हमारे जीवन में ये बातें गलत है, परन्तु शिकायत करने से स्वयं को और अधिक निरूत्साहित करने के अलावा कुछ नहीं होता है। यह कुछ भी नहीं बदलता है क्योंकि इसमें कोई भी सकारात्मक सामर्थ नहीं होती है।

कल्पना करें कि यह संसार कितना ही बुरा होता यदि सृष्टि के समय से ही परमेश्वर हर बात के विषय शिकायत करता रहता, परन्तु परमेश्वर शिकायत नहीं करता है। वह लगातार अच्छा बना रहता है और न्याय के लिये कार्य करता है। वह जानता है कि वह बुराई को भलाई से जीत सकता है, निश्चय ही बुराई शक्तिशाली है, परन्तु भलाई और अधिक शक्तिशाली है।

हमें रूकने और यह समझने की जरूरत है कि परमेश्वर अपने लोगों के द्वारा कार्य करता है। हाँ, परमेश्वर, सब समय भला है, परन्तु उसने मेरे और

आपके जैसे अपने बच्चों के द्वारा इस पृथ्वी पर कार्य करने का चुनाव किया है। यह समझना नम्र बनाने वाली बात है कि यदि हम प्रेम करने और हर समय भलाई करने प्रति और अधिक समर्पित होते तो वह और अधिक कर सकता था। हमें मत्ती 5:16 में यीशु के निर्देश को स्मरण रखने की जरूरत है, "उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।"

भलाई शक्तिशाली है

जितना अधिक हम बुराई को बुराई से सामना करेंगे, उतना ही वह बढ़ता है। मुझे एक चलचित्र स्मरण आता है जिसका शीर्षक एल् सिड है, जो एक ऐसे व्यक्ति की कहानी थी, जिसने स्पेन को एक किया था और जिस सिद्धान्त का मैं वर्णन कर रही हूँ, इसका इस्तेमाल करते हुये एक बहुत बड़ा हीरो बन गया था। सदियों तक मसीहियों ने मूर् लोगों के साथ लड़ाई की थी। वे एक दूसरे से घृणा करते और एक मारते थे। युद्ध मे, एल् सिड ने पाँच मूर लोगों को पकड़ा, परन्तु उन्हें मारने के लिये इन्कार किया, क्योंकि उसने समझा कि मारने से कभी कोई भला नहीं हुआ है। उसने विश्वास किया कि अपने शत्रुओं पर दया दिखाना उनके हृदय को बदलेगा और तब दोनों समूह शान्तिपूर्वक रह सकते हैं। यद्यपि उसके कृत्य के लिये पहले उसे विश्वासघाती करार दिया गया, परन्तु अन्ततः उसका यह कृत्य कार्य करने लगा, और उसे एक हीरो का दर्जा दिया गया।

एक मूर जिसे उसने पकड़ा था कहा, "कोई भी मार सकता है, परन्तु एक सच्चा राजा ही अपने शत्रुओं पर दया दिखा सकता है।" केवल उसके एक दयापूर्ण व्यवहार के कारण एल् सिड के शत्रुओं ने अपने आपको उसे मित्र के रूप में दे दिया और उस समय से सन्धि स्थापित हो गई। यीशु एक सच्चा राजा है, और वह भला, दयालु और सब के प्रति करूणामय है। क्या हम उसके आदर्शों पर चलने से कुछ कम कर सकते हैं?

इस समय, क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोच सकते हैं जिस पर आप दया दिखा सकते हैं? क्या कोई है जिसने आपके साथ गलत व्यवहार किया हो, जिससे आप भला कर सकते हैं? दयालु और भला होना विशेष करके अपने शत्रुओं के प्रति संभवतः सबसे शक्तिशाली बात होगी जो आपने पहले किया हो।

प्रार्थना काम करती है

पिछले कई वर्षों में, हमने टेलिविजन में दिखाये जा रहे दुष्ट बातों और चलचित्रों के द्वारा बुराई को बहुत तेजी से बढ़ते हुये देखा है। वर्षों पूर्व मैं बहुत ही भयभीत हुई जब आत्मा संबन्धित कार्यक्रम टेलिविजन पर आने लगे। वे कुछ रूपये लेकर लोगों को भविष्य बताने का प्रस्ताव दिया करते थे। कोई भी व्यक्ति, जो कुछ रूपये प्रति मिनट के लिये देने के लिये तैयार होता था, वे उन्हें फोन करते थे और अपना तथाकथित भविष्य सुन सकते थे। मैं लगातार इसके विषय में शिकायत करती थी और इसके विषय में लगातार इस प्रकार की टिप्पणियाँ किया करती थी जैसे, "मैं सोचती हूँ कि यह भयावह है, कि टेलिविजन में ऐसे कार्यक्रम को वे होने देते हैं। बहुत से लोग अपने धन को यूँ हीं बर्वाद कर रहे हैं, और वे धोखा खा रहे हैं।" बहुत से अन्य लोगों को मैं ने इसी प्रकार की बातें कहते हुये सुना। एक दिन परमेश्वर ने भी यह विचार मेरे हृदय में डाला, *यदि तुम और अन्य लोग जो शिकायत करते हैं कुछ समय इसके विषय में प्रार्थना में लगाया होता, तो मैं इस विषय में कुछ किया होता।* मैं ने प्रार्थना करना और अन्य बहुत सारे लोगों से ऐसा करने के लिये कहना प्रारंभ किया। बहुत दिन नहीं बीते थे, कि सारे तो नहीं परन्तु कई एक कार्यक्रम संप्रेषित होना बन्द हो गया।

हम अकसर शिकायत करने के आदी होते हैं कि "वे" क्या कर रहे हैं, जैसे जब "उन्होंने" इस प्रकार के कार्यक्रम टेलिविजन पर संप्रेषित करना प्रारंभ किया, फिर भी हम ने किसी को बेहतर बनाने के लिये कुछ नहीं किया। प्रार्थना एक अच्छी बात है जो सब बुराई पर विजय पाने की ताकत रखती है। इसलिये हमें किसी भी बात के विषय में प्रार्थना करना चाहिये, जिसके विषय में शिकायत करने के लिये हम परीक्षा में पड़ते हैं। परमेश्वर शिकायत करने और कुड़कुड़ाने को बुरा समझता है, परन्तु विश्वास से भरी हुई प्रार्थनायें सामर्थी और प्रभावशाली होती हैं। प्रार्थना परमेश्वर के कार्य करने के लिये द्वार खोलती है और वह कुछ भला करता है।

बुराई के प्रति उचित रूप से प्रतिक्रिया दें

मरूभूमि से होते हुये प्रतिज्ञात् देश की ओर यात्रा करने का प्रयास करते वक्त इस्त्राएलियों ने बहुत सी परीक्षाओं, और कठिनाईयों का साम्हना किया और उन सबके प्रति शिकायत करने, कुड़कुड़ाने और बुड़बुड़ाने के द्वारा प्रतिक्रिया

दी। वे हर प्रकार की बुराई में पड़ गए और उनके पापों में से एक शिकायत करना था। यह, नाश करनेवाले को उनके जीवन में प्रवेश करने की अनुमति दिया और उनमें से बहुत से मर गये (1 कुरिन्थियों 10:8–11)। क्या उन्होंने अपनी परीक्षा की घड़ी में परमेश्वर के प्रति धन्यवादी बने रहने के द्वारा, उसकी आराधना, और स्तुति करने के द्वारा, और एक दूसरे के प्रति भले बने रहने के द्वारा प्रतिक्रिया दी, मैं विश्वास करती हूँ कि वे मरूभूमि की यात्रा बहुत कम समय में समाप्त कर दिये होते। अपितु उनमें से बहुत से मरूभूमि में, मार्ग के किनारे गिर गए और अपने मंजिल तक कभी नहीं पहुँचे। मुझे आश्चर्य होता है कि जितनी बार हम अपनी इच्छित भला परिणाम नहीं देखते हैं, क्योंकि हम घटित होनेवाली बुरी बातों के प्रति प्रार्थना, धन्यवाद, स्तुति, प्रशंसा और लगातार लोगों की जरूरतों को पूरा करने के बदले में शिकायतों के द्वारा प्रतिक्रिया देते हैं।

विश्वास और प्रेम

काफी लम्बे वर्षों तक कलीसिया और सम्मेलनों में मैंने विश्वास के विषय में शिक्षायें सुनी थी, और जो पुस्तकें मैं पढ़ती थी वे विश्वास के विषय में थी। ऐसा लगता था कि मसीही संसार की शिक्षा के विषय में "परमेश्वर पर भरोसा करो और सबकुछ सही हो जाएगा था।"

बिना विश्वास के हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (इब्रानियों 11:6), इसलिये हमें निश्चित रूप से उसमें विश्वास और भरोसा रखना चाहिये, परन्तु कुछ और परमेश्वर के वचन में पाया जाता है जिसके विषय में विश्वास करती हूँ कि जो उस चित्र को पूरा करता है जिसे हमें देखने की जरूरत है। मैं उसे आपके साथ बाँटूँगी, परन्तु पहले मुझे आपको अपने कुछ अनुभवों को बताने दीजिये जिसे मैंने अपने यात्रा के प्रारंभिक वर्षो में प्राप्त किया था।

मैंने यीशु को नौ वर्ष की उम्र में उद्धारकर्ता के रूप में पाया, परन्तु नहीं जानती थी कि उसमें मेरा क्या है या उसके साथ मेरा संबन्ध कैसे मेरे जीवन को बदल सकता है, क्योंकि मुझे आत्मिक बातों पर कोई शिक्षा लगातार नहीं मिल पाई थी। घर जहाँ पर मैं बड़ी हुई, वह कुछ खास नहीं था या सबसे कमतर था। मेरे पिता एक पियक्कड़ थे और असंख्य महिलाओं के साथ अपने संबन्ध के कारण मेरी माता के प्रति अविश्वासयोग्य थे और वह बहुत हिंसक और क्रोधि थे। जैसा कि मैंने पहले बताया उन्होंने मेरे साथ भी लगातार यौन

दुर्व्यवहार किया। यह सूचि लम्बी से लम्बी होती जाती है, परन्तु मैं निश्चित हूँ कि आपको सही रूपरेखा मिल गई है।

अब, जल्दी से मेरे तेईस वर्ष की जीवन की ओर बढ़ते हैं। मैं डेव से विवाह किया और उनके साथ कलीसिया को जाना प्रारंभ किया। मैं परमेश्वर से प्रेम करती थी और अधिक सीखना चाहती थी, अतः मैं कक्षाओं मे गई जो मुझे संप्रदाय में स्थिरिकृत किया और मैं लगातार कलीसिया जाती रही। मैंने परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के बारे में सिखा और साथ ही साथ बहुत सी कलीसियाई सिद्धान्तों को सीखा जो मेरे विश्वास की नीव के लिये बहुत महत्वपूर्ण थे।

बत्तीस वर्ष की उम्र में, मैं स्वयं को बहुत ही निराश पाई क्योंकि मेरी मसीहियत मुझे अपने व्यवहारिक और प्रतिदिन के जीवन में सहायता करती हुई नहीं दिखती थी। मैं विश्वास करती थी कि मैं स्वर्ग जाऊँगी जब मैं मरूँगी, परन्तु इस पृथ्वी पर प्रतिदिन के जीवन के आनन्द और शान्ति के साथ व्यतीत करने के लिये कोई सहायता न पाकर मैं निराश थी। मेरी आत्मा मेरे बचपन के दुर्व्यवहार के दर्द से भरी हुई थी और मैं उस दर्द को प्रतिदिन मेरे स्वभाव में और अच्छे संबन्ध बनाये रखने में अपनी अयोग्यता में अभिव्यक्त करती थी।

परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि यदि हम उसे खोजते हैं तो पाएँगे (नीतिवचन 8:17 देखिये)। मैं स्वयं परमेश्वर को खोजना प्रारंभ किया कि मैं क्या खो रही हूँ, और उसके साथ मेरा सामना हुआ जिससे मैं उसके और अधिक करीब आ गई। जल्द ही वह मेरे व्यक्तिगत जीवन में उपस्थित दिखाई देने लगा और मैंने उसे जानने के लिये गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करना प्रारंभ किया। ऐसा लगता था कि जहाँ भी मैं मुड़ती, मैं विश्वास के बारे में सुनती। मैंने सीखा कि मुझे अपने विश्वास को बहुत सारे परिस्थितियों में लागू करना है, जो मेरी सहायता करने के लिये परमेश्वर के लिये एक द्वार खोलता।

अपने संपूर्ण हृदय के साथ मैं विश्वास करती थी कि सिद्धान्त जो मैं सीख रही थी, वे सही थे, फिर भी मैं बड़ी निराशा का अनुभव करती थी क्योंकि मैं उन्हें अपने लिये कार्य करते हुये नहीं देख सकती थी, कम से कम इस स्तर तक नहीं जितना तक उन्हें कार्य करने की अत्यधिक जरूरत थी। उस समय, परमेश्वर मुझे अपने सेवकाई में इस्तेमाल कर रहा था, और दूसरों को लिये मेरी सेवकाई बहुत बड़ी थी। मैं ने निश्चय ही बहुत सी तरक्की कर लेती परन्तु

फिर भी मैं ने अपने हृदय में गहराई से महसूस किया कि मैं कुछ खो रही थी। अतः पुनः एक बार मैं ने परमेश्वर को गम्भीरता पूर्वक खोजना प्रारंभ किया। अपने खोजने के द्वारा और गहरे अध्ययन के द्वारा मैं ने सीखा कि मैं उस मुख्य सबक को खो रही थी, जो यीशु हमें सीखाने आया था; परमेश्वर से प्रेम करना, अपने से प्रेम करना, और दूसरों से प्रेम करना (मत्ती 22:36–39 देखिये)। मैंने विश्वास के बारे में बहुत कुछ सिखा था जब मैं परमेश्वर के साथ–साथ चलती थी, परन्तु प्रेम की सामर्थ के विषय में नहीं सीखा था।

परमेश्वर पर भरोसा रखो और भला करो

इस मनभावने विषय को सीखने की अपनी कई वर्षों की यात्रा के दौरान मैंने समझा कि विश्वास केवल प्रेम के द्वारा ही काम करता है। गलातियों 5:6 के अनुसार, वास्तव में विश्वास प्रेम के द्वारा ही "क्रियाशील और ऊर्जावान और अभिव्यक्त" किया जाता है।

पवित्रआत्मा ने मुझे भजन 37:3 अध्ययन करने के लिये अगुवाई दियाः "परमेश्वर पर भरोसा रखो और भला करो।" मैंने यह समझना प्रारंभ किया कि परमेश्वर के साथ सही रखने के लिये मुझे जितना मैं जानती हूँ उसका और आधा जानने की जरूरत थी। विश्वास का भाग मेरे पास था, परन्तु "भला करने" का भाग मेरे पास नहीं था। मैं चाहती थी कि भली बातें मेरे साथ हों, परन्तु दूसरों के प्रति भला होने के विषय में मैं नहीं सोचती थी। विशेष करके जब मैं अपने जख्मों के लिये हुई थी या एक व्यक्तिगत परीक्षा की घड़ि से गुजर रही थी।

भजन 37:3 ने मेरी आँखों को यह देखने के लिये खोला कि मैं परमेश्वर पर भरोसा रखती रही थी, परन्तु भला काम करने पर मेरा ध्यान नहीं था। न केवल इस क्षेत्र में मेरी कमी थी, परन्तु मैंने समझा कि अन्य अधिकांश मसीही जिन्हें मैं जानती थी वह भी शायद इसी स्थिति में थे। हम सब अपनी चाहत की वस्तुओं के लिये परमेश्वर पर "विश्वास" करने पर थामे हुये थे। हम एक साथ प्रार्थना करते और सहमति की प्रार्थना के द्वारा अपने विश्वास को मुक्त करते, परन्तु हम एक साथ मिलते और इस बात पर बातचीत नहीं करते थे कि हम दूसरों की भलाई के लिये क्या कर सकते हैं। जबकि हम इन्तजार करते थे कि हमारी जरूरतें पूरी हों। हमारे पास विश्वास था, परन्तु यह प्रेम से ऊर्जित नहीं था।

मैं ऐसा दर्शाना नहीं चाहती कि मानो मैं पूर्ण रीति से स्व–केन्द्रित थी, क्योंकि यह बात नहीं थी। मैं सेवकाई में कार्य कर रही थी और लोगों की सहायता करना चाहती थी, परन्तु दूसरों की सहायता करने में अपनी इच्छा को मिला देना बहुत ही अपवित्र लक्ष्य को बनाता था। सेवकाई में होना मुझे अपने आपको योग्य समझने और महत्वपूर्ण समझने का भावे देता था, जिसने मुझे पद दिया और कुछ हद्द तक मुझे प्रभावी बनाया, परन्तु परमेश्वर चाहता था कि जो कुछ मैं करूँ उसे शुद्ध लक्ष्य के साथ करूँ, और अभी भी मुझे बहुत कुछ सीखना था। ऐसे समय थे जब मैंने लोगों की सहायता करने के लिये दया के कार्य किये, परन्तु दूसरों की सहायता करना मेरा एक प्राथमिक लक्ष्य नहीं था। मुझे और अधिक उत्साही होने और दूसरों को प्यार करने के लिये विषय में लक्ष्यपूर्ण होने की आवश्यकता थी। इसे मेरे जीवन में मुख्य बात होने की आवश्यकता थी, न कि एक हास्य की बात।

स्वयं से पूछिये, कि तुम्हें और किसी बात से अधिक कौन सी बात प्रेरित करती है, और ईमानदारी पूर्वक उत्तर दो। क्या यह प्रेम है? यदि यह नहीं है, तो क्या आप अपने ध्यान को परमेश्वर के लिये क्या महत्वपूर्ण है उस तरफ बदलना चाहते हैं?

मैंने अपने संपूर्ण हृदय के साथ प्रार्थना की कि परमेश्वर इन शब्दों को इन पृष्ठों से उठाकर आपके हृदय में डाले। प्रेम की सामर्थ के विषय में सत्यता को सीखना मेरे जीवन को परिवर्तित करनेवाली बात थी कि मैं चाहती थी कि हर कोई इस सत्य को जानें। मैं यह सलाह नहीं देती कि आप उसे नहीं जानते हैं, परन्तु सत्य यह है कि आप अन्य लोगों को प्रेम करने विषय में मुझ से भी अधिक करते हों परन्तु यदि ऐसी बात नहीं है तो मैं प्रार्थना करती हूँ कि जो कुछ मैं आप से बाँटती हूँ, वह आप में एक आग को जलाए और वह आपको प्रेम क्रान्ति का भाग होने के लिये उत्साहित करे, जिसके प्रति मैं विश्वास करती हूँ कि उसमें संसार को बदलने की सामर्थ है।

स्वयं को और दूसरों को उत्तेजित बनाये रखिए

जरा कल्पना कीजिये कि यदि हममें से प्रत्येक व्यक्ति जो मसीह को जानने का दावा करते हैं, प्रतिदिन दूसरों के प्रति एक दया कार्य करते तो यह संसार कितना भिन्न होता। इसके परिणान आश्चर्यजनक होते, अब कल्पना करें कि यदि हम सब प्रेममय, दयालु, उपयोगी कार्य प्रतिदिन किसी और के लिये करते

तो क्या होता? मुझे निश्चय है कि आपको एक रूपरेखा मिल गई होगी। परिणाम बहुत ही आश्चर्यजनक होगा, संसार बहुत जल्द बदल जाता क्योंकि हम वास्तव में बुराई पर भलाई के द्वारा विजय पा सकते हैं, यदि हम सब यीशु के कहे अनुसार जीने के लिये समर्पण करते।

आप यह पूछना चाहेंगे, "ऐसा कभी नहीं होगा, फिर प्रयास भी क्यों करना है?" प्रारंभ करने से पहले नकारात्मक विचारों के द्वारा स्वयं को धोखा मत दीजिये। मैं ने पहले ही निर्णय कर लिया है कि मैं अपना भाग करने जा रही हूँ और दूसरे लोगों के लिये प्रार्थना करती हूँ कि वे अपना भाग करें। मैं अन्य लोगों से बात भी करूँगी और उन्हें उत्साहित करूँगी कि वे यथा सम्भव दूसरों के लिये करे जितना कर सकते हैं। यह अद्‌भुत होता यदि हमारी बहुत सी बातचीत उन तरीको पर केन्द्रित होती कि हम किस प्रकार से दूसरों की सहायता कर सकते हैं, और उन रचनात्मक बातों के विषय में कि जो उनके लिये करना है।

मेरे तीन मित्र हैं जो इस अद्‌भुत जीवनचर्या में बहते हैं और जब हम एक साथ दोपहर का भोजन करने या कॉफी पीने जाते हैं हम अक्सर अपने समय को यह बात करने में इस्तेमाल करते हैं कि परमेश्वर ने हमारे हृदयों में दूसरों के लिये करने के विषय में या आशीष बनने के लिये नये तरीको के विषय में रचनात्मक विचार जो परमेश्वर ने हमारे हृदयों में रखे हैं। मैं विश्वास करती हूँ कि हमारी इस प्रकार की बातचीत परमेश्वर को बहुत ही प्रसन्न करनेवाली होती हैं, और निश्चित ही वे हैं कि संसार में होनेवाली हर गलत बातों के विषय में शिकायत करते बैठने से तो अच्छा ही है। मैं आपको चुनौती देना चाहती हूँ कि प्रेम क्रान्ति में एक मुख्य भूमिका निभायें। लोगों की सूचि बनाएँ जिन्हें आप जानते हैं और एक ऐसे सत्र के लिये आमन्त्रित करें जिसमें आप जरूरतें पूरी करने के लिये कुछ व्यवहारिक तरीकों की योजना बना रहे हैं। इस पुस्तकों के सिद्धान्तों को उनके साथ बाँटिए और एक लक्ष्य प्राप्त करिए। किसी ऐसे व्यक्ति को पाईये जिसे सहायता की जरूरत है और उनकी सहायता करने के लिये एक सामूहिक प्रयास कीजिए।

भला कार्य करने में उत्साहित होने के लिये दूसरों को प्रोत्साहित करने का विचार नया नहीं है, इब्रानियों के लेखके ने उसके विषय में कहा है, "और प्रेम, और भले कामों उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें" (इब्रा. 10:24)।

कृपया नोट करें कि यह पद कहता है कि हमें एक दूसरे का खयाल करते हुए *लगातार* एक दूसरे को सम्भालना है, और वास्तव में इस विषय पर

अध्ययन और विचार करें कि हम किस प्रकार से भले कामों के प्रति उत्तेजित हो सकते हैं और प्रेममय, और सहायक कार्य कर सकते हैं। उसने उन लोगों को प्रोत्साहित किया जिन्हें वह यही बात लिखता है कि आज यह करने के लिये मैं तुम्हें उत्साहित करता हूँ। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि शैतान किस प्रकार से इस बात को तुच्छ जानता है कि हम वास्तव में एक दूसरे के लिये भला करने के रचनात्मक तरीकों को पाने के लिये इकट्ठे होते हैं। वह इस बात को प्राथमिकता देता है कि हम न्याय करें, हम आलोचनामत हों, गलतियाँ ढूँढे, गप मारें, और शिकायत करें। मैं विश्वास करती हूँ कि सही कार्य करने में नई आदतों को बनाने और प्रेम के उत्साहित कार्यों को विकसित करने की आवश्यकता है, परन्तु परिणाम अद्‌भुत होगा।

भले कार्मों में धनी बनिए

पौलुस ने जवान प्रचारक तीमुथियुस को निर्देश दिया कि लोगों को सम्बाधित करें "और भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें; और उदार और सहायता देने में तत्पर हों (1 तीमुथियुस 6:18)।" इसके द्वारा यह स्पष्ट है कि पौलुस ने महसूस किया कि को लोगों को इन बातों को करने के लिए स्मरण दिलाने की जरूरत है। भले काम करने में उत्साहित होने का निर्देश आज लोगों को याद दिलाना आवश्यक है। मैं आपको उत्साहित करती हूँ कि न केवल दूसरों को स्मरण दिलायें परन्तु स्वयं को स्मरण दिलाने के लिये भी तरीके निकालें। अच्छी पुस्तकों और प्रेम विषय पर सन्देशों की एक अच्छा पुस्तकालय रखें और अक्सर इन्हें पढ़ें या सुनें। यह सुनिश्चित करने के लिये जो कुछ आपको करने की जरूरत है वह करें कि आप उन बातों को न भूलें जो परमेश्वर के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

मैं विश्वास करती हूँ कि संसार मसीहियों को देख रहा है कि वे हमें क्या करते हुए देख रहे हैं यह बहुत महत्वपूर्ण है। पतरस ने विश्वासियों को उत्साहित किया कि वे अन्यजातियों के सामने उचित और आदरपूर्व व्यवहार रखें, वे जो उन दिनों में अविश्वासी थे। उसने कहा कि अविश्वासी भी विश्वासियों को देखकर क्रमशः परमेश्वर की महिमा करेंगे यदि वे उनके भले काम और प्रेममय कार्यों को देखेंगे (1 पतरस 2:12 देखिये)।

यदि आपके पड़ोसी जानते हैं कि आप प्रति इतवार चर्च जाते हैं, तो मैं आपको निश्चय दिलाती हूँ कि वे आपके व्यवहार पर भी नजर रखते हैं। जब

मैं बड़ी हो रही थी, वास्तव में वे सप्ताह में कई बार जाते थे, परन्तु वे ऐसे बहुत सारे कार्य भी करते थे जो उन्हें नहीं करने चाहिए थे। मैं स्मरण करती हूँ मेरे पिता को जो अक्सर कहा करते थे, "वे मुझ से कुछ भी अच्छे नहीं हैं, वे शराब पीते हैं, खराब भाषा का इस्तेमाल करते हैं, गन्दे चुटकुले सुनाते हैं, और गलत स्वभाव रखते हैं, इसलिये वे केवल पाखण्डियों का एक समूहंभर हैं।" मेरे पिता एक बहाने की खोज कर रहे थे और उनका व्यवहार केवल आग में घी का कार्य कर रहा था।

मैं निश्चित ही विश्वास करती हूँ कि मसीहियों के रूप में हम सिद्ध रूप से व्यवहार नहीं करते हैं, और वे लोग जो यीशु को विश्वास न करने के, या मसीहियत अभ्यास न करने के बहाने ढूँढ़ते हैं, वे हमेशा हमें देखेंगे और हमारी आलोचना करेंगे, परन्तु हम जितना भला कर सकते हैं उतना हमें करना चाहिये कि हम दूसरों को अपने को जाँचने का मौका न दें।

आशीष देने के तरीके ढूँढ़िए

मैं हमेशा परमेश्वर के लिये खुला रहने का प्रयास करती हूँ कि वह मुझे कुछ भी दिखाए जो वह मुझ से करना चाहता है कि मैं दूसरों के प्रति गवाह बनूँ या किसी के लिये आशीष बन सकूँ। कुछ ही दिन पहले मैं अपने नाखूनों को कटवा रही थी, एक जवान लड़की दुकान में थी और वह गर्भवती थी और ये उसका पहला बच्चा था। वह दो महीने से बिस्तर पर आराम कर रही थी क्योंकि उसे बहुत जल्द ही प्रसव वेदना आरम्भ हो गई थी और नाखून काटने के लिये आना काफी समय बाद उसे घर से निकलने का मौका प्रदान किया था। एक सप्ताह में उसका प्रसव होना था और वह उसके लिये तैयारी करने आई थी। हम ने कुछ देर बात किया और मैंने यह महसूस करना शुरू किया कि उसके लिये भूगतान करने के द्वारा उसे आशीष देना उस दिन एक बहुत अच्छी बात होगी। मैंने थोड़ी देर यह देखने के लिये इन्तजार किया कि यह इच्छा मुझ में बनी रहती है या नहीं, और चूँकि यह बनी रही इसलिये मैं अपने साथ साथ उसका भी भूगतान कर दिया। निश्चित ही वह बहुत ही आश्चर्यचकित हुई परन्तु आशीषित हुई। मैंने एक बहुत बड़ी बात नहीं की परन्तु मैंने ऐसा किया। हो सकता है वह मुझे टेलिविजन पर देखे या मेरी कोई पुस्तक पढ़े और स्मरण करे कि जो कुछ मैं कहती हूँ कि मैं विश्वास करती हूँ, वह मैं ने वास्तव में किया।

मैं ऐसी बातें दिखाने के लिये नहीं करती हूँ, परन्तु लोग जो देखते हैं वह शब्द से बढ़कर बोलता है। उस नाखून काटने के दुकान में हर कोई जानता है कि मैं एक बाइबल शिक्षिका और सेविका हूँ, यद्यपि मैं ने उस जवान महिला से कुछ नहीं कहा, मुझे निश्चय है कि मेरे जाने के पश्चात् अन्य लोगों ने उससे कहा। अतः दया का एक छोटा सा कार्य बहुत से उद्देश्यों को पूरा किया। उसने उसे प्रसन्न किया। ये दूसरों को देखने के लिये एक उदाहरण था और यह एक गवाही थी जो परमेश्वर को महिमा प्रदान करती थी। मेरे पास अन्य विकल्प भी था, मैं अपने धन को बचा रखती और कुछ नहीं करती, यह आसान होता परन्तु मेरे आत्मा को सन्तुष्ट करनेवाली बात नहीं होती।

लोग क्या सोचते हैं इस विषय में चिन्तित न हों

शायद आप सोचते होंगे, *जॉयस् किसी ऐसे व्यक्ति के बिल का भूगतान करना जिसे मैं जानता भी नहीं, यह सच में बहुत अजीब लग रहा है।* यदि आप करते हैं, तो मैं इसे पूर्ण रीति से समझता हूँ, मैं भी करता हूँ। मुझे नहीं मालूम कि वे क्या सोचते हैं या किस प्रकार की प्रतिक्रिया दिखाएँगे, परन्तु तब मैं स्मरण करती हूँ कि इसमें से कुछ भी जानना मेरी प्राथमिकता नहीं है। मैं केवल मसीह का राजदूत बनना चाहती हूँ।

एक दिन मैं ने एक महिला के लिये एक कप कॉफी खरीदने का प्रयास किया जो मेरे पीछे लाईन में खड़ी थी और उसने एकदम मना कर दिया। असल में उसने एक ऐसा दृश्य उत्पन्न किया जिसने मुझे चकित कर दिया और पहले मैंने सोचा, ठीक है मैं ऐसा दुबारा नहीं करूँगी। डेव मेरे साथ थे और उन्होंने मुझे स्मरण दिलाया कि शैतान ठीक यही चाहता था। अतः मैं ने अपने मन को बदला। ऐसे समय आसान नहीं होते परन्तु उस घटना ने मुझे दुःखपूर्वक यह महसूस कराया कि कितने लोग नहीं जानते हैं कि किस प्रकार से आशीष प्राप्त करना है – सम्भवतः इसलिये कि ऐसा उनके साथ कभी नहीं होता।

कभी–कभी मैं बिना किसी के जाने कार्य करती हूँ परन्तु कभी–कभी मैं उन्हें छुपा नहीं सकती हूँ। इसलिये मैंने निर्णय लिया है कि जब तक मेरा हृदय सही है तो मुझे यही नहीं देखना चाहिये। दयालुता के प्रत्येक कार्य परमेश्वर की आज्ञापालन करने का मेरा तरीका है, और संसार में बुराई पर विजय पाने का मेरा तरीका है। मैं नहीं जानती कि लोगों के साथ क्या बुरी

बातें हुई है और शायद दयालुता का मेरा कार्य उनकी आत्मा के घावों को चंगा करने में सहायता करेगा। मैं यह भी विश्वास करती हूँ कि दूसरों के प्रति दया दिखाना शैतान को मेरे इस दर्द के लिये वापस चुकाना है जो उसने मेरे जीवन मे किया है। वह उच्च स्तर तक बुरा है, वह सारी बुराईयों का जड़ है जिन्हें हम संसार में अनुभव करते हैं। अतः प्रेम, भलाई, और दया का प्रत्येक कार्य उसके बुरे और दुष्ट हृदय में चाकू मारने के समान है।

यदि आपके साथ बुरा व्यवहार होता है और शैतान को उस दर्द के लिये उसका फल चखाने के विषय में सोचते हैं जो उसने आपके जीवन में उत्पन्न किया है, तो जितने लोगों के साथ सम्भव हो आप भले बनिए। यह परमेश्वर का तरीका है और यह कार्य करेगा क्योंकि प्रेम कभी पराजित नहीं होता!

मैंने प्रेम के द्वारा एक आत्मा खरीदा है

बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने हमें एक बहुमूल्य कीमत के द्वारा खरीदा है, अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह का लहू (1 कुरिन्थियों 6:20; 1 पतरस 1:19; प्रकाशितवाक्य 5:9 देखिए)। भलाई का यह अद्‌भुत कार्य उस बुराई को पलट दिया जो शैतान ने किया था और सब लोगों के लिये एक ऐसा मार्ग खोला जो सब लोगों के लिये किये जाएँ और परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबन्ध का आनन्द उठाएँ।

जैसा कि मैंने कहा, मेरे पिता ने मेरे साथ वर्षों तक यौन दुर्व्यवहार किया और उसके बुरे कार्यों ने मेरे आत्मा को नुकसान पहुँचाया और मुझे घायल और स्वभाविक रूप से कार्य करने में अक्षम बना दिया जब तक यीशु ने मुझे चंगा न कर दिया। जो उसने मेरे साथ किया उस पर विजय पाना और लगातार संपूर्ण रूप से उसे माफ करनेयोग्य बनना मेरे लिये एक प्रक्रिया थी। सब से पहले मैंने निर्णय लिया कि उससे अब घृणा न करूँ क्योंकि परमेश्वर ने उसके लिये प्रेम के विषय में मुझे जागरूक किया और अपने स्वभाविक पिता के लिये घृणा उसी हृदय में बनी न रह सकी। मैंने परमेश्वर से सहायता माँगी और उसने मेरे हृदय से घृणा को निकाल दिया। इस पर भी मैं अब भी अपने पिता के साथ बहुत कम रहना चाहती थी, और उससे यथासम्भव दूर ही रहती थी।

वर्षों तक मेरी माँ का मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ा रहा और जिस वर्ष मैंने डेव से विवाह किया, यह जानकर मेरी माँ का मानसिक संतुलन बिगड़ गया कि मेरे पिता ने मेरे साथ क्या किया था, और नहीं जानती थी कि इस घटना के साथ क्या करना है। जब मैं चौदह साल की थी, मेरे साथ दुर्व्यवहार करते

हुए उन्होंने उन्हें पकड़ लिया था, परन्तु वह नहीं जानती थी कि क्या करना है। अतः उसने कुछ नहीं किया। कुछ नहीं करना हम सबके लिये एक बुरे निर्णय में बदल गया। दो वर्षों तक उन्हें झटके दिये जाते रहे, और इसने यौन दुर्व्यवहार की यह बात उनके मन से मिटा दिया और मैं ऐसा कुछ नहीं करना चाहती थी जो उन्हें फिर से यह स्मरण दिलाए। अतः मेरे पिता के आस पास रहना मेरे लिये कठिन था और इसलिये मैं अपने परिवार में तब ही जाती थी जब बहुत अधिक जरूरत हो।

क्रमशः मेरे माता–पिता शहर से बाहर चले गये और उस छोटे से शहर में वापस चले गए जहाँ वे पले बढ़े थे। यह लगभग दो सौ मील दूर था जहाँ मैं रहती थी। और मैं बहुत ही प्रसन्न हुई क्योंकि उनका जाने का अर्थ मेरे लिये यह था कि मैं अपने पिता को कम देखती। मैंने अपने पिता को उन वर्षों में कुछ हद्द तक क्षमा कर दिया था, परन्तु मैं ने उन्हें संपूर्ण रूप से क्षमा नहीं किया था।

जब मेरे माता–पिता वृद्ध हुए और जब उनका स्वास्थ्य और धन गिरता गया, परमेश्वर मेरे साथ व्यवहार करना प्रारंभ किया कि मैं उन्हें उस स्थान पर वापस लाऊँ जहाँ हम सेन्ट लूइस मिसोरी में रहते थे और मैं उन्हें मृत्यु तक देखभाल करूँ। इसका अर्थ था उनके लिये एक घर, फर्नीचर और कार खरीदना और उनके घर को साफ करने के लिये, उनके लिये सामान लाने के लिये, लॉन के घास काटने के लिये और घर के अन्य कार्य करने के लिये किसी का प्रबन्ध करना। पहले–पहले मैंने सोचा कि यह विचार शैतान मुझे यातना देने के लिये ला रहा है, परन्तु क्रमशः मैंने यह जाना कि यह परमेश्वर की योजना थी और मैं ईमानदारी पूर्वक कह सकती हूँ कि यह मेरे लिए एक मात्र कठिन कार्य था जिसे मैंने अपने जीवन में कभी किया है।

सब से पहले डेव और मैंने कुछ धन बचाया था कि अपने माता पिता को एक घर में रखने के लिये सब कुछ कर सकें। दूसरी बात मैं नहीं सोचती थी कि डेव मेरी सहायता के योग्य हैं, क्योंकि उन्होंने कभी भी दुर्व्यवहार और विनाश के अलावा कुछ भी मेरे लिये नहीं किया था। जब डेव और मैं ने इस विषय पर बात की मैंने अधिक से अधिक समझा कि परमेश्वर मुझ से क्या करने के लिये कह रहा था। परमेश्वर मुझ से जो करने के लिये कहा था वह कठिन था, परन्तु वह सब से शक्तिशाली बात भी होती जो कभी मैं की होती।

मैंने शत्रु को प्रेम करने, उनके लिये दयालु होने और उनके के लिये कार्य करने के विषय में सारे पद पढ़ डाले जिसने मुझे वास्तव में प्रभावित कियाः

> बरन अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो (किसी पर कृपादृष्टि करना ताकि उसे उससे लाभ हो) और वापस पाने की आस न रखकर उधार दो; परन्तु कुछ खोने का या किसी के प्रति हताशा का विचार न रखो तब तुम्हारे लिये बड़ा (श्रेष्ठ, सामर्थी गहन और बहुतायत का) फल (प्रतिफल) होगाः और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु हैं।
>
> *(लूका 6:35)।*

यह पद कहता है कि हमें किसी भी चीज को खोया हुई नहीं समझना चाहिये और न ही उस पर निराश होना चाहिये। इस सिद्धान्त को समझने से पहले मैंने अपने बचपन के खोये हुए वर्षों को देखा था। अब परमेश्वर मुझ से कह रहा था कि उन वर्षों को मैं अनुभव के रूप में देखूँ, जिनका मैं दूसरों की सहायता के लिये इस्तेमाल कर सकता हूँ। लूका ने यह भी कहा कि जो हमारे साथ दुर्व्यवहार करते और हमारा दुरूपयोग करते हैं, उनके लिये प्रार्थना करना और उनके लिये आशीष बनना चाहिये (लूका 6:28 देखिए)। यह बहुत ही अन्यायपूर्ण दिखता है परन्तु क्योंकि मैंने सीखा था कि मैं क्षमा करती हूँ तो मैं अपने लाभ के लिये कुछ करती हूँ। जब मैं क्षमा करती हूँ तो मैं स्वयं को अपने साथ वे हर एक बुरे कार्य के परिणाम से मुक्त करती हूँ और तब परमेश्वर संपूर्ण स्थिति पर कार्य कर सकता है। यदि मेरा शत्रु बचाया गया नहीं है, तो हो सकता है मैं एक आत्मा खरीद रही हूँ।

डेव और मैंने जिस सहायता का प्रस्ताव रखा उससे मेरे पिता बहुत ही उमंग से भर गए थे, यद्यपि कभी उन्होंने कहा नहीं। मैं जानती हूँ कि वह आश्चर्यचकित थे कि उन्होंने जो कुछ मुझ से किया उसके पश्चात् हम क्यों इस संसार में उनके लिये करते हैं।

तीन वर्ष निकल गए और मैं ने उनमें कोई परिवर्तन नहीं देखा। वह अभी भी नीच, जल्द गुस्सा करनेवाले और बहुत ही स्वार्थी थे। जहाँ तक उनके स्वभाव की बात थी वास्तव में वे और अधिक बुरी दशा में पहुँच जाते थे। अब मैं समझती हूँ कि परमेश्वर उनके साथ उस समय व्यवहार कर रहा था। परमेश्वर के कहे अनुसार करने के तीन वर्ष पश्चात् मेरे पिता ने आसूओं के साथ पश्चाताप् किया और यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर लिया। यह एक अद्भुत अनुभव था। उन्होंने सब कुछ के लिये पहल किया। उन्होंने हम से अपने घर आने के लिये कहा, और उन्होंने क्षमा माँगी। उन्होंने डेव से

और मुझ से क्षमा की प्रार्थना की और कहा कि हम उनके के प्रति कितने भले रहे हैं। हम ने उनसे पूछा कि क्या वे यीशु को अपने जीवन में आमन्त्रित करना चाहते हैं। और उन्होंने न केवल वह किया परन्तु उन्होंने डेव और मुझ से बपतिस्मा के लिये कहा। मुझे अपने पिता को प्रभु के पास आते हुए देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिन्होने मेरे साथ यौन दुर्व्यवहार किया था। तब मैंने जाना कि पहले मैं सोचती थी कि मैं एक घर, कुछ फर्नीचर, एक कार, खरीद रही हूँ परन्तु वास्तव में मैंने इस अयोगय व्यक्ति पर दया दिखाने के द्वारा एक आत्मा खरीद रही थी। पहले मैंने सोचा था कि मैंने एक घर, कुछ फर्नीचर, और एक कार, खरीदा है परन्तु तब मैंने समझा कि दरअसल मैंने एक अयोग्य व्यक्ति के प्रति दया का कार्य कर एक आत्मा खरीदा था।

इस समय के दौरान, मैंने और डेव अपने सेवकाई को अद्‌भुत रूप से बढ़ते हुए देखा, जो हमें बहुत अधिक लोगों की सहायता करने के योग्य बना रहा था। मैं विश्वास करती हूँ कि यह बढ़ती उसी फसल का भाग था जिसे हमने आज्ञाकारिता के बीज के रूप में बोया था। जब वह हम से कठिन कार्य करने के लिये कहता है, तो वह हमेशा हमारे फायदे के लिये और राज्य के फायदे के लिये कहता है। आप देखते हैं, हम सचमुच में भलाई के द्वारा बुराई पर विजय पा सकते हैं। इयलिये जैसा कि जॉन वेस्ली ने कहाः ''जितनी भलाईयाँ आप कर सकते हैं करें, अपने सभी संसाधनो के द्वारा, जितनी रीति से आप कर सकते हैं, जितने क्षेत्रों से आप कर सकते हैं, जितने समय आप कर सकते हैं, जितने लोगों के लिये आप कर सकते हैं, और जब कभी तक आप कर सकते हैं उतनी भलाई करें।

युद्ध की विधवाएँ

जेनीफर बच्चों के रोने की आवाज को सुनती है और वह उनके बचाव के लिये दौड़ पड़ती है। जैसा कि ऐसा उसने बहुत बार किया है, वह उन्हें कहती है कि सब कुछ बहुत जल्द ही ठीक होने जा रहा है। उनकी माँ के रूप में वह उनसे तब तक कहती रहती है जब तब वे विश्वास नहीं कर लेते हैं।

वह जानती है कि भयभीत होना, अपहृत होना, और दुर्व्यवहार सहना क्या होता है। जब वह बारह वर्ष की थी, तब बल पूर्वक अपने घर से उठा ली गई, अपने परिवार, अपने गाँव से विद्रोही सैनिकों के द्वारा तोड़ ली गई जो आफ्रीका के सब से लम्बे युद्ध में शामिल थे। लगातार

मारपीट, बलात्कार, और कठोर श्रम के पश्चात् जेनीफर की जीने की इच्छा ने उसे बच निकलने को साहस दिया। और वह अपने साथ अन्य लोगों को सुरक्षित स्थान की ओर ले गई।

परन्तु जब वह अपने घर वापस पहुँची, उसका परिवार जा चुका था। अकेली और एक नए जीवन और एक घर की आकांक्षी होकर वह स्वयं को ही पुकार सकती थी। उसने एक पुरूष से विवाह किया जिसकी पहले से ही एक पत्नी थी। उसके विवाह के दिन, उसने उसके साथ शारीरिक रूप से मारपीट की और उसके मित्रों के सामने उसे काटा। परन्तु क्रूरतम घटनायें होनी अभी बाकी थी। एक विशेष दिन में जब उसे राजकुमारी के समान, एक बहुमूल्य और प्रेम किया हुआ महसूस किया जाना था, उसने प्रत्येक एकत्रित व्यक्ति से कहा कि वह बेकार और निन्दनीय है। इन शब्दों ने उसे गहरे दर्द पहुँचाया जो जारी रहनेवाले शारीरिक मारपीट से बड़े थे।

धीरे धीरे, उसका पति एड्स के कारण मर गया, और वह पुनः अकेली हो गई। अपने स्वयं के दो बच्चों के साथ एक विधवा के रूप में उसने परमेश्वर से पूछा, *"क्या तू वहाँ है? क्या मेरा जीवन केवल यातना, दुःख, और शर्मिंदगी भरा ही होगा?"* परमेश्वर ने अपने विश्वस्तता को जेनीफर के सामने प्रमाणित किया और वह संपूर्ण पुनःस्थापन की प्रक्रिया में है।

आज, जेनीफर एक नए गाँव में सुरक्षा में रह रही है, जिसे वाटोटो मिनिस्ट्रीज़ ने, जॉयस् मेयर मिनिस्ट्रीज़ के साथ भागीारी में बसाया है। पुनःस्थापित गरिमा और जीवन के उद्देश्य के साथ वह अब उन बच्चों की देखभाल कर रही है जो युद्ध के कारण अनाथ हो गये हैं। दुर्भाग्यपूर्वक बहुत से अन्य लोग अभी भी चंगाई और पुनःस्थापन के अत्यधिक जरूरत में हैं।

परमेश्वर का वचन बार बार हमसे कहता है कि हम अनाथों और विधवाओं की देखभाल करें। ऐसा लगता है कि उनके लिये परमेश्वर के हृदय में एक विशेष स्थान है और हमें भी होना चाहिये।

आँकड़े कहते हैं :

- बहुत सारे देशों में, विधवायें जिनके पति एड्स के कारण मर गये वे अपने घर से निकाल दिए गये हैं और क्रूर हिंसा के शिकार होते हैं।
- ऐसे घर जो विधवाओं के द्वारा चलाए जाते हैं, वे अक्सर अफ्रीका में सब से गरीब छोटे समूह कहलाते हैं।

अध्याय

7

सताये हुओं के लिये न्याय

न्याय सही और गलत के मध्य तटस्थ रहने में नहीं है,
परन्तु गलत के विरूद्ध जो कुछ पाया जाए उसमें
सही को पाना और उसे थामे रहने में है।
थियोडोर रूज़वेल्ट

परमेश्वर न्याय का परमेश्वर है। वास्तव में, न्याय उसकी विशेषताओं में से मेरी पसन्दीदा विशेषता है। सामान्य रूप से ऐसा कह सकते हैं कि वह गलत चीजों को सही करता है। बाइबल कहती है कि धार्मिकता और न्याय उसके सिंहासन की नींव हैं (भजन 89:14 देखिये)। नीव वह है जिसमें इमारत खड़ी रहती है, अतः हम कह सकते हैं, तब पृथ्वी में परमेश्वर के सभी कार्य इस तथ्य पर स्थिर रहता है कि वह धर्मी और न्यायी है। परमेश्वर के सेवक के रूप में हमें धार्मिकता और न्याय से प्रेम करने और इस धरती पर स्थापित करने के लिये कार्य करने हेतु निर्देशित किया गया है।

एक समाज में न्याय की अनुपस्थिति हमेशा कष्ट की ओर ले जाती है। 1789 से 1799 तक फ्रान्स में क्रान्ति हुई। यह एक हिंसक युद्ध था, जिसमें

देहाती लोग कलीनों और उस तत्कालीन धार्मिक अगुवों के विरूद्ध उठ खड़े हुये। जब तक फ्रान्स के राजा और रानी लोगों के साथ सही रीति से व्यवहार करते थे, उनका राज्य बढ़ता रहा। इस पर भी जब राजा और रानी ने स्वार्थ पूर्वक कुपोषण, भुखमरी, और महामारियों को सब जगह फैलने दिया, जब कि वे लोगों से कर लेते और आलीशान जीवन व्यतीत करते थे, परिणाम स्वरूप लोगों ने उनके विरूद्ध विद्रोह कर दिया। जब उन्होंने लोगो के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया, तब उनके सिंहासन के नीव में दरार पड़ गई और परिणाम स्वरूप वह विनष्ट हो गया।

साधारण सच्चाई यह है कि बिना न्याय के सही कार्य नहीं होता है। आज हमारा समाज़ अन्याय से भरा हुआ है, और यद्यपि कुछ लोग उसके विरूद्ध कठोर परिश्रम करते हैं, बहुसंख्यक लोग या तो परवाह नहीं करते, या यदि परवाह करते भी हैं तो ये नहीं जानते कि क्या करना है।

यह हमारा कार्य है

अनाथों, विधवाओं, गरीबों और शोषितों की कौन परवाह करता है? परमेश्वर करता है, परन्तु क्या हम करते हैं? जब लोग शोषित होते हैं, तो उनका बोझ

> अनाथों, विधवाओं, गरीबों और शोषितों की कौन परवाह करता है?

अकथनीय होता है। यह छलकता है, सामर्थ से परे होता है और उन्हें निराशा में ढ़केलता है। उनका बोझ अधिकांशतः उन्हें आशाहीन कर देता है। परमेश्वर पितृहीनों के लिये पिता है और विधवाओं का रक्षक है (भजन 68:5 देखिये)। ऐसा लगता है कि एकाकियों और जिनकी देखरेख करने के लिये कोई नहीं है उनके लिये उसके हृदय में एक विशेष स्थान है। परमेश्वर पीड़ितों की सहायता करता है, और गरीबों और जरूरतमन्दों के लिये न्याय सुरक्षित रखता है (भजन 140:12 देखिए)। मैं निश्चय है कि आप इस बात से आनन्दित हैं कि परमेश्वर इन जख्मी लोगों की सहायता करता है, परन्तु मैं आपसे यह स्मरण करने के लिये विनती करता हूँ कि परमेश्वर अपना कार्य ऐसे लोगो के द्वारा करता है जो उसके प्रति समर्पित हैं। अब आप अपने आप से पूछिए कि आप व्यक्तिगत रूप से उनके लिये क्या कर रहे हैं।

जैसा कि मैं ने पूर्व में कहा, बाइबल में दो हजार से अधिक वचन गरीबों और जरूरतमन्दों के प्रति हमारे कार्यों के विषय में बताता है। चूँकि परमेश्वर ने इतने अधिक वचन दिए हैं, तो निश्चित ही यह एक ऐसा सन्देश होना चाहिये जिसे परमेश्वर चाहता है कि हम समझें। हममें से प्रत्येक के लिये ये कितना महत्वपूर्ण है कि हम किसी न किसी रीति से पीड़ित लोगों की सहायता करने में सम्मिलित हों। शायद, हममें से अधिकतर लोगों के समझ से महत्वपूर्ण है।

सच्चा धर्म

प्रेरित याकूब ने कहा, कि सच्चा धर्म जो बाहरी कार्यों में प्रकट होता है वह ''अनाथों और विधवाओं को उनके दुःख में देखने जाना और सहायता और उनकी सहायता करना और उन्हें सम्भालना है (याकूब 1:27)।'' इसका तात्पर्य यह है कि यदि हमारा धर्म सत्य है, तो हम अपने जीवन की परिस्थितियों से पीड़ित लोगों की सहायता करने में शामिल होंगे। मैं इस पद से, केवल यह सारांश निकालती हूँ कि यदि इन लोगों की सहायता नहीं करती हूँ, तो मेरा धर्म अवश्य ही सत्य नहीं होना चाहिये। यह धर्म का एक स्वरूप हो सकता है, परन्तु निश्चित ही यह संपूर्ण रूप से उस स्वरूप में नहीं है जैसा परमेश्वर चाहता है।

मैंने सीखा है कि रविवार के दिन कलीसिया में बैठा हुआ हर एक मसीही सच्चा नहीं है, जैसा परमेश्वर चाहता है। नियमों, कायदों, और सिद्धान्तों का पालन करना किसी को मसीह में सच्चा विश्वासी नहीं बनाता है। मैं ऐसा कैसे कह सकती हूँ, क्योंकि जब हम मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं, उस समय हम परमेश्वर के हृदय को स्वीकार करते हैं, और हम उसके आत्मा को स्वीकार करते हैं (यहेजकेल 11:19 देखिए)। इस स्थिति में हमें उन चीजों की परवाह करना सीखना है, जिनकी परमेश्वर परवाह करता है—और वह जखमी लोगों की सहायता के विषय में परवाह करता है।

ये मेरे पुत्रों के लिये क्या भला करेगा, जो जॉयस मेयर मिनिस्ट्रीज़ के दैनिक कार्यों को सम्भालते हैं, यह कहा कि उनके पास मेरा हृदय है, यदि वे ऐसा कार्य नहीं करते हैं, जो उस स्थिति में मैं करती? हमारे पुत्रों की उस पद पर होने का मुख्य कारण यह है कि वे हमें निकटता से जानते हैं और लोगों की सहायता करने की विषय में हमारे समान हृदय रखते हैं।

एक दूसरे से प्रेम कीजिए

मैं सशक्त रूप से विश्वास करती हूँ कि हमें एक दूसरे से प्रेम करने की जरूरत है, अर्थात उनसे जिनके हम अपने व्यक्तिगत जीवन में संपर्क में रहते हैं, और उनसे भी, जिनसे हम कभी भी व्यक्तिगत रूप से मुलाकात नहीं करते, जो दूर स्थानों में रहते हैं (प्रेरित 2:44–45; 4:31–32; 2 कुरिन्थियों 8:1–4 देखिए)। मैं चाहती हूँ आप लोगों की इन दोनों समूहों को अपने मन में रखिए जब हम इस पुस्तक को पढ़ना जारी रखते हैं। उदाहरण के लिये, आप तीसरी दुनियाँ की किसी बच्चे को सेवकाई के द्वारा सहायता कर सकते हैं, जो उनकी परवाह करते हैं और आप किसी विधवा को अपनी कलीसिया में भोजन पर निमन्त्रित कर सकते हैं। और जब आप उसके साथ हों, तो उससे पर्याप्त प्रश्न करें कि उसकी जरूरतें आपको पता चल जाएँ जिन्हें उचित रीति से पूरा किया जाए। यदि वह कहती है कि उसकी कुछ जरूरत है, जो आप पूरा कर सकते हैं, तो आनन्दपूर्वक उसे पूरा कीजिए, क्योंकि परमेश्वर आनन्द से देनेवाले से प्रेम करता है (2 कुरिन्थियों 9:7)।

हममें से अधिकांश लोग अपने परिवारों या लोगों की सहायता करते हैं, जिन्हें हम निकटता से जानते हैं यदि वे जरूरत हैं, परन्तु हमारे व्यक्तिगत निकटता से दूर रहनेवाले लोग के साथ कम सम्भव है कि हम उनकी परवाह करें या हम उनकी सहायता करने में शामिल होने की इच्छुक हों। मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर इसे बदलना चाहता है। मैं समझती हूँ कि एक व्यक्ति के रूप में मैं हर एक जरूरत को पूरा नहीं कर सकती हूँ जिनके बारें में मैं सुनती हूँ, परन्तु मैं निश्चित ही इस बात के लिये खुला विकल्प रखूँगी कि परमेश्वर मुझे दर्शाये कि यदि मैं कुछ कर सकती हूँ। मैं दृढ़ निश्चित हूँ कि आगे को यह कल्पना न करूँ कि मैं उन जरूरतों के विषय में कुछ नहीं कर सकती हूँ जिनके विषय में मुझे पता चलता है। मैंने यह जाना है, कि निष्क्रियता पूर्वक जरूरतों को देखना परमेश्वर का वह तरीका नहीं है, जो परमेश्वर चाहता है कि मैं रखूँ।

संसार को जरूरत है कि कलीसिया कलीसिया बनें

यीशु ने पतरस से तीन बार पूछा कि क्या वह उससे प्यार करता है और तीनों बार पतरस ने कहा, ''हाँ,'' यीशु ने उसे कहा, ''मेरे भेड़ों को चरा'' या ''मेरे मेम्नों को चरा'' (यूहन्ना 21:15–17 देखिए)। यीशु जानवरों को चराने के विषय

में नहीं कह रहा था; वह अपने लोगों को सहायता करने के बारे में कह रहा था। बहुत अवसरों पर उसने स्वयं को चरवाहा और अपने लोगों को भेड़ कहा है, इसलिये पतरस वास्तव में जानता था कि वह किस विषय में बात कर रहा है।

मुझे ऐसा लगता है कि इन पदों में यीशु कह रहा है, कि यदि हम उनसे प्रेम करते हैं, तो हमें दूसरों की सहायता करनी चाहिये, केवल इमारतों में रविवार के दिन सुबह के समय इकट्ठा होना, और कुछ नियमों और कायदों का पालन करना ही नहीं है। हाँ, हमें संगति के लिये कलीसिया जाना चाहिये, परमेश्वर की आराधना करना और सीखना चाहिये, परन्तु कलीसिया ऐसा स्थान भी होना चाहिये जहाँ से हम लोगों की सहायता भी कर सकें। यदि एक कलीसिया संसार में खोए हुओं तक पहुँचती नहीं है और पीड़ित लोगों की सहायता नहीं करती है, जिसमें विधवा, अनाथ, गरीब और जरूरतमन्द लोग शामिल है, और तब मुझे यह निश्चय नहीं है कि उन्हें अपने आपको कलीसिया कहने का हक है।

हजारों लोगों ने कलीसिया जाना छोड़ दिया है, और संसारभर में आत्मिक अगुवे कलीसिया में आई आत्मिक गिरावट से चिन्तित हैं। मैं विश्वास करती हूँ कि इस गिरावट का कारण मुख्यतः व्यापक रूप से यह है कि कलीसियाएँ धार्मिक केन्द्र बन गईं हैं, जिसमें जीवन नहीं है। प्रेरित यूहन्ना ने कहा, कि हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुँचे हैं। क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं, और वह जो प्रेम नहीं करता, वह निरन्तर आत्मिक मृत्यु में बना रहता है (1 यूहन्ना 3:14 देखिए)। यदि एक कलीसिया परमेश्वर के सच्चे प्रेम से भरपूर नहीं है, तो उसमें जीवन कैसे हो सकता है?

मैंने सुना है कि यूरोप में बहुत सारी कलीसियाई भवन और कैथेड्राल भवन प्रति सप्ताह बन्द हो जाते हैं और उनमें से अधिकांश मुसलिम समूहों द्वारा खरीदे जा रहे हैं और मसजिदों में बदल रहे हैं। निश्चित ही यीशु मसीह के कलीसियाओं को यह मंजिल परमेश्वर की ओर से नहीं हैं। बहुत ही बड़ी कलीसियाएँ ठीक वही कार्य कर रही हैं, जो उन्हें करना चाहिये और वे बढ़ रहे हैं और इसके कारण जीवन से भरपूर हैं। परन्तु यह कहना सुरक्षित है कि वे अपवाद हैं और वे बहुसंख्याएँ कलीसियाएँ नहीं हैं।

प्रारम्भिक कलीसिया के विषय में हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में पढ़ते हैं, जो एक बहुत ही शक्तिशाली कलीसिया थी। उसने उस समय की ज्ञात दुनियाँ को हिला दिया और उसका प्रभाव आज भी संसार में महसूस किया

जाता है। वह एक थी और प्रत्येक लोग जो उसके भाग थे, लोगों की सहायता करने में व्यस्त रहते थे, जिन्हें वे जानते थे कि जरूरत में हैं। वे उनकी सहायता करते थे जिन्हें वे व्यक्तिगत रूप से जानते थे और उनके विषय में जो दूसरे नगरों और शहरों में रहते थे, वे प्रेरितों से सुनते थे जो उनसे मिलने और सीखाने के लिये आते थे।

प्रारंभिक कलीसिया शीघ्रता से बढ़ी और उसका एक अच्छा स्थान था क्योंकि यह ऐसे लोगों से भरी हुई थी जो सचमुच में एक दूसरे से प्यार करते थे। आज संसार की जो जरूरत है वह प्रेम है, न कि धर्म। उसे परमेश्वर की जरूरत है और परमेश्वर प्रेम है। यदि हम सहमत होते हैं और सभी शामिल हो जायें तो हम एक प्रेम क्रान्ति प्रारंभ कर सकते हैं, एक आन्दोलन जो संसार को परमेश्वर की महिमा के लिये एक बार पुनः हिला देगा।

सही करना सीखिए

किसी जरूरत व्यक्ति के विषय में देखना और सुनना और उसके लिये कुछ नहीं करना बहुत ही गलत है। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा, ''भलाई करना सीखो; यत्न से न्याय करो, उपद्रवी को सुधारो; अनाथ का न्याय चुकाओ, विधवा का मुकद्दमा लड़ो (यशायाह 1:17)।''

शिक्षा और निर्देश का उद्देश्य हमें सीखने में सहायता करना है कि क्या सही है और उसे करने के लिये हमें प्रोत्साहित करने लिये है। कुछ ही वर्ष पूर्व मुझे नहीं मालूम था कि परमेश्वर पीड़ितों को न्याय देने के मेरे कार्य के विषय में परमेश्वर कैसा महसूस करता था, परन्तु एक बार मैंने सीखा, तब मैं उसे करने लगी।

परमेश्वर लोगों को निर्देश देता रहा है कि पितृहीनों, विधवाओं की कैसे देखभाल करनी है, पीड़ितों और गरीबों के साथ कैसा व्यवहार करना है, क्योंकि उसने अपना नियम पुराने नियम के समय में दिया है। मूसा के द्वारा बात करते हुये उसने कहा, ''किसी विधवा वा अनाथ बालक को दुःख न देना (निर्गमन 22:22)।'' परमेश्वर पक्षपाती नहीं है, ''वह अनाथों और विधवा का न्याय चुकाता, और परदेशियों से ऐसा प्रेम करता है कि उन्हें भोजन और वस्त्र देता है (व्यवस्थाविवरण 10:18)।'' परमेश्वर ने लोगों से कहा कि यदि वे अजनबी को, अस्थायी निवासी को, विधवा और पितृहीनों को भोजन खिलाते हैं, तो परमेश्वर उनके हाथों के कार्यों को आशीषित करता है

(व्यवस्थाविवरण 14:29 देखिए)। कृपया नोट कीजिए कि ये सभी समूहें–विधवायें, अजनबियों, पितृहीनों–शायद एकाकी व्यक्तियों से संपूर्ण रूप से भरे हुए होंगे। परमेश्वर एकाकियों की परवाह करता है!

अकेले और भूले हुए लोग

मैं यह कल्पना नहीं कर सकती कि अकेली और भूली हुई एक अनाथ लड़की जो जीने के लिये वेश्यावृत्ति करने के लिये मजबूर होती है, किस प्रकार महसूस करती है।

आँकड़े कहते हैं :

- प्रति वर्ष दो मिलियन कन्याएँ पाँच से पन्द्रह वर्ष की उमर में व्यवसायिक यौन व्यापार से परिचित होती हैं।
- 89 प्रतिशत वेश्याएँ बच निकलना चाहती है।
- कम से कम दो लाख महिलाएँ और बच्चे थाइलैण्ड में वेश्यावृत्ति का कार्य करते हैं और उनमें से एक तिहाई अठारह वर्ष के कम उमर के हैं। छः वर्ष की कन्यायें भी वेश्याओं का काम करती हैं।
- एक बार, एक चिकित्सक ने पैंतीस पुरूषों को एक घण्टे में एक कन्या का इस्तेमाल करते हुये पाया।

क्या ये सभी कन्यायें अनाथ हैं? नहीं, वे सभी माता–पिता रहित होने के अर्थ में अनाथ नहीं हैं। परन्तु वे परमेश्वर के दृष्टि में अनाथ हैं क्योंकि या तो उनके पास माता–पिता नहीं हैं या जो माता–पिता हैं भी वे उनकी देखरेख नहीं कर सकते या नहीं करना चाहते हैं।

किशोरवय वेश्यावृत्ति

अपने देह को दुष्ट मनुष्य के आनन्द के लिये बेचो या भूख से मर जाओ। यह एक भयावह विकल्प है जो कोई भी कभी भी स्वीकार नहीं करना चाहता। यद्यपि बिरटूकन उन्नीस वर्ष की है, उसने चौदह वर्ष की उम्र में यह विकल्प चुना था। और प्रत्येक चुनाव के साथ उसका हृदय टूटता जाता है और उसकी आत्मा नाश की जाती है। अपने साथ होनेवाली सभी घटनाओं के बीच में यह एक आश्चर्य किया कि वह अब भी कुछ भी महसूस नहीं करती है।

जब वह अपनी सात माह की बेटी आमीना की आँखों में देखती है तो उसे ताकत मिलती है। *''मैं यह चुनाव इसलिये करती हूँ, क्योंकि कि मैं नहीं चाहती कि मेरी बेटी भी ऐसा ही करे।''* उसके इथिओपिया नाम, आमीना का अर्थ, *''सुरक्षित''* है, और बिरटूकन ने निर्णय लिया है कि अपनी बेटी को बचा रखने की प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिये वह जो कर सकती है उसे करेगी।

वह अपनी देह को लालच या स्वयं के आनन्द के लिये देह को नहीं बेचती है। वह जीने के लिये देह को बेचती है। वह एक चार–बटे–नौ वर्ग फुट के कमरे में जीती और अपना कार्य करती है। उसने पाँच वर्ष तक बिना किसी अवकाश के.....बिना किसी मौसमी छुट्टी.....या बिना आराम के कार्य किया है। वह अपनी आँखों को बन्द करके आमीना के बारे में सोचती है, जिसकी पन्द्रह पुरूष एक दिन में उसकी शरीर को अपनी बुरी इच्छाओं को पूरी करने के लिये दुरूपयोग करते हैं। दर्द है अकल्पनीय है, परन्तु यह एक मात्र रास्ता जानती है कि भोजन और ठहरने के लिये एक स्थान का प्रबन्ध कर सके। जब वह सोचती है कि आमीना से कितना प्यार करती है, तब वह यह नहीं समझ पाती कि उसकी अपनी माँ ने उसे कैसे छोड़ दिया, जब वह मात्र पाँच साल की थी।

जब वह आदिस अबाबा के उस लाल बत्ती क्षेत्र में आने से पूर्व वह भुखमरी के कगार पर थी। *''मेरे पास आशा थी, परन्तु अब वह आशा मुझ से कोसों दूर दिखाई देती है। मैं जानती हूँ कि परमेश्वर मेरे साथ है और वह मुझसे प्यार करता है। मैं जीने के और किसी तरीके के बारे में नहीं जानती।''* आशा की ये धीमी किरण एक दिनभर के लिये रूकती है जब उसका जीने का मूल्य उसके हृदय का एक टुकड़ा, उसकी आत्मा, और खराब शरीर नहीं होता है।

आज, उन आशाओं को इन्तजार करना है। उसका अगला ग्राहक आ पहुँचा है।

आँकड़े कहते हैं :

- संसारभर में वेश्यावृत्ति में प्रवेश करने का औसतम उम्र तेरह से चौदह वर्ष है।
- 75 प्रतिशत वेश्यायें पच्चीस वर्ष से कम उम्र की हैं।

अवनति के नए स्तर को देखना और उसके विषय में कुछ करना

जब मैं भारत में रेड–लाइट् के जिल्ले में एक झोपड़ी में गई (वेश्यावृत्ति का क्षेत्र), वहाँ मुझे अवनति के एक नए स्तर से परिचय कराया गया। न केवल वह संपूर्ण क्षेत्र वर्णन से बाहर गन्दा था, वे वेश्यालयों से भरे हुए थे। मुझे एक में ले जाया गया जहाँ पर तीन छोटे–छोटे कमरे थे, और प्रत्येक कमरे में तीन–तीन विस्तर थे। इनमें से किसी भी कक्ष में बिस्तर के विषय में कोई निजता नहीं थी। कन्यायें और स्त्रियां मुख्य रूप से रात के समय इन्हीं छोटे कमरों में पुरूषों की सेवा करती थी, इस आशा के साथ कि भोजन के लिये और अपने बच्चों यदि किसी के पास हो तो और उनमें से बहुतों के पास थे, जिस के लिये पर्याप्त धन कमा सकेंगी। वे जब कार्य करते थे तो उनके बच्चे कहाँ होते थे? या तो वे गलियों में खेलते थे जहाँ से वे आसानी से उन कमरो में जा सकते थे जहाँ पर उनकी मातायें होती थी, या उन्हें सुलाने के लिये शराब पिला दिया जाता था, ताकि वे अपनी माताओं की परवाह न करें। उनमें से कुछ एक ने हमारे भोजन देने और स्कूल के कार्यक्रम के विषय में सुना था और हम इन घण्टों के दौरान उनकी देखभाल करने के लिये सक्षम थे, ताकि वे उन बातों को न देखें जो उनके घर में हो रहा था! वे छोटे बच्चे वेश्यालयों में रहते थे!

बिना सहायता के, लड़कियाँ–*छोटी लड़कियाँ* – केवल वेश्यावृत्ति के जीवन में पहुँचा दी जाती थी, जैसे ही वे पर्याप्त उमर के हो जाते थे। यह स्त्रियाँ इसलिये ऐसा नहीं जीती कि क्योंकि वे ऐसा चाहती हैं, परन्तु उनके पास और कोई विकल्प नही हैं। वे अशिक्षित हैं और गरीबी के मध्य बड़े हुये हैं जिसे हममें से अधिकांश लोग समझना भी प्रारंभ नहीं करते। उनमें से कुछ एक लोग दलालों द्वारा खरीदे गये हैं, जो इस उद्देश्य के साथ उन्हें कैदी बनाकर रखते और उन्हें मारते हैं यदि वे पर्याप्त धन कमाकर नहीं रखते हैं।

यह कहने के लिये मैं प्रसन्न हूँ कि हमने उन्हें बचाने के लिये एक कार्यक्रम की पहल की है। पहला, हम इस क्षेत्र में कुछ अन्य सेवकाईयों के साथ मिलकर तीन वर्षों से काम करते रहे हैं, और वेश्याओं की संख्या तीन हजार से तीन सौ तक गिर गई हैं। कुछ लोगों को एक छोटी सी आशा या जरूरत होती है, और उन्हें किसी की जरूरत होती है जो उन्हें बताये कि परिवर्तन हो सकता है और उन्हें दिखाए कि कैसे करना है।

हमारी सेवकाई ने लाल–बत्ती क्षेत्र से तीन घण्टे की दूरी पर कई सैकड़ों एकड़ भूमि खरीदी है, और हमने एक गाँव का निर्माण किया है जिसमें इन

स्त्रियों को काम सिखाने के लिये एक प्रशिक्षण केन्द्र भी है ताकि वे स्वयं अपने पाँव पर खड़े होने में सक्षम हो सके, और उनके परिवार बिना वेश्यावृत्ति के जी सके। अब मैं पहली केश में एक सौ महिलाओं और बच्चों को इस पुनःस्थापन के केन्द्र में फरवरी 2008 में पहुँचाया, और उन सब को पहुँचाने की योजना रखते हैं जो परिवर्तन चाहते हैं।

यह मेरे लिये छोटी लड़कियों और किशोरवय की लड़कियों की खिलखिलाने और हँसने की आवाजें सुनना बहुत ही हृदय को सुकून देनेवाली बात थी, जब मैं ने उन्हें नहाने के फुहारे और प्रसाधन के कमरे दिखाये जो उनके थे। आप देखिए, उन्होंने कभी भी बाल्टी में से पानी लेकर किसी मकान के पीछे कहीं बैठकर अपने ऊपर पानी डालके नहाने के अलावा नहीं किया था। उनके चेहरों पर मुस्कुराहट लाने का भाग बन सकना और उन्हें आशा देना एक अद्‌भुत भाव है। यह निश्चित ही स्वार्थी और आत्म केन्द्रित जीवन से अच्छा महसूस होता था, जैसा कि मैं कभी जीती थी। हमारी सेवकाई के भागीदार भारत के इस पहुँच कार्य के लिये बड़ी मात्रा में जिम्मेदार हैं, क्योंकि उनकी विश्वस्त दान के द्वारा ही यह सम्भव होता है, और गहराई के द्वारा इसकी प्रशंसा करते हैं।

मुझे यहाँ यह बात जोड़नी चाहिये कि कुछ एक बड़ी महिलायें कुछ वेश्यावृत्ति में फँस गई हैं, वे विधवायें हैं। उनके पति मर चुके हैं, या कुछ घटनाओं के दौरान मारे गए हैं, और उन्हें बिना किसी आर्थिक मदद के छोड़ दिये हैं। अतः एक बार पुनः उनके सामने धन कमाने का एक मात्र मार्ग आ खड़ा होता है।

हम संसार में सताये हुओं की सहायता करने के लिये जो सही है उसे करना सीख सकते हैं। हमें सूचनायें और दृढ़ निर्णय की जरूरत है और हम एक सकारात्क परिवर्तन बहुत से लोगों के जीवन में ला सकते हैं। यदि हममें से प्रत्येक अपना भाग करें, हम एक प्रेम क्रान्ति प्रारंभ कर सकते हैं।

अन्याय हर कहीं है

अन्याय केवल तीसरी दुनियां के देशो में ही नहीं है, परन्तु हमारे पड़ोस में, शहर में हर कहीं है। उन लोगों के साथ हम काम करते हैं जिनकी बहुत सारी जरूरते हैं। हम उनके पास से गुजरते हैं और बाजारों में उनसे हमारा सामना होता है। अन्याय के बहुत से चेहरे हैं, यह उस स्त्री के चेहरे से दिखाई दे

सकता है, जिसके पति ने तीन बच्चों के साथ उसे अन्य महिला की खातीर छोड़ दिया। यह एक ऐसी लड़की या लड़के के चेहरे से दिखाई दे सकता है, जिसके साथ बढ़ते समय में माता–पिता या अन्य वयस्क लोगों के द्वारा यौन दुर्व्यवहार या शारीरिक दुर्व्यवहार किया गया है। यह एक ऐसे पिता के चेहरे से दिखाई दे सकता है जिसकी परवरिश वेश्यालय में हुई जो एक तीसरी पीढ़ी के परिवार का सदस्य है जो भलाई के कारण जीता है, वह अच्छे से जीना चाहता है परन्तु ईमानदारी पूर्वक वह यह भी नहीं जानता कि क्या करना है। उसने बहुत कम शिक्षा प्राप्त की है और उसने टेलिविजन को छोड़कर किसी को भी अपने से भिन्न प्रकार से जीते हुये नहीं देखा है।

कुछ लोग अन्याय पर विजय पा लेते हैं और विपत्ति से बाहर निकल आते हैं, परन्तु अधिकतर नहीं। शायद उन्हें आपकी या मेरी या किसी और की जरूरत है, जिनके विषय में हम जानते हैं वे निवेश करते हैं। हमारी आन्तरिक सेवकाई सार्वजनिक विद्यालयों में बच्चों को पढ़ने लिखने की सहायता करने का काम करती हैं। हमने स्वयं सेवकों से कहा है कि बच्चों को पढ़ाने में सहायता करें और यह सोचना निरूत्साहित करना है कि थोड़े से ही लोग इस प्रकार के कार्यों के लिये एक घण्टा या एक सप्ताह देना चाहते हैं। निश्चित ही, हम सोचते हैं, ''कोई और'' को निश्चय ही इन बच्चों की सहायता करनी चाहिये। परन्तु किसी प्रकार हम वह व्यक्ति नहीं बन पाते हैं जो सहायता करते हैं। हमारे पास अपने बहाने हैं, और वे हमारे विवेक को शान्त करते हैं परन्तु क्या वे परमेश्वर के सम्मुख ग्रहणयोग्य हैं? वर्षों तक, मैं ने हर उस बात के लिये बहाने बनाये जिसे मैं करना नहीं चाहता थी, परन्तु मैंने एक सच्चाई को पाया कि जो मेरा पसन्दीदा कथन बन गयाः ''भिन्नता बहाने बनाता है; परन्तु प्रेम मार्ग ढूँढ़ता है।''

भिन्नता बहाने बनाता है; परन्तु प्रेम मार्ग ढूँढ़ता है।

भिन्नता बहाने बनाता है; परन्तु प्रेम मार्ग ढूँढ़ता है।

धार्मिकता के मानक

बाइबल में, पुराने नियम के प्रारंभ में, हम एक के बाद एक लोगों के उदाहरण देखते हैं जो गरीबों और जरूरतमन्दों की सहायता करने में शामिल थे। अय्यूब ऐसे लोगों में से एक था। उसने कहा कि अन्धों की आँखे बनने, लंगड़ो के

पैर बनने, और गरीब और जरूरतमन्द के लिये एक पिता बनने के द्वारा उसने धार्मिकता को पहन लिया है (अय्यूब 29:14–16 देखिए)। यह वाक्यांश ''पहन लेना'' एक विशेष अर्थ रखता है जिसे हम खोना नहीं चाहते। इस पर इस रीति से विचार कीजिएः जब मैं अपने वस्त्रों को पहिनती हूँ, तो मैं इसे उद्देश्यपूर्वक करती हूँ। मैं अपने स्नानागार में निष्क्रिय होकर खड़ी नहीं रहती हूँ और इन्तजार नहीं करती कि वे कूदकर मेरे पास आ जायें और मेरे शरीर पर चढ़ जाएँ। मैं सावधानी पूर्वक प्रत्येक कपड़े का चुनाव करती हूँ, और न केवल उसे मैं पहनती हूँ परन्तु यह भी सुनिश्चित करती हूँ कि वह मुझे अच्छा लगता है।

परमेश्वर ने कहा कि अय्यूब एक धर्मी व्यक्ति था और अय्यूब कहता है कि उसने धार्मिकता ''को पहना है''। दूसरे शब्दों में, उसने ऐसा उद्देश्यपूर्वक किया है। अय्यूब के दिनों में धार्मिकता का मानक विधवाओं, अनाथों, गरीबों, जरूरतमन्दों, और सताये हुओं की सहायता करना हुआ करता था।

आज हमारे समाज में बहुत सारे मानक नहीं रह गये हैं। ऐसा लगता है कि बहुसंख्यक लोग जैसा वे महसूस करते हैं वैसा करते हैं, और स्वार्थता प्रभुत्व करती है। हमें ऐसे मानक चाहिये जो सत्यनिष्ठ, सच्चे, ईमानदार, आदरयोग्य, विश्वासयोग्य, वफादार, और जख्मी लोगों की देखभाल करनेवाले स्त्री पुरूषों को उत्पन्न करे। यदि अधिक लोगों में ऐसी विशेषतायें पाई जाती तो हमारा संसार पूर्णतः एक भिन्न स्थान होता। आपका प्रति उत्तर सम्भवतः ''हाँ, मैं आशा करती हूँ कि काश आज हम ऐसा किये होते,'' परन्तु यह न भूलिये कि केवल उम्मीद रखना या आशा करने से कोई भला नहीं होता है। हमें कार्य करना चाहिये। हमारा संसार तब ही बदलेगा जब उसमें के लोग बदलेंगे – और यह परिवर्तन हममें से प्रत्येक के साथ प्रारंभ होता है। हम सबको अपने हाथों में मशाल लेकर कहना चाहिये, ''मैं प्रेम क्रान्ति हूँ!''

एस्तेर, एक युवा यहूदी लड़की जिसके विषय में आप अध्याय चार में पढ़ते हैं, जो क्रमशः एक रानी बन गई, आज्ञा दी कि गरीबों को उपहार भेजे जाएँ जब वह और उसके लोग स्वतन्त्रता का आनन्द मना रहे थे। परमेश्वर ने हमारे लिये जो भलाईयाँ की हैं उनका उत्सव मनाने के भाग के रूप में उन लोगों को स्मरण करना है वे जो अब भी जरूरत में हैं। मेरी एक मित्र अपनी कलीसिया के एक समिति में है, जो क्रीस्मस के दिन जो ऐसे लोगों से मिलती है, जो बेघर होकर तम्बूओं में रहते हैं। वह कलीसिया ऐसे जगहों पर रहनेवाले बच्चों की एक सूचि बनाती है, जिसमें बच्चों की उमर और कपड़ों

का साईज भी होता है। कलीसिया के सदस्य जो ऐसा करने में सक्षम हैं एक बच्चे का चुनाव करते हैं और केवल उस बच्चे के लिये ही उपहार खरीदते हैं। दिसम्बर में, उनके निवास स्थान पर एक क्रिस्मस पार्टी का आयोजन किया जाता है जहाँ पर बहुत सी भोजन सामग्रियाँ, क्रिस्मस संगित, यीशु की जन्म और प्रत्येक बच्चे के लिये उसकी प्रेम की कहानियाँ, और उपहार निश्चय ही प्रत्येक बच्चे को दिये जाते है।

पार्टी के पश्चात् कलीसिया के सदस्य बेघर बच्चों की सहायता करके अच्छा महसूस करते हैं, परन्तु बहुत से लोगों ने कहा कि जब वे घर लौटते हैं अपने स्वयं के घर और आशीषों के लिये बहुत धन्यवादी होते हैं, जितना पार्टी में जाने से पहले नहीं थे।

हमारे लिये यह बहुत अच्छा है कि हम दूसरों की जरूरतों को स्वयं की आँखों से देखें और अनुभव करें क्योंकि यह हमें एक ताजा जागृति देता है कि हम कितना आशीषित हैं। आशापूर्वक यह हमें यह भी समझाता है कि हमें कितना अधिक करना चाहिये, यदि हम प्रयास करते हैं। लोग ख्रीसमस के समय पर अधिक उदार होते हैं, और बहुत से लोग किसी और की सहायता करने का प्रयास करते हैं, परन्तु हमें यह जानने की जरूरत है कि गरीब और हाशिया के बाहर के लोग हर समय जरूरतमन्द होते हैं और केवल ख्रीस्तमस के समय सालभर में एक बार नहीं।

जब मैं आज लिख रही हूँ, तो डेव और मैं होटल के ऐसे कमरे में हैं, जिसका बाथरूम और सावर बहुत ही छोटा है। यह इतना छोटा है कि उसकी छत पर डेव का सिर स्पर्श होता है। पहले उन्होंने इस असुविधा पर थोड़ा सा बुड़बुड़ाया, तब वे उन लोगों को स्मरण किया जिनसे हम मिले थे जिनके पास पानी नहीं था, और उन्हें अपने परिवार के जीने के लिये थोड़ा सा गन्दा पानी लाने के लिये भी घण्टों पैदल चलना पड़ता था। ये लोग कभी कभार ही नहाते थे, और वे ऐसा करते तो भी सावरवाल बाथरूम में नहीं होता था। हम दोनों ने पाया कि जरूरतमन्दों लोगों तक पहुँचना हमारे लिये एक आशीष है, क्योंकि यह हमारी सहायता करता है कि हम न कुड़कुड़ायें और सिकायत न करें, परन्तु हर बात में धन्यवाद दें जैसा परमेश्वर हमसे चाहता है।

बोअज़, एक धनी व्यक्ति और अपने समूदाय का नेता ''मुठ्ठी भर जाने पर'' रूत के लिये छोड़ दिया था जैसा बाइबल कहती है (रूत 2:16) कि वह उसे इकट्ठा करे ताकि अपने और अपनी सास के भोजन के लिये इस्तेमाल कर सके। दोनों रूत और नाओमी विधवायें थे और वे गरीब थे। उन दिनों की

व्यवस्था आज्ञा देती थी कि कटनी के समय खेत में से सारे अनाज़ न उठाये जाएँ। लोगों को कुछ अनाज़ गरीबों के लिये छोड़ना पड़ता था ताकि वे भी खा सके। हम बार–बार देखते हैं कि परमेश्वर ने हमेशा गरीबों के लिये प्रबन्ध किया है। परन्तु उसका प्रबन्ध आसमान से आश्चर्यजनक रूप से प्रकट नहीं होता है; उसने अपने लोगों के द्वारा प्रबन्ध किया है।

कार्यरूप में प्रेम

जॉयस मेयर मिनिस्ट्रीज़ में हमारे पास एक खाता है, जिसे ''कार्यरूप में प्रेम'' नाम दिया गया है। यह सेवकाई और कार्यकर्ता इस खाते में विशेष करके साथी कार्यकर्ताओं के इस्तेमाल हेतु धन दे सकते हैं, जो किसी न किसी कारण से आर्थिक कठिनाई का अनुभव करते हैं। शायद बीमारी ने उनके ऊपर बोझ डाल दिया हो, या बच्चे के किसी विशेष जरूरत ने उन्हें निराशा में डाल दिया हो। हमने निर्णय लिया है कि हमें उनकी सहायता करने के लिये तैयार होना चाहिये जो हमारी बीच में हैं, जिनकी सही में आवश्यकतायें हैं, और जो स्वयं अपनी सहायता नहीं कर पाते हैं।

यदि आपके पास एक बाइबल अध्ययन समूह हो या मित्रों का एक समूह हो जो प्रेम क्रान्ति का भाग बनना चाहते हैं, एक बात जो आप कर सकते हैं एक वह है कि एक खजाँची का चुनाव करें या बैंक में एक विशेष खाता खोलें और प्रत्येक व्यक्ति को उसमें प्रति सप्ताह या प्रति माह कुछ धन जमा करने दीजिये। आप इसे ''कार्यरूप में प्रेम'' कह सकते हैं यदि आप चाहते हैं या अपने स्वयं के नाम को चुनते हैं, परन्तु आनेवाली जरूरतों को पूरा करने के लिये इसे कीजिये। अक्सर हम जरूरतों के विषय में सुनते हैं और चाहते हैं कि हमारे पास अधिक धन हो। उन समयों के लिये क्यों न हम वचत करें ताकि आप तैयार पाए जायें? यदि आप किसी ऐसी समूह को नहीं पा सकते हैं जो इसमें रूचि लेते हो, तो एक या दो लोगों को ढूँढ़िये और यदि आपको करना है, तो इसे स्वयं कीजिए, परन्तु कुछ न करने से इन्कार कीजिये!

यदि मैं अपने हाथों से किसी की सहायता नहीं कर सकता तो मुझे इसकी क्या जरूरत है?

अपने अध्ययन के दौरान सबसे चकित कर देनेवाली बातों में से एक जो मैं ने पाया वह यह था कि किस प्रकार से अय्यूब ने गरीब को प्रतिक्रिया दी

कि उसका आंकलन कि यदि वह अपने हाथ को जखमी की सहायता के लिये नहीं इस्तेमाल कर सकता है, तो किसी को उसे उसके हाथ उसके शरीर से काट देना चाहिये (अय्यूब 31:21–22 देखिये)। इसने मुझे यह समझाया कि लोगों की सहायता करने के विषय में वह कितना गम्भीर था। क्या मैं इतना गम्भीर होने का इच्छुक हूँ? क्या आप हैं?

यदि हम केवल सुबह उठते और अपने लिये जीते हैं तो फिर जीने का क्या वास्तविक अर्थ रह जाता है? मैं ने इसका प्रयास किया है और पाया है कि यह मुझे खाली और खोखला बना देता है। मैं नहीं सोचती कि परमेश्वर ने हमारे लिये और पृथ्वी पर अपने सारे प्रतिनिधिओं के लिये यह विचार मन में रखा था।

मैंने इस दस्तावेज को लिखना कुछ समये के लिये रोक दिया है कि मैं दूसरों को प्रेम करने के विषय में उन सारे वचनों को पुनः–पढ़ूँ जो मैं पा सकती हूँ। अब मैं पहले से भी अधिक निश्चित हूँ कि यही जीने का वास्तविक उद्देश्य है। मैं आपसे विनती करती हूँ कि अपने संपूर्ण अस्तित्व को भलाई करने के लिये समर्पित करें। परमेश्वर को अपने हाथ, अपनी बाहें, अपना मुँह, पैर, आँखें, और कान समर्पण करें और उससे कहें कि इन्हें किसी की भलाई के लिये इस्तेमाल करे। उम्मीद के साथ किसी तक पहुँचने के लिये अपने हाथ को इस्तेमाल करें जो भूखे हैं, जो दर्द में हैं या अकेले हैं।

प्रेम की कटनी

स्वार्थतापूर्वक देना और जीना यही हमारे जीवन फसल उत्पन्न करता है। एक कटनी का उम्मीद करना और इच्छा रखना कुछ भी गलत नहीं है। दूसरों की सहायता करने के लिये हमारी प्रेरणा स्वयं के लिये कुछ पाना नहीं होना चाहिये, परन्तु परमेश्वर कहता है कि जो हम बोते हैं वह हम काटते हैं, और हम उस लाभ के लिये आगे की ओर देख सकते हैं। एक पद जो इस सत्य को बहुत सुन्दर रीति से अभिव्यक्त करता है, लूका 6:38 में पाया जाता हैः ''दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगाः लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।''

परमेश्वर प्रतिफल देने की प्रतिज्ञा करता है, जो उसे कर्मिष्ठता से खोजते हैं (इब्रा. 11:6 देखिये)। नया नियम की मूल यूनानी लेख में प्रतिफल शब्द का

अर्थ, ''इस जीवन में प्राप्त मजदूरी'' या ''पुरस्कार।'' इब्रानी भाषा में, जिसमें पुराना नियम लिखा गया, प्रतिफल शब्द का अर्थ, ''फल, कमाई, उत्पाद, कीमत, या परिणाम है।'' अंग्रेजी के एम्पलीफाइड अनुवाद में प्रतिफल शब्द 68 बार इस्तेमाल किया गया है। परमेश्वर चाहता है कि हम आज्ञाकारिता और अच्छे चुनावों की प्रतिफल के लिये आगे की ओर देखें।

यदि हम पीड़ितों और गरीबों की देखभाल करते हैं, तो परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि हमें कुछ घटी न होगी, परन्तु यदि हम अपनी आँखों को उनकी जरूरतों से मून्द देते हैं, तब हमारे जीवनों में ''बहुत से शाप'' आएँगे (नीति. 28:27)। नीतिवचन का लेखक यह भी कहता है, कि जब हम गरीब को देते हैं, तब हम परमेश्वर को उधार देते हैं (नीति. 19:17 देखिये)। मैं यह कल्पना नहीं कर सकती कि परमेश्वर के ऊपर जो उधारी है उसका वह बहुत बड़ा ब्याज नहीं देगा।

मैं आपसे विनती करती हूँ कि पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिये काम कीजिये। इसका सीधा अर्थ है, जब आप कुछ ऐसा देखते हैं जो आपकी नजर में गलत है, तो आप उसे सही करने के लिये कार्य करते हैं।

प्रकाश में जीना

शायद हमें अपने जीवनों में और अधिक रोशनी चाहिये। इसका अर्थ है और अधिक स्पष्टता, अच्छी समझ, और कम भ्रम। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने घोषणा की कि यदि हम अपने रोटी को भूखे के साथ बाँटते हैं और गरीब बेघरों को अपने घर लाते हैं, नंगो को कपड़े पहनाते हैं, और आस पास की जरूरतों की प्रति अपने आपको छुपाना बन्द करते हैं, तो हमारी रोशनी फूट निकलेगी (यशायाह 58:7–8 देखिये)। उसने यह भी कहा कि हमारी चंगाई और पुनर्स्थापन और नये जीवन की सामर्थ तुरन्त फूट निकलेगी। यह मेरे लिये अच्छा लगता है और मुझे निश्चय है कि यह आपको भी अच्छा लगता है।

यशायाह ने न्याय के विषय में लिखा और कहा कि यह हमारे आगे जाएगा और हमें शान्ति और समृद्धि देगा और परमेश्वर की महिमा हमारी सुरक्षा कवच होगी। यदि हम सक्रिय रूप से पीड़ितों की सहायता करते हैं, परमेश्वर हम से आगे जाता है और वह हमारे पीछे भी हमारा रक्षा करता है! सुरक्षा और निश्चितता की वह भावना मैं पसन्द करती हूँ।

यशायाह ने आगे यह भी कहा कि उन बातों को जिनसे हम स्वयं का पोषण करते हैं भूखों के लिये उण्डेल देते हैं और पीड़ितों के जरूरतों को सन्तुष्ट करते हैं, तब हमारी रोशनी अन्धेरे में चमकती है और हर एक अन्धकार जिसको हमने अनुभव किया है दोपहर के सुरज के नाई चमकेगा (यशायाह 58:10 देखिये)। सुरज दोपहर को बहुत चमकिला होता है, इसलिये मुझे ऐसा लगता है कि लोगों की सहायता करना रोशनी में जीने का एक रास्ता है।

प्रभु लगातार हमारी अगुवाई करेगा और सूखे के समय में भी वह हमें सन्तुष्ट करेगा। वह हमारी हड्डियों को मजबूत करेगा और हमारा जीवन सिंचित बगीचे के समान होगा (यशायाह 58:11 देखिए)। यह सब कुछ पीड़ितों के लिये न्याय दिलाने के लिये जीने के परिणाम के रूप में होता है।

मैं उम्मीद करती हूँ कि जिन बातों को मैं इन प्रतिज्ञाओं में देखती हूँ वह आप भी देख रहे हैं। मैं सोचती हूँ कि हममें से अधिकाँश लोग अपने जीवन को इसे पाने के प्रयास में व्यर्थ गवांते हैं कि परमेश्वर प्रसन्नता पूर्वक हमें क्या देगा यदि हम केवल वही करें जो वह हमसे करने के लिये कहता है। गरीबों, भूखों, बेसहारों, अनाथों, विधावाओं, पीड़ितों और जरूरतमन्दों की देखभाल करना। अपने जीवन को दूसरों की सहायता करने के लिये व्यतीत कीजिए, और परमेश्वर प्रत्येक सम्भव रीति से आपको सन्तुष्ट करेगा।

प्रेम क्रान्तिकारी

मार्टिन स्मिथ

हमारा प्रेम हमारे चारों ओर कैसी क्रान्ति लाता है?

मैं यह सब कुछ बहुत स्पष्ट रीति से स्मरण करती हूँ। वह जरवरी 10, 2008 का था। बगल की गली – यह इतनी विशाल थी कि हमारी बस उसमें से बहुत मुश्किल निकल सकती थी। हमने बस से बाहर उस बदबूदार और गरम से भरे माहौल में कदम रखा जहाँ पर हजारों पुराने टायरों को जलाया जा रहा था और उसमें पीछले महीने के सारे कबाड़ें भी थे। दुकानें और वॉर्कशप और बोरियाँ और कुछ एक घरें। साड़ियाँ और चप्पल और नंगे पैर और आवाजें जो आत्मा तक गूँज जाती थी।

परन्तु यह सब कुछ उसकी तुलना में कुछ नहीं था जो आगे के बाद आया.....

यह मुम्बई, इण्डिया था। हम एक बस्ती में थे, या, जिसे बस्ती कहा जा सकता था, हम एक लाल–बत्ती वाले क्षेत्र में थे जो कि शहर के बस्तिओं में से एक था। वहाँ पर कोई लाल–बत्ती नहीं दिखाई देती थी, और वहाँ का हर एक व्यक्ति किसी न किसी कार्य में व्यस्त था – बनाना, बेचना, झाड़ू लगना, ले जाना।

हम यहाँ प्रेम किरन देखने आए थे – एक ऐसी योजना जो वेश्याओं के बच्चों और उनके परिवारों के लिये कार्य करने को समर्पित था। डेव और जॉयस ने हमें निमन्त्रित किया था। उन्होंने हम से यह कहा, कि यह एक ऐसी योजना है जो आपको स्वयं देखनी चाहिये।

मैं नहीं जानता कि मैंने इतने अधिक लोगों को एक कमरे में जीते हुए कभी देखा हो। यह मानो ऐसा था कि कमरे की दिवारें उन सबको अपने में समेटने में अक्षम थी। सत्तर मुस्कुराते चेहरे, वे सभी आगन्तुकों की ओर मूड़े, मानो सूरजमुखी के फूल डूबते सूरजी की ओर देख रहे हों। बाहर, हम गली को, बस्ती को, और देख सकते थे जहाँ पर बहुत सा दर्द, संघर्ष, और मौत थी। परन्तु इस कमरे के अन्दर एक ऐसा अनुभव था जो उन सभी अनुभवों से अधिक शक्तिशाली था जिसका कभी मैं ने अनुभव किया था।

विशेष करके एक बच्ची थी जिसे छोड़ना मुझे मुश्किल महसूस हुआ। फरिन उसका नाम था, और उसके विषय में कुछ ऐसा था निश्चय मुझे लगा कि उससे दूर जाना मुश्किल होगा।

अगले घण्टे मैंने और अधिक देखा। अन्य बहुतों के समान फरिन की माँ एक वेश्या थी। प्रेम किरन ने वहाँ कदम रखा था और उसके जीवन को अधिक अच्छा बनाया था – भोजन देना, वस्त्र देना, शिक्षा देना, और उससे प्रेम में समर्पित और त्यागपूर्ण मसीहियों का समर्थन मिला था। फिर भी मेरा मन प्रश्नों से भरा हुआ था।

कितनी बार फरिन को बिस्तर के नीचे छुपे रहना पड़ा जब उसकी माँ काम करती थी?

अन्धेरा फैलने के बाद बस्ती की गलियों में उसके लिये कितने खतरे थे?

यदि वह बाहर नहीं आती तो वह बदलाव की कितनी अधिक आशा कर सकती थी?

मैं कैसे दूर जा सकता हूँ?

मैं कैसे कर सकता हूँ?

मुम्बई की वह एक दोपहर वह सब कुछ को बदल दिया।

अगले दिन हम शहर में एक सम्मेलन कर रहे थे। बच्चों और माताओं को अपने साथ मंच पर लाने के अलावा हम क्या करते? अतः वे आए, और उन्हें वहाँ पर अपने साथ रखना बड़ी बात थी – सबके चेहरों पर शर्मिली मुस्कुराहट थी और संस्कृतिक आधार थी और सब कुछ बड़ी घटना हुई। हमने कार्यक्रम प्रारंभ किया और मातायें नाचना शुरू की। रात की मातायें, यौन कार्यकर्ता जो लाल लिपस्टिक से पूते और रंगहीन साढ़ियों के साथ थी, स्वतन्त्रता, अनुग्रह और प्रेके साथ हजारों लोगों के सामने नाचे। गिरते हुये पंखो के समान खुलते हुए उनके हाथ, और पैर उनकी कहानियाँ कह रहे थे, उनके नृत्य में कुछ ऐसा था जिसको मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

और वही घटना थी जिसने मेरा ध्यान खींचाः न्याय कहाँ होना चाहिये? बहिष्कृत लोगों का स्वागत कहाँ होना चाहिये? गरीबी के बोझ से दबे जीवनों को स्वतन्त्रता और आशा कहाँ मिलनी चाहिये? हमारा प्रेम कहाँ पर बिना प्रश्न के खर्च किया जाना चाहिये?

मैं कलीसिया में बढ़ा हुआ था, परन्तु कहीं न कहीं कुछ सबक खो दिया था। मैंने नहीं सीखा था कि जब गरीबी और अन्याय के प्रति हमारे प्रतिक्रिया की बात आती है – और आराधकों के रूप में हम मसीहियों की भूमिका – परमेश्वर बातों को सफाईपूर्वक विभाजित करना नहीं चाहता। वर्षों पूर्व मैं इस सलाह से एक मील दौड़ी थी कि हमारे पास महिलाओं का एक ऐसा समूह होना चाहिये, जब हम अराधना करते हैं तो वेश्यावृत्ति के नृत्य के लिये स्टेज़ पर मजबूर किये जाएँ। ऐसा लगता है कि परमेश्वर कलीसिया को पूरी तरह झकजोर रहा है जैसा पहले कभी नहीं हुआ और हमें यह जता रहा है कि इसी तरह लोगों को स्वागत किये जाने की जरूरत है।

इसलिये जब प्रेमक्रान्ति की हमें कितनी अधिक जरूरत है इस विचार पर बात करने जरूरत है तो मेरे साम्हने एक प्रश्न आता है, हमारा प्रेम हमारे चारो तरफ कौन सी क्रान्ति लाता है?

मैं अपनी मुम्बई के यात्रा को खतम करके घर पहुँची और सब कुछ बिगड़ा हुआ था। मेरे दिमाग ने काम करना बन्द कर दिया था जैसा वह पहले करता था, और मैं बहुत अधिक कष्ट में पड़ गई। मुझे अपने ऊपर एक बोझ महसूस हुआ जब ये फरिन की बात थी – यदि हम स्वयं कुछ नहीं करते हैं तो उसका जीवन एक ऐसे भविष्य की ओर बढ़ेगा जिसमें दुःख, गरीबी, दुर्व्यवहार और बीमारियाँ हैं। मैंने महसूस किया कि मानो वह एक और बेटी बन गई हो और उसके बिना हमारा परिवार अधुरा हो।

ऐसा लगा कि परमेश्वर की योजनायें मेरी योजनाओं से भिन्न हैं।

एक वर्ष और कुछ महीनों पश्चात् जब मैं इस अनुभव के विषय में लिखती हूँ, तो बातें वैसा नहीं रही जैसा मैंने अनुमान लगाया था। फरिन ने शहर नहीं छोड़ा है, वह अब भी अपने परिवार में है, परन्तु उसकी माँ अब वेश्या का काम नहीं करती है। वे मुम्बई से कुछ ही घण्टों की दूरी पर उनके ही समाज़ लोगों के समाज़ में रहने के लिये जानेवाले हैं–पूर्व–यौनकर्ता जो भूतकाल के खतरों और भयावहता से दूर एक नया जीवन जीना चाहते हैं। फरिन का जीवन मेरी उम्मीद से बढ़कर सुखमय लग रहा है।

और मेरा?

इस प्रकार से, मैं पुनः एक पिता बनने के लिये तैयार था। परन्तु फरिन के लिये नहीं। इस वर्ष कभी मेरी पत्नी, अन्ना, और मैं एक दूसरे बच्चे को जनम दिया–एक सौजन्यता जिसका नाम, कम्पैशनआर्ट था।

कम्पैशनआर्ट कला से संबोधित योजनाओं के द्वारा धन एकत्रित करने के लिये है (जैसे एल्बम और किताबें) जो गरीबी के हर रूप से लड़ने के लिये बिक्री और रोयल्टी से प्राप्त धन का इस्तेमाल करता है। वह गरीबी जो अपने भयावह रूप में लोगों के जीवन पर डाँका डालता है और जिन्हें चिन्हित करना कठिन है, परन्तु लोगों को आशारहित कर देता है। हम दोनों जॉयस और डेव से इस विषय पर भी बातचीत को स्मरण करते हैं, जब यह प्रारम्भ होनेवाला था और जिसे मैं अनुमान लगता हूँ कि यह बातचीत उन्हें कम्पैशनआर्ट से दादा–दादी या कुछ ऐसा ही बनाते हैं। यह उनका उत्साह और बुद्धि ही थी कि जिसने हमें प्रारंभिक कदम उठाने के लिये सहायता किया।

परन्तु इससे बढ़कर कम्पैशनआर्ट किसी सुत्र पर पुनः काम करना है। यह उस गणित को चुनौती देना है जो कहता है, कि जब हम दूसरों की देखभाल नहीं करते हैं, सत्य यह है कि यह कमजोर होता जाता है। जब हमारा उद्देश्य और प्रेम हमारे ही खूद की बातों में इधर–उधर घूमती है, तो हम उसे गलत दिशा में लेके जाते हैं।

जब हमारा प्रेम हमसे परे पहुँचता है, हम स्वयं को परमेश्वर के सही मार्ग के अधिश निकट पाते हैं।

बाद में जब कभी मैंने अपने आपको माइक्रोफोन, एक वेदी, एक भीड़ के साथ इस आश्चर्य में पाया, कि अगला क्या होनेवाला है, तब मैं ने यशायाह 58 अध्याय को पढ़ने की आवश्यकता महसूस किया है। किसी प्रकार मैं शब्दों की ताकत और साधारणतः विरोध करने के अयोग्य रही हूँ, और यद्यपि वो इस्त्राएलियों को तीन हजार वर्षों से कुछ ही कम वर्षों पूर्व हाथों हाथ दिए गये, वे उन अनन्न मुद्दों के साथ व्यवहार करते हैं, जो आज भी प्रासंगिक हैं।

प्रारंभिक पंक्ति को देखकर मैं उत्साह से भर गई, ''गला खोलकर पुकार, कुछ न रख छोड़, नरसिंगे का सा ऊँचा शब्द कर'' (यशायाह 58:1)।

इसके लिये फुसफुसाना या आगे के किसी के लिये खिसकाना नहीं परन्तु चिल्लाना ही सही था। यह एक वास्तविक समय का मुद्दा है जिस पर हर कहीं प्रत्येक का ध्यान जाना चाहियेः ''वे प्रति दिन मेरे पास आते और मेरी गति बूझने की इच्छा ऐसी रखते हैं मानो वे धर्मी लोग हैं जिन्होंने अपने परमेश्वर के नियमों को नहीं टाला; वे मुझ से धर्म के नियम पूछते और परमेश्वर के निकट आने से प्रसन्न होते हैं'' (पद 2 मेरा शब्द पर जोड़ दें)। ये शब्द ऐसे दिखते हैं मानो यही समस्या है। हृदय स्पष्ट रीति से सही नहीं है और वे फसल की ओर जा रहे हैं।

परमेश्वर उनके प्रश्नों का उत्तर देता है कि ऐसा क्यों लगता है कि उसने उनकी सभी धार्मिक गतिविधिओं की विशेषताओं को अनदेखा कर दिया है। ''वे कहते हैं, क्या कारण है कि हम ने तो उपवास रखा, परन्तु तू ने इसकी सुधि नहीं ली? हम ने दुःख उठाया, परन्तु तू ने कुछ ध्यान नहीं दिया? सुनो, उपवास के दिन तुम अपनी ही इच्छा पुरी करते हो और अपने सेवको से कठिन काम कराते हो। सुनो, तुम्हारे उपवास का फल यह होता है कि तुम आपस में लड़ते और झगड़ते और दुष्टता से घूँसे मारते हो'' (पद 3–4)।

तब सबक पुनः एक बार आता है, पुनः आदेशित करना था हम में से वे लोग भी जो पीछे बैठकर उंगते हैं, अन्ततः उसे समझें: ''जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ, वह क्या यह नहीं, कि, अन्याय से बनाए हुए दासों, और अन्धेर सहनेवालों का जूआ तोड़कर उनको छुड़ा लेना, और, सब जूओं को टुकड़े टुकड़े कर देना? क्या वह यह नहीं है कि अपनी रोटी भूखों को बाँट देना, अनाथा और मारे–मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहिनाना, और अपने जातिभाइयों से अपने को न छिपाना? तब तेरा प्रकाश पौ फँटने की नाईं चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे आगे आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा'' (पद 6–8)। यह सच में अधिक स्पष्ट नहीं होता है, है न? सताये हुए, दुर्व्यवहार सहे हुए, भूखे, बेघर, गरीब – ये वे लोग हैं जिनके आस पास हमारा प्रेम घूमते रहना चाहिये, न कि स्वयं के या हमारे प्रभावशाली रूप से धार्मिक होने के हमारे पराजित विचारों के आस पास।

परमेश्वर इन सब के परिणाम के प्रति स्पष्ट है। ''तब तेरा प्रकाश पौ फँटने की नाईं चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे आगे आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा। तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा; तू दोहाई देगा और तू कहेगा, मैं यहाँ हूँ। यदि तू अन्धेर करना, और उंगली मटकाना और दुष्ट बातें बोलना छोड़ दे'' (पद 8–9)।

वर्षों तक हम ने अपनी आराधना में आत्मीयता की खोज की है। हमने ऐसे गीत गाए हैं जो बताती है कि परमेश्वर निकट रहता है और हमारे जीवन उसके हैं। हमने उन क्षणों को भी व्यतीत किया है, जब हम जानते हैं कि परमेश्वर निकट है। हम ने उसकी आवाज का पीछा किया है और उसकी योजनाओं की खोज की है। और इन सब के साथ हम ने सच्ची आत्मीयता की कुन्जी को खो दिया हे। ''तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा; तू

दोहाई देगा और तू कहेगा, मैं यहाँ हूँ। यदि तू अन्धेर करना, और उंगली मटकाना और दुष्ट बातें बोलना छोड़ दे, उदारता से भूख की सहायता करे और दीन दुःखियों को सन्तुष्ट करे, तब अन्धियारे में तेरा प्रकाश चमकेगा, और तेरा घोर अन्धकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा। और यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और काल के समय तुझे तृप्य और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका फल कभी नहीं सूखता'' (पद 9–11)।

और यदि हम करते हैं, तो इतना ही नहीं हम परमेश्वर की आवाज को सुनते और उसकी प्रेम को जरूरतमन्दों तक पहुँचाते हैं, अपितू एक अच्छी रीति से सींचित बगीचे स्वरूप में जो अपने आप में जीवन रखता है, यशायाह यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर के लोग इतिहास में अपना स्थान रखना प्रारंभ करते हैं। ''और तेरे वंश के लोग बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएँगे; तू पीढ़ी पीढ़ी की पड़ी हुई नेव पर घर उठाएगा; तेरा नाम टूटे हुए बाड़े का सुधारक और पथों का ठीक करनेवाला बनेगा'' (पद 12)।

और भी कुछ है, ''तो तू यहोवा के कारण सुखी होगा, और मैं तुझे देश के ऊँचे स्थानों पर चलने दूँगा; मैं तेरे मूल पुरूष याकूब के भाग की उपज में से तुझे खिलाऊँगा, क्योंकि यहोवा ही के मुख से यह वचन निकला है'' (पद 14)।

परमेश्वर को अपने ''आत्मीक'' होने और अपने चारो ओर अच्छे कार्य करने से प्रभावित करने के प्रयास को रोकने से ये सब सम्भव होता है। यह सब सम्भव होता है जब किसी भूखे को भोजन दिया जाता है, जब गरीब वस्त्र दिया जाता है, शक्तिहीन का बचाव किया जाता है, और कमजोर के लिये बोला जाता है, तब यह सारा इतिहास साधारण कार्यों से बनाया जाता है – यदि केवल हम स्वयं की तुलना में अधिक प्रेम करना सीख सके।

इन सब के पीछे एक और सत्य है। सत्य यह है, कि यह देखना और प्रयास करना और अपने प्रेम को दूसरों में घूमता हुआ देखना कठिन हो सकता है, जब यह हमारे विषय में हो तो यह आसान होता है, क्यों? आंशिक रूप से क्योंकि यह इस प्रकार से हमेशा होता है – उन दम्पत्तियों की कहानियों से जिन्होंने मना किया हुआ फल राजा को चखाते हैं और जल्द ही विधवा होने के लिये छत पर जासूसी करते हैं। और उन बुरे चरित्रवाले भविष्यद्वक्ताओं से जो स्पैन जाते हैं जो परमेश्वर के उस समृद्ध दया को किसी पर उण्डेले जाते हुए नहीं देखते हैं परन्तु अपने लोगों पर। यह हमेशा से हमारे साथ इसी

प्रकार रहा है, परमेश्वर और जीवन के प्रति उसकी नजरिये के स्थान पर उसकी स्वयं को सिंहासन पर स्थापित करने की हमारी संघर्ष जारी रहता है।

ऐसा लगता है कि मानो यह इन दिनों में और कभी से बढ़कर कठिन है। हमारे चारो तरफ ऐसी शक्तियाँ है जो हमे अपनी प्यास को मानने का पालन करने के लिये, अपनी इच्छाओं के अनुसार करने के लिये मजबूर करती हैं, क्योंकि ''हम इसे करने के योग्य हैं,'' कि हम जीवन को थामे रहें और उसे स्वयं के स्वरूप में बना डालें। हम चाहत रखते हैं – और यह सब पाने का प्रयास करते हैं – बाहरी दिखावा, वस्त्र, आय, घर, सम्बन्ध, कैरियर, सब कुछ हमें चमकाने और हमारे जीवन को बहुत अधिक अच्छा बनाने के लिये आकार दिया गया है।

परन्तु हम जीवन के विषय मे सच्चाई को जानते हैं, क्या नहीं? हम जानते हैं कि अनुकुल करने के दबाव के बावजूद हमारे चारों ओर घूमनेवाला जीवन हमें सच्चे आनन्द तक नहीं पहुचा सकता हैं।

जब हम नाव का खेल खेलते हैं और इतिहास बनानेवाले होने के बारे में गीत गाते हैं, तो मैं इसे हमेशा पसन्द करती हूँ। हम ने इसे बैण्ड में रहते हुए सैकड़ों बार गाया है, और महसूस किया है कि इन पंक्तिओं में कुछ ऐसी सामर्थ्य है, जो लोगों को प्रेरित, उत्तेजित, और आगे बढ़ने, और एक उल्लेखनीय जीवन व्यतीत करने के लिये प्रथम स्थान में होने का एहसास कराता है, जो एक इतिहास बनाएगा। परन्तु बातें और है; तथा और होना है।

यदि हम इतिहास बनानेवाले बनने जा रहे हैं, और लाखों लोगों का भविष्य अधिकारिक रूप से उन लोगों पर आश्रित होता है जो ऐसा करने का राग रागते हैं। तब हम में से अधिकांश लोगों के लिये यह बहुत ही अच्छे कारणों का विशेष गुच्छा होगा। हम अपने जीवन को निःस्वार्थ जीवन के छोटे कार्यों की श्रृंखला बनाने के द्वारा जीने के चुनाव करते हुए इतिहास बनाएँगे। जैसा कि मदर टेरेसा ने कहा, ''कोई भी बड़ी बात नहीं है; केवल बड़े प्रेम के साथ, छोटी वस्तुएँ।'' यदि हम अपने अनुवांशिक गुणों में इसे शामिल कर सकते हैं, तो संसार के दो विलियन मसीही संसार के गरीबी को हप्तेभर में मिटा सकते हैं। मैं, हमें इसी प्रकार के इतिहास को बनाते हुए देखना चाहता हूँ। आन्तरिक केन्द्र को भूल जाएँ; और उन आन्तरिक शब्दों के समान जैसा कि यशायाह 58 प्रतिज्ञा करता है, हम परमेश्वर को अधिक स्पष्टता से सुनेंगे और उसके साथ, उसके सामर्थ्य और उद्देश्य में मिलकर कदम रखेंगे, यदि हम यह सब

कुछ स्वयं के लिये करना बन्द कर देते और कारणों को खोजते और अपने चारों ओर के जरूरतों को पूरा करते। यह बहुत ही आसान बात है।

जो मैं निश्चित तौर पे जानता हूँ; वह है हमेशा सामर्थी होता है परन्तु छोटा हमेशा सुन्दर होता है। यह प्रेम क्रान्ति अति विशाल होने की शक्ति रखता है, परन्तु यह कभी भी उन छोटे निःस्वार्थ और त्यागपूर्ण प्रेम के कार्यों से ही निर्मित होगा। इसलिये हमारे बड़ी वेदियाँ और बड़े एल्बमों की बीक्रियाँ और बड़े गीत – हाँ, ये श्रेष्ठ हैं, परन्तु धारा के विपरित जीये गए जीवन की सामर्थ्य से बढ़कर उत्तेजनापूर्ण नहीं है।

एक अन्तिम विन्दु। इन सब में संगीत कैसे कार्य करता है? सारे रचनात्मक कार्यों को छोड़कर एक कार्डबोर्ड़ बॉक्स में जीने की परीक्षा बहुत शक्तिशाली है। यह ऐसा महसूस होता है मानो यह अन्ततः अपने जीवन में कुछ ''वास्तविक'' करने का तरीका हो। परन्तु यह कभी भी संपूर्ण कहानी नहीं है। एक मनुष्य का स्वस्थ रहना उसके संपूर्ण – देह, आत्मा, और प्राण से जूड़ी हुई बात है। मैंने संगीत की सामर्थ्य आँखों में देखी है, और मैं इस बात से कायल हूँ, कि यह परमेश्वर का गुप्त हथियार है। जहाँ युद्ध है, वहाँ संगीत एकता ला सकता है, यह टूटेपन के दर्द को कम कर सकता है। यह कठोरत्तम हृदय को तोड़ सकता है–और टूटे हुये हृदयों को शान्त करता है, रूवाण्डन नरसंहार के प्रभावितों से लेकर न्यू वॉर्क के निवासियों तक जिन्होंने ट्वीन टावर ने अपने परिवार को खो दिया। साथ ही साथ उनके लिये भी जिनकी घृणा ने बहुत अधिक दुःख को उत्पन्न किया।

परमेश्वर को समस्या में ले आईये – यह नहीं कि आप कभ वास्तव में उसे बाहर कर सकते हैं, परन्तु आप जानते हैं कि मेरा तात्पर्य क्या है, हाँ? – और आप भारतीय साँस के नीचे एक भीड़ को ''ईश्वर'' के गीत गाते हुए स्वर्गदूतों के साथ सर्वशक्तिमान की आराधना करते हुए पाते हैं। अपनी आँखों को खोलिए और चंगाई को आते हुए देखिए। हो सकात है, यह तुरन्त ही जरूरतमन्द बच्चों के मुँह में खाना नहीं डालता हो। परन्तु यह ऐसे क्षण है, जब स्वर्ग पृथ्वी को छूता है और उस क्षण में पुनःस्थापन होता है। यह तब है जब हम किसी के होने का एहसास करते हैं, हम महसूस करते हैं कि हम अकेले नहीं हैं। बहुमूल्य रूप से हम यह महसूस करते हैं कि परमेश्वर ने हमें अकेला नहीं कर दिया है।

संगीत यह कर सकता है और परमेश्वर इसे अकेले एक तरफ डाल देने के लिये और एक कार्डबोर्ड़ बॉक्स में जीने के लिये हमें नहीं बुलाता है। वह

हमें अपनी संगीत इस्तेमाल करने के लिये बुला रहा है, जो एक उपहार है, जिसे उसने भयंकर परिस्थितियों में रहनेवाले गरीबों की सहायता करने के लिये हममें रखा है। यदि हम उन सबकों को यशायाह के शब्दों में बहुत स्पष्ट रीति से सिखाए सबक को ग्रहण करते हैं, मुझे निश्चय है कि आनेवाले दिनों मे हम एक गीत के बोल से भी पहले बड़े आश्चर्यकर्म देखेंगे।

यह एक संगीत और प्रेम क्रान्ति है। स्टीवन कॉर्टीस चैपमैन एक गीतकार और आराधना का अगुवा और एक ऐसा मनुष्य जो अपनी हर एक साँस के साथ प्रेरणा देता है, और दीनता, और अनुग्रह के साथ अगुवाई करता है, ने एक बार इन बातों को बड़े दृष्टिकोण के साथ मेरे सामने रखा। वह लाखों एल्बमों को बेच सकते थे, और लाखों लोगों की शुभकामना पा सकते थे। परन्तु उनसे पूछें कि वे सबसे अधिक किस बात में गर्वित महसूस करते हैं या दीन होते हैं, और वे आपसे कहेंगे यह बात है। वह रीति जिसके लिये उनके परिवार ने अपने आपको दे दिया है कि उन बच्चों को गोद लिया जाए जिन्हें एक घर की जरूरत है। यह एक स्पष्ट चिन्ह है कि परमेश्वर मेरे जीवन में कार्य कर रहा है, वह कहते हैं।

जब हम अपने से परे देखते हैं, जब हमारा प्रेम हमारे सुविधाओं से परे ढ़केलता है, जब हम अपने धन को जीवनों के पुनर्निर्माण में लगाते हैं, हम स्वयं को उन पद चिन्हों के बीच में जीते हुये पाते हैं जो हमारे जीवन में परमेश्वर के काम करने का है।

इसलिये यह एक ऐसी क्रान्ति है, जिसका प्रसारण नहीं किया जाएगा। यदि हम इस सही रीति से करते हैं, तो उसे प्रसारित करने की आवश्यकता नहीं होगी। कार्य में प्रेम का प्रमाण, हमारे जीवन के ऊपर चमकेगा, हमारे पड़ोस को बदलते हुये और माहौल में आशा का संचार करते हुये चमकेगा। यह बहुत ही सामान्य सी बात है।

अध्याय

8

प्रेम मिलनसार है, एकान्तिक नहीं

यदि आप लोगों का न्याय करते हैं,
तो उनसे प्रेम करने के लिये आपके पास समय नहीं होगा।
मदर टेरेसा

जेमी ने, एलिनॉईस के बन्दरगाह के 23 वीं गली में स्पृसएवन्यू के कोने में स्थित चर्च में प्रवेश किया। वह सहायता की अति आकांक्षी थी। उसने बहुत समय से कलीसिया भवन को देखा था, और उन लोगों पर ध्यान दिया था जो हफ्ते में दो या तीन बार अन्दर जाते और बाहर आते थे। जेमी अकसर सड़क के उस पार के कॉफी के दुकान में बैठी रहती थी, जो थी और कॉफी पीती रहती थी। और आश्चर्य करती थी कि यदि वह सभी उस पर स्थित कलीसिया में उपस्थित होने का साहस कर सकी तो उसे किस प्रकार स्वीकार किया जाएगा।

जेमी ने एक बालिका के रूप में अपने एक पड़ोसी के साथ सन्डेस्कूल में भाग लिया था, परन्तु निश्चित रूप से वह कलीसिया में उपस्थित होने की रीति और ढंग के बारे में बहुत कम जानती थी। वह नहीं जानती थी कि वह कलीसिया में सामन्जस्य बिठा पाएगी या स्वीकार की जाएगी। अतः वह कॉफी पीती और देखती रही। उसने देखने का प्रयास किया कि कलीसिया के लोग

अन्दर जाते समय की तुलना में बाहर आते समय अधिक प्रसन्न हैं या नहीं। परन्तु वे इतनी जल्दी चले जाते थे, वह सचमुच में उनके चेहरों को स्पष्ट नहीं देख पाती थी। कुछ एक अवसरों पर कुछ लोग कलीसियाई सभा के पश्चात् कॉफी के दुकान में आते थे। और उनमें से कुछ अकेले बैठते थे और ईमानदारी पूवर्क कहें तो वे भी उसी के समान एकाकी लगते थे। कुछ अन्य लोगों के साथ आते, और हँसते थे और खुश दिखते थे। इस बात ने उसे उम्मीद बन्धाई कि एक दिन वह भी सभा में उपस्थित होने का साहस दिखा पाएगी।

जेमी एक ऐसे घर में बड़ी हुई जहाँ पर उसे बहुत कम प्यार मिलता था। उसके माता–पिता दोनों पियक्कड़ थे और यद्यपि उन्होंने उससे प्रगट रूप से दुर्व्यवहार नहीं किया, परन्तु उन्होंने उसके अपने शारीरिक दशा पर टिप्पणी करने, उसकी आलोचना करने में जल्दी दिखाने, और हर बात में गलती ढूँढ़ने के द्वारा बहुत बड़ी चोट पहुँचाई थी। वे अक्सर उसकी तुलना उसके भाई से करते, जो हर प्रकार से उसकी तुलना में अधिक योग्य और अधिक स्मार्ट दिखता था। वह हमेशा महसूस करती थी कि उससे प्यार नहीं किया जाता, क्योंकि वह गन्दी और मूर्ख है, और उसकी कोई कीमत ही नहीं है।

तेरह वर्ष की उम्र तक पहुँचते पहुँचते वह गलत लोगों की संगती में पड़ चुकी थी, और पीने और नशा लेने लगी थी। उसका भावनात्मक दर्द इतना गहरा था कि उसने उसे अन्य प्रकार के गलत आदतों से ढाँकना चाहा। उसने बुलेमिया नामक एक खाने की विकृति को भी विकसित किया। वह साधारण मात्रा में भोजन लेती, वो भी अलग अलग अवसरों पर, परन्तु खाने के बाद स्वयं को उल्टी करने के लिये मजबूर कर देती ताकि वह मोटी न हो जाए। वह अपनी बारहवाँ जन्मिदिन का वह दिन कभी नहीं भूलती जब उसकी माँ ने उसकी ओर हिकायत भरे नजर से देखकर कहा था, "मेरे पास तुम्हारे जन्मिदिन पर केक बनाने का समय नहीं है, परन्तु तुम्हें तो उसकी जरूरत भी नहीं है। क्योंकि तुम पहले से हीं बहुत मोटी हो।" कुछ दिन तक उसने कभी नहीं सोचा था कि वह मोटी है। परन्तु उस दिन से प्रति दिन वह स्वयं को आईने में देखती, और अपने से तीस किलो अधिक वजनी एक लड़की को पाती। उसकी माता के लगातार प्रेमरहित बातों से स्वयं के प्रति उसकी धारणा तुच्छ और विकृत होती रही।

स्कूल में जेमी के श्रेणी उतनी अच्छी नहीं थी और वह महसूस नहीं करती थी कि कॉलेज जाने के लायक है। इसलिय जब वह हाई स्कूल से पास हुई,

अतः उसने स्कूल छोड़ने पर किराना दुकान के सामान पैक करने के एक छोटी सी नौकरी कर ली। वह कभी भी इतना अधिक धन कमा पाती थी कि घर से दूर स्वयं अपने पाँव पे खड़ी हो सके। परन्तु अपने कपड़े अन्य जरूरी वस्तुएँ, और कुछ नशीले चीजें खरीदने के योग्य थी, जब वास्तव में उसकी जरूरत होती। शेष अधिकांश समय वह घर में रहने से परहेज करती और कॉफी की दुकान में जा बैठती, या अड़ोस–पड़ोस में घूमती रहती, और सोचती कि आस–पास में रहनेवाले अन्य परिवार कैसे होंगे। इसके कोई वास्तविक मित्र नहीं थे, कम से कम ऐसे लोग तो नहीं जिन वह भरोसा कर सकती थी या जिन्हें वह गिन सकती थी। उसके जीवन में जितने लोग थे वे उपयोग करनेवाले थे, वे देनेवाले नहीं। और उनमें से अधिकतर से भयभीत रहती थी।

एक दिन उसने कलीसिया भवन के अन्दर जाने का साहस दिखाया, जब लोग भीड़ के रूप में अन्दर जा रहे थे। वह भीड़ में शामिल हुई, इस उम्मीद के साथ कि उस पर कोई ध्यान न दे। परन्तु आंशिक रूप से उसकी इच्छा थी कि कोई उसका स्वागत करे और कहे, "हम बहुत खुश हैं, कि आज आप यहाँ आई।" उसने ध्यान दिया कि कुछ लोग उसे घूर रहे हैं और उनमें से कुछ फुसफुसा रहे हैं; परन्तु कोई भी मित्रवत नहीं दिख रहा था। जेमी लोगों की अभिरूचि से भिन्न प्रकार की वस्त्रधारण की हुई थी, और उसके बाल लगभग तीन विभिन्न रंगों के थे। मूल रूप से वह काले थे, परन्तु उसमें लाल और भूरी धारियाँ भी थीं। उसने ढीला ढाला जीन्स और शर्ट पहिना हुआ था। ऐसा उसने अपने सुविधा के लिये नहीं किया था, परन्तु वह अपने आपको छुपाने का प्रयास कर रही थी। क्योंकि वह सोचती थी कि वह अधिक मोटी हो गई है। उसने ढीले ढाले अजीब से कपड़े पहिने हुई थी, जो कोई भी कलीसिया में पहिनकर नहीं आता था – कम से कम उस कलीसिया में तो नहीं।

जेमी अन्तिम पंक्ति में बैठ गई और उसे मूल रूप से कुछ भी नहीं समझ में आया जो वहाँ चल रहा था। लोग खड़े रहे और एक पुस्तक से पढते रहे जो बहुत सफाई पूर्वक प्रत्येक बेंच के सामने के हिस्से में उनके सामने रखा हुआ था। तब वह पुनः बैठ गया। फिर कुछ गीत गाए गये, ऑरगन बजाए गए, और प्रार्थनायें की गई। और एक धन इकट्ठा करने का प्लेट घुमाया गया और लोगों ने उसमें पैसा डाला। एक व्यक्ति जो थोड़ा नाखुश और थोड़ा सा क्रोधित भी दिखाई दे रहा था, बीस मिनट का एक सन्देश दिया, जो सचमुच में उसे समझ में नहीं आया। उसने सोंचा कि वही पास्टर होगा, परन्तु निश्चित नहीं थी। अन्ततः सभा समाप्त होती हुई उसे दिख पड़ी। क्योंकि वे सब पुनः उठ गये और एक गीत और गाये।

उसने सोंचा कि शायद कोई उससे बाहर निकलते हुए कहेगा। निश्चित ही कोई कुछ कहता! पास्टर दरवाजे के पास खड़े होकर भवन से बाहर निकलनेवाले लोगों से हाथ मिला रहे थे और जब जेमी उन तक पहुँची कि न वे मुस्कुराये न ही उससे हाथ मिलाये। वह कह सकती थी कि न वह अपना कर्तव्य निभा रहे थे और इसे ठीक पूरा होने का इन्तजार करने को भी तैयार न था।

जब वह सीढ़ियों से नीचे उतर रही थी, उसने देखा कि एक महिला सीढ़ियों के नीचे उसके लिये इन्तजार कर रही थी। उसे यह सोचकर थोड़ी सी उत्तेजना हुई कि किसी ने अन्ततः उस पर ध्यान दिया। उस महिला ने उस पर ध्यान दिया था। परन्तु उसने देखा कि जो कुछ उसने सोचा था वह जेमी के विषय में गलत दिख रहा था, अतः उसने कहा, "मेरा नाम मारगेरेट ब्राउन है। तुम्हारा नाम क्या है?" जेमी ने अपना नाम बताया और मारगेरेट ने कहना जारी रखा, "तुम्हारा यहाँ हमेशा स्वागत है, परन्तु मैं ने सोचा कि यहाँ उस पवित्रता की तम्बू नामक कलीसिया में आते समय वस्त्र धारण के विषय में मुझे तुम्हे बताना चाहिये। जीन्स नहीं, ढ़ीला ढ़ाला वाला नहीं, और तुम्हें एक ऐसा बालों का स्टाईल बनाना है जो लोगों का ध्यान कम आकर्षित करे। तुम जानते हों, स्वीटी, कि यीशु हमें नम्र बनने और स्वयं की ओर आकर्षित न करने के लिये कहता है।" उसने जेमी की ओर देखा और कहा, "तुम्हारा किसी भी समय स्वागत है।"

उस दिन जेमी कॉफी दुकान पर न जा सकी; उसे कहीं और जाकर अकेले में बैठकर रोना था। उसने महसूस किया कि परमेश्वर ने ही अब उसका तिरस्कार कर दिया है, और दिन का बाकि समय वह आत्म हत्या के विषय में सोंचती रही। वह गड़हे के निचले हिस्से में थे और महसूस किया कि उसके साथ जीने के और कोई कारण नहीं बचे।

इन नामों की कल्पना की गई है। परन्तु संसार ऐसे जेमी और पवित्रता की तम्बू नामक और श्रीमती ब्राउन जैसी धार्मिक महिलाओं से भरी हुई है। यह ऐसे मसीहियत से भरी हुई है जो प्रति सप्ताह कलीसिया के अन्दर और बाहर जाते रहते हैं। उनमें से बहुत से शीघ्र जाना चाहते हैं और सभा की समाप्ति तक इन्तजार भी नहीं कर सकते। वे आलोचनात्मक, न्याय करनेवाले और दूसरों को सम्मिलित न करनेवाले हैं।

परमेश्वर सबसे तुल्य रूप से प्रेम रखता है

जिस दिन जेमी गई उस दिन शायद यीशु उस पवित्रता की तम्बू नामक कलीसिया में नहीं था क्योंकि वह भी वहाँ पर सुविधाजनक महसूस नहीं करता। परन्तु यदि वह वहाँ होता, तो वह ऐसे जेमीयों का इन्तजार करता जो वहाँ आते। वह या तो उसके बगल के सीट में जाकर बैठता या उसे लेकर सामने की ओर जाता कि उसके बगल में बैठे और वह उससे पूछता, कि क्या वह यहाँ पर देखने आई है। जब वह यह जान जाता कि वह पहली बार आई है, तो वह अपने आपको प्रस्तुत करता, कि जो कुछ वह नहीं समझती है, उसे समझाए। जब भी वह उसकी तरफ देखती वह उसे देखकर मुस्कुराता और वह उसके बाल बनाने की रीति पर अच्छी टिप्पणी करता, क्योंकि वह विभिन्नता चाहता है! वह उसे समूह के साथ कॉफी पीने के लिये सड़क के उस पार आने का निमन्त्रण देता, जिनके साथ वह अक्सर जाया करता था। जब जेमी वहां से विदा लेती तो अगले सप्ताह इन्तजार के साथ जाती, कि वह वापस कलीसिया आए। परन्तु, चूंकि यीशु वहाँ उस दिन नहीं था, इसलिये कोई भी वैसा कार्य नहीं किया जैसा वह करता। किसी ने भी उसका उचित प्रतिनिधित्व नहीं किया; और कोई भी परमेश्वर का अनुकरण नहीं कर रहा था।

कोई व्यक्तिाओं का आदर करनेवाला नहीं

बहुत सारे स्थलों पर बाइबल कहती है कि परमेश्वर व्यक्तिओं का आदर करनेवाला नहीं है (प्रेरितों 10:34, रोमियों 2:11, इफिसियों 6:9 देखिए)। दूसरे शब्दों में, वह कुछ लोगों को दूसरों की तुलना में अच्छा व्यवहार नहीं करता है क्योंकि कि वे कैसा वस्त्र धारण करते हैं, उनके आय का स्तर क्या है, या वे किस पदवी पर हैं, या वे किसे जानते हैं। वह न केवल सब से तुल्य व्यवहार रखता है, परन्तु ऐसा लगता है कि वह उन लोगों के साथ व्यवहार करने के लिये अपना तरीका अपनाता है जो विशेष करके अच्छी रीति से चोट पहुँचाते हैं। परमेश्वर ने मूसा को इस्त्राएलियों को देने के लिये बहुत सारे निर्देश दिए कि अपने मध्य रहनेवाले अजनबियों के साथ कैसे व्यवहार करना है और उसका प्राथमिक निर्देश हमेशा मूल रूप से यही था, "उन्हें आरामदायक महसूस करने दो और उनके साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार रखो। उन्हें किसी प्रकार से मत सताओ" (निर्गमन 22:21; 23:9; लैव्यव्यवस्था 19:33 देखिए)। प्रेरित पतरस ने यह कहाः

एक दूसरे का (विश्वासी घरानों के लोगों का) आथित्य सत्कार का अभ्यास करो (आथित्य सत्कार करने वाले बनो, अजनबियों, परदेसियों गरीबों, और वे सभी जो आपके मार्ग में आते हैं जो मसीह की देह के हैं के साथ भाईचारे के प्रेम के साथ अजनबियों के प्रेमी बनो, बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का अतिथि सत्कार करो।) और इसे बिना वैमनस्य के (स्नेहपूर्वक और अनुग्रहपूर्वक) बिना शिकायत के किया करो।

1 पतरस 4:9

इस भाग को पढ़ने में जल्दी करने से पहले आप इस बात पर नजर दोहराइए कि आप ऐसे लोगों के साथ कितने मित्रवत हैं, जिन्हें आप नहीं जानते हैं और विशेष करके वे लोग जो आप से भिन्न हैं। कुछ लोग बहुत अधिक मित्रवत और स्वभाव की खुले होते हैं, परन्तु हममें से वे लोग जो "मित्रवत" नहीं दिखते हैं ऐसा करने की जरूरत है क्योंकि बाइबल ऐसा करने के लिये कहती है।

प्रेरित याकूब ने कलीसिया को सचेत किया कि उन लोगों पर ज्यादा ध्यान न दें जो अच्छे वस्त्र पहिनकर आराधनालयों में आते हैं या उन्हें द्रमूक स्थानों पर बैठायें जब वे आते हैं। उसने कहा कि यदि लोग ऐसे तरीके से कार्य करते हैं, और विशेष व्यवहार चाहते हैं तो वे भेदभाव करते हैं और उनके उद्देश्य गलत हैं। उसने कहा कि हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के विश्वास का अभ्यास हमें दम्भ के साथ करने का प्रयास भी नहीं करना है (याकूब 2:1–4 देखिए)। दूसरे शब्दो में, हमें हर व्यक्ति को आदरयोग्य समझकर व्यवहार करना है।

लोगों के बीच में भेदभाव बरतने पर रोग लगाते हुये यीशु ने कहा, कि हम सब उसमें एक हैं (गलातियों 3:28 देखिए)। हमें केवल मूल्यवान लोगों को देखने की जरूरत है न कि काले, लाल, या गोरे लोगों को, न कि कपड़ों के स्तर को, बालों की स्टाईल को, न कि कारों को, जिन्हें वे चलाते हैं, उनकी नौकरियाँ, या उनके पद–केवल लोग जिनके लिये यीशु प्राण त्याग दिया।

कॉफी की दुकान से एक सबक

मैं विश्वास करती हूँ कि हम सबको अपने चारों ओर की रेखा पर विचार करना और उसे विस्तृत करना चाहिये। हमें उन्हें इतना विशाल करने की

जरूरत हैं कि हर प्रकार के लोगों का समावेश किया जा सके। हाल ही मैं पॉल स्कैनलॉन के साथ थी, जो बिरमिन्गहाम, इंगलैण्ड में पास्टर हैं और हम बहुत से लोगों के साथ कॉफी की दुकान में कॉफी पी रहे थे। मैं स्मरण करती हूँ उस लड़की के बालों का स्टाईल जो हमारा इन्तजार कर रही थी और ईमानदारी पूर्वक कहती हूँ, कि यह मेरे लिये अजनबी सी थी जिसें मैं ने देखा था। उसके सिर के बीच के हिस्से को छोड़कर बाकि पूरा हिस्सा नीचे तक मूड़ा हुआ था और यह काले, नीले, लाल, और सफेद रंगों में था। उसने अपनी नाक, जीभ, होंठ, और कान के विभिन्न हिस्से छिदवा रखे थे। मुझे थोड़ा असुविधाजनक महसूस होना स्मरण आता है, क्योंकि वह मेरे समान नहीं थी। हम इतने अधिक भिन्न थे कि मैं उससे कुछ कहने के विषय में भी सोच न सकी जो उससे संबन्धित हो। मैं अपना कॉफी का आर्डर देना चाहती थी और कि उसे न भूलने का प्रयास करूँ।

दूसरी तरफ, पॉल, ने उस लड़की के साथ बातचीत प्रारंभ किया और पहली बात जो उसने कहा वह थी, "मैं तुम्हारे बालों को पसन्द करता हूँ। तुम इसे इस प्रकार से कैसे खड़ा रखती हो?" उसने उसके साथ बात करना जारी रखा और वहाँ तनावग्रस्त माहौल मुक्त हो गया। जल्द ही हम सब आराम में आ गये और मैं महसूस कर सकी कि हम सब उनकी बातचीत में शामिल होना प्रारंभ किए और उसे अपने घेरे में ले लिये। मैंने उस दिन एक बड़ा सबक सिखा – कि मैं उतना "आधुनिक" नहीं हूँ जितना मैं अपने विषय में विचार करती हूँ। मुझ में अभी भी कुछ धार्मिक विचार शेष हैं, जिनके साथ व्यवहार किये जाने की जरूरत है और मुझे उन लोगों को भी जो थोड़ा भिन्न हों सुविधाजनक और समावेशित महसूस कराने के नए स्तर तक पहुँचने की जरूरत है।

सम्भवतः कॉफी दुकान की उस लड़की के लिये, मैं एक असाधारण और भिन्न व्यक्ति थी। हम क्यों स्वयं को ग्रहणयोग्य वस्तुओं के मानक प्रेस करते हैं और उम्मीद करते हैं कि हर व्यक्ति जो भिन्न हैं, उसके साथ एक समस्या होगी? सही बालों का तरीका क्या है या वस्त्र धारण का तरीका क्या है? एक दिन मैं ने सोचना प्रारंभ किया कि मूसा किस प्रकार से दिखता था जब वह सीनै पर्वत से वापस आया जहाँ उसने चालीस दिन और रात दस आज्ञाएँ परमेश्वर से प्राप्त करते हुये व्यतीत किये थे। मैं शर्त लगाती हूँ, कि उसके बाल बूरी तरह उलझ गए होंगे; उसकी दाढ़ियों को बहुत जल्दी काटे जाने की जरूरत थी; और उसके कपड़े और उसके चप्पल गन्दे हो गए थे।

मैं जानती हूँ कि यूहन्ना बपतिस्मादाता बहुत अजीब से थे। वह मरूभेमि में अकेले रहते और जानवरों के चमड़े पहिनते थे और मधु और टिड्डियाँ खाते थे। जब वह बाहर आए तो मैंने जोर से कहा, "तुम पापी लोग पश्चाताप करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है!"

परमेश्वर का वचन सीखाता है कि हमें सावधान होना चाहिये कि हम किस प्रकार से अजनबियों से व्यवहार करते हैं, क्योंकि सम्भव है कि हम बिना जाने स्वर्गदूतों की सेवा कर रहे हों (इब्रानियों 13:2)। यह कहता है कि हमें दयालु, सहयोगात्मक, मित्रतापूर्ण, और उनके प्रति अनुग्रहपूर्ण होना चाहिये और अपने घरों की सुविधाओं को उनके साथ बाँटना चाहिये। समाज में बहुत से लोग आज अजनबियों से बातें भी नही करते हैं, मित्रता की बात ही तो दूर है।

मैं जानती हूँ, मैं जानती हूँ आप शायद कह रहे हैं, "जॉयस्, हम एक भिन्न दुनियाँ में आज रह रहे हैं! आप कभी नहीं जानते कि आप किस से बातें कर रहे हैं!" मैं जानती हूँ कि आपको बुद्धि का इस्तेमाल करना है, परन्तु भय आपको अमैत्रीपूर्ण और ठण्डा न बनाने पाए। निश्चय ही आप कलीसिया में, कार्य स्थल पर, स्कूल में, या पड़ोस में नए व्यक्ति देख सकते हैं और हैलो कह सकते हैं!

निश्चय ही आप एक वृद्ध महिला से बातें कर सकते हैं जो पंक्ति में डॉक्टर क्लीनिक में बैठी हुई है, जबकि आप अपने मिलने के समय का इन्तजार कर रहे हैं। वह बहुत अकेली लगती है; क्यों नहीं उसे अपने अविभाजित ध्यान का दस मिनट देते हैं और उसे अपने विषय में सब कुछ आपको बताने दें। शायद आप उसे फिर कभी नहीं देखेंगे, परन्तु वह आपको स्मरण रखेगी। परमेश्वर आपकी प्रशंसा इस काम के लिये करेगा जो आप ने उनके लिये किया। हाँ, यह एक छोटी बात थी, परन्तु आप ने उन्हें शामिल किया!

इस अध्याय के बाद आप एक मेहमान अध्याय पॉल स्कैनलॉन की ओर से पढ़ेंगे, जो अपनी अनुभव की कहानी बतायेंगे जिसमें वह अपनी कलीसिया को एक मृतक धार्मिक कलीसिया से एक ऐसी कलीसिया बनाने का प्रयास करते हैं जिसमें जागृति है और प्रेम से भरी हुई है। उनकी कहानी हमें बहुत कुछ सीखा सकती है और हमें कुछ कठिनवाले प्रश्न स्वयं से पूछने के लिये उक्सा सकती है। यदि आपकी कलीसिया में सच्ची जागृति आती है तो क्या आप सच में उत्तेजित होंगे या आप चले जाएँगे क्योंकि बहुत से जेमी जैसे होंगे

या उससे बुरे होंगे। वे अस्थायी निवासों से आए होंगे, और अच्छी खुशबू नहीं देते होंगे या उनके शराब के बदबू आ सकती है या अन्य बुरी बातों की खुशबू। जब संसार में जख्म देनेवाले लोग हमेशा अच्छी प्रस्तुतिकरण नहीं करते हैं, न ही अच्छी सुगन्ध देते हैं। कभी कभी वे करते हैं, परन्तु हमेशा नहीं, और हमें ढाँपने के द्वारा नए करने रोकना चाहिये और पुस्तक पढ़ने के इच्छुक हों। परे देखने के इच्छुक हों कि लोग जैसे प्रस्तुत होते हैं, और खोजते हैं कि वे किस प्रकार के हैं।

अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर कदम रखिए

किसी को आरामदायक महसूस कराने के लिये अपने आरामदायक क्षेत्र से बाहर निकलना लोगों के प्रति परमेश्वर का प्रेम दिखाने का एक तरीका है। बहुत से मसीही जागृति के लिये प्रार्थना करना पसन्द करते हैं; प्रार्थना के दौरान वे "संसार में खोई हुई आत्माओं के लिये रोते भी हैं" परन्तु ईमानदार होने, उनमें से कुछ एक लोग सचमुच में यदि उनकी कलीसिया में जागृति आए तो उसे छोड़ देंगे क्योंकि यह उनकी सामान्य जीवनचर्या को बिगाड़ देगा और वे इसे पसन्द नहीं करते।

किसी को आरामदायक महसूस कराने के लिये अपने आरामदायक क्षेत्र से बाहर निकलना लोगों के प्रति परमेश्वर का प्रेम दिखाने का एक तरीका है।

हाल ही में मैंने एक कलीसिया में प्रचार किया जहाँ पर पड़ोस के नर्सींग होम से बहुत सारे व्हील चेयर वाले मरीज सामने की पंक्तियों में बैठे थे। वक्ता होने के नाते, मुझे सामने की पंक्ति में बिठाया गया, परन्तु व्हील चेयर को अग्रीम पंक्ति के आगे पंक्तिबद्ध किया गया था। व्यक्ति जो ठीक मेरे सामने बैठा हुआ था मुझे बहुत बदबूदार लगा, और जब बदबू की बात आती है तो मेरा पेट बहुत कमजोर होता है (जब हमारे बच्चे छोटे थे, तो डेव जब भी घर पर होते थे तो बच्चों के बदबूदार डैफरस् बदलने के लिये मैं उन्हें कहती थी)।

वहाँ पर बैठी हुई, मैंने परमेश्वर के सम्मेदनशीलता को पहचाना; उसने मुझे वहीं बैठाया था जहाँ वह मुझे देखना चाहता था..... मैं सम्मिलित करने और

प्रेम के विषय में कलीसिया को प्रचार करने के लिये उठने के लिये तैयार थी! बोलने के इन्तजार करते हुये मुझे बहुत अधिक प्रार्थना करनी थी, और मुझे बहुत अधिक आत्मिक दिखना था, क्योंकि मैंने अपने नाक को यथा सम्भव ऊपर की ओर करके पकड़ा। अतः मुझे देखने से ऐसा लगता था कि मैं स्वर्ग की देख रही हूँ। मैं जानती थी कि परमेश्वर ने मुझे वहाँ बैठने के लिये प्रबन्ध किया था और वास्तव में मुझे वहाँ होने की *जरूरत* थी। यह अनुभव करना मेरे लिये बहुत अच्छा था, जो मैं अब लोगों को बताने के लिये तैयार हो रही थी, उसे करने के लिये स्वयं भी इच्छुक हों। यह जरूरी नहीं है कि हम जहाँ कहीं जाएँ हम सुविधाजनक हों! संभवतः शायद उस व्यक्ति के पास कोई नहीं था जो उसे लगातार नहलाये और जिस प्रकार से उसमें से गन्ध आती थी उसके के लिये वह कुछ नहीं कर सकते थे। किसी प्रकार से, यह ऐसे व्यक्ति के लिये एक सेवकाई है जो सेवकाई को ढूँढ रहा हो। आगे नर्सिन्ग होम में जाइये और स्वेच्छा से मरीजों की धुलाई करने में सहायता कीजिए।

जेमी पुनः कोशिश करती है

जब हम इस अध्याय को समाप्त करते हैं, मुझे आपके साथ जेमी की कहानी बताने दीजिये। कलीसिया में उसके दुःखद अनुभव के पश्चात्, उसने शपथ ली कि वह कभी ऐसा नहीं करेगी (कलीसिया में जाना)। वह सोमवार को काम पर गई, निश्चित ही निराशा के साथ, जब उसके सहकर्मियों में से एक ने ध्यान दिया, और उससे पूछा कि क्या बात है। सामान्यतः जेमी हर बात को अपने तक सीमित रखती थी, परन्तु वह इतनी अधिक दुःखी थी कि वह रोने लगी। उसकी सहयोगिनी सामन्ता, कि क्या वे जल्दी छुट्टी ले सकते हैं और वह जेमी को बाहर ले गई ताकि उसे अच्छा महसूस कराए। जब जेमी ने अपने हृदय को समस्या के सामने उण्डेल दिया और कलीसिया में जाने उसके बूरे अनुभव को भी बताया। सामन्ता ने उसे अपने घर में रात के खाने पर आमन्त्रित किया ताकि वे आगे बातचीत कर सकें। वह शाम जेमी के लिये जीवन परिवर्तन करनेवाला बन गया।

सामन्ता एक सच्ची मसीही थी – मेरा तात्पर्य है ऐसी मसीही जो सचमुच में देखभाल करती और सहायता करना चाहती है। उसने जेमी से सप्ताह में दो बार मिलना प्रारम्भ किया और न केवल उसकी देखभाल करना प्रारंभ किया, परन्तु क्रमशः उसे यीशु के बारे में और वह उससे कितना प्रेम करता है, सीखाना प्रारंभ किया। तीन माह पश्चात्, सामन्ता ने उसे पूछा कि क्या वह

फिर से कलीसिया जाने का और उसके साथ इतवार को उपस्थित होने का प्रयास कर सकती है। जैमी बहुत अधिक उत्साहित नहीं थी, परन्तु उसे सामन्ता के साथ ऐसा करना चाहिये क्योंकि उसने उसके साथ बहुत सारा समय व्यतीत किया है।

रिज़रेक्शन चर्च में जैमी का जाना पहले की कलीसिया में प्राप्त अनुभव से सर्वथा भिन्न था। गर्मजोशी के साथ उसका स्वागत किया गया और उसे विशेष रूप से सामने की पंक्ति में बैठने दिया गया क्योंकि वह एक मेहमान थी। सभा की सारी बातें ऐसी लग रही थी मानो उसके लिये ही थी। सब कुछ उसने समझा क्योंकि सब कुछ उसके वास्तविक जीवन से सम्बन्धित था। जो गीत वे गाये वे अर्थवत् थे, और प्रत्येक गीत उसे सुकून देनेवाले थे। आराधना के पश्चात् इस बार उसे कॉफी पीने के लिये आनन्दित किया गया और बहुत से लोगों से उसकी मुलाकात करवाई गई जो वास्तव में उसके निकट मित्र बन गये। इस कलीसिया में, बहुत सारे सभी उम्र की और संस्कृति के लोग थे। कुछ सूट और टाई पहिनते थे, कुछ जीन्स और टी–शर्ट पहनते थे। वे सब अपने में स्वतन्त्र थे।

जेमी ने अपना जीवन यीशु को दिया और अब वह कलीसिया जाना नहीं छोड़ती। उसका विवाह हुआ, उसके दो बच्चे हैं, और उसका पूरा परिवार शहर के भीतरी भाग में सुसमाचार सेवा का भाग है, जो गलियों में रहनेवाले लोगों के बीच में सेवा करती है। जेमी यह करना पसंद करती हैं क्योंकि वह जानती है कि वह उनके बीच में आसानी से जा सकती है।

क्या यह विपदापूर्ण नहीं होता यदि जेमी अपना जीवन उस दिन जैसा उसने सोचा था, उस प्रकार समाप्त कर लिया होता जब उसने कलीसिया में बुरा अनुभव पाया था। मैं इससे घृणा करती हूँ, जब लोग यह सोचकर कलीसिया जाने का प्रयास करते हैं कि उन्होंने परमेश्वर के साथ प्रयास किया है और तब हार मान लेते हैं। क्योंकि जिस कलीसिया में वे गए वह कलीसिया परमेश्वर का उचित रीति से प्रतिनिधित्व नहीं करते। आईये अपने घेरे में सब तरह के लोगों को शामिल करें। कभी भी किसी को बाहर न करें, क्योंकि वे आपके समान नहीं हैं। हमारे पास ऐसे लोग हैं जिनको हम निकटतम मित्र सोचते हैं और यह गलत नहीं है यहाँ तक कि यीशु भी बारह चेलों में से तीन शिष्यों के साथ अधिक समय व्यतीत किया, जितना कि अन्य लोगों के साथ नहीं किया। परन्तु उसने कभी भी किसी को कम मूल्यवान समझने नहीं दिया।

प्रेम क्रान्तिकारी
पास्टर पॉल स्कैनलॉन

स्थानीय कलीसिया परमेश्वर के सबसे उत्तम विचार है! हम परमेश्वर के "आगे की ओर देनेवाला" समूदाय हैं, हम उसके छलकते हुये लोग हैं, उसकी अभिव्यक्ति है, उसकी मुस्कुराहट है, और शहर में उसका पता है। दुःखदायी है, कि बहुत सी कलीसियाएँ इसे नहीं समझती, और परिणाम स्वरूप लाखों लोग जो परमेश्वर के घर के पहुँच के भीतर हैं अपने घरों में दुःख में मरते हैं, कलीसिया की अप्रासंगिकता और छद्म धर्म के द्वारा कभी भी यीशु को नहीं पहचान पाते।

पार जाना

दस वर्ष पूर्व, एक भयावह दर्द के अनुभव से होकर हमारी कलीसिया गूजरी। हम इसे "पार होना" कहते हैं, और अब इसी शीर्षक से एक पुस्तक बन चुकी है जिसमें हमारी कहानी को विस्तार से बताया गया है। संयुक्त राज्य में, जहाँ हम स्थित हैं, कलीसिया का औसत आकार बीस लोग हैं, और 98 प्रतिशत लोग न केवल कलीसिया में उपस्थित नहीं होते हैं, परन्तु वे कलीसिया का विरोध करते हैं। अतः ब्रिटिश मापदण्ड के हिसाब से हम उस समय 450 लोगों से अधिक की सदस्यतावाली एक बड़ी कलीसिया थी, जो एक ऐसी भवन में स्थित थी जिसके लिये भूगतान किया जाता था। हम निकट थे, प्रसन्न थे, और समृद्ध थे। हम महान प्रचार का आनन्द उठाते थे और संगीत के हिसाब से और रचनात्मक रूप से वरदान प्राप्त कलीसिया थी। इन सब के बावजूद कुछ बड़ा हम खो रहे थे। कुछ गहरी सैद्धान्तिक बात अनुपस्थित थी, परन्तु ऐसा नहीं लगता था कि किसी का ध्यान इस पर है।

हम एक ऐसी चाल में फँस गए थे जो एक के बाद एक उच्च देखभाल कहा जा सकता है जैसे "अन्तहीन चक्र में फँस गए थे, और अभ्यस्त मसीहियों के अधिन हो गए थे।" उच्च जीविकावाले मसीही शैतान के अच्छे भेदों में से एक है जो वह कलीसिया को तटस्थ बनाये रखने के लिये वह करता है। ये उन श्रेष्ठ लोगों में से कुछ है जिनसे कभी आप मिले होंगे और इसी में समस्या है। इनमें से कोई भी अप्रसन्न या बूरे हृदयवाले या खराब स्वभाववाले थे।

पीछे मूड़कर देखते हुये मैं इस बात में प्राथमिकता देती कि यह हमारे पुनः खोज को आसानी से बेचने की जरूरत भी बन गई।

सारे संसार के पासवान इस बात का वर्णन करने से चूक जाते हैं कि वे अपनी कलीसिया में और सेवकाई में क्या खोते जा रहे हैं और वे ऐसा कहने से व्याकुल और नकारात्मक नहीं दिखना चाहते हैं, जैसा कि *"दि एम्परर न्यू क्लोथ"* नामक कहानी में लिखा है जो इस बात की ओर इशारा करता है कि सम्राट के चारों तरफ कौन सी बात सब के लिये प्रगट है। उसके ऊपर कोई कपड़ा नहीं है।

जब हर कोई बहुत प्रसन्न, प्रेमी, मित्रवत और आशीषित है तो कौन इस बात की घोषणा करना चाहता है कि हम मर रहे हैं। परन्तु 1998 के अन्त में मैं वह लड़का बन गया और बीस साल में पहली बार मुझे अपनी कलीसिया में इशारा करना और कहना पड़ा, "हम नंगे हैं, आराम से हैं, उत्तेजित, सुरक्षित और अप्रासंगिक हैं" और इसमें मैं भी शामिल था। यह देखना हमारे लिये आसान नहीं था, क्योंकि बहुत सी अन्य कलीसियाओं के समान हमारा एक धर्मसिद्धांत था और खोए हुओं तक पहुँचने की एक भाषा थी, परन्तु वास्तव में हम किसी तक नहीं पहुँच रहे थे। हम खोए हुओं के लिये प्रार्थना करते थे, प्रचार करते और खोए हुओं के विषय में गीत गाते थे, हम खोए हुओं के लिये रोते भी थे; परन्तु कोई भी खोया हुआ बचाया नहीं जाता। हम एक भीतर देखनेवाले धार्मिक क्लब बन गए थे और अपनी सुविधा में और आशीष दूसरों के लिये परमेश्वर की हृदय की दृष्टि को खो दिए थे जो अब भी खोए हुए और जख्मी थे।

जनवरी 1999 में मैंने एक सन्देश का प्रचार किया। "हम 99 को 99 में छोड़ रहे हैं।" जैसा शीर्षक था हम 99 को 99 में छोड़ रहे हैं जिसमें यीशु की ओर इशारा था, जिसने स्वयं को एक ऐसे चरवाहे के रूप में वर्णित किया जो खोए हुए एक के लिये बहुसंख्यक को छोड़ देता है। मैंने व्याख्या किया कि जो पहले से कलीसिया में हैं अब वे प्राथमिकता नहीं हो सकते, परन्तु अन्य लोग हमारी प्राथमिकता बनना चाहिये। यह तब था जब मैंने यह पाया कि एक तिरस्कृत मसीही से नरक को कोई उत्तेजना नहीं है। अच्छे और आत्मा से भरे हुये लोगों की प्रतिक्रिया देखकर मैं अचम्भित रह गया जो इस विचार को नहीं पचा सकते थे कि हमारी सुन्दर कलीसिया गन्दे पापियों से भरी हुई है।

अपने आरामदायक और अमीर सदस्योंवाले क्लब को पुनः एक जीवन रक्षक व्यवसाय बनाने के अपने जारी प्रयास के अन्तर्गत मैं ने 1999 में एक बस सेवकाई शुरू किया। इसे करने के लिये परमेश्वर ने मुझ से कैसे कहा, यह अपने आप में एक कहानी है, परन्तु यह कहना काफी है कि मुझे इस बात के लिये कायल करना असाधारण रूप से पर्याप्त था कि यह "ईश्वरीय विचार" है क्यों कि मेरी अन्तिम जरूरत एक अच्छा विचार था।

कुछ ही हफ्तों में हम उन गन्दे पापियों में से सैकड़ों लोगों को बस के द्वारा ला रहे थे, इन न पहुँचे अधिकांश कठोर रूखे और अभद्र और ऐसे लोगों ने जिनके विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता हमारे सुन्दर क्लब को बर्वाद कर दिया। हमारे आदरणीय सदस्यों के द्वारा उन्हें "बस लोग" कहा गया जो उन्हें अपनी सुरक्षा और स्थिरता के लिये खतरा मानते थे। हर दिन मैं ने असुखकर अक्सर अप्रिय और धमकी भरे चिट्ठियाँ और स्वयं उन लोगों से प्राप्त किये जिनसे मैं प्रेम करता था और मुझे निश्चय है कि वे भी मुझ से प्रेम करते थे, परन्तु जिन्होंने इस बात को नहीं समझा था। वे बच्चे जो बसों से आते थे उन पर हमारे सन्डे स्कूल को बर्वाद करने का आरोप लगाया गया और उनके माता–पिता पर मुख्य सभा को बर्वाद करने का आरोप लगाया गया। प्रायः धूम्रपान और गालीगोलच सबसे बुरा तो वर्षों में उनके सदस्यों के जगहों पर बैठने के द्वारा जहाँ पर वे अक्सर बैठा करते थे।

एक के बाद एक अगुवे लोग मुझे देखने आए और निवेदन और विनती करने लगे कि मैं रूक जाऊँ परन्तु बहुत देर हो चुकी थी। खोए हुओं के लिये परमेश्वर के हृदय ने मेरे हृदय को पा लिया था और मैं पूरी रीति से अतार्किक हो रहा था। दो वर्षों तक मैं ने बहुत बड़ा अकेलापन, अलगाव, और व्यक्तिगत हमले सहे जितना कभी भी नहीं सहा था। और सब से अधिक असहनीय बात यह थी कि ये सारे मित्रों की तरफ से आई आग थी। वे जो स्पष्ट रूप से यह भूल गए थे कि एक समय वे भी इसी प्रकार समुद्र में निमज्जित थे और कोई उन्हें देखने या ढूँढ़ने आया था।

जब ये सब मुझे रोकने में पराजित हो गई तब "भविष्यद्वाणियों की भीड़" पहुँची। ये हममें से ही तथाकथित भविष्यद्वक्ता जैसे थे। वे मुझे मिलने के लिये समय लेना प्रारंभ किये अक्सर समूह में आते और बताते कि परमेश्वर ने मुझे बताने के लिये उनसे क्या कहा है। उनके सन्देश यह होते, "यदि तुम यह ऐसा करना नहीं रोकते, हमारी कलीसिया टूट जाएगी, तुम और तुम्हारा परिवार कष्ट में पड़ जाओगे, अगुवे छोड़ देंगे, आर्थिक स्थिति डगमगा जाएगी,

और देश में हमारी गवाही खराब हो जाएगी।" परन्तु मेरे लिये केवल इस लिये कि इसकी किमत अधिक चुकानी पड़ेगी, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि परमेश्वर कह रहा था, "यह मत करो"। यदि उसकी ओर से कोई सन्देश आ रहा था तो वह था यदि मैं उसकी ओर से कुछ कर रहा हूँ, तो चुकानेवाले किमत के बारे में निश्चय था। मेरा उत्तर केवल यही हो सकता था कि मैं सहमत हूँ क्योंकि उनमें से अधिकांश बातें पहले से हो रही थी। बहुत सारे लोग जा रहे थे, और उनके दिए बिना हम हजारों से दशक डॉलर पर प्रति माह की दर पर आ गए थे। हम धीरे–धीरे पीछे उन लोगों की तरफ जो कलीसिया छोड़ रहे की ओर बढ़ रहे थे, परन्तु गरीब लोगों के साथ और उनके पास न केवल धन ही नहीं है परन्तु उन तक पहुँचना खर्चीला, उनकी देखभाल भी खर्चीली थी।

मेरे लिए स्थानीय कलीसिया को अपने समुदाय तक पहुँचाना आज भी सब से बड़ा युद्ध है जिसका सामना हम संसार भर की कलीसियाओं में करते हैं। और यदि यह सत्य है तो कलीसिया के लिये सबसे बड़ा झटका अभी आना शेष है। हो सकता है पासवान के रूप में हम हजारों को पाने के लिये सैकड़ों को खोने को तैयार हों, और लाखों को पाने को हजारों को खोने को तैयार हों।

मैं स्थानीय कलीसिया को पसन्द करता हूँ। इसी समान एक कलीसिया में मैं तीस वर्षों तक रहा हूँ, जिसमें से छब्बीस वर्षों से मैं पूर्णकालिक सेवकाई में था। परन्तु जितना अधिक मैं ने कलीसिया से प्रेम किया मैं ने मृदु मसीहियत के आरामदायक माहौल में मरने से इन्कार किया। मैंने पूर्ण होकर जीने और खाली होकर मरने के प्रति दृढ़ निर्णय लिया। यह मैं स्थानीय कलीसिया के चार दिवार ही के अन्दर नहीं कर सकता था और न ही आप कर सकते हैं।

यीशु के सेवकाई के आरंभिक दिनों में वह कफरनहूम नामक एक शहर में गया। लोगों ने उससे प्यार किया, लोग उसके शिक्षा और सामर्थ्य, और दुष्टात्माओं और बीमारियों के ऊपर उसकी सामर्थ्य से चकित थे। उन्होंने उससे इतना प्रेम किया कि जब वह शहर छोड़नेवाला था, लूका उनसे कहता है कि लोग उसके पास आए और उससे विनती करने लगे कि वह शहर न छोड़े (लूका 4:42 देखें)।

उसे रहने देने के आकर्षिक और सन्देहरहित प्रयास के प्रति उसकी प्रतिक्रिया उसके साधारणत्व के कारण आश्चर्यजनक, और उसे लेकर चलनेवाली

ताकतों के प्रति अन्तर्दृष्टि के कारण गम्भीर है। यीशु ने उन सभी आशीषित लोगों के आँखों में देखा और कहा, "मुझे अन्य नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है, क्योंकि मैं इसी लिये भेजा गया हूँ" (लूका 4:43)। अन्य सब के बारे में भी यही है।

यदि आप परमेश्वर को काटते हैं, वह दूसरों का खून बहाएँगा। परन्तु यदि हम कलीसिया को काटते हैं तो दुःखद है कि हम स्वयं का खून बहाते हैं। हम अपने आशीषों, सुविधाओं, और खुशियों का खून बहाते हैं। निश्चित ही इसके अपवाद भी हैं, परन्तु अपवाद विश्वास करने से परे हैं और हम अन्य लोगों की खातीर सन्तुलन बनाए रखते हैं। पीढ़ियों तक कलीसिया कफरनहूम के लोगों के समान यीशु को स्वयं के लिये बनाए रखते हैं और यीशु दूसरों तक पहुँचने के खातिर मुलायम और आरामदायक मसीहियत को छोड़ने का प्रयास करता रहता है। परमेश्वर के लिये यह क्या अहमियत रखता है यह मौलिक नासमझी इस घायल संसार को प्रभावित करने में कलीसिया के पराजय के केन्द्र में है।

हम आशीष बनने के लिये आशीषित होते हैं, हम दूसरों को खोजने और बचाने के लिये बचाए गए हैं, हम चंगा करने के लिये चंगा किए गए हैं, क्षमा करने के लिये क्षमा किए गए हैं और परमेश्वर के महान प्रेम क्रान्ति में शामिल होने के लिये प्रेम किए गए हैं। यह मेरे, आपके, हम सब के विषय में नहीं है, यह हमेशा दूसरों के विषय में रहा है।

प्रेरित पौलुस ने कहा कि जो आराम या सुविधा हमारे लिये परमेश्वर की ओर से मिलता है, वह केवल हमारे लिये नहीं है, "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है। वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है; ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें जो किसी प्रकार से क्लेश में हों। क्योंकि जैसे मसीह के दुःखों में हम अधिक सहभागी होते हैं, वैसे ही हम शान्ति में भी मसीह के द्वारा अधिक सहभागी होते हैं" (2 कुरिन्थियों 1:3–5)।

यहाँ तक कि हमारे कष्ट भी हमारे अपने नहीं हैं, उसमें दूसरे व्यक्ति के आराम, आशा और प्रेरणा का बीज होता है। मेरी आशीषें मेरी नहीं है, मेरी दया मेरी नहीं है, मेरा अनुग्रह मेरा अनुग्रह नहीं है, और अन्ततः मेरा जीवन मेरा नहीं है, वे सब दूसरे का है और वह दूसरा कभी मैं और आप थे।

वे भले लोग जिनसे आप प्रेम करते और जीवन के बीस वर्ष जिनके साथ आप व्यतीत किए हों, उन्हें कलीसिया छोड़ते हुए देखना अत्यधिक वेदनाजनक है। कभी–कभी उन लोगों से अलग होने का दर्द जिनके विषय में आप ने सोचा हो कि उन्हीं के साथ वृद्ध होंगे, जन्म देनेवाली पीड़ा के समान भी है। निश्चय ही उस समय किसी बुरे घटना में भलाई को देखना कठिन होता है, परन्तु जो कुछ हम नहीं छोड़ सकते हैं वही पर हम रूकते हैं और यदि हम रूकते हैं तो हम कभी नहीं जान पाएँगे कि क्या हो सकता था। परमेश्वर कभी भी जिद्दी लोगों को आगे नहीं बढ़ाता है। हमें आगे बढ़ने का निर्णय लेना होता है। प्रत्येक दुःख में एक बीज होता है और मेरे दुःख में नई कलीसिया का बीज था जो हम बन रहे थे एक जीवन बचानेवाली कलीसिया।

1998 के अन्तिम दिनों में मैं ने कलीसिया को उच्चत्तम भवन की योजना में ले गया और हमारे देश में हाल के इतिहास में किसी भी कलीसिया ने दो हजार बैठकों वाले ऑडिटोरियम के निर्माण का प्रयास किया था तो वह हमारा था। मैं ने इसे अपनी बढ़ती हुई दृढ़ धारणा के कारण किया कि यदि मैं इसे बनाता हूँ, तो खोए हुये आएँगे। मैं केवल इतनी अभिलाषा करता कि वे जल्द आएँ क्योंकि जब हमने नई भवन में पहली सभा ली हमारी कलीसिया तीन सौ लोगों में सिकुड़ चुकी थी। मुझे आप से कहना है कि कुर्सियों के साथ आप कितने भी रचनात्मक क्यों न हों, लोगों को यह महसूस कराए बिना के वे समान कक्ष में नहीं है कुर्सियों के बीच में आप बहुत सारा जगह छोड़ सकते हैं। दो हजार लोगों के बैठने की क्षमतावाले हॉल में तीन सौ लोगों को देखना विशेष करके जब कि दूसरे तरफ आपके पास छः सौ बैठकों की सुविधा से युक्त भवन हो तो यह बहुत बुरा था।

यह जनवरी 2000 था और उस दिन परमेश्वर ने मुझे इसहाक द्वारा अपने पिता के कूएँ को पुनः खोदने की कहानी दिया (उत्पत्ती 26 देखिये)। इसहाक अपने दो कुओं से आगे गया जिन्हें उसने खोदा था, क्योंकि पलिस्तियों ने उसे भर दिया था। उन्हें उसने एसेक और सित्ना नाम दिया जिनका अर्थ "सम्पर्क" और "प्रतिरोध" था। वह आगे बढ़ा और तीसरा कुआँ खोदा, परन्तु इस समय किसी ने भी झगड़ा नहीं किया ही उसे भरा। इस तीसरे कूएँ को उसने रहोबोत नाम दिया, जिसका अर्थ है "कमरा", यह कहते हुये कि "अब परमेश्वर ने मेरे लिये स्थान दिया।" उस दो हजार बैठक की क्षमतावाले ऑडीटोरियम के प्रथम रविवार के सुबह की सभा में मैं ने तीन सौ फटे पुराने चिथड़ों में लिपटे लोगों को देखा था और एक सन्देश प्रचार करना प्रारंभ किया। "तीन की संख्या एक बाढ़ बनने जा रही है।" कलह करने और प्रतिरोध के लगभग

दो वर्षों के पश्चात् मैं ने विश्वास किया कि हमारे रहोबोत का समय आ गया है, अब वर्षों बाद हजारों लोगों की कलीसिया के साथ हमारा रहोबोत सच में आ गया है।

यीशु के जीवन के अन्तिम घन्टों में पिलातुस के अदालत में खड़े हुये उसे स्वतन्त्रता का एक मौका दिया गया जिसमें उपस्थित भीड़ से बरब्बस और यीशु में से चुनाव करने के लिये कहा गया। पर्व के समय एक कैदी को लोगों के विनती के अनुसार छोड़ना एक परम्परा थी। बरब्बस एक हत्यारा और विद्रोहियों का नेता था, जिस पर आरोप सिद्ध हुआ था। यीशु पर कोई भी आरोप सिद्ध नहीं हुआ था और जो कुछ उसने किया वह लोगों की सहायता था। फिर भी आश्चर्यजनक रीति से भीड़ ने बरब्बस से के लिये नारे लगाए कि वह छोड़ा जाए और यीशु क्रूस पर टाँगे जाए। सत्य यह है कि संसार हमेशा क्रान्तिकारी से बढ़कर विद्रोह को प्राथमिकता देता है। "शब्दकोश विद्रोही को इस प्रकार परिभाषित करता है एक ऐसा जन जो शासन या एक शासक के विरोध में प्रतिरोध करता है।" परन्तु इस क्रान्तिकारी वह है "जो एक नई व्यवस्था के लिये शासन या सामाजिक व्यवस्था को उखाड़ फेंकता है।"

यह पुस्तक प्रेम क्रान्ति के बारे में है, न कि प्रेम विद्रोह के बारे में। हम संसार के विरूद्ध विद्रोह नहीं कर रहे हैं। हम उसमें एक क्रान्ति लाना चाह रहे हैं। परमेश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया कि उसने एक विकल्प भेजा न कि एक चेतावनी। हमारा अगुवा यीशु एक क्रान्तिकारी है, एक विद्रोही नहीं। वह प्रतिष्ठापन के द्वारा विजय प्राप्त करता है, दोषारोपण के द्वारा नहीं। यह हमारी चुनौती बनती है। यदि कलीसिया संसार को प्रेम करने के लिये हैं, हमें अवश्य अपवित्र संसार को प्रेम करने के नए तरीके ढूँढ़ना है और बिना न्याय किए बाहर वाले लोगों को शामिल करना है। हमें "शत्रु की रेखा से पीछे" रहना है, एक विद्रोही आन्दोलन के रूप में नहीं, परन्तु एक प्रतिष्ठापन आन्दोलन की तरह। हम परमेश्वर के वैकल्पिक समाज हैं।

हाल ही में संयुक्त राज्य में एक एयरपोर्ट की तरफ यात्रा करते हुये, एक बुढ़ी महिला को एक बेंत के साथ देखा, जो अपने सामानों को सुरक्षा मानक पट्टी पर रखने का प्रयास कर रही थी। सुरक्षा एजेन्ट ने उसके तनावग्रस्त और संघर्ष करते देखने के बाद भी उसकी सहायता के लिये कुछ नहीं किया। मैं ने भीतरी प्रेरणा से उसके सामान को उठाना और वहनकरनेवाली पट्टी पर रखा। दूसरी तरफ, मैं ने उसके साथ उस सामानों को उतारने के लिये उसकी

सहायता करने का इन्तजार किया। मैं कभी नही भूल सकता, जिस दृष्टि से उसने मुझे देखा और एक तनावरहित मुस्कुराहट के साथ कहा, "बहुत बहुत धन्यवाद; आपकी दयालुता ने उस व्यक्ति के निर्दयता को बदला चुका दी।" कलीसिया के विषय में मेरे गहरे सिद्ध विचार को उस महिला ने शब्दों में व्यक्त किया थाः कलीसिया हानि देनेवाले संसार के निमित्त परमेश्वर का मुआवजा है।

मुआवजा "वापस देना, कम करना, या विपरित शक्ति या प्रभाव का प्रयास करने से उत्पन्न नूकसान, पीड़ा या चोट के बूरे प्रभाव को सन्तुलित करना।" हम परमेश्वर के विपरित प्रभाव हैं; हम अपने समूदाय में दर्द और पीड़ा को सन्तुलित करते हैं। प्रेम और आशा के राजदूत और व्यापारी के रूप में एक तनावग्रस्त और संघर्षमय संसार के चेहरे पर हम मुस्कुराहट लाते हैं। जो कुछ हुआ है उसे मुआवजा बदलता नहीं है, परन्तु यह उस घटना के प्रभाव को कम करता है। एक प्रेम क्रान्ति परमेश्वर के महान संसार के लिये मुआवजा की योजना का भाग है, जो भूल गया है कि कैसे मुस्कुराना है।

हमारा मूल वातावरण कलीसिया नहीं है; यह संसार है – आरामदायक क्लब नहीं परन्तु खतरनाक समुद्र है। हम एक टूटे हुये संसार के गरीबी और शत्रुता में बढ़ने के लिये पैदा हुये हैं। मछली के समान जो पानी में अच्छा तैरती है, हम खोए हुये संसार के मध्य में अच्छा करते हैं क्योंकि, मछली के समान, हम उस मूल माहौल में हमेशा रहने के लिये बनाये गये हैं। मछली को पानी से अलग कीजिये और वह मर जाता है। कलीसिया को संसार से अलग कीजिये और हम मर जाते हैं। मछली कभी भी गीला महसूस नहीं करती क्योंकि पानी उसका घर है। फिर भी बहुत से मसीही अपने मूल वातावरण के प्रतिएक एलर्जी प्रतिक्रिया रखते हैं। हम उन मछली के समान हैं जो बीच पर खड़े होकर अपने आपको तौलिये से सुखाते हैं। एक विद्रोहपूर्ण स्वरूप, मैं जानता हूँ परन्तु एक उचित और स्पष्ट चित्र नहीं।

बाइबल अक्सर कलीसिया को एक गरीबी के माहौल में चित्रित करती है। हम एक नमक रहित संसार में नमक के रूप में वर्णित कये गए हैं। अन्धकार में ज्योति, भेड़ियों के बीच में मेम्ने, अपने देश से दूर विदेशी और मुसाफिर हैं। हम शत्रुता में बढ़ने के लिये बनाए गए हैं। हम कलीसिया हैं, हम स्वर्ग के भाग नहीं परन्तु नरक के द्वारा जहर से भरे हुये संसार में समृद्ध होने के लिये। हम परमेश्वर के क्रान्तिकारी सेना हैं जो एक प्रेम क्रान्ति प्रारंभ करने के लिये भेजी गई है। और वह क्रान्ति मुझमें और आपमें आज प्रारम्भ होना है!

अध्याय

9

लोगों को मूल्यवान महसूस करायें

इसलिये हम उन बातों में लगे रहें
जिनसे मेल–मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो।
रोमियों 14:19

प्रेम क्रान्ति में इन्धन डालने में सहायता करने के आसान तरीकों में से एक दूसरों को मूल्यवान महसूस कराना है। मदर टेरेसा ने कहा, "अचाहानीय, अप्रेममय, बिना देखभाल के सब के द्वारा भूले हुये होना मैं सोचती हूँ कि एक बहुत बड़ी भूख है, एक बहुत बड़ी गरीबी उस व्यक्ति की तुलना में जिसके पास खाने को कुछ नहीं है।" और मैंने पाया है कि संसार में अधिकांश लोग जिनसे हम प्रतिदिन के जीवन में संपर्क आते हैं वे परमेश्वर के सन्तान के रूप में अपने अनन्त मूल्य को नहीं समझते हैं। मैं सोचती हूँ कि शैतान लोगों को बिना मूल्य के और अयोग्य महसूस कराने के लिये कठोर परिश्रम करता है, परन्तु हम उसके झूठ और पाप के प्रभाव को लोगों को बनाने, उत्साहित करने और उन्हें सुसज्जित करने के द्वारा तटस्थ बना सकते हैं। यह करने का एक तरीका गंभीरता पूर्वक शुभ टिप्पणी करना है जो संसार के मूल्यवान उपहारों में से एक है।

> प्रेम क्रान्ति में इन्धन डालने का सहायता करने के आसान तरीकों में से एक दूसरों को मूल्यवान महसूस कराना है।

बहुत से लोग स्वयं की तुलना अन्य लोगों से करने में बहुत त्वरित होते हैं और ऐसा करने में अक्सर वे स्वयं की योग्यताओं और काबीलियत को देखने में असफल होते हैं। दूसरे व्यक्ति को मूल्यवान महसूस कराना खर्चीला नहीं है और इसमें अधिक समय भी नहीं लगता है। केवल इतना करना है कि किसी और के बारे में सोचने के लिये अपने आप पर से कुछ देरे के लिये ध्यान हटा लें और तब कुछ प्रोत्साहन के शब्द बोलने के लिये ढूँढ़े। लोगों को मूल्यवान महसूस कराना किसी प्रकार का धन खर्च नहीं होता है, परन्तु यह उन्हें कुछ ऐसा मूल्यवान प्रदान करता है जिसे धन नहीं खरीद सकता है। किसी पर अच्छी टिप्पणी करना यह बहुत छोटी दिखाई पड़ती है, परन्तु यह बहुत ताकत प्रदान करती है।

मैं लक्ष्य रखने में विश्वास करती हूँ, और जब मैं परमेश्वर के साथ दूसरों को उत्साहित करने के क्षेत्र में अच्छे आदतों को विकसित करने का कार्य कर रही थी, मैं ने प्रतिदिन कम से कम तीन लोगों पर अच्छी टिप्पणी करने के लिये स्वयं को चुनौती दिया। मैं सिफारिश करती हूँ कि आप भी एक उत्साही प्रोत्साहन कर्ता बनने के लिये स्वयं की सहायता हेतु ऐसा करें।

भूले हुओं को न भूलें

लोग अक्सर एकाकी और भूले हुये महसूस करते हैं। वे महसूस कर सकते हैं कि वे बहुत कठोर परिश्रम करते हैं परन्तु कोई भी ध्यान नहीं देता या परवाह नहीं करता है। मैं एक महिला को स्मरण करती हूँ जिसने मुझसे कहा कि वह अपने अधिकांश जीवन में स्वयं को अदृश्य महसूस किया है। मैं उसके चेहरे के दर्द को स्मरण करती हूँ जब उसने पुरानी बातों को स्मरण किया कि किस प्रकार उसके माता–पिता मूल रूप से उसे अनदेखा करते थे। वह एकाकी और भयानक रूप से अकेला महसूस करती थी जिससे वह स्वयं को अचाहानीय महसूस करने लगी। उसके माता–पिता जवान थे जब वह पैदा हुई वे सन्तान उत्पन्न करने के लिये तैयार नहीं थे, और बहुत स्वार्थी और आत्मकेन्द्र थे। उन्होंने उसे कोई प्यार या भावनात्मक समर्थन नहीं दिया उसने कहा कि उसने अपने बचपन और किशोरवय अधिकांश समय अपने कमरे में पढ़ते हीं व्यतीत किया।

अपने बचपन और अदृश्य महसूस होने के बारे में इस महिला का वर्णन बहुत ही दुःखद था और उसने मुझे आश्चर्यचकित किया कि मैं ने कितनी बार लोगों को अदृश्य महसूस कराया है, केवल इसलिये कि मैं जो कर रही हूँ या अपने लक्ष्य पर इतना अधिक केन्द्रित थी जिसे मैं पूरा करने का प्रयास कर रही थी कि मैं ने उनकी उपस्थिति के अनुसार करने का भी समय नहीं लिया। मैं एक इस प्रकार की व्यक्ति हूँ जो जीवन में अपने लक्ष्य को पाने के लिये बहुत ही दृढ़ प्रतिज्ञ और केन्द्रित हूँ। मैं बहुत से कार्य करती हूँ परन्तु इस प्रक्रिया में दूसरों को चोट न पहुँचना सीखना है। बिना बहुत सारे समर्पित लोगों के सहायता के कोई भी सफल नहीं होता है और जहाँ पर आवश्यकता है वहाँ पर प्रशंसा करने या श्रेय देने में पराजित होना एक भयानक विपदा है और एक ऐसा व्यवहार है जिससे परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता है।

छोटी बातें बड़ी बातें हो सकती हैं

परमेश्वर बाइबल में सताये हुओं, विधवाओं, अनाथों, पितृहीनों, और परदेशियों के प्रति हमारे कर्त्तव्य के विषय में बात करता है। वह उनके विषय में कहता है जो एकाकी हैं और उनके विषय में तिरस्कृत, भूले हुये, और बिना मूल्य के महसूस करते हैं। वह सताये हुयों और भूखों की गहराई से चिन्ता करता है। लोग बहुत से तरीके से भूखे हो सकते हैं। उनके पास खाने के लिये बहुत सारे भोजन हो सकता है परन्तु प्रोत्साहन या कुछ शब्दों के भूखे हो सकते हैं जो उन्हें मूल्यवान महसूस करायें। परमेश्वर उन्हें ऊपर उठाता है जो दुःख के कारण झूके हुये हैं, वह अजनबी की सुरक्षा करता, और पितृहीनों और विधवाओं को सम्भालता है (भजन 146:7–9 देखिये)। वह यह कैसे करता है? वह लोगों के द्वारा कार्य करता है! उसे समर्पित, अधिन रहनेवाले लोग चाहिये जो दूसरों को मूल्यवान महसूस कराने के लिये जियें। मदर टेरेसा ने बहिष्कृत लोगों को प्रेम करने और मूल्यवान महसूस कराने के लिये अपना जीवन दिया। जो कार्य उसने किये वे सामान्यतः साधारण कार्य थे, फिर भी महान कार्य थे। उसने कहा, "यह मत सोचो कि प्रेम सही होने के लिये असाधारण होना है। हमें यह करना है कि बिना थके प्रेम करें।"

हम गोद लिये गए हैं

एक वचन जिसने मुझे बहुत अधिक उत्साहित किया है भजन 27:10 है: "मेरे माता–पिता ने मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा।"

मेरी माता मेरे पिता से बहुत भय खाती थी, इसलिये वह मुझे अपने पिता के उन बहुत से दुर्व्यवहारों से बचा पाने में असमर्थ थी जो वह मेरे विरूद्ध करते थे। मैं बहुत अकेली, भूली हुई और अपने दुःस्वप्नों में त्यागी हुई महसूस करती थी। अन्ततः मैंने निश्चय किया कि कोई भी मेरी सहायता नहीं करने जा रहा है, और इसलिये मैंने उन परिस्थितियों के साथ जीने के लिये कदम बढ़ाई जब तक मैं उनसे बच नहीं जाती। लोगों की भीड़ जिनसे प्रतिदिन हमारा सामना होता है वे तब तक जीना का प्रयास करते हैं जब तक उन्हें कोई न बचाये – और वह कोइ मैं या आप हो सकते हैं।

बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने अपने प्रेम में, "जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों" (इफिसियों 1:4)। उसने प्रेम में उसने योजना बनाई कि हमें अपने सन्तान के रूप में गोद ले। वे खूबसूरत शब्द ने मेरे घायल आत्मा को चंगा करने में बड़ी भूमिका निभाई। परमेश्वर भूले हुओं और अकेलों को सन्तान बनाता और उन्हें ऊपर उठाता और उन्हें मूल्य देता है। वह अपने वचन के द्वारा, आत्मा के द्वारा और आत्मा से भरे हुये लोगों के द्वारा कार्य करता है जो दूसरों की सहायता के लिये जीते हैं।

मदर टेरेसा ने महसूस किया कि प्रत्येक व्यक्ति जिनसे वह मिली "वह अभिन्न रूप से यीशु था।" जरा कल्पना करने का प्रयास करें कि हम कितने भिन्न रीति से लोगों से व्यवहार करते यदि हम उस रीति से उन्हें देखा जैसा मदर टेरेसा ने उन्हें देखा। यीशु ने कहा कि यदि हम "छोटे से छोटे" में भी अच्छा और बुरा करते हैं तो यह हम उससे करते हैं (मत्ती 25:45 देखिये)। दूसरे शब्दों में, दूसरों के प्रति अपने व्यवहार को वह व्यक्तिगत रूप से लेता है। यदि किसी ने मेरी किसी संतान को अपमानित किया, अनदेखा किया, या कमतर जाना, तो मैं इसे व्यक्तिगत अपमान मानूँगा। तो यह समझना इतना कठिन क्यों है कि परमेश्वर इस प्रकार से महसूस करता है। आईये हम सब लोगों के निर्माण करने के लिये आगे बढ़ें, और प्रत्येक को अच्छा महसूस कराने के लिये प्रयास करें जिनसे हमारा सामना होता है और उनके जीवन को मूल्यवान बनाने के लिये।

मुस्कुराहट के साथ प्रारंभ करें

मुस्कुराहट प्रेम का प्रारंभ है। यह स्वीकार्यता और अनुमोदन को बताती है। हमें प्रत्येक व्यक्ति के साथ मुस्कुराना सीखना है और जब हम ऐसा करते हैं तब न केवल वे भला महसूस करते हैं बल्कि हम भी अच्छा महसूस करते हैं।

मैं सामान्यतः विचारों में गहराई तक जाती हूँ और इसी कारण मैं भीतर तक देख सकती हूँ। मैं बहुत बड़े उत्तरदायित्व भी वहन करती हूँ और यदि मैं सावधान नहीं हूँ तो यह मुझे खिन्न कर सकता है। मैं लोगों को देखकर मुस्कुराने के लिये समय निकाल रही हूँ, उनसे पूछती हूँ कि वे कैसे हैं, और उनसे कुछ मैत्रीपूर्ण शब्द कहती हूँ। निश्चय ही यदि हम मित्रवत होने के लिये बहुत व्यस्त हैं तब हम असन्तुलित हैं और सम्बन्धात्मक विपदा की ओर बढ़ रहे हैं। सम्बन्ध जीवन के महत्वपूर्ण भाग हैं और वास्तव में मैंने बाइबल को सम्बन्धों के विषय में एक पुस्तक होना पाया है। यह परमेश्वर के साथ हमारे साथ और अन्य लोगों के साथ सम्बन्ध के विषय में है।

यह अद्‌भुत है कि किस प्रकार एक मुस्कुराहट और एक मैत्रीपूर्ण शुभकामना लोगों को आरामदायक स्थिति में पहुँचा देती है। यह बहुत से तरीकों में से दो तरीके हैं जो हम जहाँ कहीं भी जाते हैं, दूसरों को दे सकते हैं। आप सोच रहे होंगे, *यह मेरे लिये नहीं है, मैं अधिक आरक्षित और नीजी हूँ। मैं लोगों के साथ इतना अधिक सम्मिलित होने को प्राथमिकता नहीं देता हूँ, विशेष करके जिन्हें मैं नहीं जानता।* यदि आप ऐसा महसूस करते हैं, तो मैं समझती हूँ, क्योंकि मैं भी इसी रीति से थी कि जब तक लगातार मैं न देखती रही कि प्रोत्साहन, नैतिक उन्नति, उपदेश देना, और लोगों को मूल्यवान महसूस कराना के विषय में बाइबल क्या कहती है। मैंने सिखा कि यह तथ्य कि मैं स्वभाविक रीति से एक किसी क्षेत्र में वरदान प्राप्त नहीं हूँ, इसका यह तात्पर्य नहीं कि मैं नहीं सीख सकती कि कैसे करना है।

वर्षों तक मैं ने मित्रवत होने से स्वयं को बचाती रही यह कहकर, "यह मेरा काम नहीं है; मैं एकाकी हूँ" परन्तु मैं ने जाना कि "एकाकी" होना बाइबल में वरदान के रूप में नहीं बताया गया है। स्वयं को "एकाकी" के रूप में सोचना अक्सर असुरक्षित होने को व्यस्तता से भावना को बहाना होता है। अन्ततः हम सोचते हैं, कि *हमें कैसा महसूस होगा यदि हम लोगों की तरफ देखकर मुस्कुरायें और वे वापस न मुस्कुरायें?* मैं तिरस्कृत महसूस करूँगी और यह कभी भी अच्छा नहीं लगेगा। हममें से अधिकांश जीवन में अधिक समय तिरस्कृत होने से बचने का प्रयास करते हैं न कि अच्छे, स्वस्थ संबन्ध बनाने का प्रयास करते हैं। बातों के कक्ष के बाहर इन्तजार करते हुये किसी अजनबी से मैं मित्रवत बातचीत करने का प्रयास करती हूँ तो क्या होगा और यह प्रकट है कि वह अकेला छोड़ दिया जाना चाहती है? अचानक मैं अब चकित और इस "अवसर" के रूप में देखने के बजाय चकित और अजीब सा महसूस कर

रही हूँ। मैं स्वयं की सुरक्षा के लिये अकेली ही रह सकती हूँ, तो ऐसा होता है तब हम लोगों को एक मुस्कुराहट या मैत्रीपूर्ण संबन्ध के द्वारा परमेश्वर के प्रेम के साथ छुने का अवसर चुक जाते हैं। जब हम अपनी मुस्कुराहट देते हैं, तब हम किसी और की मुस्कुराहट को बना सकते हैं और यह उत्तम उपहारों में से एक है जिसे हम दे सकते हैं।

प्रेम क्रान्ति का भाग होना प्रयास और अभ्यास की अपेक्षा करेगा। यह आशा करेगा कि हम अपने कुछ एक तरीको को बदलने के इच्छुक हों और परमेश्वर से उसके रास्तों को दिखाने के माँग करना प्रारंभ करेंगे। क्या आप सचमुच में कल्पना कर सकते हैं कि यीशु क्रूद्ध दृष्टि डाले और अमित्रवत हो या लोगों को अनदेखा करे केवल इसलिये कि वह तिरस्कृत न महसूस करें या केवल इसलिये कि वह अपने ही बातों में बहुत अधिक व्यस्त था कि उन्हें देख नहीं पाया। निश्चय ही हम जानते हैं कि यीशु कभी भी इस रीति से व्यवहार नहीं करता था और हमें निर्णय लेना है कि हम भी नहीं करेंगे। अधिक मुस्कुराना प्रारंभ करें। जब आप अकेले हों तब भी आप मुस्कुराने का प्रयास कर सकते हैं, तब आप देखेंगे कि यह आपको हल्का और प्रसन्न महसूस कराता है। प्रेरित पौलुस ने उन लोगों से जिनकी वह सेवा करता था कहा कि एक दूसरे को पवित्र चुम्बन से अभिवादन करो (रोमियों 16:16 देखिये), जो उनके दिनों में परम्परा थी। मैं केवल एक मुस्कुराहट के लिये कह रही हूँ!

यदि ये स्वभाविक रूप से नहीं आता है तो व्याकुल न हों

इस अध्याय के अन्त में, आप जॉन मैक्सवेल से इस पुस्तक के लिये एक अंशदान पढ़ेंगे जो एक अन्तर्राष्ट्रीय वक्ता और नेतृत्व विषय के लेखक और हमारे मित्र हैं। जॉन की उपस्थिति में होने के कुछ ही क्षणों हर कोई आश्चर्यजनक रूप से मूल्यवान महसूस करता है। इस क्षेत्र के विषय में उसकी महान योग्यता के विषय में मैंने और उन्होंने बात किया है, और वह तैयारी पूर्वक स्वीकार करते हैं कि उनके पिता इस प्रकार प्रभावित किया था। न केवल जॉन एक अच्छा उदाहरण रखते हैं, जब वह बड़े हो रहे थे, उनके पास प्रोत्साहन का उपहार भी हैं (टैलेन्ट या योग्यता) जो परमेश्वर के द्वारा उन्हें दिया गया है।

बाइबल कहती है, कि प्रोत्साहन का वरदान (रोमियों 12:8) के विषय में बात करती हैं, और कहती हैं लोग जिन्हें यह वरदान दिया गया है उन्हें उसे

उत्साह, और आनन्द के भरपूर इच्छा के साथ इसे गले लगाना चाहिये। ठीक इस प्रकार मेरे पास संवाद का वरदान है जो मुझे प्रभावशाली रूप से बिना अधिक प्रयास के बोलने के योग्य बनाती है। कुछ लोगों के पास उत्साहित करने का वरदान होता है या है। वे बिना अधिक प्रसास के दूसरों को उत्साहित करते हैं; यह उनके लिये स्वभाविक होता हैं। यद्यपि कुछ लोग प्रोत्साहन के वरदान को कम आँकते हैं, मैं सोचती हूँ कि यह संसार के सबसे अधिक आवश्यक वरदानों में से एक है।

ये लोग जानने के लिये या उनके चारों ओर रहने के लिये अद्‌भुत हैं, परन्तु पुनः मैं कहती हूँ कि स्वयं को केवल इतने छुट न दें कि दूसरों को प्रोत्साहन करना आपके लिये स्वभाविक नहीं है। मेरे पास देने का वरदान है और एक छोटे बच्चे के रूप में किसी को एक उपहार देने की योजना बनाना स्मरण कर सकती हूँ जो उसे प्रसन्न करे या प्रसन्न बनाये। हर किसी के पास देने का आत्मिक वरदान नहीं हो सकता है (जिसकी सूचि रोमियों 12 में दूसरों को उत्साहित करने के योग्य बनने में भी दी गई है), परन्तु प्रत्येक लक्ष्यपूर्वक देने के लिये निर्देश दिया गया है।

आगे बढ़िये और हँसिये

हम में से अधिकांश कम से कम हँसने हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ के लिये हँसी की किमत के विषय में सुने होंगे। मुस्कुराना हँसने का द्वार है, यही है जिसे हमें अक्सर उद्देश्यपूर्वक करने की जरूरत हैं।

बाइबल कहती है कि एक प्रसन्न हृदय दवा के समान अच्छा करता है (नीतिवचन 17:22 देखिये)। मेरे सीखाने की सेवकाई के अद्‌भुत बातों में से एक जिस पर मैंने ध्यान दिया, वह है कि मैं बहुत ही मजाकिया हूँ। मैं इसे अद्‌भुत कहता हूँ, क्योंकि जिसे मैं सामान्य जीवन कहती उस तरीके से लोग मुझे वर्णित नहीं करते। मैंने समझा कि ये पवित्रआत्मा ही है जो मेरे द्वारा बात करता है, वह प्रकट रूप से मजाक का किमत और चंगा करने के उसके ताकत के बारे में जानता है।

परमेश्वर चाहता है कि हम हँसे और वह चाहता है कि हम दूसरे लोगों को हँसायें। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि हम सबको तमास्वीन बनना है या अनुचित समय पर हँसना है, परन्तु हम निश्चित ही जीवन के प्रति नजरिये को और अधिक हल्के हृदय से लेने के लिये एक दूसरे की सहायता कर सकते

हैं। हम सब अधिक अच्छा महसूस करेंगे यदि हम कभी स्वयं पर हँसना सीखते हैं, न कि स्वयं को बहुत गंभीरता से लें।

पिछले तीन बार मैंने सफेद पैन्ट पहनी है और मैंने स्वयं पर कॉफी गिरा दिया है। या तो मैं सोच सकती हूँ कि मैं एक लापरवाह हूँ जो किसी भी चीज को पकड़ नहीं सकती और स्वयं को कमतर जानने प्रारंभ करती या मैं उस पर एक मजाक करती और अगली बार साफ रहने का प्रयास करती। वर्षों तक मैंने लोगों को स्वयं को निम्न दृष्टि से देखते हुये सुना है, पुनः प्रत्येक गलतियों के लिये चोरी करते हैं और मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर इससे दुःखी होता है। यदि हम मसीह में हम अपने मूल्य को जानते हैं तो हमें अपने विषय में ऐसी कोई बात नहीं कहनी चाहिये जो परमेश्वर के कार्य योजना को कमतर बनाती हो।

क्यों ना लोगों को यह देखने की आदत बनायें कि हम सब छोटी छोटी गलतियाँ करते हैं और उन पर हँसने या उनके विषय में उदास होने का चुनाव कर सकते हैं। लोगों को सिद्ध नहीं होने की अनुमति दीजिये, संसार अच्छे से करने और श्रेष्ठ होने के दबाव से भरा हुआ है परन्तु जब हमें दया के एक शब्द की जरूरत नहीं होती है, वह हमें बताती है कि हम अभी भी स्वीकारयोग्य और किमती हैं।

जब आप ऐसे लोगों के साथ होते हैं जो गलतियाँ करते हैं, तब तुरन्त ही उन्हें वह सामर्थ्य स्मरण दिलायें जो उनके पास है या हाल ही में आप ने उनको कुछ अद्भुत करते देखा हो। मेरी दोनों बेटियाँ अद्भुत हैं, समर्पित मातायें हैं। जब वे उस विषय में कुछ बुरा महसूस करते हैं जो उन्होंने सही रीति से नहीं किया, मैं उन्हें स्मरण दिलाती हूँ कि वे अच्छी मातायें हैं, और बताती हूँ और इस बात पर जोर देती हूँ कि यह कितना महत्वपूर्ण है। लोग जो अच्छा करते हैं उसमें से किसी को भी हमें लापरवाही पूर्वक नहीं लेना है। शैतान लोगों को असफल महसूस करने का प्रयास करने के लिये समय से अधिक कार्य करता है और हमें तुल्य रूप से कठिन परिश्रम करना है कि उन्हें सफल महसूस करायें।

ठहाके से बढ़कर कोई भी चीज बुरी परिस्थिति को तुरन्त अच्छी में नहीं बदलती है। हम अपने भीतर के "छोटे बच्चे" को बहुत जल्द ही गला घोंट देते हैं। बच्चे किसी चीज को गिरा कर अपने कपड़ों को गन्दा करके गलतियाँ करने से बहुत जल्द बुरा नहीं मानते हैं। वे अक्सर हँसते रहने का तरीका पा

लेते हैं, और तब तक तमाशा करते हैं जब तक वयस्क लोग उन्हें रोकत न हों। यीशु ने कहा, हम तब तक उस अद्‌भुत जीवन में प्रवेश नहीं कर सकते, जब तक हम एक छोटे बच्चे के रूप में नहीं आते हैं। (लूका 18:17 देखें)। इसलिये मैं बहुत ही सिफारिश करती हूँ कि इस क्षेत्र में हम एक दूसरे की सहायता करें।

मैं ऐसे लोगों के आस पास होना पसन्द करती हूँ जो मुझ पर सिद्ध होने का दबाव नहीं डालते हैं। परमेश्वर हम से निःस्वार्थ करता है और इसका तात्पर्य है कि वह उस रीति से स्वीकार करता है जैसे हम हैं और तब हमारी सहायता करता है कि हम वह सब बनें जो हम बन सकते हैं। मुस्कुराना स्वीकार करने का एक चिन्ह है। स्वयं पर हँसने के लिये लोगों की सहायता करना यह कहने का एक तरीका है, "मैं तुम्हें, तुम्हारे गलतियों और सब कुछ को स्वीकार करता हूँ।"

एक दूसरे की कमजोरियों को स्वीकार करना प्रेम दिखाने का एक साधारण तरीका है। प्रेरित पौलुस ने एक दुसरे को उत्साहित करने और एक दूसरे का निर्माण करने के लिये सिखाया और उसने अकसर लोगों को यह करने के लिये स्मरण दिलाता रहा। "इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो" (1 थिस्सलुनिकियों 5:11)। पवित्र आत्मा स्वयं एक है जो हम में जीता है और हमारे जीवन के साथ चलता है और हमें सात्वना देता, हमें उत्साहित करता, और हमारा नैतिक उत्थान करता है। वह हम से विनती करता है कि हम वह सब बनें जो हम बन सकते हैं। हम गलतियाँ करते हैं, वह हमें दोषी नहीं ठहराता, वह हमें आगे बढ़ने के लिये विनती करता है।

प्रोत्साहन की कमी अक्सर, निराशा, असफलता, और तलाक पैदा करता है और यह लोगों को जीवन में अपने सामर्थ्य तक पहुँचने के लिये रोकता है। हम सब को प्रोत्साहित किये जाने की जरूरत है और एक बार पुनः मैं इस विन्दु पर जोर देना चाहती हूँ कि सामान्य प्रोत्साहन प्राथमिक तरीकों में से एक है जिसमें हम अपने समाज में एक प्रेम क्रान्ति में इन्धन भर सकते हैं।

सकारात्मक पर जोर दीजिये

परमेश्वर ने मुझे दिखाना प्रारंभ किया कि एक तरीका जिससे मैं अपने पति से प्यार कर सकती हूँ, केवल उनके उन छोटी छोटी गलतियों पर ध्यान न

देना था जो वे करते थे – जैसे बाथरूम का लाईट बन्द न करना, या टॉयलेट पेपर को न बदलना। शायद मैं ने कुछ करने के लिये कहा हो और वे उसे करने के लिये भूल गये – जैसे मेरे ब्रिफकेश को ऊपर मेरे दफतर तक नहीं लाना ताकि मुझे अगले सुबह उसे एक हाथ में मुझे कॉफी को सन्तुलित करने का प्रयास न करना पड़े। सैकड़ों ऐसे कार्य हैं जो हम करते हैं जो दूसरों को परेशानी में डालते हैं, परन्तु हम उन पर ध्यान न देने का चुनाव कर सकते हैं और हम यह स्मरण कर सकते हैं कि हम सब छोटी छोटी गलतियां करते हैं और लोग हमें वह सब स्मरण दिलाते नहीं रहते हैं।

यदि आपको सचमुच में एक मुद्दे का सामना करने की जरूरत है तो हर प्रकार से उसे कर डालें। परन्तु अधिकांश संबन्ध जो दो फाड़ हो गये हैं समाप्त हो जाते हैं कयोंकि किसी ने छोटी बात को बड़ा बना दिया होता है जो सचमुच में किसी प्रकार महत्वपूर्ण नहीं था। प्रत्येक बार जब लोगों को याद दिलाया जाता है कि उन्होंने सही नहीं की है तो वे वास्तव में कमजोर होते और अवनत होते जाते हैं। मैंने उन बातों का "वर्णन" करते हुये बहुत से वर्ष व्यतीत किये हैं जो मुझ में चिढ़न पैदा किया है क्योंकि मैं आशा करती थी कि लोग ऐसा करना छोड़ देंगे। परन्तु मैं ने पाया कि मेरी टिप्पणियों ने केवल उन पर दबाव बनाया और मेरी उपस्थिति ने असुविधा में डाल दिया। मैं ने पाया है कि प्रार्थना और सकारात्मक बातों पर जोर देना बहुत अधिक प्रभावशाली होता है।

जब हम लोगों के सामर्थ्य के साथ बड़ा व्यवहार करते हैं और वे जिन बातों को सही करते हैं वे अपने कमजारियों और गलतियों पर विजय पाने के लिये प्रेरित किये जाते हैं। मैं यह देखकर आश्चर्यचकित थी कि मेरे खोज के प्रारंभ यह मेरे लिये कितनी बड़ी चुनौती थी, कि जो बातें मुझे चिढ़ाती कि उन्हें व्यक्त न करूँ और उसे जाने दूँ। मैं अब एक ऐसे स्थान पर पहुँच गई हूँ जहाँ पर मैं समझती हूँ कि मैं छोटी बातों पर मेरी कूढ़न उन बातों की तुलना में बड़ी समस्या है। बाथरूम से निकलने के पश्चात् बत्ती न बुझाना मुझे क्यों चिढ़ाये? क्या मैं कभी बत्ती जलता हुआ छोड़ती हूँ? हाँ, मैं करती हूँ।

हाल ही में मैं ने डेव को सुधारा कि उन्होंने बिस्तर के किनारे बैठने के बाद उठने पर उसे पुनः ठीक नहीं किया। मैं ने स्वयं को देखा, स्तम्भ रह गई, और अपने ध्यान को इस तरफ खिंचा कि वास्तव में मैं ही बिस्तर के इस तरफ बैठी हुई थी, वह नहीं! अद्‌भुत! मैं बहुत ही निश्चित थी कि डेव वहाँ बैठे थे, परन्तु वास्तव में अपराधी पक्ष मैं थी। यह उदाहरण दर्शाता है कि गलती

ढूँढ़नेवाली आत्मा किस प्रकार से हमें अपनी गलतियों के प्रति अन्धा बना सकती है, जब हमें दूसरों पर आरोप लगाने के लिये वाध्य करती है।

लोगों ने सकारात्मक बातों को जोर देने के द्वारा प्रेम दशाई है। ये कहना पर्याप्त होगा कि हमें दूसरों की नकारात्मक ढूँढ़ने का प्रयास नहीं करना है वे मानो हमें मना करते हैं। वे हमें लाल बत्ती के समान हैं जो हमें रोकते हैं। परन्तु हमें उद्देश्यपूर्वक सकारात्मक बातों को देखना है – या कम से कम हमें तब तक नहीं जब तक हम नई आदतों को बना नहीं लेते हैं!

जैसा कि मैंने पूर्व में सलाह दिया, तीन लोगों को प्रोत्साहित करने या प्रतिदिन बिना पराजित हुये अच्छे टिप्पणी करने का लक्ष्य रखिये। लेखा जोखा की विधि से स्वयं से दिन के अन्त में पूछिये कि वे कौन लोग थे। जब तीन आपके लिये स्वभाविक बन जाएँगा तो लक्ष्य को छः तक बढ़ाइये, तब दस तक बढ़ाइये और तब तक यह दूसरों को आपके प्रतिदिन के जीवन में जिनसे आप संपर्क आते हैं स्वभाविक बन जाएँगा।

यह आवश्यक नहीं कि आपकी टिप्पणियाँ बहुत बड़ी हों, छोटी बातें जैसे, "वह रंग आप पर अच्छा लगता है," "मैं आपके बाल उस प्रकार से पसन्द करती हूँ" "आपका शर्ट अच्छा है," "आपका घर मुझे सुरक्षा महसूस होता हैं," "आप कठोर परिश्रम करते हैं," "मैं आपको प्रशंसा करता हूँ," या "मैं प्रसन्न हूँ कि आप मेरे मित्र हैं," ये बातें बड़े प्रभावशाली और अर्थवत हैं। जब आप सकारात्मक बातों पर जोर देते हैं, आप प्रसन्न महसूस करेंगे। इसलिये न केवल आप दे रहे हैं, आप उसी समय लाभ भी प्राप्त कर रहे हैं।

प्रेम क्रान्तिकारी

जॉन सी. मैक्सवेल

प्रोत्साहन सब कुछ बदल देता है

प्रोत्साहन अतुल्य है। उसका प्रभाव आश्चर्यकर्म के समान गहरा हो सकता है। शिक्षक द्वारा प्रोत्साहन का एक शब्द बच्चे का जीवन बदल सकता है। जीवन साथी द्वारा प्रोत्साहन का एक शब्द विवाह को बचा सकता है। अगुवे के द्वारा प्रोत्साहन का एक शब्द एक व्यक्ति को उसके सामर्थ के रूप कार्य करने के लिये प्रेरित कर सकता है। जैसा कि ज़ीग ज़िगलर कहते हैं, "आप कभी नहीं जान सकते हैं कि कब एक क्षण या सच्चे हृदय से कहे गये एक शब्द किसी जीवन पर प्रभाव डाल सकता है।" लोगों को उत्साहित करना उन्हें साहस प्राप्त करने के लिये सहायता करना है जो वे अन्यथाः नहीं पा सकते हैं – दिन का साम्हना करने का साहस, जो सही है उसे करने के लिये, खतरा उठाने के लिये, कुछ परिवर्तन या अन्तर लाने के लिये। प्रोत्साहन का हृदय एक व्यक्ति के मूल्य को बताना है। जब हम लोगों को मूल्यवान, सक्षम, महसूस करने में सहायता करते हैं, और उत्साहित करते हैं, हम अक्सर देखने पाते हैं कि उनका जीवन हमेशा के लिये बदल जाता है। और हम कभी कभी हम उन्हें दुनियाँ को बदलने के लिये तैयार होते हुये देखते।

यदि आप एक माता–पिता हैं, तो आपके पास एक उत्तरदायित्व है कि आप अपने परिवार के सदस्यों को प्रोत्साहित करें। यदि आप एक संस्था के अगुवे हैं, तो आप अपने समूह के प्रभावशीलता को नाटकीय ढंग से अधिक मात्रा में प्रोत्साहन के द्वारा बढ़ा सकते हैं जिनकी आप अगुवाई करते हैं। एक मित्र के रूप में आपके पास सुअवसर है कि आप प्रोत्साहन के शब्द बोलें जो किसी को खराब समय में या सहन करने के लिये सहायता कर सकता है या वे बड़प्पन के लिये भूखे रहेंगे। एक मसीही के रूप में आपके पास दूसरों को प्रेम करने और उन्हें प्रोत्साहन के शब्द के द्वारा, ऊपर उठाने के द्वारा यीशु का प्रतिनिधित्व करने की शक्ति है।

क्लब में शामिल होईये

कभी भी प्रोत्साहन के शब्द को कम करके न आँकें। 1920 में चिकित्सक, परामर्शदाता, और मनोविज्ञानिक जॉर्ज डब्ल्यू क्रेन ने नॉर्थवेस्टर्न विश्वविद्यालय

सिकागो में सामाजिक मनोविज्ञान सिखाना प्रारंभ किया। यद्यपि वे पढ़ाने में नये थे, वे मानवीय स्वभाव के एक बहुत ही अच्छे छात्र थे, और उन्होंने मनोविज्ञान को अपने छात्रों को व्यवहारिक रूप से अध्ययन कराने में दृढ़ रूप से विश्वास किया।

पहली कक्षाओं में से एक में जो उन्होंने लिया उसमें सांयकालीन छात्र थे जो औसत कॉलेज छात्रों के उम्र से अधिक के थे। जवान पुरूष और स्त्रियाँ दुकानों, दफतरों, कराखानों, सिकागो के कारखानों में दिन के समय काम करते थे और रात के कक्षाओं में उपस्थित करने वे स्वयं को विकसित करने का प्रयास करते थे।

एक शाम कक्षा के पश्चात् एक जवान स्त्री जिसका नाम लॉईस था, जो वीस्कॉन्सिन के एक छोटे शहर से सिकागो आई थी, ताकि एक नागरिक सेवा में नौकरी कर सके बताया कि वह अलगाव और एकाकीपन महसूस करती है।

"मैं किसी को नहीं जानती सिवाय दफतर की कुछ लड़कियों के," उसने विलाप किया। ''रात को मैं अपने कमरे में जाकर मेरे घर को चिट्ठियाँ लिखती। मात्र एक बात जो मुझे दिन प्रतिदिन जीवित रखती है यह आशा है कि मैं वीस्कॉन्सिन के अपने मित्रों के चिट्ठी पाने की आशा है।''

लॉईस की समस्या की प्रतिक्रिया के रूप में व्यापक रूप से क्रेन ने कुछ ऐसा किया जिसे शुभटिप्पणी क्लब कहा गया, जिसकी उसने अपनी कक्षा में अगले हप्ते घोषणा की। यह उस सत्र में उनके द्वारा छात्रों को दिये जानेवाले बहुत सारे व्यवहारिक गृहकार्यों में से पहला होना था।

"आपको अपने मनोविज्ञान को प्रतिदिन अपने घर में, या कार्य स्थल पर या कार, और बसों में इस्तेमाल करना है," क्रेन ने उसने कहा। "अगले महीने में, आपके लिखे हुये गृहकार्य शुभकामना क्लब होगा। तब आपको प्रति दिन तीन भिन्न भिन्न व्यक्तिओं को शुभकामना देना है। यदि आप चाहते हैं तो इस संख्या को बढ़ा सकते हैं, परन्तु कक्षा में श्रेणी प्राप्त करने के लिये प्रतिदिन कम से कम तीन लोगों को अच्छी बातें कहनी हैं। तब तीस दिनों के अनुभवों के पश्चात् अन्त में मैं चाहता हूँ कि आप अपने अनुभव पर एक विषय या एक शोध पत्र लिखें," उन्होंने कहना जारी रखा। "अपने चारों ओर के लोगों में आपने क्या परिवर्तन देखा इसे शामिल करें, साथ साथ जीवन के प्रति आपके दृष्टिकोण में भी क्या परिवर्तन आया।"

क्रेन के कुछ छात्रों ने इस गृहकार्य का विरोध किया। कुछ ने शिकायत की कि वे नहीं जानते कि क्या कहना है। अन्य लोग तिरस्कृत होने से डरते थे। और कुछ ने सोचा कि जिन्हें वे नहीं पसन्द करते उन पर अच्छी टिप्पणी करना ईमानदारी की बात नहीं होगी। "मान लीजिये आप किसी से मिलते हैं, जिन्हें आप नापसन्द करते हैं?" एक व्यक्ति ने पूछा। "क्या आप अपने शत्रु की प्रशंसा करना झूठे हृदय से नहीं होगा?"

"नहीं, ये झूठे हृदय की बात नहीं है, जब आप अपने शत्रु की प्रशंसा करते हैं," क्रेन ने प्रतिक्रिया दी, "किसी का अभिनन्दन करना एक ईमानदारी पूर्वक कहा गया प्रशंसा का, किसी के लिये, या किसी वस्तु के लिये या किसी अच्छी बात के लिये कहा गया कथन है, जिसका वह हकदार है.....

आपकी प्रशंसा एकाकी आत्माओं में विल्पव उत्पन्न कर सकता है जो भले कार्य करने के संघर्ष को लगभग त्याग देने पर हैं। आप कभी नहीं जानते कि कब आपकी साधारण टिप्पणी एक लड़का या लड़की या एक पुरूष या स्त्री को कठिन समय में आकर्षित करती है, जब कि अन्यथाः वह स्वयं को समाप्त कर लिया होता।"

क्रेन के छात्रों ने पाया कि उनके सच्चे अभिनन्दन उनके चारों ओर के लोगों पर सकारात्मक प्रभाव डाला था, और इस अनुभव ने स्वयं छात्रों के ऊपर भी बड़ा प्रभाव डाला था। लॉईस एक वास्तविक लोगों के समान खिल गई जब किसी ने उसके कक्ष को उजाला फैलाया जब वह उसमें प्रवेश की। एक अन्य छात्र जो अपने कठिन अधिकारी के कारण कानूनी सचिव के नौरकी को छोड़ने के लिये लगभग तैसार थी ने उनका अभिनन्दन करना प्रारंभ किया, जबकि पहले पहल वह दान्त पीसकर ऐसा करती थी। क्रमशः न केवल उसके प्रति उनका रूखापन बदल गया, परन्तु उनके प्रति उसका व्यवहार भी बदल गया। बाद में वे एक दूसरे को पसन्द करने लगे और आपस में विवाह कर लिये।

जॉर्ज क्रेन का अभिनन्दन क्लब आज शायद हमें व्यर्थ लगता होगा। परन्तु इसके पीछे जो सिद्धान्त है वे आज भी हमारे लिये उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने 1920 में थे। अन्तिम बात यह है कि क्रेन वह सिखा रहे थे जिसे मैं ऊपर उठानेवाला सिद्धान्त कहता हूँ। हम अपने संबन्धों को लोगों को ऊपर उठाते या नीचे गिराते हैं। वह अपने छात्रों को बेहतर क्रियाशील होने के लिये सिखा रहे थे। क्रेन ने कहा, "संसार प्रशंसा का भूखा है। वह अभिनन्दन का

भूखा है। परन्तु किसी को अवश्य गेन्द को खेलना पहले बोलने के द्वारा प्रारंभ करना है और अपने साथी से एक अच्छी बात कहना है।" उसने बेन्जामिन फ्रान्कलिन की भावनाओं को गले से लगाया, जो विश्वास करते थे, "हमें प्रत्येक स्थिर शब्द का हिसाब रखना चाहिये–इसलिये हमें प्रत्येक स्थिर मौन का भी हिसाब रखना चाहिये।"

पाँच बातें जो प्रत्येक प्रोत्साहनकर्ता को लोगों के विषय में जानने की जरूरत है

अपने चारों ओर के लोगों के जीवन को प्रभावित करने की आपमें अद्‌भुत क्षमता है। आप से प्रोत्साहन किसी के दिन, सप्ताह और जीवन को पूरे बदलनेवाला हो सकता है जो उसे संपूर्णतः एक नई दिशा में ले जाए।

यदि आप नहीं जानते कि लोगों को कौन सी बातें प्रोत्साहित करती हैं तो उनका उत्साह बढ़ाना आपके के लिये कठिन है। अतः लोगों के छात्र बनिये और सीखिये कि उन्हें कौन सी बातें प्रभावित करतीं हैं। जानिये कि उन्हें कौन सी बातें ऊपर उठाती हैं। प्रारंभ करने के लिये, इन कुछ पाँच बातों के द्वारा प्रारंभ कीजिये जो मैं लोगों के बारे में जानता हूँः

1. प्रत्येक व्यक्ति कुछ बनना चाहता है।

प्रत्येक व्यक्ति सहायता चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उससे प्रेम किया जाए। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसके बारे में अच्छे विचार किये जाएँ। प्रत्येक व्यक्ति कुछ बनना चाहता है। छोटे बच्चों से लेकर बड़े बूढ़ों तक यह बात सच है।

आप दूसरे लोगों को यह महसूस करने में कैसे सहायता करेंगे कि वे कुछ हैं? उन्हें "10" के रूप में देखने के द्वारा। मैं विश्वास करता हूँ कि अधिकांश भाग में, लोग उनके विषय में हमारी अपेक्षाओं के अनुसार प्रतिक्रिया देते हैं, यदि आप उनके विषय में श्रेष्ठत्तम सोचते हैं, तो वे सामान्यतः अपना श्रेष्ठत्तम करते हैं। यदि आप लोगों को "10" के रूप में व्यवहार करते हैं तो वे "10" के रूप में प्रतिक्रिया देते हैं। यदि आप लोगों के साथ "2" के रूप में व्यवहार करते हैं तो वे "2" के रूप में प्रतिक्रिया देते हैं। लोग पहचाना जाना और दृढ़ीकरण चाहते हैं। यह एक गहरी मानवीय अभिलाषा है और लोगों को हम महान बनने में सहायता आसानी से कर सकते हैं यह दर्शाकर कि हम कैसे उनमें विश्वास रखते हैं।

2. कोई कितनी परवाह नहीं करता है ये वे तब तक नहीं जानते हैं जब तक वे नहीं जानते कि आप कितना परवाह करते हैं।

लोग यह जानना नहीं चाहते कि हम कितने स्मार्ट हैं। वे नहीं जानना चाहते हैं कि हम कितने आत्मिक हैं। वे नहीं जानना चाहते हैं कि हमारे पास कौन सी डिग्री हैं या हमारे पास कितनी संपत्ति है। एक बात जो वे वास्तव में जानना चाहते हैं, कि हम सच्ची रीति से उनकी परवाह करते हैं या नहीं। हमें अपने जीवन के द्वारा दूसरों के प्रति परमेश्वर के प्रेम को दिखाने की जरूरत है।

मैंने यह सबक कैटी हट्च्चीसन जो मेरे सन्डे स्कूल के दूसरी कक्षा के शिक्षक थे, से सिखा। वह अद्भुत थी। वह उसे प्रेम करती थी और मैं यह जानती थी। जब मैं बीमार पड़ गया और मैं कलीसिया जाना चुक गया, तो उस सप्ताह वह देखने आई थी।

"ओह, जॉन्नी पिछले रविवार को कलीसिया में तुम्हारी बहुत याद आई," उन्होंने कहा। "मैं देखना चाहती थी कि तुम कैसे हो।" उसने मुझे पचास पैसे दिये जो मेरे विचार से हजारों रूपयों के बराबर थे, और कहा, "मैं आशा करती हूँ कि अगले रविवार को तुम सन्डे स्कूल में आ सकोगे क्योंकि हम ने तुम्हें बहुत अधिक याद किया है। वास्तव में, जब तुम कक्षा में आओगे तो सुनिश्चित करना कि मैं तुम्हें देखूँ। इसलिये जब मैं पढ़ाने के लिये खड़ी हूँ, तो तुम अपने हाथों को उठाकर मेरी तरफ लहराना (उनके कक्षा में पचास के लगभग होते थे)। तब मैं तुम्हें देखूँगी, और मैं मुस्कुराऊँगी, और मुझे अच्छा लगेगा, और मैं अच्छे से पढ़ाऊँगी।"

जब रविवार आया तब चाहे मुझे अच्छा लगे या बुरा मुझे जाना ही था। मैं हाथों को हिलाती, वह मुस्कुराती, हिलहिलाती और सिखाती। मैं जानता था कि वह मेरी कितनी परवाह करती है, और इससे मुझे ऐसा लगा कि मैं कुछ भी कर सकती हूँ।

3. मसीह की देह का कोई भी व्यक्ति मसीह के देह के सभी व्यक्तियों के लिये है।

मसीही के रूप में बहुत से लोग स्वयं तक सीमित रहना चाहते हैं। और वे दूसरों के पहुँच के बाहर हो जाते हैं और वे अपने लिये दूसरों से भी अपेक्षा करते हैं। परन्तु मसीह का देह इस प्रकार से कार्य करने के लिये नहीं है।

जब एक मसीही अकेले रहने का प्रयास करता है, वह उस रोचक कहानी के ईटो का तह रखनेवाले के समान है, जिसके विषय मैंने एका बार पढ़ा था। उसे बगल के ही गली के चार मंजिल मकान के ही ऊपर से पाँच सौ पाउँड ईंटें हटाने की जरूरत थी। नीचे उसके स्वयं के द्वारा कहे गये शब्द दिये गये हैं जो एक बीमा दावा में से लिया गया है।

हाथों के द्वारा इतने सारे ईंटों को ले आना बहुत समय लिया होता, अतः मैंने निर्णय लिया कि उन्हें एक बाल्टी में भरकर तार के द्वारा नीचे उतारूँ जिसे मैंने मकान के ऊपर बान्ध रखा था। रस्सी जमिन पर अच्छी रीति से बान्धने के पश्चात् मैं मकान के ऊपर गया, बाल्टी को बान्धा और उसमें ईंटें भरे और मैं ने उसे बगल के रास्ते नीचे ऊतारा।

तब मैं बगल के रास्ते से नीचे गयी, रस्सी को खोला और ईंटों को उसमें से सुरक्षित रूप से नीचे रखा। परन्तु चूँकि मैं केवल 140 पाउँड का था, इसलिये पाँच सौ पाउँड का वजन मुझे भूमि में से इतनी तीव्रगति से झटका दिया कि मेरे पास यह सोचना का समय ही नहीं था कि मैं रस्सी से होकर जाऊँ।

जब मैं दूसरे और तीसरे मंजिल के बीच से गुजर रही थी मैंने बाल्टी को नीचे आते हुये पाया। यह हिसाब मेरे शरीर के ऊपरे हिस्से पर पड़े चोट और फटने का है।

मैंने मजबूती से रस्सी को पकड़ लिया जब तक मैं ऊपर नहीं पहुँचा जहाँ पर घिरनी में मेरा हाथ फँस गया। यह मेरे टूटे अंगूठे का हिसाब है।

उसी समय, बाल्टी ने बगल के हिस्से में टकराया और नीचे का हिस्सा गिर गया। ईंटों के वजन समाप्त होने के कारण बाल्टी चालीस पाउँड की रह गई, इसीलिये मेरा 140 पाउँड का वजन नीचे आने लगा। मैं ने ऊपर आते हुये खाली बाल्टी से टकराया यह हिसाब मेरे टूटे हुये एड़ियों का है।

हल्के से धीमा करते हुये मैं नीचे की ओर जाना जारी रखा और ईंटों की पंक्ति पर रह गया। यह हिसाब मेरे टूटे हुये कन्धों का है। इसी समय मैं ने अपने होश को पूरी रीति से खो दिया और मैं रस्सी और बाल्टी को जाने दिया जो मुझ पर आकर टकराया। यह मेरे सिर के चोट का हिसाब है।

और आपके बीमा फॉर्म के अन्तिम प्रश्न के उत्तर के रूप में यदि ऐसी परिस्थिति फिर से आएगी तो क्या करेंगे? कृपया सलाह दीजिये स्वयं यह कार्य करने का प्रयास करते हुये मैं समाप्त हो गया।

आत्मिक रूप से यही होता है जब लोग मसीह के देह का साथ संपर्क रहित बने रहते हैं। परमेश्वर ने हमें किसी को भी अकेले जाने के लिये नहीं बनाया है। हम एक दूसरे को प्रोत्साहन के लिये बनाये गया हैं। भाई और बहनों के रूप में हमें एक साथ यात्रा को पूरा करने की जरूरत है।

4. कोई भी जिस किसी को प्रोत्साहित करते हैं बहुत से लोगों को प्रभावित करते हैं।

बहुत से लोगों ने मेरी सहायता की है और मेरे जीवन में मुझे प्रोत्साहित किया है। 61 वर्ष की उम्र में मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ और मैं आश्चर्यचकित होती हूँ कि दूसरे मेरे प्रति कितने दयालु और उदार रहे हैं।

उन लोगों में से एक जिसने मेरे सातवी कक्षा के उमर में भला कार्य किया वह ग्लेन लेदरवूड नामक एक व्यक्ति ही था जो मेरे एक और अद्भुत सन्डे स्कूल शिक्षकों में से एक था। हम ओरनेरी समूह में थेः हमेशा बात करते, मजाक करते, हँसते, लड़ते–झगड़ते, बात करते सब कुछ करते परन्तु ध्यान से सुनते। परन्तु हम ग्लेन को ध्यान से सुनते क्योंकि वे हम से प्यार करने और प्रोत्साहित करने के लिये जीते थे।

एक दिन उनकी आवाज़ टूटने लगी और प्रत्येक बच्चा ग्लेन की तरफ मुड़कर देखने लगा। उन्होंने हमारी तरफ देखा और आँसूओं की धारा बह रही थी।

"कक्षा के तुरन्त पश्चात्" उसने कहा, "मैं स्टीव बेन्नर, फील कॉनरड, जुनियर फाउलर, और जॉन मैक्सवेल को कुछ क्षणों के लिये देखना चाहता हूँ। मेरे पास तुमसे कहने के लिये कुछ बड़ी बात है।"

कक्षा के पश्चात् जब हम मिले उन्होंने कहा, "प्रति शनिवार की रात मैं अपनी सातवीं कक्षा के प्रत्येक बच्चे के लिये प्रार्थना करता हूँ। पिछली रात मैंने महसूस किया कि परमेश्वर मुझे कह रहा है कि तुम चारों बच्चे परमेश्वर की सेवकाई के लिये बुलाये जाने जा रहे हो, और मैं चाहता हूँ कि सब से पहलें मैं तुम्हें ये बताऊँ। मैं यह भी चाहता हूँ कि सब से पहले मैं तुम लोगों के ऊपर हाथ रखकर तुम लोगों के लिये प्रार्थना करूँ।"

ग्लेन ने हमारे सिरों पर हाथ रखे और मुझे यह दिया जिसे मैंने सेवकाई का प्रथम अभिषेक माना और वह सच था। हम चारों सेवकाई में पासवान बनें।

बहुत वर्षों पश्चात् मैं ग्लेन से मिलने गयी और मैं ने उनसे पूछा कि उनके सन्डे स्कूल की कक्षाओं से इतने वर्षों में कितने लोग सेवकाई में हैं। उन्होंने कहा कि वे निश्चित तो नहीं थे, परन्तु उन्हें निश्चित रूप से जानते थे कि तीस लोग थे।

मुझे आश्चर्य होता है कि कितनी कलीसियाएँ उनके प्रेम और प्रोत्साहन से लाभ कमायी जो उन्होंने सातवीं कक्षा के बच्चों के साथ प्रति वर्ष किया। कितने जीवनों को उनके प्रोत्साहन के शब्दों ने प्रभावित किया? मैं शायद नहीं जानूँगी जब तक मैं स्वर्ग न पहुँचूँ। परन्तु मैं आपसे यह कह सकता हूँः कोई जो कुछ को प्रोत्साहित करते हैं बहुतों को प्रभावित करते हैं।

5. परमेशर सब से प्रेम करता हैं

बहुत से लोग किसी की सहायता करने या प्रोत्साहित करने के विषय में बहुत अधिक चुनाव करनेवाले होते हैं। वे अपने समान लोगों को ढूँढ़ते हैं। कुछ लोग यहाँ तक विश्वास करते हैं कि केवल उन्हीं लोगों को सहायता करनी चाहिये जो उनके समान विश्वास रखते और सोचते हों। यह ऐसा नहीं होना चाहिये। यह निश्चित ही ऐसा तरीका नहीं है जैसा यीशु ने किया।

वर्षों पूर्व मैं एक व्यक्ति के विषय में जाना जो एक गड्ढ़े में गिर गया और बाहर नहीं निकल पा रहा था–और कैसे दूसरों ने उसी के साथ व्यवहार किया।

एक आत्मगत व्यक्ति पास में आया और कहा, "मैं तुम्हारी दशा को महसूस करता हूँ।"

एक विषयपरख व्यक्ति पास आया और कहा, "यह तर्क संगत बात है कि कोई वहाँ पर गिर जाता।"

एक फरीसी आया और कहा, "केवल बुरे लोग ही गड्ढ़े में गिरते हैं।"

एक गणितज्ञ ने हिसाब लगाया कि कैसे व्यक्ति गड्ढ़े में गिरते हैं।

एक समाचार संवाददाता गड्ढ़े में गिरे हुये व्यक्ति का एक अच्छी कहानी लिखना चाहता था।

एक मौलिकसिद्धान्तोंवाला व्यक्ति आया और कहा कि, "तुम उसके हकदार हो।"

एक कालवनिस्ट आया और कहा, "यदि तुम उद्धार पाते तो तुम कभी भी उस गड्ढ़े में नहीं गिरते।

एक आरमेनियम व्यक्ति वहाँ आया और कहा, ''तुम बचाए गये थे फिर भी गड्ढ़े में गिर गये।"

एक चमत्कार करनेवाले ने कहाँ, "केवल ये अंगीकार करो कि तुम उस गड्ढ़े में नहीं हो।"

एक यतार्थवादी वहाँ आया और कहा, "हाँ, यह एक गड्ढ़े है।"

एक भूशास्त्री ने कहा कि, "गड्ढ़े में जो चट्टान है उसकी प्रशंसा करो।"

एक आईआर्एस् कार्यकर्ता ने कहा, कि क्या वह इस गड्ढ़े पर कर चुका रहा था। वहाँ के निरिक्षक ने पूछा क्या उसके पास गड्ढ़ा खोदने की अनुमति थी।

एक स्वयं पर तरस खानेवाले व्यक्ति ने कहा, "क्या तुम्हें मेरे गड्ढ़े के अलावा और कुछ नहीं दिखा।"

एक आशावादी ने कहा, "इससे भी बुरा हो सकता था।"

एक निराशावादी ने कहा, "और भी बुरी बात होगी।"

यीशु ने उस व्यक्ति को देखकर, नीचे उस तक पहुँचा, उसका हाथ पकड़ा और ऊपर गड्ढ़े से बाहर लाया।

यीशु लोगों के लिये मरने हेतु आया। वह लोगों में था और उनके साथ है। और मुझे और आपको लोगों के कार्य में शामिल होने की जरूरत है। हमें हमेशा मन में यह रखना चाहिये कि परमेश्वर सब से प्यार करता है और हमें दूसरों के साथ उसी प्रकार व्यवहार करने के जरूरत है जैसा यीशु उनके साथ करता। हमें उन्हें प्रोत्साहित करने की जरूरत है, जिन्हें परमेश्वर ने ऐसा होने के लिये बनाया है।

मैं गहराई से विश्वास करती हूँ, कि प्रत्येक जन को एक प्रोत्साहन करनेवाला बनना है और प्रत्येक जो यीशु को जानते हैं उन्हें और अधिक यीशु

के समान होना है – चाहे वह सब से नकारात्मक व्यक्ति ही क्यों न हो। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? क्योंकि मैं विश्वास करती हूँ कि हम सबको दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव डालना है। हमें दूसरों के जीवन में मूल्यवृद्धि करना है, न कि उन्हें मूल्यहीन करना है।

इसलिये कृपया मुझे आप का प्रोत्साहनकर्ता बनने की अनुमति दीजिये। आप एक अन्तर ला सकते हैं। आप दूसरों के जीवन में मूल्य ला सकते हैं। आप यीशु को अच्छी रीति से प्रतिनिधित्व दे सकते हैं और किसी भी दिन यह शब्द सुन सकते हैं, "यह अच्छे, और विश्वासयोग्य सेवक तुम ने अच्छा किया।" प्रत्येक व्यक्ति एक प्रोत्साहनकर्ता बन सकता है। आपको धनी नहीं होना है। आपको श्रेष्ठ होने की जरूरत नहीं है। आपको बहुत बड़ा चमत्कार करनेवाला नहीं होना है। आप में यह सब कुछ एक साथ होने की जरूरत भी नहीं है। आपको केवल लोगों की परवाह करने की जरूरत है और प्रारंभ करने का इच्छुक होने की जरूरत है। आपको कुछ भी बड़ा या आडम्बरपूर्ण करने की जरूरत नहीं है। छोटी बातें जो कुछ आप कर सकते हैं उनमें पर्याप्त सामर्थ्य है कि आपकी कल्पना से भी परे दूसरों को प्रभावित करें।

- किसी को अच्छा करते हुये पकड़ें।
- सच्चाई से किसी का अभिनन्दन करें।
- जरूरत में किसी की सहायता करें।
- किसी के दुःख में सहभागी हों।
- सफल होनेवाले किसी के साथ आनन्द मनायें।
- किसी को आशा प्रदान करें।

आप यह कर सकते हैं। अभी क्रियाशील हों। और यह कथन मन में रखें जिससे मैं हमेशा प्रेम करती हूँ। "मैं इस संसार से केवल एक बार गूजरने की अपेक्षा करती हूँ। इसलिये जो भी भलाई मैं कर सकता हूँ या कोई दया के काम जो मैं अपने किसी साथी प्राणी के साथ दिखा सकता हूँ, तो मुझे वह अभी करने दीजिये। मुझे अनदेखा या मुझे उसका तिरस्कार करने मत दीजिये, क्योंकि मैं इस रास्ते से फिर नहीं आऊँगी।"

अध्याय

10

दयालुता के उत्साहपूर्ण कार्य

और आईए हम हम एक दूसरे की चिन्ता करते
रहें और सीखें कि किस प्रकार प्रेम और
भले कामों में उसका सकते हैं।
इब्रानियों 10:24

क्या आप ने कभी जीवन साथी, परिवार के सदस्य, या मित्र के साथ बैठकर उन तरीकों पर विचार किया है, कि कैसे दूसरों के लिये आशीष बन सकते हैं। मैं यह कहने का साहस करती हूँ कि आप में से अधिकांश ने ऐसा नहीं किया है, और तीन वर्ष पहले तक मैंने भी नहीं किया था। अब जैसा कि मैं ने अध्याय छः में बताया। मैं ने पाया कि ऐसी बातचीत रोचक और बहुत सहायक होते हैं। हम सब उत्तेजित होते हैं जब हम उद्देश्य पूर्वक दूसरों लोगों के सहायता करने पर विचार विमर्श करते हैं। प्रेम क्रान्ति नहीं होगा यदि हम उद्देश्यपूर्वक कार्यों को न करें जो दूसरों की सहायता करता है। हमारे लक्ष्य होने चाहिये और उसकी ओर अवश्य बढ़ना चाहिये।

एक बार मैंने निर्णय लिया कि मैं दूसरों को प्रेमी बनाना अपने जीवन का विषय बनाने का निर्णय लिया। मैं ने प्रेम दिखाने के विभिन्न रास्तों, तरीकों, की भूखी थी। प्रेम बात करने का एक सिद्धान्त नहीं है, यह कार्य है

(1 यूहन्ना 3:18 देखिये)। हम निश्चित ही प्रेममय शब्दों से लोगों से प्रेम कर सकते हैं जो उन्हें प्रोत्साहित करता और यह अभिव्यक्त करता है कि हम कितना उन्हें बहुमूल्य सोचते हैं। जैसा कि मैं ने पीछले अध्याय में बताया। परन्तु हमें ऊर्जा, संपत्ति और धन जैसे श्रोतों का इस्तेमाल दूसरों को प्रेम करने के लिये उपयोग करने की जरूरत है।

आप इस बात से कायल होंगे कि आपको कुछ देना नहीं है। हो सकता है आप कर्ज में हों, अपने बिलों के भूगतान का भरसक प्रयास करते हों–और दूसरों को देने का विचार ही आपको कूड़न पैदा करता हो या शायद आपको उदास करता हो क्योंकि आप देना चाहते हैं, परन्तु नहीं देखते कि कैसे आप कर सकते हैं। निःसन्देह हजारों ऐसे रास्ते हैं जिससे आप दे सकते हैं और प्रेम फैला सकते हैं, यदि आप उत्साहपूर्वक उनकी खोज करेंगे।

जैसा बोलते हैं वैसा चलिये

मैं विश्वास करती हूँ कि लोगों से यह कहने में असफल होना कि क्या करना है और किस प्रकार करना है एक बहुत बड़ी गलती है। बहुत से लोग प्रेम के बारे में बात करते हैं, परन्तु केवल बात करना लोगों में कोई भी विशेष या ठोस विचार नहीं देता है कि व्यवहारिक रूप से कैसे प्रेम दिखाना है। मैंने अभी अभी प्रेम के ऊपर एक संपूर्ण किताब पढ़ा है। यह 210 पृष्ठ का था और इस शिक्षा से भरा था कि यीशु ने किस प्रकार कहा कि एक नई आज्ञा हमें पालन करना है कि एक दूसरे से प्रेम करें जैसा उसने हम से प्रेम किया और उस प्रेम के द्वारा संसार उसे जानेगा (यूहन्ना 13:34–35 देखिये)। परन्तु मैंने कोई भी व्यवहारिक विचार या रचनात्मक विचार नहीं पाया कि किस प्रकार से यह वास्तव में एक व्यक्ति के जीवन में दिखाई देगा। लेखक ने बार–बार यह विन्दु साम्हने रखा कि एक दूसरे को प्रेम करना सब से महत्वपूर्ण कार्य है जो हम कर सकते हैं। परन्तु मैं ईमानदारी पूर्वक कह सकती हूँ कि यदि उसका पुस्तक ही प्रेम के विषय में संपूर्ण ज्ञान था जो मुझे प्राप्त हुआ, तो मेरे पास कोई भी अनुमान नहीं है कि मैं कैसे इसे करना प्रारंभ करूँ। मैं विचार करती हूँ लोग जो सही है वह करना चाहते हैं। परन्तु उन्हें किसी की भी अगुवाई करने के लिये जरूरत है जो उन्हें सही दिशा की ओर संकेत दिखाये।

यीशु ने न केवल प्रेम के विषय में बात किया, परन्तु स्मरण करें कि प्रेरितों 10:38 कहता है, वह प्रति दिन उठता और भलाई करता, और उन सभों को

चंगा करता जो निराश और शैतान के द्वारा पीड़ित थे। उसके शिष्यों ने उसे प्रतिदिन लोगों की सहायता करते, उनकी सुनते और या किसी जरूरतमन्द को सहायता करते हुये उसकी योजनायें बाधित होते हुये देखा। उन्होंने देखा कि वह यह सुनिश्चित करता था कि उनके पास हमेशा किसी की सहायता करने धन हो। वे इस बात के भी गवाह थे कि वह क्षमा करने में और कमजोरों के साथ धैर्य दिखाने में शीघ्र था। वह दयालु, नम्र और सहन करनेवाला और किसी के विषय में हार नहीं माना। यीशु ने न केवल लोगों से प्यार करने के विषय में बात ही नहीं किया परन्तु उसने अपने चारों ओर के हर एक लोगों को दिखाया कि कैसे प्रेम करना है। हमारे शब्द महत्वपूर्ण हैं, परन्तु हमारे कार्य शब्दों से अधिक महत्व रखते हैं।

> हमारे शब्द महत्वपूर्ण हैं, परन्तु हमारे कार्य शब्दों से अधिक महत्व रखते हैं।

हमारी सब से बड़ी समस्या

मसीहियत में हमारी सबसे बड़ी एकलौती समस्या है कि हम लोगों को यह कहते हुये सुनते हैं कि क्या करना है – और हम भी दूसरों से कहते हैं कि क्या करना है – और हम अपने कलीसिया से या बाइबल अध्ययन से बाहर की ओर चल देते हैं और कुछ नहीं करते हैं। यह कोई बड़ी बात नहीं कि जो हम सोचते हैं वह हम जानते हैं। हम क्या जानते हैं इसका प्रमाण हम क्या करते हैं में हैं। यीशु ने कहा, हम अपने फलों के द्वारा पहिचाने जायेंगे (मत्ती 12:33 देखिये), जिसका अर्थ है कि लोग कह सकते हैं कि हम वास्तव में भीतर कौन हैं, हमारे जीवन और हमारे स्वभाव के द्वारा हम क्या उत्पन्न करते हैं इसके द्वारा।

मुझे अवश्य ही लगतार स्वयं से यह पूछना चाहिये, "प्रेम दिखाने के लिये मैं वास्तव में क्या कर रही हूँ?" हम प्रेरित पौलुस के अनुसार ज्ञान के द्वारा धोखा खा सकते हैं। हम जो जानते हैं उस घमण्ड के कारण इस विन्दु तक अन्धे हो सकते हैं कि जहाँ हम कभी नहीं देखते कि इनमें से किसी का भी वास्तव में अभ्यास नहीं कर रहे हैं। पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों से कहा कि केवल ज्ञान लोगों को घमण्डी बना देता है, परन्तु प्रेम (स्नेह और भली इच्छा और बेनेवोलेन्स) लोगों को अपनी भरपूरी तक बढ़ने के लिये उन्नत करता,

बनाता, और उत्साहित करता है (1 कुरिन्थियों 8:1 देखिये)। हम सबको सुनिश्चित करना चाहिये कि जो हम कहते हैं और जो हम करते हैं उसके बीच में कोई रिक्त स्थान न हों। इसमें आश्चर्य नहीं कि संसार बहुत से मसीहियों को पाखण्डी कहता है क्योंकि वे हैं।

मैंने बहुत से वर्षों तक एक कलीसिया में उपस्थित रही जो वर्ष में एक बार मिशन के विषय में बात करती है, वह भी "मिशन रविवार" पर। मुझे स्मरण नहीं है कि मैंने कभी अपने ही शहर के गरीबों और पीड़ितों तक पहुँचने के बारे में कभी कुछ सुना हो। अधिकांश सन्देश जो मैं ने सुने वे सैद्धान्तिक विश्वास संबन्धी बातों के विषय में थे न कि मसीहियत के व्यवहारिक पहलुओं पर और मुझे अपने समाज में कैसे व्यवहार करना चाहिये इस विषय पर। ठोस सिद्धान्त आवश्यक हैं परन्तु यह समझना कि मुझे अपना प्रतिदिन का जीवन किस प्रकार जीना है तुल्य रूप से महत्वपूर्ण है। कलीसिया गप मारना, विभाजन, और ऐसे लोगों से भरी हुई थी जो कलीसिया में पद चाहते थे। बहुत सी रीति से हम बाकि संसार हम भिन्न व्यवहार नहीं रखते थे, मुझे अन्ततः उस कलीसिया से बाहर जाने को कहा गया क्योंकि मैं परमेश्वर के अलौकिक वरदानों के बारे में बहुत ही उत्साही थी। मैंने पाया कि ये बातें मसीहियों के लिये उपलब्ध थी। मैं एक उत्तेजित, उत्साही मसीही बन गई थी और कहा गया कि मैं बहुत ही भावनात्मक हो रही हूँ और मुझे शान्त होने की जरूरत है।

तब मैं दूसरी कलीसिया में गई जहाँ पर की लोग भी उन बातें के लिये उत्साहित थे जिनके लिये मैं भी दृढ़तापूर्वक महसूस करती थी। वे दूसरों को यीशु के द्वारा उद्धार की गवाही देने में बहुत अधिक शामिल थे। मैं उत्तेजित थी और गहराई से परमेश्वर की सेवा करना चाहती थी इसलिये मैंने महिलाओं के एक समूह को संगठित किया और प्रति शुक्रवार को हम सुसमाचार के पर्चे लेकर बाहर जाते थे। हम उन्हें लोगों को देते जब वे दुकानों से बाहर निकलते और पार्किन्ग के स्थान पर कारों के काँच पर फँसा देते थे। और सप्ताह के अन्दर ही हम ने दस हजार छोटी पुस्तिकायें बाँट दी थी जिसमें सुसमाचार के सन्देश थे। मैंने अपने घर में प्रति मंगलवार शाम को बाइबल अध्ययन चलाया।

मैं परमेश्वर में बढ़ रही थी और उसकी सेवा के विषय में बहुत उत्तेजित थी, परन्तु कलीसिया के प्राचिनों ने मुझे एक सभा में बुलाया और कहा कि

मैं विद्रोही हो गई हूँ क्योंकि मैं बिना अनुमति से महिलाओं को पर्चे बाँटने के लिये अलग किया। उन्होंने डेव और मुझ को सूचित किया कि मेरे स्थान पर डेव बाइबल अध्ययन करवायेंगे। वह कलीसिया अब नहीं रह गया है क्योंकि केवल इसलिये कि उन्होंने लोगों को नियन्त्रित करना चाहा। और ऐसा करने में अक्सर उन्होंने परमेश्वर द्वारा प्रदत्त वरदानों को बुझा दिया।

जितना मुझे स्मरण आता है उससे कहीं अधिक वर्षों तक मैं दूसरी कलीसिया में जाती रही जो अच्छी बातें सिखाती थे। परन्तु ईमानदारीपूर्वक कहूँ तो जब मैं पीछे देखती हूँ मैंने वहाँ पर बहुत कम वास्तविक प्रेम देखा। वह कलीसिया बहुत कम प्रचार सेवा करती थी और संसार के प्रचार सेवा के लिये उनका वजट बहुत छोटा था और क्रमशः समाप्त हो गया। हमारे पास ऐसे अगुवे भी थे जो स्वार्थी, घमण्ड से भरे, जलन रखनेवाले और दूसरों की सफलता से भयभीत भी थे। कुछ लोग नियन्त्रित करते और बहुत अधिक अपरिपक्व थे। मैं प्रत्येक बार कूढ़ती थी जब मैं सोचती कि मैंने जीवन का बहुत हिस्सा इन स्वार्थी लोगों के बीच में बर्वाद कर दिया है। कलीसिया को सामान्य रूप से और विशेष रूप से स्थानीय कलीसियाएँ प्रचार सेवा के लिये बुलाई गई है न कि भीतर की सेवकाई के लिये। कलीसिया का लक्ष्य समूदायों, शहरों में, देशों में और संसार में गवाह बनना है (प्रेरितों 1:8 देखिये)।

कलीसिया उत्सुकता पूर्वक प्रेम की वास्तविकता में कार्य करने हेतु है, जिसे बाइबल स्पष्ट रीति से धीरज, दयालुता, दीनता, दूसरों की सफलता पर आनन्द, निःस्वार्थता, देना, हमेशा उत्तम पर विश्वास करना, क्षमा करने में जल्द होना, अन्याय से बढ़कर करूणा दिखाना, बेनेवोलेन्स, अच्छे कार्य, और गरीबों, विधवाओं, अनाथों, पितृहीनों, भूखों, बेघरों, और पीड़ितों, की सहायता करना। प्रेम दूसरों की भलाई के लिये अपना जीवन देता है। यतार्थ में प्रेम को सक्रिय रूप से कार्य करने देना है अन्यथा वह मर जाता है। उसे वहना और बढ़ना है।

आप अपने तरस भरे हृदय से क्या करेंगे?

पहला यूहन्ना 3:17 एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछता हैः ''पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है?'' दूसरें शब्दों में यह पद कहता है, कि जब हम एक जरूरत देखते हैं तब निर्णय लेना है कि अपने हृदय को खोलना है या बन्द करना है, परन्तु यदि हम बार–बार

बन्द रखने का निर्णय लेते हैं तो परमेश्वर का प्रेम हम में जीवित और बना नहीं रह सकता है। प्रेम की प्रकृति अपेक्षा करती है कि वह सक्रिय हो क्योंकि वह एक जीवित वस्तु है। परमेश्वर प्रेम है!

यूहन्ना ने एक सौम्य और चौंकाने वाली टिप्पणी की जब उसने कहा कि "जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि (नहीं जानता और उसे कभी नहीं जाना है) परमेश्वर प्रेम है" (1 यूहन्ना 4:8)। हम एक बात में एक त्वरित शिक्षा यीशु के कदमों पर अध्ययन करने से प्राप्त कर सकते हैं कि प्रेम हमारे प्रतिदिन के जीवन में किस प्रकार होना चाहिये। या जैसा कि एक व्यक्ति ने कहा, "शायद, हम यीशु मसीह के ठहराव का अध्ययन करने से अधिक सीख सकते हैं।" उसके पास हमेशा लोगों के लिये समय था! वह हमेशा परवाह करता था! चाहे वह कहीं भी जा रहा हो, वह जरूरतमन्दों की सहायता करने के लिये रूका करता था।

आईए हम व्यवहारिक बनें

मैंने सैंकड़ों लोगों से कहा है कि वे मेरे साथ उन तरीकों को बाँटे जिनके विषय में वे विश्वास करते हैं कि हम प्रेम दिखा सकते है। मैंने किताबें पढ़ी है, इन्टरनेट में खोजा है, और अपने प्रतिदिन के जीवन में लोगों से प्रेम करने के इस विषय को समावेशित करने के रचनात्मक विधियों को ढूँढ़ने की अपने स्वयं की यात्रा में बहुत उत्सुक रही हूँ। मैं आपके साथ कुछ एक बातें बाँटना चाहती हूँ जो मैं ने सिखा है, परन्तु मैं आपको रचनात्मक होने और तब दूसरों के साथ अपने विचारों को बाँटने के लिये उत्साहित भी करती हूँ। आप डब्ल्यू www.theloverevolution.com को खोल सकते हैं, जो प्रेम क्रान्ति के लिये अधिकारिक वेसाईट है और वहाँ पर आप प्रेम क्रान्ति के सभी सामाजिक पृष्ठों, चित्रों, डाउनलोर्ड़ और बहुत सारे उपकरणों के लिये लिंक प्राप्त कर सकते हैं जो इस आन्दोलन को आगे बढ़ने में सहायता करने के लिये आप उपयोग कर सकते हैं। आप अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँट सकते हैं, साथ ही साथ उनसे सीखने का अवसर भी आपको प्राप्त होगा। स्मरण रखें.....आप प्रेम क्रान्ति हैं! आपके सक्रिय भागिदारी के बिना यह काम नहीं करेगा।

यहाँ पर कुछ विचार दिये गये हैं जिनको हम ने कुछ लोगों से इकट्ठा किया और पाया है:

- जब यह प्रकट है कि आप और कोई और व्यक्ति एक ही स्थान पर गाड़ी खड़ा करना चाहते हैं, तो दूसरे व्यक्ति को ऐसा करने दीजिये और अपने चेहरे पर मुस्कुराहट के साथ ऐसा करने दीजिये।
- किसी बुजुर्ग पड़ोसी के बगीचे की घास काट दें या उनकी खिड़कियों पर से बर्फ या गर्द्र पोंछ दें।
- एक बुजूर्ग व्यक्ति के घर को साफ कीजिये या उनके लिये बाजार करने का प्रस्ताव रखिये।
- जिस व्यक्ति के पास आवागमन की सुविधा नहीं है, उस व्यक्ति को कलीसिया जाने या अन्य जगहों पर जाने के लिये अपनी गाड़ी में स्थान दीजिये चाहे वह आपके मार्ग में न हो।
- बिना हस्तक्षेप किये किसी को ध्यान से सुनिये।
- एक दयालु चालक बनिये।
- अजनबी के लिये एक द्वार खुला रखिये और उसे अपने आगे जाने दीजिये।
- यदि आप का झोला सामानों से भरा हुआ हो और आपके पीछे के व्यक्ति के पास दो ही वस्तु हो तो उसे अपने आगे जाने दीजिये।
- एकलौते माता–पिता के बच्चे का कुछ देकर देखरेख कीजिये ताकि वह कुछ समय अकेले रहने या किसी योजना को शान्तिपूर्वक समाप्त करने का समय निकाल सकें।
- एक व्यक्ति को छुट्टियों में अपने घर आमन्त्रित कीजिये जिसका परिवार शहर में न हो।
- प्रशंसा करने के लिये कार्ड़ या फूल भेजिये।
- अकेली माँ के लिये एक गिफ्ट सार्टिफिकेट दीजिये कि वह अपने बच्चों को बाहर खाने पर ले जा सके।

यह कार्य करता है!

जो विचार हम ने प्राप्त किये उनमें से एक थाः "गोपनीय रीति से किसी रेस्टोरेन्ट में किसी के लिये भूगतान कीजिये जहाँ पर आप खा रहे हैं।" डेव और मैं ऐसा अक्सर करते हैं और उसके बड़े अच्छे परिणाम पाये हैं। हम ने एक शाम दो बुजुर्ग महिलाओं को रेस्टोरेन्ट में देखा। वे अच्छी रीति से

वस्त्रधारण किये हुये थे और बहुत ही प्यारी लग रहीं थीं। हमने उनके खाने के लिये भूगतान करने की एक अभिलाषा महसूस की और बैरे (वेटर) के द्वारा ऐसा किया। हम ने उससे कहा कि हमें पहले जाने दो और तब उन्हें बताओं कि कोई अपने भोजन के द्वारा आपको आशीषित करना चाहते हैं। निश्चय ही उन्होंने उनसे पूछा कि वे कौन थे और बैरे (वेटर) ने कहा कि मैं टेलीविजन पर की एक सेविका हूँ और हम केवल उनके चेहरे पर एक मुस्कुराहट देना चाहते थे।

महीनों पश्चात्, हम उसी रेस्टोरेन्ट में थे और उनमें से एक महिला हमारे पास आई और हम से पूछी कि, क्या हम उन्हें स्मरण करते हैं। हम अनिश्चित दिख सकते थे, इसलिये उसने जल्द ही उस घटना को दोहराया, और तब हम से कहा कि जिस रात हम ने उनके लिये भोजन खरीदा था उसका जन्मदिन था और उनके लिये यह कितना अधिक महत्व रखता था कि कोई उनके लिये ऐसा किया। उन्होंने कहा कि वह मेरे टेलीविजन कार्यक्रम की खोज की और तब से वह उसे देखती रही है। हमने न केवल उनको प्रसन्न करने का आनन्द प्राप्त किया परन्तु अतिरिक्त रूप से आशीषित हुये कि परमेश्वर ने उनके जन्मदिन पर हमें इस्तेमाल किया। अब वह भी परमेश्वर के वचन से टेलीविजन कार्यक्रम के द्वारा लगातार शिक्षा प्राप्त कर रही है और केवल परमेश्वर जानता है कि इसका क्या फल होगा। इसलिये दयालुता का छोटा सा कार्य और एक छोटा सा आर्थिक निवेश ने न केवल आनन्द लाया परन्तु उन्हें परमेश्वर के वचन से भी परिचित कराया।

एक और सलाह जो हम ने पाया वह थाः "दुकान में किसी के सामान के लिये भूगतान कीजिये।" हमारे बेटे ने एक कहानी बताया जिसने मेरे हृदय को छु लिया और उसकी माता होने पर मुझे गर्व हुआ। वह और उसकी पत्नी दुकान पर थे और उसने एक महिला को देखा जो थकी हुई तनावग्रस्त दिख रही थी, और उसके पास बहुत कम धन भी था। और ऐसा लग रहा था कि वह बहुत सतर्क होकर खरीदारी कर रही है और अपने झोले में सामान रखने में बहुत अधिक चुनाव कर रही थी। वह उस तक गया, उसे सौ डॉलर का एक बिल दिया और उससे उन वस्तुओं को खरीदने के लिये कहा, जिनकी उसे जरूरत थी और बाहर निकल गया। मैं ने एक बार पढ़ा था कि प्रेम अपने आपको व्यक्त करने के अवसर के लिये छाया में खड़ा रहता है, बाहर आता है और अपना कार्य करता है, और वापस छाया में अगले अवसर का इन्तजार करने के लिये चला जाता है। मैं सोचती हूँ कि यह एक बहुत सुन्दर विचार है न?

मैं अक्सर लोगों पर ध्यान देती हूँ, जो निरूत्साहित दिखते हैं और उन्हें कुछ एक छोटा सन्देश के साथ देती हूँ, "परमेश्वर आप से प्रेम करता है।" बहुत बार, मैं परमेश्वर के बारे में कुछ कहती भी नहीं, मैं उसके गुणों को दिखाती हूँ! मैंने एक छोटी लड़की को देखा जब उसे थोड़ी सी छुट्टी मिली थी जहाँ पर वह काम करती थी। वह एक मेज पर अकेले बैठी हुई थी, और वह बहुत थकि हुई दिख रही थी। मैं ने उसे पचास डॉलर दिया और कहा, "मैं तुम्हें आशीष देना चाहती हूँ। मैं शर्त लगा सकती हूँ कि तुम बहुत कठोर परिश्रम करती हो और मैं चाहती हूँ कि तुम जानों कि मैं तुम्हारी प्रशंसा करती हूँ।" वह बहुत चकित हुई और तब कहा, "यह बहुत श्रेष्ठ कार्य है जो किसी ने कभी मेरे साथ किया है।"

मैं नहीं सोचती कि हम जानते हैं कि कितने लोग हमारे आस पास प्रतिदिन चलते हैं जो अकेला और कमतर महसूस करते हैं और उनके पास निशर्त प्रेम का कोई अनुभव नहीं है। वे कुछ "मुफ्त" पाने या कुछ ऐसा पाने के आदि नहीं हैं जिसको उन्होंने कमाया नहीं हो या जिसके वे हकदार नहीं हो। मैं सोचती हूँ कि लोगों के लिये ऐसे कार्य करना एक आशीष बनना है और यह परमेश्वर के प्रेम को दिखाने के अद्भुत तरीके के अलावा कुछ नहीं है।

भलाई करना न भूलो

इब्रानियों 13:16 हम से निवेदन करता है, कि "भलाई करना और उदारता दिखाना, उदार होना, ओर जरूरतमंद (संगति के प्रमाण और कलीसिया के मूर्त रूप में) को देना या सहयोग करना न भूलें या अनदेखा न करें क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है।" यद्यपि यह पद विशेष करके कलीसिया के लोगों के लिये कार्य करने के विषय में कहता है, मैं जो बात कहना चाहती हूँ वह इस प्रकार का उदार जीवन जीना परमेश्वर को प्रसन्न करता है। बहुत सारे पद हैं जो प्रत्येक व्यक्ति के साथ भलाई करने के लिये रहता है, केवल उनके साथ नहीं जिन्हें हम अपने समान मनवाले कहते हैं या जो हमारी कलीसिया में आते हैं। उदाहरण के लिये 1 थिस्सलुनिकियों 5:15 हम से कहता है, "सावधान! कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे; पर सदा भलाई करने पर तत्पर रहो, आपस में और सब से भी भलाई ही की चेष्टा करो।"

मुझे आपको उत्साहित करने दीजिये कि उन बातों के विषय में सोचिये जो आप लोगों के लिये कर सकते हैं जो आपकी बहुत रीसि से सहायता करते

हैं, जैसे आपका सामान उठाना या चिट्ठी पहुँचाना। ये लोग हैं जो हमारे जीवन में हर समय रहते हैं, परन्तु हम शायद ही कभी सोचते हैं कि उनके लिये उनका काम क्या है। निश्चित ही मैं दिनभर बदबू में रहना और कचरा इकट्ठा करना पसन्द नहीं करूँगी।

मेरी बेटी ने एक बार अपने कचरा इकट्ठा करनेवाले को एक प्रशंसाभरी टिप्पणी दी और उन्हें दोपहर के भोजन खरीदने के लिये एक गिफ्ट कूपन दिया। मैं सोंचती हूँ कि ये बातें न केवल आशीषित करती है, परन्तु ये लोगों को चकित भी करती है क्योंकि ये लगभग कभी नहीं होते। संसार ऐसे लोगों से भरी हुई है जो कठिन परिश्रम करते हैं जो बहुत सुखदायक नहीं होते और कोई उन ध्यान भी नहीं देता।

मैंने एक बार एक महिला को एक डिपार्टमेन्ट स्टोर में बाथरूम साफ करते हुये देखा जहाँ मैं खरीदारी करती हूँ और मैं ने उसे कुछ धन दिया और कहा, "तुम्हें देखकर ऐसा लगता है कि तुम कठोर परिश्रम करती हो, और मैंने सोचा कि तुम्हें एक आशीष देना चाहिये।" मैंने मुस्कुराई और वहाँ से जल्द चल दी। कुछ क्षणों पश्चात् उसने मुझे जूते के विवाद में ढूँढ़ निकाला और अपने धन्यवाद को मुझ पर प्रकट किया और मुझ से कहा इस दया के कार्य ने उसे कितना ऊपर उठा दिया।

उसने मुझसे कहा कि निश्चित ही वह कठोर परिश्रम करती है और महसूस करती है कोई उसको इस तथ्य पर ध्यान नहीं देता है। आप आश्चर्यचकित होंगे कि आपके हृदय में क्या होगा कि यदि आप दूसरों पर ध्यान देने की आदत डालते हैं जिन पर अक्सर ध्यान नहीं दिया जाता है। परमेश्वर उनके लिये ध्यान देता है और वह उसे प्रसन्नता होंगी कि आप उसके प्रयास में सहभागी के रूप में उपलब्ध हों।

सामान्य सौजन्यता का अभ्यास कीजिये

जब हम दूसरों को प्रेम दिखाने के लिये विचार आमन्त्रित किये, तो एक व्यक्ति ने लिखाः "हमेशा "कृपया" और "आपको धन्यवाद" कहिये।" यह सामान्य सौजन्यता के दो रूप में और निश्चित ही रूखे के बदले में सौजन्यभाव रखना दूसरों के लिये आदर प्रकट करने का एक तरीका है। मैं विशेष करके आपको घर में अपने परिवार के साथ सौजन्यभाव रखने के लिये उत्साहित करती हूँ। मैं हमेशा डेव को धन्यवाद कहना स्मरण रखने का प्रयास करती हूँ जब डेव

ने कोई ऐसा कार्य किया हो जो मैंने करने के लिये कहा है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम अपने प्रियों पर अधिक ध्यान नहीं देते। लोगों के बीच में अच्छे स्वभाव रखना बन्द दरवाजों के पीछे अपने घर में हमारा जो सामान्य व्यवहार रहता है उसका छलकाव होना चाहिये।

1 कुरिन्थियों 13:5 के अनुसार प्रेम रूखा नहीं है। रूखापन प्रायः स्वार्थता में पहुँचाता है और इससे लड़ने का एक तरीका हमेशा अच्छी आदत रखना है। हमारा समाज रूखेपन, कठोरता और क्रूरता से भरा हुआ है, परन्तु यह परमेश्वर के गुणों को प्रकट नहीं करता है। यीशु ने कहा, "क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है" (मत्ती 11:30), और हमें उसके उदाहरण का अनुकरण करने की जरूरत है।

हमें निश्चित ही धन्यवादी होने और अपने धन्यवाद को अभिव्यक्त करने के विन्दु पर पहुँचने की जरूरत है। बहुत से स्थानों पर बाइबल बताती है कि हमें धन्यवादी होना और ऐसा कहना है। हम सोच सकते हैं कि हम धन्यवाद से भरे हुये और धन्यवादी लोग हैं, परन्तु हमारे हृदय में जो है वह मुँह से बाहर आता है (मत्ती 12:34 देखिये)। यदि हम यतार्थ में प्रशंसा करनेवाले हैं तो धन्यवाद की अभिव्यक्ति हम में से स्वभाविक रूप से आना चाहिये।

समय एक बड़ा उपहार है-अपनी योग्यताओं को दीजिये

आपके गुण विशेष चाहे जो भी हो उनके लिये सदा भूगतान चाहने या उम्मीद करने के बजाय उपहार के रूप में दीजिये। उदाहरण के लिये, यदि आप एक फोटोग्राफर हैं तो अपने किसी मित्र के लिये या किसी कम वजट वाले व्यक्ति के लिये विवाह का फोटो खींच दीजिये।

यदि आप एक बाल काटनेवाले हैं, तो एक बेघर के निवास पर जाने के प्रस्तुत होईये और महीनें में एक बार या अपनी इच्छानुसार अधिक बार बाल काटने का प्रस्ताव रखिये।

मेरा एक मित्र कलात्मक रूप से पेन्ट करनेवाली है और वह हाल ही में एक कठिनाई में पड़ी महिला के घर को पेन्ट करने में तीन दिन व्यतीत की।

परमेश्वर ने हम में से हर एक को योग्यातायें दी है और हमें दूसरों की भलाई के लिये उसका इस्तेमाल करना है।

तीसरे अध्याय में मैंने एक महिला के बारे में बताया था जिसके पास बहुत कम धन था और वह मिशन को आर्थिक रूप से सहायता करना चाहती थी। ऐसा वह अपने द्वारा बनाये गये केक को बेचकर मिशन के लिये धन इकत्रित करती थी। उसकी कहानी यह बताती है कि यदि हम कुछ भी नहीं करने से इन्कार करेंगे तो हम कुछ पाने के योग्य होंगे जो हम कर सकते हैं। और जब हर कोई इसमें शामिल होते हैं तो वह समय दूर नहीं जब हमारे संसार में भलाई बुराई पर विजय पा लेगी।

कुछ लक्ष्य निर्धारित कीजिये

आईये हम लक्ष रखें! लक्ष्य रखने और उन तक पहुँचने की योजना रखने में मैं बहुत मजबूत रूप से विश्वास करती हूँ। आप अपने पासवान को सलाह दे सकते हैं कि तो वे इस बात पर सहमत हों कि दयालुता का यह कार्य अगले तीन घन्टों के अन्दर करें। कल्पना करें क्या होगा यदि यह संसार भर में प्रारंभ हो जाए।

इस अध्याय में मैंने असंख्य तरीकों में से कुछ एक तरीकों पर प्रकाश डाला है जिससे हम दूसरों के प्रति प्रेम दिखा सकते हैं – ये विचार आशापूर्वक आपकी यह समझने में सहायता करते हैं कि आप किस प्रकार के कार्य कर सकते हैं। यह कहना कि हम कुछ नहीं कर सकते सत्य नहीं हैं। हम बहाने बना सकते हैं, परन्तु बहाने स्वयं को धोखा देने और कुछ नहीं करने के लिये स्वयं के बचाव के अलावा कुछ नहीं है। आप कहीं पहले से अधिक जीवित होंगे यदि आप उत्साहपूर्वक दूसरों तक पहुँचते हैं। हजारों लाखों लोग संसार में महसूस करते हैं कि उनका कोई लक्ष्य नहीं है और वे अपने जीवन के लिये परमेश्वर के इच्छा को कोसते हैं और भ्रम जीते हैं।

यीशु की इन शब्दों को न भूलें: "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो, जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो" (यूहन्ना 13:34)। बिना सन्देह के यह हमारा लक्ष्य है और हमारे जीवन के लिये परमेश्वर की इच्छा है।

अध्याय

11

लोगों की जरूरतों को खोजिए और समाधान का भाग बनिए

मैं सब के लिये सब कुछ बना।
1 कुरिन्थियों 9:22

पौलुस ने कहा कि यद्यपि वह हर प्रकार से किसी के भी नियन्त्रण से स्वतन्त्र था फिर भी उसने स्वयं को सबका सेवक बनाया। यह एक बहुत ही सुन्दर कथन है यदि आप सचमुच में इस पर विचार करें। वह इतना स्वतन्त्र था कि स्वयं को बिना इस भय के सेवक होने के लिये दे सकता था कि उसका फायदा नहीं उठाया जाएगा। वह जानता था कि वास्तविक जीवन पाने के लिए उसे अपना जीवन देना था। उसने सेवा करने और दूसरों को प्रसन्न करने के लिए जीने को निर्णय लिया। अपने दैनिक जीवन में वह उस आदर्श का अनुकरण कर रहा था जो यीशु ने उसे दिया था।

पौलुस ने कहना जारी रखा कि वह यहूदियों के लिए यहूदी बना, व्यवस्थावानों के लिए व्यवस्थावान बना, और निर्बलों के लिए निर्बल बना (1 कुरि. 9:22 देखिए)। दूसरे शब्दों में उसने लोगों की आवश्यकता के अनुसार स्वयं को समायोजित किया जैसा लोग उसे देखना चाहते थे। लोगों को

मसीह के लिये जीतने के लिये और प्रेम दिखाने के लिये जो कुछ करना था वह उसने किया। पौलुस उच्च शिक्षित था, परन्तु मुझे निश्चय है कि जिन लोगों के साथ वह था वे शिक्षित नहीं थे, उसने कभी भी अपने उपाधियों के बारे में बात नहीं किया या उन सारी बातों पर व्याख्यान नहीं दिया जिन्हें वह जानता था। उसने यह प्रदर्शित नहीं किया कि वह कितना उच्च शिक्षित था। वास्तव में, निम्नलिखित कथन दर्शाता है, उसकी नम्रता और दृढ़ता तथा निश्चयता ने कभी भी दूसरों को छोटा महसूस होने नहीं दिया। वास्तव में, उसने लिखाः "क्योंकि मैंने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, बरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ (किसी बात से मोह न होना, किसी प्रकार के ज्ञान का प्रदर्शन नहीं करना, और किसी भी बात के प्रति सचेतन नहीं होना) और किसी बात को न जानूँ" (1 कुरि. 2:2)।

जब पौलुस लोगों के साथ होता था, उसे उन्हें सुनना था और उनके विषय में सीखने के लिये सच्चाई से समय निकालना था। मैं विश्वास करती हूँ कि यही हमें भी करने की जरूरत है और अनुभव से मैं जानती हूँ कि ऐसा करना अद्‌भुत रीति से संबन्धों को मजबूत करता है। हमें लोगों को जानना चाहिए। हमें यह देखना चाहिए कि उन्हें क्या पसन्द है या क्या नापसन्द है, उन्हें क्या चाहिए या नहीं चाहिए, उनकी चाहत क्या है, और भविष्य के लिये उनके स्वप्न क्या हैं। यदि वे किसी क्षेत्र में कमजोर हैं और हम उस क्षेत्र में मजबूत हैं, तो हमें सुनिश्चित करना चाहिए कि हम अपने योग्यताओं पर गर्व नहीं करते हैं।

लोगों को अपने विषय में अच्छा महसूस करने में सहायता करने के लिये तरीके निकालें

मैं स्पष्ट रूप से खाने की आदतों में अनुशासित हूँ, और हाल ही में मैं ने किसी ऐसे व्यक्ति के साथ एक सप्ताह बिताया जो इस क्षेत्र में सचमुच में संघर्ष कर रही थी। उस व्यक्ति ने कई बार यह कहा कि मैं कितना अधिक अनुशासित हूँ और वह कितना अधिक गैर अनुशासित है। प्रत्येक बार जब उसने ऐसा कहा, तो मैं ने स्वयं को अनुशासित करने के योग्यता के विषय में नीचे स्वर पर बात की और कहा, "मेरे जीवन में भी कमजोरी के क्षेत्र हैं, और आप भी लगातार प्रार्थना करने और प्रयास करने के द्वारा इस पर विजय पाएँगे।"

मेरे जीवन में एक ऐसा समय था जब मैं अपने मित्रों के भावनाओं के प्रति बहुत अधिक संवेदनशील नहीं थी। शायद मैं अनुशासन के फायदों के विषय

में और अधिक खाने के खतरों और कुपोषण के विषय में सन्देश दिया है। फिर भी, मैं किसी भी बात को करने में सफल नहीं हुई थी परन्तु अपने मित्र को अपराधी और दोषी महसूस कराती थी। जब उसने उन विचारों को बाँटने के लिये कहा, जैसा कि मैं ने किया था कि उसकी भी सहायता हो सके, परन्तु एक ऐसे भावना के साथ जो उसे यह महसूस न कराए कि मैं ने सब कुछ पा लिया और वह अभी भी दुर्दशा में है। मैंने पाया कि लोगों को प्रेम करने का एक तरीका उन बातों के विषय में उन्हें बुरा महसूस नहीं कराना है जिनके विषय में वे पहले से ही बुरा सोचते।

नम्रता और दीनता प्रेम के सब से अधिक दो सुन्दर पहलु हैं। पौलुस ने कहा कि प्रेम घमण्ड नहीं करता, और अपने आपको श्रेष्ठ नहीं बताता (1 कुरि. 13:4 देखिये)। दीनता सेवा करता है और वह कार्य करता है जो दूसरों को ऊँचा उठाता है।

बाइबल हमें सिखाती है कि हम वही स्वभाव और नम्र मन रहें जो यीशु का था (फिलि. 2:5 देखिए)। वह वह था जो परमेश्वर के साथ था, परन्तु अपने सारे सौभग्यों को स्वयं तज दिया और अपने आपको दीन किया कि वह मनुष्य बन गया कि हमारे स्थान पर वह मरे और उस दण्ड को उठाये जो पापियों के रूप में हमारा भाग था (फिलि. 2:6–9 देखिए)। उसने कभी भी लोगों को बुरा महसूस नहीं कराया क्योंकि वे उसके स्तर के नहीं थे, परन्तु उसके बजाय वह उनके स्तर पर खड़ा हो गया। पौलुस ने भी यही किया और हमें इन बाइबल के उदाहरणों का अनुकरण करने की जरूरत है।

हम सब को भिन्न चीजों की जरूरत है

हम सब भिन्न हैं, और हम सब की अलग अलग जरूरते हैं। मैं आपसे लोगों को उन्हें वह देने के बजाए जो आप उन्हें देना चाहते हैं एक और मील चलने और यह ढूँढ़ने के लिये कहती हूँ कि वास्तव में लोगों की जरूरतें क्या हैं। आप शायद आसानी से लोगों को उत्साहित करने के शब्द बोल सकते हैं, इसलिये आपको हर किसी को उत्साहित करने की आदत होती है। यह अच्छा है क्योंकि हर किसी को प्रोत्साहन के कुछ शब्दों की जरूरत होती है, परन्तु यह शब्द आप उन लोगों को दे रहे होंगे जिन्हें वास्तव में यह जरूरत है कि आप देखें कि उन्हें किसी प्रकार की व्यवहारिक सहायता चाहिए। सम्भव है कि वे तीन महीनें से घर का किराया नहीं दे पाये हों और उनसे यह कहकर

प्रोत्साहित करने के बजाय कि परमेश्वर प्रबन्ध करेगा, उन्हें वास्तव में किराया चुकाने में आपकी सहायता की जरूरत है। यदि आप आर्थिक रूप से सहायता नहीं कर सकते हैं तो यह समझा जा सकता है, परन्तु हमेशा यह अच्छा होता है कि कम से कम लोगों के लिये शब्दों के साथ साथ कुछ करने का विचार करें जब परिस्थिति गंभीर होती है।

शायद आप लोगों के साथ समय व्यतीत करना पसन्द करते हैं। आप लोगों से मिलना, फोन पर उनसे बातें करना, या मित्रों को अपने घर पर खाने को बुलाना पसन्द करते हैं – अतः आप अक्सर अपना समय इस प्रकार से देने का प्रयास करते हैं। परन्तु यदि आप ऐसे लोगों को समय देते हों जो सच में अकेले रहने और आराम करने के लिये कुछ समय चाहते हों तो इससे क्या लाभ। उन्हें आशीष मिलेगी यदि आप उन्हें एक उपहार कूपन देते हैं कि वे बाहर जाकर भोजन करें जब कि आप उनके बच्चों की देखभाल करें। परन्तु आप उन्हें लगतार वह देते रहते हैं जिनसे आप को खुशी होती है।

कुछ लोग बहुत अधिक व्यापक होते हैं। वे व्यापक रूप से सोचते और बातें करते हैं। वे लम्बे लम्बे ईमेल करते या ऐसे त्रुटि सन्देश भेजते हैं जो अन्तहीन दिखते हैं। कुछ लोग ऐसे ईमेल पढ़ना या ऐसे व्यापक सन्देशों पे भी ध्यान देने से डरते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि ऐसा करने से उनका ढ़ेर समय खर्च्चा होगा। यदि वे लोग जो ऐसे व्यापक कार्य करते हैं वे काम करते हैं जो उन्हें खुश करता हो या उन्हें अच्छा लगता हो तो वे पाएँगे कि कुछ लोग उन्हें अनदेखा कर रहे हैं।

यहाँ तक कि बातचीत में भी, हमें यह देखना है कि लोगों को क्या चाहिए और उनकी जरूरतें क्या है और न कि केवल उन तरीकों से बात करते या लिखते रहें जो हमें अच्छा लगता है। यदि आपका कोई ऐसा मित्र हो जो व्यापक रूप से लिखना पसन्द करता हो तो उसे वे सारी बातें दें जो आप सोच सकते हैं। दूसरी तरफ यदि आपके मित्र अन्तिम पंक्ति चाहते हैं तो उन्हें ''केवल तथ्यों'' से अवगत करायें।

मैं उपहार देना पसन्द करती हैं, अतः प्रेम दिखाने के लिये अक्सर मैं ऐसा करती हूँ। एक समय मेरी एक सहायिका थी जो मेरे उपहारों को कभी पसन्द करती हुई नहीं दिखती थी। इस बात ने मुझे सचमुच में चिन्तित किया क्योंकि वह अधन्यवादी दिखती थी, परन्तु मैं ने जब उसे अच्छी रीति से जाना उसने मुझ से कहा, कि उसके लिये महत्वपूर्ण बात उन शब्दों को सुनना था जो प्रेम

को प्रकट करते थे। मैं उसे उपहार देना चाहती थी क्योंकि मेरे लिये उन शब्दों को कहने के लिये आसान था जो वह सुनना चाहती थी। किसी के कठिन परिश्रम के प्रति अपनी प्रशंसा मैं उन्हें कुछ वस्तुयें देकर करती हूँ। परन्तु उसे जरूरत थी कि मैं उसे यह कहूँ कि वह कितना अच्छा कार्य कर रही है और मैं उसकी कितनी प्रशंसा करती हूँ। वह गले लगना और पीठ पर थपथपाहट पाना चाहती थी। उपहार देने के द्वारा मैं सच में उसके प्रति प्रेम दिखाने का प्रयास कर रही थी। परन्तु अद्‌भुत रूप से उसने कहा कि उसने प्रेम किया जाना महसूस नहीं किया। मैं सोचती हूँ कि अक्सर ऐसा होता है जितना हम नहीं समझते क्योंकि हम लोगों के बारे में पर्याप्त रूप से नहीं सीखते हैं कि उन्हें वह दें जो उन्हें सच में उसकी जरूरत है। हम केवल उन्हें वही देना चाहते हैं जो हम उन्हें देना चाहते हैं क्योंकि यह हमारे लिये आसान है।

जब हम हर किसी से एक समान होने की अपेक्षा करते हैं तो हम उन्हें कुछ ऐसा बनने के लिये दबाव डालते हैं जो वे बनना नहीं जानते। परमेश्वर अनुग्रहपूर्वक हमारे प्रत्येक जरूरत को पूरा करता है। वह हमारे जीवन में सही उपहार के साथ सही लोगों को लाता है। यदि हम केवल उन्हें देख सकते और वे जो हैं उसके लिये उनकी प्रशंसा कर सकते हैं।

लोगों का अध्ययन करें

लोगों की हम से क्या जरूरत है इस विषय में स्वयं को सिखाने के लिये अध्ययन करना मेरे लिये एक आँख खोलनेवाला अनुभव था। उदाहरण के लिये, मेरे पति को आदर की और यह जानने की जरूरत है कि मैं महसूस करती हूँ कि वह मेरी देखभाल करने के द्वारा एक अच्छा कार्य कर रहे हैं। उन्हें जीने के लिये एक शान्त वातावरण की जरूरत है। वह सभी प्रकार के खेल पसन्द करते हैं और गोल्फ खेलने और बॉलगैम देखने के लिये उन्हें समय की जरूरत है। यदि मैं उन्हें वे बातें देती हूँ तो वह जितना खुश हो सकते हैं उतना खुश रहते हैं।

दूसरी तरफ, मैं सेवा की कार्य पसन्द करती हूँ। जब मेरे लिये कोई कुछ करता है जो मेरे जीवन को आसान बनाता है तो यह मेरे लिये बहुत अर्थ रखता है। मेरे पति अक्सर खाने के पश्चात् रसोईघर (kitchen) साफ करते हैं ताकि मैं बैठकर आराम कर सकूँ। यदि वह मुझे कुछ ऐसा करते हुए देखते हैं जो मेरे लिये कठिन है, जैसे कुछ भारी चीज उठाना, तो वह तुरन्त मुझ से

उसे नीचे रखने के लिये कहते हैं और उन्हें वह काम करने देने के लिये कहते हैं। ये बातें मुझे मूल्यवान और प्रेम किया जाना महसूस कराता है। एक दूसरे की जरूरतें क्या है इसे समझना और उसे देने की इच्छा रखना हमारे संबन्ध को बहुतायत से बढ़ाया है।

मेरी पुत्री साण्ड्रा को अच्छे समय की और प्रोत्साहन की जरूरत है। मेरी बेटी लौरा को प्रोत्साहन के शब्द चाहिये, परन्तु मेरे साथ समय बिताना उसके लिये उतना महत्वपूर्ण नहीं है। मेरी दोनों बेटियाँ मुझ से बहुत अधिक प्यार करती हैं परन्तु वे उसे भिन्न तरीकों से व्यक्त करती हैं। साण्ड्रा लगभग हर दिन मुझे फोन करती है और वह और उसका परिवार अक्सर हमारे साथ खाना खाते हैं। लौरा अक्सर हमें फोन नही करती है और मैं उसे उतना अधिक नहीं देखती हूँ जितना साण्ड्रा को देखती हूँ। परन्तु मेरी बुजुर्ग माता और आन्टी के लिये सामान लाने और बैंक के मुद्दों पर बिलों के भूगतान के विषय में मदद करने के द्वारा मेरी सहायता करती है। यद्यपि उसके घर पर चार बच्चे हैं और उसके पति दादी उनके साथ रहती हैं।

मेरे दो बेटे हैं जिनमें से दोनों अद्‌भुत हैं परन्तु वे बहुत भिन्न हैं। एक मुझे रोज फोन करता है और मुझ से कहता है कि वह मुझ से प्यार करता है। लेकिन दूसरा उतना अधिक फोन नहीं करता है परन्तु अपना प्रेम दूसरी रीति से व्यक्त करता है। किसी भी समय जब मैं उन दोनों से मेरे लिये कुछ करने को कहती हूँ तो या तो वे उसे करते हैं या उसे करवा देते हैं। मैं यह कहना चाहती हूँ कि हमारे चारों बच्चें भिन्न हैं परन्तु वे अद्‌भुत हैं।

मुझे अपने बच्चों का अध्ययन करना था और सीखना था कि उनमें से प्रत्येक मुझ से क्या चाहते हैं ताकि मैं उन्हें दे सकूँ । एक उपहार पाना चाहता है, दूसरा समय पसन्द करता है, एक और प्रोत्साहन के शब्द, जबकि दूसरे की जरूरत प्रेम की प्रदर्शन हो सकता है। मैं अब भी सब समय सीखती हूँ परन्तु अब मैं कम से कम अपने बजाय उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास करती हूँ।

हम सब के पास एक "प्रेम की भाषा" है, यह एक ऐसा शब्द है जो डॉ. गेरी चैपमैन के द्वारा प्रसिद्ध हुआ और *दि फाइव् लव् लांगुएज़* नामक किताब में उसकी व्याख्या की गई है। एक व्यक्ति का प्रेम की भाषा वह है जिससे वह अभिव्यक्त करता/करती और प्रेम प्राप्त करता/करती है। जैसा कि मैं ने वर्णन किया, मेरी प्रेम भाषा सेवा के कार्य हैं, जबकि मेरी बेटी के लिये यह अच्छा समय है। जब लोग हम से हमारे प्रेम की भाषा में बात की

हैं, हम प्रेम किये जाते महसूस करते हैं, और जब हम किसी और के प्रेम भाषा बोलते हैं, वे प्रेम किये जाते महसूस करते हैं। हम प्रायः लोगों को वह देने का प्रयास करते हैं, जो हमें जरूरत होती है—उनसे अपनी भाषा में बात करना, परन्तु यह एक बहुत बड़ी गलती हो सकती है। यदि हमें उसकी जरूरत न हों जिसकी हमें जरूरत है तब चाहे जितना भी हम अधिक परिश्रम करें, वे फिर भी प्रेम किये जाते महसूस नहीं करेंगे।

मैं यह भी सीख रही हूँ कि चाहे मुझे कितनी भी अधिक किसी वस्तु की जरूरत हो, वह व्यक्ति जिससे मैं यह चाहती हूँ कि वह मुझे दे, हो सकता है उसके पास वह न हों, कम से कम उस समय तो नहीं। मैंने बहुत सारे वर्ष हतोत्साहित और निराश होकर व्यतीत कियें हैं, जब तक मैं ने अन्ततः प्रार्थना करना और परमेश्वर पर भरोसा करना नहीं सिखा कि वह मुझे अपने चुने हुये लोगों के द्वारा मेरी जरूरतों को देता है या पूरा करता है। इस दौरान, मैं यह करने का प्रयास करती हूँ जो सही है और मैं पाती हूँ कि मेरा आनन्द बढ़ता जाता है, इसलिये नहीं कि मैं जो चाहती हूँ प्राप्त करती हूँ, परन्तु लोगों को यह देने के द्वारा जो उन्हें चाहिये। मैं हमेशा (या प्रायः ही) त्याग का आनन्द उठाती हूँ, परन्तु इस बात को जानने के द्वारा आन्तरिक सन्तुष्टि पसन्द करती हूँ कि मैं वह कर रही हूँ जो परमेश्वर चाहता है कि मैं करूँ।

क्या आप ने अपने जीवन के लोगों का अध्ययन यह देखने के लिये किया है कि आप से उनकी जरूरतें क्या है और तब उन्हें देने की इच्छा रखें हों? क्या आप ने उनसे कभी पूछा है कि उनकी जरूरतें क्या है? हमारे लिये यह समय है कि हम स्वार्थपूर्वक जीना और अपने लिये सुविधाजनक करना बन्द करें। हमें उन लोगों को जानने की जरूरत है जिन्हें परमेश्वर ने हमारे जीवन में रखा है और अपनी भलाई के लिये नहीं परन्तु उनकी भलाई के लिये उनकी सेवा करने के लिये व्यवस्था करना है।

दूसरों की जरूरतें पूरा कीजिए

बाइबल सिखाती है कि यदि हम विश्वास में मजबूत हैं तो हमें अवश्य कमजोर के पराजय को सहना चाहिये और स्वयं को प्रसन्न करने के लिये नहीं जीना चाहिए। हममें से प्रत्येक को अपने पड़ोसी को उसकी भलाई, उसकी उन्नति, सामर्थ्य, और उनके निर्माण के लिये प्रसन्न करने और खुश करने का प्रयास करना चाहिए (रोमियों 15:1—2 देखिये)। यह एक अद्‌भुत सलाह हैं, परन्तु हम अक्सर इसके विपरित करते हैं। हम चाहते हैं कि अन्य लोग हमें प्रसन्न करने

के लिये जीएँ और वही करें जो हमें प्रसन्न करता हो। परिणाम यह होता है कि लोग चाहे जो भी करे, हम कभी भी प्रसन्न और सन्तुष्ट नहीं होते हैं।

मनुष्य के मार्ग कार्य नहीं करते हैं। हमें सच में जो चाहिये या और जरूरत है उसका वे प्रबन्ध नहीं करते हैं, परन्तु परमेश्वर के मार्ग कार्य करते हैं। यदि हम उसके निर्देशों के लिये अनुसार करते हैं तो हम कुछ त्याग करते हैं परन्तु हम कुछ प्रकार का आनन्द प्राप्त करते हैं जो परमेश्वर की इच्छा के केन्द्र के अलावा और कहीं पाया नहीं जा सकता है।

क्या आप ईमानदार होकर स्वयं से कुछ प्रश्न पूछेंगे जो उत्तर देने में कठिन हो सकता है, परन्तु आप से आपका आमना – सामना होगा कि कहाँ आप लोगों से प्रेम करने के विषय में हैं?

- आप दूसरों के लिये कितना करते हैं?
- क्या आप यह पाने के लिये प्रयास कर रहे हैं कि लोगों को क्या चाहिये और लोगों की जरूरतें क्या है कि आप उनकी सहायता कर सकें?
- क्या आप गंभीरतापूर्वक लोगों को सही रीति से जानने का प्रयास करते हैं जो आपकी जीवन असली मार्ग में हैं?
- क्या सच में आप अपनी स्वयं की परिवार के लोगों को भी कितना अधिक जानते हैं?

जबकि मैं ने इन प्रश्नों का उत्तर कुछ वर्षों पूर्व दिया था, मैं अपने जीवन में स्वार्थता के स्तर पर थी यद्यपि मैं बहुत वर्षों तक मसीही सेविका रही थी। सत्य में इस विषय ने मेरी आँखें खोलना प्रारंभ किया कि अब भी मैं अप्रसन्न और अपरिपूर्ण थी यद्यपि सच में प्रसन्न होने के बहुत सारे कारण मेरे पास थे। अन्तिम बात यह थी कि मैं स्वार्थी और आत्म केन्द्रीत थी और मुझे परिवर्तित होने की जरूरत थी। ये परिवर्तन आसानी से या त्वरित नहीं होते थे, न ही वे पूर्ण होते थे, परन्तु जब मैं ने प्रतिदिन इसके लिये दबाव बनाया मैं उन्नति प्राप्त कर रही हूँ और हर समय से अधिक प्रसन्न हूँ।

ध्यान देना सीखिए

एक बार मैं ने अपना मन बनाया कि मैं स्वार्थता के प्रति युद्ध की घोषणा करती हूँ और प्रेम क्रान्ति का भाग होना चाहती हूँ। मुझे आशीष का कारण

बनने के लिये रचनात्मक तरीकों की जरूरत थी, क्योंकि लोग भिन्न–भिन्न हैं और भिन्न बातें चाहते हैं। मुझे सच में ध्यान देने के लिये स्वयं को प्रशिक्षण देना प्रारंभ करना था कि वे मुझ से क्या कहते हैं। मैं ने कहा कि यदि मैं किसी पर लम्बे समय तक ध्यान देती हूँ तो मैं कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकती हूँ कि मैं ये कैसे पा सकती हूँ, उनके लिये कर सकती हूँ या उनके के लिये प्रार्थना कर सकती हूँ यदि सच में मैं ऐसा करना चाहती हूँ। यह बहाना कि "मैं नहीं जानती कि क्या करना है" पुराना बहाना है और उसे कूड़ेदान में डाल देने की जरूरत है। यदि हम सच में देना चाहते हैं तो हम ऐसा करने के रास्ते पा सकते हैं। स्मरण रखें, "अभिन्नता बहाने बनाती है, परन्तु प्रेम मार्ग पाता है!"

"अभिन्नता बहाने बनाती है, परन्तु प्रेम मार्ग पाता है!"

मैं विश्वास करती हूँ कि ध्यान देने का यह विषय उस रीति से लोगों को प्यार करना सीखने का एक बड़ा भाग है, जैसा उन्हें प्रेम किये जाने की जरूरत है। उस समय के दौरान एक सप्ताह लें और उन बातों को लिख डालें जो लोग सामान्य बातचीत के दौरान करते हैं कि वे क्या चाहते हैं, उनकी जरूरतें क्या है, या वे क्या पसन्द करते हैं। उस सूचि पर प्रार्थना कीजिए और परमेश्वर से माँगिये यदि वह आप से उनमें से कुछ करवाना चाहता है या यदि आपके अन्दर उनमें से कुछ करने की इच्छा है तो उसे करें। मैं विश्वास नहीं करती कि आपको लोगों को आशीष देना प्रारंभ करने के लिये परमेश्वर से एक विशेष वचन पाने की आवश्यकता है। उन्हें जो चाहिये यदि वह आपके स्वयं करने के लिये बहुत बड़ा कार्य हो तब मैं आपको सलाह देती हूँ कि कुछ एक अन्य लोगों को अपने साथ जोड़ने पर विचार कीजिये और एक समूह के रूप में उन जरूरतों को पूरा कीजिये। यदि एक मित्र कहता/कहती है कि वह अब भी घर लेने के पश्चात् भी अपने बेंच पर सोती है, क्योंकि वह एक पलंक नहीं खरीद पाई है, उसके लिये एक पलंक खरीदना अच्छी बात है जिस पर समूह में विचार किया जा सकता है।

एक मित्र मुझ से एक जवान व्यक्ति के बारे में बात कर रही थी जो उसके कलीसिया में आता था जिसके दान्त बड़े भयावह दिखते थे। वे बहुत बुरे थे कि वह मुस्कुराने से इन्कार करता था क्योंकि उसे भय रहता था कि कोई उसके दान्तों को देखता था। मैं तरस की भावना से भर गई जब मैं ने उसकी कहानी को सुना और हम उसे बिना बताये उसके ईलाज़ करने में सक्षम थे।

उसने उसके जीवन को बदल दिया। कितनी बार हम इस प्रकार की बात सुनते हैं, तरस महसूस करते हैं और इस बात का विचार किये बिना कि हम उसकी सहायता के लिये क्या कर सकते हैं या नहीं कर सकते हैं हम दूर चले जाते हैं। मैं सोचती हूँ कि यह अक्सर होता है। हमें शिक्षित किये जाने और पुनः प्रशिक्षित किये जाने की जरूरत है। हमें नई आदतों को बनाने की जरूरत है। कल्पना करने के बजाय कि हम कुछ नहीं कर सकते हैं कम से कम हमें उस बारे में विचार करना चाहिये। स्मरण करें,

1 यूहन्ना 3:17 कहता हैः ''पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो (जीवन को कायम रखने के साधन) और वह अपने भाई को कंगाल देख कर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैस बना रह सकता है?''

मैंने एक मित्र को कहते हुए सुना कि उसे त्वचा के देखभाल संबन्धी वस्तुओं की जरूरत है। मेरे पास एक अतिरिक्त सेट था, इसलिये मैं ने उसे दे दिया। मेरी माता ने कहा कि उसके पास पॅरफ्यूम् (सुगन्धद्रव्य, इत्र) नहीं था, इसलिये मैंने एक बोतल खरीद दिया। मेरी आन्टी बजार जाना चाहती है, मैंने इसीलिये एक उपहार कूपन दे दिया। कृपया इस बात को समझिये कि मैं ये बातें आपके साथ केवल इसलिये बाँट रही हूँ कि आपको कुछ ऐसे विचार या तरीके प्रदान करूँ जिसे आप संसार में लोगों के प्रति प्रेम दर्शा सकें। मुझे निश्चय है कि आपके अपने बहुत सारे विचार हैं, इसलिये कृपया प्रेम क्रान्ति के वेब साईट पर जायें और अपने विचारों को उसमें लिख दें ताकि आप हमें प्रेरणा दे सकें।

प्रत्येक बार हम दूसरे व्यक्ति के जीवन को उन्नति देने या अन्याय पर आक्रमण करने के लिये कार्य करते हैं, हम उस समाज में उम्मीद की एक किरण भेजते हैं जो आशारहित दिखती है। हम भलाई के द्वारा निश्चय ही बुराई पर विजय पा सकते हैं, इसलिये आईये ऐसा करने के अपने दृढ़ निर्णय में कड़ाई करें।

अध्याय

12

निःशर्त प्रेम

प्रेम अन्धा नहीं है – यह अधिक देखता है, कम नहीं।
रब्बी जूलियस गॉर्डन

सब से अधिक सुन्दर बातों में एक बात जो बाइबल कहती है, वह है कि जब हम पापी ही थे मसीह हमारे लिये मारा गया (रोमियों 5:8 देखिए)। उसने इन्तजार नहीं किया कि हम उसके प्रेम के पाने के लायक हों; वह निःशर्त रूप से हम से प्रेम करता है। यदि ईमानदारी पूर्वक कहूँ, तो हममें से बहुत से लोगों के लिये यह समझना बहुत कठिन है क्योंकि हम कमाने के या जीवन में हर वस्तु पर हख रखने के इतने अधिक आदि हो जाते हैं।

परमेश्वर करूणा में धनी है, और उस महान अद्‌भुत और गहरे प्रेम को सन्तुष्ट करने के लिये जिससे उसने हम से प्रेम किया उसने अपना जीवन हमारे लिये मुफ्त में दे दिया (इफिसियों 2:4 देखिए)। वह एक क्रान्तिकारी प्रेम है! वास्तविक, क्रान्तिकारी प्रेम को अवश्य अपने आपको देना चाहिये, क्योंकि वह कुछ भी कम करके सन्तुष्ट नहीं रह सकता है।

यह परमेश्वर निःशर्त प्रेम है जो हमें उस तक पहुँचाता है, और उसके नाम में यह हमारा दूसरों के प्रति निःशर्त प्रेम है जो दूसरों को उस तक आकर्षित करेगा। वह चाहता है कि हम उसके स्थान पर लोगों से प्रेम करें और उसी

रीति से इसे करें जैसा वह करता यदि वह यहाँ शारीरिक रूप में होता। *वह चाहता है कि हम प्रेम क्रान्ति को जीएँ।*

आपको वह कहानी स्मरण होगी जो मैं ने अध्याय छः में अपने पिता के विषय में कहा था और कि किस प्रकार से परमेश्वर ने मुझे और डेव को उनकी देखभाल करने के लिये निर्देशित किया था यद्यपि निश्चित रूप से वे उसके हकदार नहीं थे। परमेश्वर का निःशर्त प्रेम दिखाना क्रमशः उनके कठोर हृदय को मुलायम किया और उन्होंने अपने पाप पश्चाताप् किया और यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया।

मानवीय प्रेम निःशर्त रूप से प्रेम करना असम्भव पाता है, परन्तु यीशु मसीह के विश्वासियों के रूप में हम में परमेश्वर का प्रेम पाया जाता है, और हम उसके प्रेम को स्वतन्त्रता पूर्वक बिना शर्त के बहने दे सकते हैं। मनुष्य का प्रेम पराजित होता है, परन्तु परमेश्वर का नहीं। मनुष्य के प्रेम का अन्त होता है, परन्तु परमेश्वर का नहीं। कभी कभी मैं पाती हूँ कि यद्यपि मैं अपने मानवीय सामर्थ में एक व्यक्ति से प्रेम नहीं कर पाती, परन्तु परमेश्वर के प्रेम से मैं उनसे प्रेम करने में सक्षम होती हूँ।

किसी ने जो मुझे वर्षों तक लगातार चोट पहुँचाते रहे, हाल ही मुझ से पूछा कि मैं ने उनके विषय में क्या महसूस करती थी। क्या मैं उनसे प्रेम करती थी? मैं ईमानदारी पूर्वक कह सकी कि यद्यपि मुझ में उनके लिये वह आत्मीयता की भावना नहीं थी जो ऐसी स्थिति में होती यदि परिस्थिति भिन्न होती, मैं ने उनसे परमेश्वर के एक सन्तान के रूप में प्रेम किया और उनके जरूरत में उनकी सहायता भी करती।

परमेश्वर का सच्चा प्रेम भावनाओं पर आधारित नहीं होता है, यह निर्णय पर आधारित होता है। मैं किसी की भी सहायता करूँगी जिन्हें सहायता की जरूरत है, जब तक सहायता करना अन्ततः उन्हें चोट न पहुँचाए। वे उसके हखदार नहीं है। सच्चाई यह है, कि कभी कभी मैं सोचती हूँ कि वे इसके हखदार हैं, तो यह और भी सुन्दर और प्रभावशाली हो जाता है। यह पूर्ण रीति से बिना यह पूछे उनसे प्रेम करने के योग्य होना है कि क्या वे इसके हखदार हैं।

क्षमा
यह प्रश्न के बाहर था.....पूछने से भी बढ़कर था। बिल एबार्ब कैसे उस व्यक्ति को माफ कर सकते थे जिसने उनके भाई को मार दिया था। बिल

एबार्ब और चार्लस् मैनूएल दो अजनबी थे जिनका जीवन पलभर में हमेशा के लिये अलग अलग हो सकता था – उसी क्षण जब चार्लस् ने बन्दूक चलाई और बिल के भाई जॉन को मार दिया था। उस समय से, बिल बदला लेने के अलावा कोई बात नहीं सोच सकता था।

बिल का हृदय क्रोध और बदले की भावना से भरा हुआ था, और वह इस बात से कायल था कि कोई भी दण्ड उसके नुकसान की भरपाई नहीं कर सकता था। जॉन की मृत्यु के पश्चात् कोई भी एक दिन ऐसा नहीं गुजरा जब कि बिल ने हत्यारे के विषय में न सोचा हो। गहरी घृणा उसे जीवित ही खा रही थी। उसकी इस मनोस्थिति के कारण जल्द ही बिल की नौकरी चली गई और विवाह टूट गया। वह जानता था कि यदि वह इस विनाशकारी पथ पर वह बढ़ता रहा तो जल्द ही उसका जीवन भी समाप्त हो जाएगा।

तभी बिल ने अपने जीवन में परिवर्तन का अनुभव किया जो उस बिल से भी सामर्थी था जब उसने अपने भाई को खो दिया था। बिल ने मसीह की क्षमा का अनुभव किया। यह कुछ अलौकिक था और किसी ऐसी क्षमा से परे था जो कोई मनुष्य दे सकता था। परमेश्वर ने घृणा को दूर किया–उसने क्रोध को दूर किया।

बिल का हृदय बहुत ही आश्चर्यजनक रूप से परिवर्तित हुआ कि वह असम्भव बात पर सोचने लगा। उसने जाना कि परमेश्वर उसे उन सब बातों के लिये क्षमा कर सकता था जो उसने अपने जीवन में किया, उसे भी चार्लस् को माफ कर देना चाहिए। और उसे उसको बताना चाहिए कि उसने अपने भाई की हत्या के लिये उसे माफ कर दिया है। सब से पहले यह एक आज्ञापानल का कार्य था, परन्तु बात में यह एक हृदय की बात बन गई। और जॉन की मृत्यु के दिन से अठारह वर्षों बाद किसी दिन बिल और चार्ल्स् एक दूसरे के आमने सामने एक मुलाकात के दौरान बैठ गए जो इस बात को बताते थे कि परमेश्वर ने उन दोनों के हृदय में क्या किया है। परमेश्वर इन दोनों व्यक्तिओं को क्षमा की सामर्थ के द्वारा स्वतन्त्र कर दिया था।

आँकड़े कहते हैं :

- क्षमा तनाव को कम करता है। वैमनस्य को पोषित करना वही तनाव ला सकता है – माँसपेशियों में खिचाव, बढ़ा हुआ रक्तचाप, अधिक पसीना आना – तनावग्रस्त घटना के रूप में आपके शरीर पर।

- यदि आप क्षमा करने में सक्षम होते हैं तो आपके हृदय को लाभ होगा। एक अध्ययन ने क्षमा और हृदय के विषय में और रक्तचाप में उन्नति में संबन्ध पाया है।
- हाल ही के एक अध्ययन ने पाया कि महिलाएं जो अपने जीवन साथियों को क्षमा कर पाने में सक्षम होते और उनके प्रति करूणामय हृदय महसूस करते थे उन्होंने अधिक प्रभावशाली रूप से अपने विरोधाभासों का हल निकाला।

मानवीय प्रेम भावनाओं पर आधारित होता है। हम लोगों से प्रेम करते हैं क्योंकि वे हमारे प्रति अच्छे रहे हैं। उन्होंने हमारी सहायता की या उन्होंने पहले से हम से प्रेम किया। वे हमारे विषय में हमें अच्छा महसूस कराया या वे हमारे जीवन को आसान बनाते हैं, इसलिये हम कहते हैं कि हम उनसे प्रेम करते हैं या हम उनसे प्रेम करते हैं क्योंकि हम चाहते हैं कि वे हम से प्रेम करें। परन्तु उस प्रकार का प्रेम उन कार्य पर निर्भर होता है जो वे करते हैं और यदि वे ऐसा करना बन्द कर देते हैं तो हम शायद उनसे प्रेम करना बन्द कर देंगे। इस प्रकार का प्रेम आता और जाता है। यह गरम है और तब ठण्डा पड़ जाता है। इसी प्रकार का प्रेम है जिसे हम संसार में अनुभव करते हैं। बहुत से विवाह और व्यक्तिगत संबन्ध उस प्रकार के प्रेम पर आधारित होता है। हम आईस्क्रीम पसन्द करते हैं क्योंकि यह स्वादिष्ट होता है। और हम लोगों से प्रेम करते हैं क्योंकि वे हमें अच्छे बड़े दिन के उपहार देते हैं।

परमेश्वर का प्रेम संपूर्ण रूप से भिन्न है – यह परमेश्वर स्वयं के अलावा और किसी बात पर आधारित नहीं है। और जब हम मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते हैं, तब परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में पवित्रआत्मा के द्वारा उण्डेला जाता है (रोमियों 5:5 देखिए)। जब हम परमेश्वर के साथ भागिदार बनते हैं, तब वह हम से पृथ्वी पर उसके प्रतिनिधि होने की इन्तजार करता है और वह हमें प्रेम से सुसज्जित करता है, जिसकी हमें उस कार्य को करने में जरूरत होती है जो वह हमें करने के लिये कहता है। जब मानवीय प्रेम समाप्त होता है, और अक्सर ऐसा होता है, परमेश्वर का प्रेम फिर भी उस कार्य को समाप्त करने के लिये उपलब्ध होता है जिसे करने की जरूरत है।

मैंने एक लड़की के रूप में एक पिता से प्रेम नहीं किया क्योंकि वो कभी

भी मेरे लिये एक पिता नहीं रहे। परन्तु मुझ में परमेश्वर का प्रेम था और मैं उन भावनाओं से पूरी रीति से अलग होकर निर्णय करने में सक्षम रही कि मैं उनके बुढ़ापे में उनके साथ दयापूर्वक व्यवहार करूँगी और उनके प्रति करूणामय रहूँगी। वास्तव में मैंने उनके लिये तरस महसूस किया क्योंकि उन्होंने अपना संपुर्ण जीवन व्यर्थ कर दिया था और पूरी रीति से खेद करने की यादें शेष थीं।

हम अक्सर क्षमा के अद्‌भुत कहानियों को सुनते हैं। मैंने एक किशारवय के विषय में सुना था जो पीनेवाला था और उसने एक दुर्घटना किया जिसमें एक पत्नी और बच्चे की मृत्यु हो गई। वह व्यक्ति परमेश्वर को जानता था और वह उस व्यक्ति को क्षमा करना चाहता था जिसने दुर्घटना किया था, और बहुत प्रार्थना पश्चात् सक्षम हो सका कि परमेश्वर का प्रेम उसमें से होकर बह सके। वह व्यक्ति एक प्रेम क्रान्तिकारी था!

हमें लोगों को देखना सीखना चाहिये कि उन्होंने अपने प्रति क्या किया है बजाय इसके कि हमारे प्रति क्या किया है। प्रायः जब एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को चोट पहुँचाता है तो उसने शायद स्वयं को अधिक नुकसान पहुँचाया है और परिणाम स्वरूप कुछ गिरावट महसूस करता है। यही कार्य यीशु ने किया जब उसने कहा, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34)।

परमेश्वर की तरह का प्रेम मन से नहीं समझा जा सकता है; यह ह्रदय की बात है। यह बहुत ही अतार्कित लगता था जब परमेश्वर ने मुझ से अपने पिता की देखभाल के लिये कहा—परन्तु तब, प्रेम तर्कों से परे, है ना? कोई कारण नहीं था कि परमेश्वर हम से प्रेम करे जब हम पाप कर रहे थे और पूरी रीति से उसे अनदेखा कर रहे थे, परन्तु वह करता है।

न्याय के ऊपर करूणा विजय पाती है

एक व्यक्ति या एक परिस्थिति का न्याय करना और केवल अनुदान देना आसान है जिसके वे हकदार हैं, परन्तु करूणा उससे बड़ी है। किसी के लिये किसी अपराध पर दृष्टि डालना महिमामय बात होती है। तीसरी दुनियाँ की देशों में लोगों की सहायता करने के लिये मैं इस तथ्य को नहीं देख सकती हूँ कि उनमें से बहुत से मूर्तियों, जानवरों, या यहाँ तक कि दुष्टात्माओं की भी आराधना करते हैं। मैं आसानी से कह सकती थी, "इसमें कोई आश्चर्य

नहीं कि वे भूखें हैं–उन्होंने अपने पीठ परमेश्वर की ओर किया है।" परन्तु शायद मैं भी इसी समान परिस्थिति में होती जिसमें वे हैं यदि मैं वहीं पैदा हुई होती जहाँ पर वे हुये। हमें स्वयं को स्मरण दिलाना है। "मेरे जीवन में यदि परमेश्वर का अनुग्रह नहीं होता, तो वह मैं ही हो सकता था।"

कुछ धार्मिक लोगों के लिये एक समलैंगिक व्यक्ति की ओर देखना जिसको एड्स् है और सोचना वह इसका हकदार है, आसान है। परन्तु क्या इसी रीति से परमेश्वर भी उस मनुष्य को देखता है? या परमेश्वर सच में उस "कारण" को देखता है जो उस "क्या" के पीछे है? जब तक मनुष्य साँस लेता है परमेश्वर उस मनुष्य तक छुटकारा लेकर पहुँचना चाहता है – और वह इसके लिये मुझे या आपको इस्तेमाल करना चाहता हो। इसका यह तात्पर्य नहीं कि हमें दूसरों के पाप को गले लगाना है, हमें लोगों को गले लगाना चाहिये और उनको उनकी जरूरत के समय दवाई, पनाहों, और दया के शब्दों से उनकी सहायता करनी चाहिये जो उन्हें परमेश्वर से आशा पाने के सक्षम बना सके।

करूणा और तरस प्रेम के दो सुन्दर गुणों में से हैं, और वास्तव में इनके बिना कोई वास्तविक प्रेम नहीं होता है। क्योंकि मैं अपने प्रथम तीस वर्षों में सब कुछ स्वयं कमाने को विवश थी, इसलिये मैं लोगों को देने में बड़ी नहीं थी कि मैं ने जिन बातों के लिये परिश्रम किया था जबकि यह दिखता था कि उन्होने अपनी सहायता करने के लिये कुछ नहीं किया है। मेरे मानवीय प्रेम और परमेश्वर के प्रेम के बीच में अन्तर को सीखना जिसका मुझ में निवेश किया गया था कुछ समय लिया। दया कमाया नहीं जा सकता या कोई उसका हकदार नहीं होता है। पौलुस ने कुलुस्सियों को लिखा और उनसे कहा, कि "प्रेम को पहन लो" (कुलुस्सियों 3:14 देखिए)। "पहन लो" वाक्यांश को मैं पसन्द करती हूँ जिसका अर्थ है उद्देश्य पूर्वक कुछ करना, बिना भावनाओं या कारणों पर आधारित होकर। इस छोटे से वाक्यांश के द्वारा मैं आश्चर्यजनक जीवन के सबक सिखी।

जब मैं इसे लिखती हूँ, यह दोपहर के बीच का समय है, और मैं अब भी पाजामा पहने हुये बैठ के लिख रही हूँ। डेव मुझे अभी अभी बुलाया है और चाहते हैं कि आके मुझे एक मुस्टान्ग कार प्रदर्शनी में ले जायें। मैं आपको आश्वस्थ दिला सकती हूँ कि कार प्रदर्शनी में जाना प्रेम का एक कार्य है। वस्त्रधारण करने और तैयारी होने जैसा मुझे नहीं लग रहा है। पाजामा पहने हुये मुझे अच्छा लग रहा है – परन्तु यह मैं करूँगी। इसी प्रकार, हम बहुत सारे असंख्य अवसरों से हमारा सामना होता है जब हम निःशर्त प्रेम को पहनने को चुनते हैं।

जब तक हम अपने भावनाओं से परे जीना नहीं सीखते हैं हम कभी भी लोगों को परमेश्वर के प्रेम से प्रेम कभी नहीं कर पाएँगे या संसार के जरूरतमन्द लोगों की सहायता नहीं कर पाएँगे। क्या आप करूणा को पहनने के लिये तैयार हैं? क्या आप प्रेम को पहनने के लिये तैयार हैं? यदि आप भावनाओं से संघर्ष करते हैं जो आपको सही कार्य करने से रोकती है, स्वयं से पूछिए, "इस परिस्थिति में यीशु क्या करता?" निश्चय रूप से मैं जानती हूँ कि यदि डेव मेरे प्रति हार मान लिये होते, तो आज मैं वह व्यक्ति नहीं होती जो आज मैं हूँ। उन्होंने अपने हृदय को सुना अपने भावनाओं की नहीं। और यही करने के लिये मैं आपको उत्साहित कर रही हूँ।

प्रेम यूँ हीं छोड़कर चला नहीं जाता है

लोगों से प्रेम करने का अर्थ ये नहीं है कि वे हमारे फायदा उठायें। इसका यह तात्पर्य नहीं जब वे कुछ नहीं करते हैं तो हम सब कुछ मुफ्त में प्रदान करें। बाइबल कहती है कि परमेश्वर हर एक को सुधारता और अनुशासित करता है जिनसे वह प्रेम करता है (इब्रानियों 12:6 देखिए)। सुधारना दण्ड देना नहीं है; यह सही व्यवहार में प्रशिक्षित करना है। कभी कभी इस प्रशिक्षण में आशीषों को रोकना पड़ता है, परन्तु जब हम उससे पुकारते हैं तो परमेश्वर हमेशा हमारे मूलभुत आवश्यकताओं को पूरा करता है। बाइबल कहती है कि हम हर प्रकार के परीक्षाओं का सामना कर सकते हैं और यदि हमें बुद्धि की आवश्यकता है तो परमेश्वर से माँग सकते हैं जो दान के रूप में हमें बुद्धि देता है, और वह त्रुटिरहित या बिना दोष लगाये सहायता करेगा (याकूब 1:1–5 देखिए)। वह एक सुन्दर विचार है!

एक नशेड़ी को मैं एक नई कार खरीद के नहीं दे सकती क्योंकि मैं जानती हूँ कि सम्भव है कि वह नशा खरीदने के लिये कार को बेच दे, परन्तु मैं उसे भोजन खिला सकती हूँ और उसे नहाने के लिये स्थान दे सकती हूँ और नये जीवन की आशा प्रदान कर सकती हूँ। मैं उससे कह सकती हूँ कि परमेश्वर उससे प्रेम करता है और उसकी सहायता करना चाहता है, और मैं उसका न्याय करने से बचा सकती हूँ, क्योंकि यदि मैं न्याय करता हूँ तो मैं उसे प्रेम करने योग्य नहीं होता हूँ।

अक्सर जब लोग हमें चोट पहुँचाते या उनके साथ रहना कठिन होता है, तो हम उन्हें अपने जीवन से बाहर कर देना चाहते हैं, परन्तु यदि परमेश्वर

चाहता है कि उसके बजाय हम उनके साथ हम एक संबन्ध का निर्माण करें तो क्या? हमारे लिये बहुत आसान है कि हम दूर हट जायें या कठिन लोगों के लिये अपने जीवन के द्वार बन्द कर दें, परन्तु सदा वह नहीं है जो परमेश्वर चाहता है। हमें निश्चय ही यह सीखना है कि प्रेम वास्तव में हर परिस्थिति में ऐसा होता है और भावनाओं में बह देना या उनकी कमी के बिना हमें प्रत्येक परिस्थिति में उसे लागू करना है।

एक प्रश्न जो अक्सर मुझसे पूछा जाता है वह, "कब तक मुझे उस व्यक्ति के साथ रहना चाहिये?" वह एक ऐसा प्रश्न है जिसे केवल आपका हृदय ही दे सकता है। केवल परमेश्वर ही है जो संपूर्ण परिस्थिति को दोनों ओर से समझ सकता है, और वह आपके निर्णयों में आपकी अगुवाई करेगा यदि आप अपनी इच्छा के बजाय उसकी इच्छा को सच में करना चाहते हैं। इतना स्मरण रखें, प्रेम क्रान्ति में शामिल होने का अर्थ दूसरों से प्रेम करने के लिये तैयार और इच्छुक होना है चाहे यह असम्भव लगता हो।

जब मैं निशर्त प्रेम के विषय में लोगों से बात करती हूँ, एक प्रश्न जो हमेशा आता है वह है, "क्या मुझे केवल देते रहना है चाहे लोग कुछ भी करें?" इस प्रश्न का उत्तर है नहीं। मान लीजिये परिवार के किसी सदस्य को उसके अधिकांश वयस्क काल में नशा और पीने की समस्या थी और उसके साथ साथ वह बहुत अधिक गैर जिम्मेदार भी हैं। परिवार बहुत अधिक समय, धन, और उसकी सहायता के लिये परिश्रम खर्च करता है, परन्तु क्रमशः वह अपने पुराने आदतों और जीवनचर्या में चला जाता है। यह एक ऐसी परिस्थिति है जब शत्रु इस परिवार की सदस्य की कमजोरी को उनके विनाश के लिये और उनके सामर्थ को उनसे चुराने के लिये इस्तेमाल करता है जो उससे प्रेम करते और उसकी सहायता करने का प्रयास किये हैं। कभी कभी हमें इस सत्य का सामना करना है कि चाहे हम कितना भी किसी के सहायता करना चाहते हैं यह तब तक कार्यकारी नहीं होता है जब तक वे सहायता पाना नहीं चाहते हैं। वास्तव में अक्सर वर्षों तक लगातार सहायता का प्रयास करने के पश्चात् प्रायः बड़े व्यक्तिगत त्याग से परिवार अन्ततः अब आगे को सहायता करने से मना करना पड़ता है। यह एक ऐसा निर्णय नहीं है जो जल्दबाजी में लिया जाये या आसानी से लिया जाए, परन्तु अधिकांशतः ऐसा करना होता है।

कभी कभी मसीहियों के रूप में, हम पर मसीह के प्रेम का सही रीति से अभ्यास नहीं करने का आरोप लगाया जाता है जब परिस्थितियाँ इस प्रकार

से उत्पन्न होती हैं। हम इस प्रकार की बातें सुनते हैं, "आप कैसे कह सकते हैं कि लोगों से प्रेम करते हैं जब आप अपने रिश्तेदारों की सहायता नहीं करते हैं?" यद्यपि यह कठिन है, परन्तु अच्छी बात यह है कि दृढ़ रहना और यह कहना है, "यदि आप सच में अपने मुद्दों का सामना करना चाहते हैं और वास्तविक सहायता चाहते हैं, तो हमें बताईये," परन्तु मैं यह भी जानती हूँ कि मैं लगातार उसे उस विनाशकारी पथ पर चलते रहने नहीं दे सकती हूँ।

हमें किसी प्रेमी जन को भूखा या बीमारी में बिना सहायता के कठिनाई में नहीं छोड़ना चाहिये। परन्तु हमें उसे इस बात की अनुमति भी नहीं देना चाहिए कि हमारी शान्ति को भंग करे या हमें केवल इस्तेमाल करे। लोगों से प्यार करने के लिये तात्पर्य ये नहीं है कि उनके लिये वो करें जो उन्हें स्वयं अपने लिये करना चाहिए।

करूणा उन लोगों की सहायता करता है जो सहायता के हकदार नहीं होते हैं, परन्तु निशर्त प्रेम का उद्देश्य ये नहीं है कि लोगों को गैर जिम्मेदार बनाये जब कि हम उनके बिलों का भूगतान करें। करूणा बहुत सारे अवसर देते हैं और निशर्त प्रेम कभी कभी हार नहीं मानता है, वह प्रार्थना करता है और छाया में रहने के लिये और सहायता करने के लिये तैयार होता है जब ऐसा करना सच में एक परिवर्तन लाता है।

परमेश्वर चाहता है कि उसका प्रेम हमारे द्वारा दूसरों तक बहता रहे। हमें स्वयं से एक संतुलित दशा में प्रेम करना सीखने की जरूरत है, क्योंकि हमें अवश्य ही स्वयं से प्रेम करना चाहिये या हमारे पास देने के लिये प्रेम नहीं होगा। हमें परमेश्वर के प्रेम को पाने जरूरत है और उसे हमें चंगा करने देना है। स्मरण रखें कि जो हमारे पास नहीं है उसे हम दूसरों को नहीं दे सकते हैं। परन्तु हमें यहाँ रूकना नहीं है! परमेश्वर हमें चंगा करता है इसलिये हम दूसरों को चंगाई दे सकते हैं। परमेश्वर हम जो बचाए गए हैं से जो दूसरों का बचा रहे है उन तक संक्रमण चाहता है। मानवीय प्रेम का हमेशा एक अन्त होता है, परन्तु धन्यवाद की बात है कि परमेश्वर की प्रेम का अन्त नहीं होता है। परमेश्वर हम से प्रतिज्ञा करता है कि उसका प्रेम कभी पराजित नहीं होता है!

अध्याय

13

प्रेम त्रुटियों का हिसाब नहीं रखता

प्रेम कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।

1 कुरिन्थियों 13:6–7

क्या आप एक अच्छे हिसाब किताब रखनेवाले हैं? क्या आप त्रुटियों का सही और विस्तृत हिसाब रखते हैं, जिसे आप ने किया है? बहुत वर्षों तक, प्रत्येक बार डेव और मेरे बीच में बहस होती थी, मैं मन के पन्नों को पलटती और उन सारे बातों को बाहर लेकर आती जो उन्होंने किया था और जिसे मैं गलत समझती थी। मैं उन्हें पुरानी गलतियों को याद दिलाती और उन्हें आश्चर्य होता कि मुझे वे बातें स्मरण भी हैं क्योंकि वे बहुत पुरानी बातें थी। मुझे स्मरण आता है जब एक बार उन्होंने कहा, "तुम ये सारी बातें कहाँ पर रखती हो?" जब कि मैंने कई वर्षों तक इन बातों को सहज कर रखा डेव जल्द ही माफ कर देते थे और उन चीजों को छोड़ देते थे।

सब से बढ़कर परमेश्वर हम से चाहता है कि हम एक दूसरे से प्रेम करें, परन्तु पूर्ण क्षमा के बिना यह असंभव है। हम उन लोगों से सही रीति से प्रेम नहीं कर सकते जिनके प्रति हम क्रोधी हैं या वैमनस्सयता रखते हैं। पौलुस

ने कुरिन्थियों को लिखा और कहा, "प्रेम (हम में परमेश्वर का प्रेम) अपने अधिकार और उसके स्वयं की रीतियों को नहीं थोपता क्योंकि वह स्वयं की भलाई चाहनेवाला नहीं है, वह झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता, अप्रसन्न नहीं होता" (बुरा करने पर ध्यान नहीं देता) (1 कुरिन्थियों 13:5ब)।

उत्तम पर विश्वास कीजिए

यदि हम लोगों से प्रेम करना चाहते हैं, तो हमें लोगों के बारे में और उनके कार्यों के बारे में जैसा सोचते हैं वैसा परमेश्वर को बदलने देना चाहिये। हम सब से बुरा सोच सकते हैं और दूसरे लोग जो कुछ कहते और करते हैं उसके प्रति सन्देहग्रस्त रह सकते हैं, परन्तु वास्तविक प्रेम हमेशा श्रेष्ठ पर विश्वास करता है। जब हम सोचते और विश्वास करते हैं वह एक चुनाव है। हमारे जीवन में बहुत सी समस्याओं की जड़ हमारे विचारों पर हमारा नियन्त्रण या अनुशासन नहीं होना है। अपने विचारों को अनुशासित नहीं करने का चुनाव नहीं करने के द्वारा स्वतः किसी के विषय में बुरा विश्वास करने या सन्देहग्रस्त होने का चुनाव कर सकते हैं।

यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने लोगों से यह पूछा, "तुम कब तक व्यर्थ कल्पनायें करते रहोगे?" (यिर्मयाह 4:14 देखिये)। जिन विचारों को सोचने के लिये वे सोचते थे परमेश्वर के प्रति अपराध थे।

जब हम श्रेष्ठ पर विश्वास करने का चुनाव करते हैं, तब हम अच्छे संबन्धों के लिये नुकसानदायक हर बातों को जाने देने के योग्य होते हैं। मैंने बहुत सारी ऊर्जा बचाई है, जिसे मेरे क्रोध ने मुझ से ये कहते हुये इस्तेमाल किया होता, "यद्यपि उन्होंने जो कुछ मुझे कहा या मेरे प्रति किया मुझे चोट पहुँचाया, मैं यह विश्वास करने का चुनाव करती हूँ कि उनका हृदय सही था।" मैं अपने आप से तब तक बातें करती रहती हूँ जब तक मेरी क्रोध की भावनायें समाप्त होना प्रारंभ नहीं होती। मैं इस प्रकार ही बातें कहती हूँ, "मैं नहीं सोंचती कि वे सच में समझते थे किसे प्रकार से उनके कार्य मुझे प्रभावित किये। मैं विश्वास नहीं करती कि वे जानबूझकर मुझे चोट पहुँचाने का प्रयास करते हैं। वे नहीं समझते कि यह सुनना कैसा लगता है जब वे ऐसा कहते हैं। हो सकता है वे आज शारीरिक रूप से अच्छा महसूस नहीं करते हों या शायद उनकी कोई व्यक्तिगत समस्या हो जो उन्हें व्यवहार के प्रति असंवेदनशील बनाते हों।"

मैं अनुभव से जानती हूँ कि अपराधों का मन में हिसाब किताब रखना अपने स्वयं के जीवन को जहरिला बनाता है और सच में दूसरे व्यक्ति को

बदलता नहीं है। बहुत बार हम किसी व्यक्ति पर क्रोधित रहकर एक दिन बर्बाद कर देते हैं जो ये भी नहीं महसूस करते कि उन्होंने कुछ ऐसा किया है जिसने हमें परेशान किया है। वे अपने दिन का आनन्द उठाते हैं और हम अपने दिन को बेकार करते हैं।

यदि हम हिसाब किताब रखने जा रहे हैं, तब क्यों न हम उन अच्छी बातों का हिसाब किताब रखें जो लोग कहते हैं या करते हैं न कि गलतियाँ जो वे करते हैं?

नकारात्मक हिसाब रखने के उदाहरण :

डेव हर समय खेल देखते रहते हैं और वे जानते हैं कि मुझे इसमें आनन्द नहीं आता है।

जब मैं एक कहानी कहने का प्रयास करती हूँ, तो इसके वर्णन में डेव मुझे विस्तृत रूप से सुधारते हैं।

जब मुझे समझ की जरूरत होती है, डेव मुझे सलाह देने की कोशिश करते हैं।

बयालीस वर्षों के विवाहित जीवन में मैं उंगुलियों पर गिन सकती हूँ कि कितनी बार डेव ने मेरे लिए फूल भेजे।

डेव ने अपने दोस्तों के साथ गोल्फ खेलने जाने का कार्यक्रम बनाया और मुझ से पूछा तक नहीं कि मैं क्या करने जा रही हूँ और मेरी क्या योजना है।

सकारात्मक हिसाब रखने के उदाहरण :

डेव अक्सर मुझे क्षमा करने के लिये जल्दी करते हैं जब मैं उनके प्रति गलत व्यवहार करती हूँ।

स्वयं में बने रहने के लिये डेव मुझे पूरी स्वतन्त्रता देते हैं।

डेव अपने आपको व्यवस्थित रखते हैं। वह एक ऐसा व्यक्ति नहीं हैं जो चीजों को अव्यवस्थित छोड़ दे कि दूसरे लोग उसे साफ करें।

डेव मुझ से प्रति दिन कहते हैं वह मुझे प्यार करते हैं और अक्सर दिन में कई बार ऐसे कहते हैं।

डेव मेरे वस्त्रों और दिखने के विषय में अच्छी टिप्पणी करते हैं।

डेव मुझे कोई भी अच्छी वस्तु खरीद कर देते हैं जो हम खरीद सकते हैं।

जहाँ कहीं मैं जाना चाहती हूँ वहाँ ले जाने के लिये डेव हमेशा इच्छुक होते हैं।

डेव का मुड़ हमेशा स्वस्थ रहता है। वह बहुत ही कम कभी परेशान होते हैं।

डेव मेरे लिये रक्षात्मक होते हैं। जब मैं उनके साथ होती हूँ तो सुरक्षित महसूस करती हूँ।

यह देखना आसान है कि सकारात्मक सूचि नकारात्मक सूचि से काफी लम्बी है और मैं अनुमान लगाती हूँ कि अधिकांश लोगों के साथ यह ऐसा ही है यदि वे भली बातों को लिख डालने का समय निकालें। हमें संसार में और लोगों में अच्छी बातों को देखना और उनका आनंद मनाना चाहिये क्योंकि हम भलाई से बुराई को जीत पाते हैं। लोगों में अच्छी बात के विषय में सोचना और बात करना हमें स्पष्टतः उन बातों में ध्यान देने का कारण बनेगा जो हमें सच में परेशान करती हैं।

पवित्रआत्मा को शोकित न करो

हम वास्तव में अपने क्रोध, बुरे मिजाज, क्षमा न करने, कड़ुवाहट, झगड़े, और विवाद के द्वारा पवित्रात्मा को शोकित कर सकते हैं। बाईबल हमसे बुरी इच्छा, द्वेष और किसी भी प्रकार की नीचता को निकाल देने को अनुरोध करता है। यह सोचना मुझे उदास करता है कि मैं पवित्रात्मा को उदास कर सकती हूँ। जब मैं स्मरण करती हूँ कि एक समय मैं कितनी आसानी से क्रोध करती थी मैं जानती हूँ कि मैंने उसे दुःखी किया था और मैं फिर कभी ऐसा करना नहीं चाहती हूँ। मेरे लिए इससे बचने का एकमात्र रास्ता दूसरों के प्रति बुरी भावनाएँ उठते ही उन्हे निकाल देना है। हमें उपयोगी, सहायक, और एक दूसरे के प्रति दयालु, जिस प्रकार परमेश्वर ने मसीह में हमें क्षमा किया उसी प्रकार एक दूसरे को तैयारी पूर्वक और सौजन्य भाव से क्षमा करने वाले होना है। (इफि 4:30–32 देखिये)

हमारा क्रोध पवित्रआत्मा को उदास केवल इसलिये नहीं करता क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि हम एक दूसरे से प्रेम करें परन्तु क्योंकि वह जानता है कि यह हमें किस प्रकार नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है और वह चाहता है कि हम एक स्वतन्त्रता के जीवन का आनन्द उठायें। हमें परमेश्वर के नकल करनेवाले और उसके उदाहरण के लिये नकल करनेवाले होना चाहिये, वह क्रोध करने में धीमा, करूणा से भरा हुआ, और क्षमा करने में जल्दवाज है। हमारा क्रोध उसके धार्मिकता को आगे नहीं बढ़ाता जिसमें जीने के लिये परमेश्वर ने हमें बुलाया है।

जिस प्रकार सच्चे प्रेम को इस बात से कुछ लेना देना नहीं है कि हम क्या महसूस करते हैं, सच्ची क्षमा के साथ भी ऐसा ही है। दोनों उस निर्णय पर

आधारित हैं जो हम लेते हैं, न कि हमारी भावनाओं पर। मैंने सिखा है कि यदि मैं क्षमा करने का चुनाव करती हूँ, तो मेरी भावनाएँ धीरे–धीरे मेरे निर्णयों के साथ हो लेती है। दूसरों को क्षमा करना मुझे उनसे बात करने के योग्य करती है कि उन्हें अपने जीवन से बाहर करने के बजाय उनसे बात करने के योग्य बनाती है। यह मुझे उनके लिये प्रार्थना करने और उन्हें आशीष वचन कहने और उनके विषय में नकारात्मक और बुरी बातें कहने के बजाय आशीष वचन कहने की अनुमति देती है। हम अपनी भावनाओं पर अधिक ध्यान देते हैं। बजाय इसके, स्मरण करना चाहिये कि हमारी भावनायें क्षणिक और परिवर्तनीय हैं। जो नहीं बदलता वह प्रेम ही है।

एक दूसरे को छूट दीजिये

यदि हम एक दूसरे से सच्चा प्यार करते हैं तो हम एक दूसरे की सहेंगे और एक दूसरे को छुट देंगे (इफिसियों 4:1–2 देखिए)। छूट देने का तात्पर्य यह नहीं है कि लोगों के गलत व्यवहार के लिये बहाने बनायें – यदि यह गलत है तो यह गलत है और उसे अनदेखा करना कोई सहायता नहीं करता। परन्तु एक दूसरे को छूट देने का तात्पर्य है कि हम एक दूसरे को सिद्धता से कुछ ही कम होने की अनुमति देते हैं। हम अपने शब्दों और व्यवहार से सन्देश भेजते हैं जो कहते हैं, "तुम ने ऐसा किया इसलिये मैं तुम्हारा तिरस्कार नहीं करता हूँ; मैं तुम से हार नहीं मानता हूँ। मैं इसके द्वारा तुम्हारे साथ कार्य करूँगा और तुम्हें विश्वास करूँगा।"

मैंने अपने बच्चों से कहा है कि जो कुछ वे करते हैं उससे हमेशा मैं सहमत नहीं हो सकती हूँ, मैं हमेशा समझने का प्रयास करूँगी और उनसे प्रेम करना बन्द नहीं करूँगी। मैं चाहती हूँ कि वे जाने कि वे मुझ पर निर्भर हो सकते हैं कि मैं लगातार उनके जीवन में हूँ।

हमारी त्रुटियों के विषय में परमेश्वर सब कुछ जानता है, और फिर भी हमें चुनता है। हमारे करने से पहले ही वह उन गलतियों को जानता है जो हम करेंगे और वह हमारी तरफ उसकी मुद्रा है, "मैं तुम्हें अपूर्ण होने के लिये अनुमति दूँगा! वह प्रतिज्ञा करता है कि वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा या हमें कभी न त्यागेगा" (इब्रानियों 13:5 देखिये)।

डेव मुझे मैं बने रहने देते हैं यद्यपि मेरे विषय में सिद्धता से कम ही है। वह कभी भी मुझे "परिवर्तित होने के लिये या कोई और बनने" के लिये दबाव नहीं डालते हैं! मैं कभी भी उनके द्वारा तिरस्कृत किये जाने के भय में नहीं रहती हूँ कि मैं एक असिद्ध पत्नी हूँ। हमारे परिवार के व्यक्ति और अन्य

निकटत्तम संबन्धियों के विषय में ऐसी बातें हैं जिनके विषय में हम चाहते कि काश कि वे भिन्न होते, परन्तु जब हम सच में किसी से प्रेम करते हैं तो हम उन सब बातों को स्वीकार कर लेते हैं। हम अच्छी बातों को और जो उतनी अच्छी नहीं है उसको भी ग्रहण कर लेते हैं। सत्य यह है कि कोई भी सिद्ध व्यक्ति नहीं है। यदि हम सिद्धता की अपेक्षा करते हैं तो हम हमेशा स्वयं को निरूत्साहित होने और कड़वाहट भोगने के लिये तैयार करते हैं। एक दूसरे को छूट देना जीवन को बहुत अधिक आसान बनाता है और सब से बढ़कर तो यह परमेश्वर के प्रति हमारी आज्ञाकारिता को दर्शाता है।

जब लोग कुछ ऐसा करते हैं जो आप सच में नहीं समझते, उस पर चिड़चिड़ाने की बजाय स्वयं से कहें, "वे मनुष्य हैं।" यीशु मानवजाति के स्वभाव को जानता था और इसीलिये वह उन बातों से चकित नहीं हुआ जब लोगों ने ऐसा किया जिसके विषय में वह चाहता था कि वे उसे न करते। उसने अब भी पतरस से प्रेम किया यद्यपि पतरस ने उसे जानने के पश्चात् भी उसका इन्कार किया। उसने अब भी अपने शिष्यों से प्रेम किया यद्यपि वे जगे रहने और उसके साथ सुख–दुःख, और यातना के समय प्रार्थना करने के लिये जगे रहने में असमर्थ थे। लोग जो करते हैं वह हमें उनसे प्रेम करने से नहीं रोकेगा यदि हम पहले से यह जान लें कि वे सिद्ध होने नहीं जा रहे हैं और उस मानवीय स्वभाव को छूट देने के लिये तैयार हों जो हम सब के साथ है।

न केवल हमें उन गलतियों का हिसाब रखना चाहिये जो लोग करते हैं, परन्तु कार्यों का हिसाब भी हमें नहीं रखना चाहिये जो हम करते हैं और जिनके विषय में हम विश्वास करते हैं कि सही है। स्वयं के विषय में बहुत निश्चित सोचना हमें अन्य लोगों के प्रति अधैर्यवान और अदयालु बनाता है। मत्ताई प्रेरित ने कहा कि जब हम एक भला कार्य करते हैं तो हमें दायें हाथ को पता नहीं चलना चाहिये कि बांया हाथ क्या करता है (मत्ती 6:3 देखिए)। मेरे लिये इसका तात्पर्य है कि मुझे इस बात पर वर्णन नहीं करना चाहिए जिसके विषय में मैं विश्वास करती हूँ कि मेरे अच्छे कार्य थे या जो मेरे अच्छी बातें हैं। मुझे केवल अपने मिलनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के बारे में ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। एक प्रेम क्रान्तिकारी का प्राथमिक ध्यान यह है।

प्रेम पाप को ढाँपता है

प्रेरित पतरस ने कहा कि सब से बढ़कर हम में एक दूसरे के लिये निष्कपट और अपराजित प्रेम होना चाहिये क्योंकि प्रेम बहुत सारे पापों को ढाँप देता

है (1 पतरस 4:8 देखिए)। प्रेम केवल एक गलती को नहीं ढाँपता है; यह बहुत सारे पापों को ढाँपता है। परमेश्वर के प्रेम ने न केवल हमारे पापों को ढाँप दिया परन्तु उसने वास्तव में उन्हें पूरी रीति से हटाने के लिये कीमत चुकाई। प्रेम एक शक्तिशाली शुद्ध करनेवाला है। मैं चाहती हूँ कि आप ध्यान दें जो पौलुस ने यह करने के लिये कहा–प्रेम–सब बातों से ऊपर है।

कुलुस्सियों के लिये भी पौलुस के पास यह सन्देश था, उनसे विनती करता है कि सब के ऊपर प्रेम को पहिन लो (कुलुस्सियों 3:14 देखिये)। बार–बार में बाइबल में हम एक दूसरे से प्रेम करने के लिये लगातार स्मरण दिलाते हुये देखते हैं, और ऐसे करने के बीच में किसी वस्तु को न आने के लिये कहा गया है।

जब पतरस ने यीशु से पूछा कि कितनी बार किसी गलती के लिये उसे अपने भाई को माफ करना चाहिये, यीशु ने उसे कहा इसे लगातार करते रहें जितनी बार कर सकते हैं (मत्ती 18:21–22 देखिये)। पतरस ने सात बार सलाह दी और मैं अक्सर आश्चर्यचकित होती हूँ कि क्या वह पहले ही छः बार प्रयास कर चुका था और उसने सोचा कि केवल एक बार और उसे प्रयास करना है। यदि हम प्रेम क्रान्ति में शामिल होने जा रहे हैं, हमें अवश्य यह समझना है कि बहुत सारी क्षमा अपेक्षित है। वास्तव में यह शायद हमारे दैनिक अनुभव का भाग होगा। कुछ एक बातें जो हमें क्षमा करनी होगी वह छोटी होगी और आसान होंगी, परन्तु कई अवसरों पर बड़ी बातें आती हैं और हम चकित होने लगते हैं कि क्या कभी हम उस पर विजय पाएँगे। केवल स्मरण करें कि परमेश्वर कभी भी कुछ ऐसा करने के लिये नहीं कहता है जब तक वह उसे करने के लिये योग्यता नहीं देता। हम किसी को भी किसी भी बात के लिये क्षमा कर सकते हैं यदि परमेश्वर के प्रकार का प्रेम अपने अन्दर से बहने देते हैं।

जब हम लोगों की त्रुटियों को ढाँपते हैं तब हम आशीषित होते हैं, और जब हम अनावृत करते हैं तब हम श्रापित होते हैं। किसी की त्रुटियों को ढाँपने का भाग होना उसे निजी बनाये रखना है। दूसरों को यह बताने में जल्दबाजी न करें कि आप किसी की गलती के बारे में क्या जानते हैं। लोगों के रहस्यों को उसी प्रकार अपने तक रखिये जैया आप अपने भेदों को रखना चाहते हैं। हम अक्सर नूह के समय का वर्णन बाइबल में पाते हैं, जब नूह अपने तम्बू में नशा करने के पश्चात् नंगा हो गया। उनके बेटों में से एक ने उसकी नग्नता को अपने दोनों भाइयों से बताने के द्वारा अनावृत किया और उसने अपने जीवन में उस दिन से आगे को श्राप कमाया। दो बेटे जिन्हें ये बताया

गया था वे पीछे की ओर चलते हुये तम्बू की ओर पहुँचे ताकि वे पिता की नग्नता को न देखें और उन्होंने उसे ढाँप दिया। बाइबल कहती है कि उन्हें आशीष प्राप्त हुई (उत्पत्ती 9:20–27 देखिए)। नूह के नग्नता न्याय करने में उसकी त्रुटि, उसकी गलती, उसके पाप की ओर इंगित करती है। जैसा कि यह कहानी स्पष्टतः वर्णन करती है कि हमें एक दूसरे की त्रुटियों को अनावृत नहीं करना है।

यीशु ने निर्देश दिया कि किस प्रकार से इसके साथ व्यवहार करना है जब एक भाई आपके प्रति गलती करता है (मत्ती 18:15–17 देखिए)। पहली बात जो उसने करने के लिये कहा, वह है उसके पास अकेले में जाओ और उसके विषय में बात करो। यदि यह कार्य नहीं करता है तो दो या तीन लोगों को अपने साथ इस आशा से लेकर जाओ कि वह अपने होश में आएगा और पश्चाताप करेगा। यदि हम इन साधारण निर्देशों का पालन करते हैं तो बहुत सारे कष्टों से हम पीछा छुड़ा सकते हैं। मैं आपको नहीं बता सकती कि कितनी बार लोग मेरे पास उन समस्याओं को सुलझाने आते हैं जिसे उन्हें अकेले में हल करना चाहिये – ऐसी बातें जो उनके और उस व्यक्ति के बीच में होनी चाहिये जिनके विषय में वे महसूस करते हैं कि वे उनके साथ गलत किए है। किसी का सामना करने से भयभीत न हों यदि आप सच में महसूस करते हैं कि आपको ऐसा करने की जरूरत है। कभी कभी क्षमा करने का सबसे त्वरित रास्ता मुद्दे को बाहर लाकर उस पर चर्चा करना है। गुप्त अपराध ऐसे घाव के समान है जिनका इलाज़ नहीं किया गया। वे शान्तभाव से तब तक बुरा बनते जाते हैं जब तक वे पूरी रीति से उस घाव से उस पूरे क्षेत्र से प्रभावित न हो जायें और बीमार पड़ जाएँ। हमें घाव को तुरन्त ही साफ करने की जरूरत है इससे पहले कि बहुत देर हो जाए।

बाइबल एक व्यक्ति की कहानी कहती है जिसका नाम युसुफ था जिसे उसके भाईयों के द्वारा गुलाम होने के लिये बेच दिया गया। जब युसुफ के भाइयों ने वर्षों बाद पाया कि वह जीवित है और उस भोजन वस्तु का वितरक है जिसकी उन्हें बहुत अधिक जरूरत है, वे भयभित हो गये। उन्होंने स्मरण किया कि उन्होंने कितनी बुरी रीति से यूसुफ के साथ व्यवहार किया था और उसने कैसे किया था, परन्तु उसने किसी पर भी यह बात प्रकट करना न चाहा। उसने अकेले में उन्हें बातें की और उनसे कहा कि वह परमेश्वर नहीं है और सब कुछ परमेश्वर की ओर से है उसकी ओर से नहीं है। उसने सौजन्यभाव से क्षमा कर दिया, उनसे विनती की कि भयभित न हों और उनके लिये और उनके परिवार के लिये प्रबन्ध करने हेतु हाथ आगे बढ़ाया। इसमें

आश्चर्य नहीं कि यूसुफ एक सामर्थी अगुवा था जिसने जहाँ कहीं भी गया लोगों का अनुग्रह प्राप्त किया। वह प्रेम की सामर्थ को और संपूर्ण क्षमा के महत्व को जानता था।

अपने सभी हिसाब चुकता कीजिए

क्यों नहीं आप उन सारे पुराने हिसाबों को चुकता कर दें जिन्हें आप ने रख छोड़ा है और उसमें लिख दें, "भूगतान हो चुका है?" "धन्य है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए" (रोमियों 4:8)। इसका यह तात्पर्य यह नहीं कि परमेश्वर पाप को नहीं देखता है। इसका तात्पर्य है कि प्रेम के कारण वह पापी के विरूद्ध इसका दण्ड नहीं देता है। प्रेम इस बात को पहचानता है कि गलत किया गया है और उसे मिटा देता है इससे पहले कि वह हृदय में स्थापित हो जाए। प्रेम गलती को पंजीकृत करता नहीं या उसका हिसाब करता नहीं है; इस रीति से अप्रसन्नता के साथ बढ़ने का अवसर नहीं होता है।

हममें से कुछ अपने स्मरण शक्ति के विषय में चिन्ता करते हैं, परन्तु सत्य तो यह है कि शायद हमें कुछ एक बातों को और अधिक भूलने की क्षमता चाहिये। मैं सोंचती हूँ कि हम अक्सर उन बातों को भूल जाते हैं जिन्हें हमें स्मरण रखना चाहिये और उन बातों को स्मरण रखते हैं जिन्हें हमें भूल जाना चाहिये। शायद, हम अपने जीवन में परमेश्वर के समान सब से अधिक जो कार्य जो कर सकते हैं वह है क्षमा करना है भूल जाना। कुछ लोग कहते हैं, "मैं उन्हें क्षमा कर दूँगा, परन्तु मैं उन्हें कभी भूलूँगा नहीं।" इस कथन के सच्चाई यह है कि यदि हम स्मरण करने को पकड़े रहते हैं, तो हम क्षमा नहीं कर रहे हैं। आप पूछ सकते हैं कि उन बातों को हम कैसे भूल सकते हैं जिसने हमें चोट पहुँचाई है। उत्तर यह है हमें अवश्य ही उन बातों के विषय में नहीं सोचने का चुनाव करना चाहिये। जब वे बातें मन में आती हैं, हमें अवश्य ही उन विचारों को बाहर निकाल देना है और उन बातों को सोचने का चुनाव करना चाहिए जो हमें लाभ देती हैं।

अपने सारे हिसाबों को चुकाना अच्छा परिणाम लाता है। यह दबाव को कम करता और आपके जीवन की विशेषता को बढ़ाता है। आपके और परमेश्वर के बीच में निकटता पुनः स्थापित होगी, और आपके आनन्द और शान्ति में बढ़ोत्तरी होगी। आपका स्वास्थ्य भी बढ़ सकता है क्योंकि एक शान्त और अहस्तक्षेपित मन और हृदय शरीर का जीवन और स्वास्थ्य है (नीतिवचन 14:30 देखिए)। अप्रसन्नता दीवारों को खड़ा करती है। प्रेम पुल का निर्माण करती है!

अध्याय

14

प्रेम दिखाने के व्यवहारिक तरीके

हर समय सुसमाचार का प्रचार करो और जब
जरूरत हो तो शब्दों का इस्तेमाल करो।
आस्सीसी का सन्त फ्रान्सीस

यह पुस्तक अनुपयोगी है यदि मैं तुरन्त ही प्रेम दिखाना प्रारम्भ करने के कुछ व्यवहारिक रास्ते प्रस्तुत न करूँ। जैसा कि मैंने पहले कहा, प्रेम एक सिद्धान्त या एक केवल एक बातचीत नहीं है, यह एक कार्य है। प्रेम क्रान्तिकारियों के रूप में, हमें लगातार नए और अच्छे तरीकों की खोज करते रहना चाहिए कि इस संसार में प्रेम लेकर आ सकें।

मुझे आपको स्मरण दिलाने दीजिये कि चाहे हमारे पास कुछ भी हो या हम कुछ भी करें, यदि हम में प्रेम नहीं है तो हममें कुछ नहीं है और हम कुछ नहीं हैं (1कुरिन्थियों 13:1–3 देखिए)। समाज के भविष्य के लिये यह अनिवार्य है कि हम उत्साह पूर्वक प्रेम दिखाना प्रारंभ करें। आज लोग यह जानने का अत्यधिक इच्छा रखते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है या नहीं, उनके यहाँ होने का उद्देश्य क्या है, और यदि वास्तव में परमेश्वर का अस्तित्व है तो संसार इतने अधिक बुराईयों से क्यों भरा हुआ है। मैं विश्वास करती हूँ कि यदि वे

चाहे हमारे पास कुछ भी हो या हम कुछ भी करें, यदि हम में प्रेम नहीं है तो हममें कुछ नहीं है और हम कुछ नहीं है

प्रेम को कार्यरूप में देख सकते हैं यह उनके प्रश्नों को उत्तर देगा। परमेश्वर प्रेम है और उसका अस्तित्व है, और स्वयं को प्रकट करने का एक बड़ा मार्ग उसके लोगों द्वारा है। संसार को प्रेम को जीते हुए देखने की जरूरत है। उन्हें सयंम, दयालुता, निःस्वार्थता, और क्षमा करने की इच्छा देखने की जरूरत है। उन्हें दूसरों की सहायता के लिये त्याग करते हुये लोगों को देखने की जरूरत है जो कम भाग्यशाली हैं। प्रेम के द्वारा स्पर्ष किये जाकर मानो आग के सामने एक गरम कम्बल के अन्दर बैठना। यह इसके अलावा और कुछ महसूस नहीं करना है। और यह उपहार दूसरों को देने की सामर्थ हममें है।

संयमी बनिए

बाइबल में 1 कुरिन्थियों 13 अध्याय में पौलुस की बातचीत में प्रेम की पहली विशेषता संयम है। पौलुस लिखता है कि प्रेम सब बातें सह लेता है और संयमी है। प्रेम दुःख उठाता है। जब चीजें आपके अनुसार नहीं होती हैं तभी प्रेम स्थिर रहता और साहमति बनाये रहता है।

मैं धीमे कार्य करनेवाले लिपिकों के साथ संयम रखने का अभ्यास करती रही हूँ, जो धीमे हैं, जो वस्तुओं की कीमत नहीं पा सकते, जो हाशिये से बाहर चले जाते हैं, जो शिघ्राहस को शान्त करने का प्रयास करते हुये फोन से चिपके रहते हैं जब मैं वहाँ पर सहायता के लिये खड़ी हूँ। बहुत से लिपिक दुकानों में सच में मुझे धन्यवाद दिये हैं कि मैं संयम बरती थी। मुझे निश्चय है कि वे बहुत से निराश, असंयमी, और अप्रेमी ग्राहकों से दुर्व्यवहार सहते हैं और मैंने निर्णय लिया कि मैं उनकी समस्याओं को बढ़ाना नहीं चाहती। मैं उत्तर का भाग बनना चाहती हूँ। निश्चय ही, हम सब जल्दी में हैं और इन्तजार करना नहीं चाहते परन्तु क्योंकि प्रेम अपना भला चाहनेवाला नहीं है। हमें अवश्य इस बात को सीखना चाहिये कि हम इस प्रकार महसूस करते हैं इससे बढ़कर वह लिपिक कैसा महसूस करता है। हाल ही में एक दुकान के लिपिक ने मुझ से अपने धीमें होने के लिये क्षमा माँगी और मैंने उससे कहा कि मैं कुछ भी ऐसा महत्वपूर्ण कार्य कर नहीं रही थी कि मैं इन्तजार कर न सकूँ। मैंने उसे प्रकट रूप से आराम की साँस लेते हुये देखा और जाना कि मैं ने उस प्रेम दिखाया था।

बाइबल में हमें उत्साहित किया गया है कि हम सब के प्रति संयमी और हमेशा अपने स्वभाव को परखनेवाले हों (1 थिस्सलुनिकियों 5:14 देखिए)। यह न केवल दूसरों के प्रति हमारी गवाही के लिये ही अच्छा है परन्तु यह हमारे लिये भी अच्छा है। जितना अधिक हम सयंमी होते हैं उतना ही अधिक हममें तनाव कम होता है! पतरस ने कहा कि प्रभु असाधारण रूप से हमारे प्रति संयमी है, क्योंकि यह उसकी इच्छा है कि कोई भी नाश न हों (2 पतरस 3:9 देखिए)। यही वह कारण है जिससे हमें भी एक दूसरे के साथ संयमी होना चाहिये और विशेष करके संसार में उन लोगों के साथ जो परमेश्वर को खोज रहे हैं।

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि प्रभु के सेवकों को योग्य और उचित शिक्षक, दीन–स्वभाव रखनेवाले होना चाहिये (2 तीमुथियुस 2:24 देखिए)। हम अपने कार्यों के द्वारा प्रति दिन लोगों को सिखाते हैं। सिखाना केवल शब्दों के द्वारा नहीं किया जाता है – कार्य अक्सर अधिक प्रभावशाली होते हैं। हम सब प्रभाव रखते हैं और हमें सावधान होना चाहिये कि हम किस प्रकार से इस्तेमाल करते हैं। ईमानदारी पूर्वक मैंने इस प्रकार की बहुत सी बातें गत बीस वर्षों में देखीं है, जो मुझे बीमार बनाती हैं।

हमें मसीही विश्वास के चिन्हों को नहीं पहनना चाहिये यदि हम उस स्तर तक जीने के लिये तैयार नहीं हैं। परमेश्वर के साथ मेरा संबन्ध का प्रमाण मेरा बड़ा सा स्टीकर, या मेरे मसीही आभूषण या कलीसिया में उपस्थिति का मेरा हिसाब नहीं है। यह नहीं है कि मैं ने कितने पद याद किये हैं या मेरी मसीही पुस्तकालय में कितनी किताबे, डि.वि.डि और सि.डि हैं। मेरे मसीहियत का प्रमाण क्रान्तिकारी प्रेम के फल में दिखाई देता है।

मैं आप से लगातार प्रार्थना करने के लिये अनुरोध करती हूँ कि जो कुछ सामने आता है उसका अच्छे स्वभाव के साथ उसको सहने के लिये आप योग्य बनें। मुझ पर भरोसा रखिए, ऐसी बातें आएँगी जो आपको निराश करने की क्षमता रखती हैं, परन्तु आप यदि समय से पहले तैयार रहते हैं आप जब उन बातों का सामना करते हैं तो शान्त रहने के योग्य होते हैं। अपने मनोभाव में और स्वभाव में स्थिरता प्रदर्शित करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। संसार में बहुत सारे लोग विध्वंसात्मक हो जाते हैं जब बातें उनके तरीके से नहीं होती हैं। मैं गंभीरतापूर्वक विश्वास करती हूँ कि प्रभाव डालने के तरीकों में से एक संयमी होना है जब गलत बातें होती हैं।

कुछ सप्ताह पूर्व मैंने संयम पर और धन्यवादी होने पर प्रचार किया चाहे आपकी परिस्थिति कुछ भी हो। मैंने छः सप्ताहों में तीन बड़े सम्मेलन किए थे उसके साथ–साथ अपने बहुत से अन्य कार्य भी था और उस शनिवार की सुबह का सत्र, उस कार्यों के श्रृंखला का अन्तिम कार्य था। मैं सचमुच में उस दिन घर जल्दी पहुँचना चाह रही थी, एक अच्छा भोजन खाना, और चाह रही थी कि कुछ क्षण के लिये डेव मुझे खरीददारी के लिये ले जाए, घर पर अच्छे से स्नान करूँ, आईस्क्रीम खाऊँ, और एक अच्छा मूवी देखूँ। आप देख सकते हैं कि मैं अपने स्वयं के परिश्रम के लिये प्रतिफल पाने हेतु तैयार थी। मैं अपने लिये एक अच्छी योजना बनाई थी।

हम घर वापस जाने के लिये जहाज पर सवार हुए, और यात्रा का समय केवल पैंतीस मिनट था। मैं बहुत अधिक उत्साही थी.....और तब कुछ गलत हुआ। हवाई जहाज का दरवाजा अच्छी रीति से बन्द नहीं हो रहा था इसलिये डेढ़ घण्टा इन्तजार करना पड़ा जबकि वे दरवाजे पर कार्य करते रहे। ऐसी बातचीत भी हो रही थी कि उस दिन शायद हम उड़ान न भर पायें और सम्भवतः कार किराये पर लेकर घर जाना पड़े। मैं आपको नहीं बता सकती कि संयम रखना मेरे लिये कितना कठिन था। अपने मुँह को बन्द रखना मेरे लिये एक बहुत भारी कार्य था। मैंने सयंम पर प्रचार किया था पर यह प्रार्थना करना भूल गई थी कि मेरी परख होती है तो मैं अच्छी रीति से पास हो जाऊँ।

क्या आपने कभी एक महान सन्देश को सुनने का अनुभव प्राप्त किया है जिसकी वास्तव में आपको जरूरत थी और तुरन्त ही स्वयं को उस सन्देश के आधार पर परख में पाया हो? हाँ, आपको प्रचार करने और यह देखने का प्रयास करना चाहिये कि कितनी जल्दी आपकी परख होती है! मैं जानती हूँ कि हम हमेशा संयमी महसूस नहीं करते हैं परन्तु फिर भी हम स्वयं को संयमी होने के लिये अनुशासित कर सकते हैं। कुछ समय पर मैं जो महसूस करती हूँ उसके विषय में मैं कुछ नहीं कर सकती हूँ, परन्तु मैं अपने व्यवहार को नियंत्रित कर सकती हूँ और आप भी ऐसा कर सकते हैं। मैं आपको निश्चय दिलाती हूँ कि मैंने उस हवाईपथ पर बैठे संयम महसूस नहीं किया परन्तु मैं लगातार प्रार्थना करती रही, *परमेश्वर ने मुझे शांत रहने में सहायता की, कि मैं उस विषय में बुरी गवाह न ठहरूँ जिस पर मैंने अभी अभी प्रचार समाप्त किया है।* परमेश्वर ने मेरी सहायता की और जबकि उन परिस्थितियों में चीजें हमेशा वैसी नहीं होती जैसी मैं देखना चाहती थी, ऐसी स्थिति में हमने घर

पहुँचकर भी अपनी बनाई योजनानुसार काम करने के लिए काफी समय पाया।

जब आप स्वयं को कठिन परिस्थिति में पाते हैं, तो अपने शान्ति को बनाए रखने का प्रयास कीजिये और आप अपने बदले में परमेश्वर को काम करते हुए देखेंगे। जब इस्त्राएली लोग लाल समुद्र और मिस्त्री सेना के बीच में थे, मूसा ने कहा, "यहोवा आप ही के लिये लड़ेगा, इसलिये तुम चुपचाप रहो" (निर्गमन 14:14)।

समय दीजिए

समय सब से अधिक मूल्यवान वस्तु है जो हममें से अधिकांश के पास है। जब हम लोगों से अपना समय देने के लिये कहते हैं तब हमें समझना चाहिये कि हम उनसे एक बहुमूल्य उपहार माँग रहे हैं और जब हम यह प्राप्त करते हैं तो हमें इसकी बड़ी प्रशंसा करनी चाहिये। लोग अक्सर मेरे समय की माँग करते हैं और दुर्भाग्य से मैं उन सब को यह नहीं दे सकती हूँ। यदि मैंने प्रयास किया तो न केवल मैं जल जाऊँगी परन्तु मेरे पास समय नहीं होगा कि परमेश्वर ने जो कार्य मुझे इस पृथ्वी पर के जीवन में करने के लिये दिया है उसे समाप्त कर सकूँ।

हम प्रत्येक से हाँ नहीं कह सकते हैं, परन्तु हमें हर किसी से न नहीं कहना चाहिये। मैं कुछ समय देने की बहुत सिफारिश करती हूँ क्योंकि यह प्रेम दिखाने का एक तरीका है। हाल ही में मैंने टेन्नेस्सी के एक कलीसिया में एक मित्र पर अनुग्रह दिखाते हुये प्रचार किया और जब मैं वहाँ थी तो मैं ने महसूस किया कि परमेश्वर मुझ से कह रहा हो कि मैं उस भेंट को वापस करूँ जो मेरे लिये उन्होंने उस शहर के गरीब लोगों की सहायता के लिये प्राप्त किया है। मैंने उसी समय महसूस किया कि परमेश्वर चाहता है कि मैं अपना समय और धन मुफ्त रूप से दूँ। वह चाहता था कि मैं उसके बदले में उस देने के आनन्द के अलावा कुछ भी प्राप्त न करूँ जो पर्याप्त से अधिक था। मैं पाती हूँ कि परमेश्वर मुझे इस रीति से कई बार परखता है और मैं प्रसन्न हूँ कि वह ऐसा करता है, क्योंकि मैं नहीं चाहती कि मैं कभी यह सोचने की आदत में पड़ूँ कि मैं दूसरों के लिये जो कुछ करती हूँ उससे कुछ प्राप्त करने की जरूरत है।

मैं अंगीकार करती हूँ कि मेरे लिये अपना समय देना अपना धन या संपत्ति देने से अधिक कठिन है। इस समय मैंने अपने जीवन का कम से कम दो – तीहाई भाग जी लिया है। और मैं जानती हूँ कि जो कुछ मेरे पास बाकी है उसे उद्देश्यपूर्वक और केन्द्रित करने की जरूरत है। अक्सर मैं अनिवार्यता के समय पर स्वयं को न कहने की जरूरत को महसूस करती हूँ, जब मैं कर सकती हूँ तो मैं हाँ कहती हूँ, क्योंकि मैं जानती हूँ कि मेरा समय प्रेम का बहमूल्य उपहार है।

जब कोई आपकी सहायता चलायमान होने के लिये करते हैं, वे आपको समय का बहुमूल्य उपहार दे रहे हैं। जब आप किसी के अविभाजित ध्यान को प्राप्त करते हैं वे आप का आदर कर रहे हैं और प्रेम दिखा रहे हैं। प्रत्येक समय हम पूछते हैं, "क्या आप मेरे लिये कुछ कर सकते हैं?" हम एक व्यक्ति के सब से बहुमूल्य वस्तु को माँग रहे होते हैं क्योंकि हम उनके समय का एक हिस्सा माँग रहे हैं।

अपने समय के बारे में सोचिए। परमेश्वर के साथ निकट संबन्ध विकसित करने में इसका बहुत सारा भाग देना सुनिश्चित कीजिये और यह सुनिश्चित करें कि आप उसमें से कुछ उसके प्रेम के प्रगटिकरण के रूप में उसके लोगों को देते हैं। फोएनिक्स् फार्स्ट एसेम्बली ऑफ गॉड् कलीसिया आमेरिका के तेजी से बढ़ती कलीसियाओं में से एक के सीनियर पास्टर टॉम्मी बारनेट्ट ने कहा, "जीवन कुछ ऐसा है जिसमें हम लगातार खोते हैं।" इसलिये जो कुछ हम करते हैं हमें गंभीरतापूर्वक लेना चाहिये। जब लोग कहते हैं कि देने के लिये उनके पास कुछ नहीं है, वे भूल रहे हैं कि जब तक हम जीवित हैं तब तक हमारे पास कुछ देने के लिये हैः हमारा समय।

चूंकि समय एक ऐसी बहुमूल्य बात है हमें इसे बुद्धिमानी के साथ उद्देश्यपूर्वक खर्च करना चाहिए। लोग आपका समय चुराने न पायें, अपना समय बर्बाद न करें और कभी न कहें "मैं थोड़ा सा समय निकालने का प्रयास कर रहा हूँ।" जानिए कि आपकी प्राथमिकताएँ क्या हैं और उन चीजों के लिये अपने समय को समर्पित कीजिए। परमेश्वर और परिवार आपकी सूची में सब से ऊपर होना चाहिये। आपको स्वयं की देखभाल के लिये भी समय की जरूरत है। आपको काम करने, आराम करने, और खेलने की भी जरूरत है ताकि आप सन्तुलित व्यक्ति बनें रहें। आपको अपने समय में से कुछ उन लोगों की सहायता में भी खर्च करना होगा जिन्हें आपकी जरूरत है।

यदि आप सोंचते हैं कि आपके पास सब कुछ करने के लिये समय नहीं है, और फिर भी दूसरों को देते हैं, मैं आपको वह करने के लिये उत्साहित करूँगी जो टॉम्मी बारनेट्ट से परमेश्वर ने करने के लिये कहा। उसने उससे अपना आधा घण्टा बुद्धिमानी से इस्तेमाल करने के लिये कहा। उसने उसे दिखाया कि उसके पास बहुत सारे आधे घण्टे थे। पास्टर बारनेट्ट कहते हैं कि यदि आप मुझे बताते हैं कि आप अपने आधे घण्टे के साथ क्या करते हैं, वह आपको बता सकते हैं कि आपका जीवन किस विषय में है। कार्य और घर की आधे घण्टे की यात्रा के मध्य प्रतिदिन आप क्या करते हैं? डॉक्टर से मिलने के इन्तजार में आधे घण्टे आप क्या करते हैं? उस आधे घण्टे के बारे में क्या जिसे आप रेस्टोरेन्ट में खाने का इन्तजार में व्यतीत करते हैं? क्या आपके पास उन आधे घण्टे में किसी के प्रति प्रेम दिखाने का समय है? क्या आप वह समय फोन या चिट्ठी के द्वारा किसी को प्रोत्साहित करने को इस्तेमाल कर सकते हैं? क्या आप किसी के लिये प्रार्थना कर सकते हैं? क्या आप प्रार्थना कर सकते हैं कि आप किसी के लिये क्या कर सकते हैं? रचनात्मक रीति से सोंचने के लिये समय को इस्तेमाल कीजिये कि आप को क्या देना है?

आप अपने आधे घण्टे में किताब लिख सकते हैं। आप एक आत्मा जीत सकते हैं। आधे घण्टे में आप एक बड़ा निर्णय ले सकते हैं। एक आधा घण्टा एक साफ घर और एक गन्दे घर के बीच का अन्तर हो सकता है। आपका आधा घण्टा महत्वपूर्ण है, और उनमें से बहुत सा भाग आपके हिस्से में होगा यदि आप देखना प्रारंभ करते हैं। क्या मैं यह कह रही हूँ कि दिन के प्रत्येक क्षण आपको कुछ न कुछ करने की जरूरत है? नहीं, मैं ये नहीं कह रही हूँ। यतार्थ में, आपको निर्णय लेना है कि आप को एक आधा घण्टा लेकर आराम करने की जरूरत है। और आप यदि ऐसा करते हैं तो ठीक है, परन्तु कम से कम आपने उसे लक्ष्यपूर्वक इस्तेमाल किया और बिना कुछ किये उसे बर्बाद नहीं किया।

स्मरण रखें कि प्रत्येक दिन जो बीत जाता है उसे आप कभी वापस नहीं पाएँगे। इसका उपयोग कीजिए; इसे बर्बाद मत कीजिये।

अपने विचारों, शब्दों, और सम्पत्ति के साथ प्रेम कीजिए

विचारों की सामर्थ विचारों की सामर्थ को दर्शाने के लिये एक महिला ने यह कहानी पायीः

क्रिसमस के दौरान मैंने क्रिसमस ट्री बनाने के लिए एक अंजीर के पेड़ के ऊपर के शयन को कक्ष में ले गई। मेरे पास एक छोटी डाहिनी थी जिसमें लगभग एक डॉजन पत्ते थे जो अन्य डाहिनी से नीचे थी। यह सही नहीं दिख रही थी जो पेड़ के आकार को खराब कर रही थी।

जब मैं सुबह उठती तब मैं खिड़की में से पेड़ को देखती और सोचती कि *मैं उसे डाहिनी को काटने जा रही हूँ।* प्रत्येक बार जब मैं उस पौधे के पास से निकलती मैं सोचती, *वह डाहिनी सही नहीं लग रही है, मैं उससे छुटकारा पाने जा रही हूँ।*

समय गुजरता गया। पेड़ को पुनः बैठक कक्ष में वापस रख दिया गया। प्रत्येक बार मैं एक नकारात्मक विचार सोचना जारी रखा, जिस पर मैंने ध्यान दिया था। लगभग डेढ़ महीने तक ये सब चलता रहा।

एक सुबह मैं जब उस पेड़ के पास से गुजरी तो मैंने देखा कि उस छोटे शाखा की प्रत्येक पत्ती पिली हो चुकी थी। उस पूरे पेड़ में एक भी और पिली पत्ती नहीं थी। मैं एक प्रकार से उछल पड़ी और मैंने अपने पति से कहा। उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा, "मुझे निश्चय है और मैं प्रसन्न हूँ कि तुम मेरे बारे में अच्छा सोचती हो।"

मैंने उसी दिन उस डाली को काट दिया!

अपनी सास के साथ मेरा संबन्ध हमेशा कठिन रहा है। निश्चय ही, मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझ पर कोई आरोप है, कि मैं बहुत ही मधुर थी। मैंने निर्णय लिया कि यह एक उचित प्रयोग था। प्रत्येक बार जब मैंने अपनी सास के बारे में सोचा मैंने निर्णय लिया कि मैं उन्हें आशीष दूँगी और उनके विषय में सोचने के भिन्न अलग जाकर उन्हें आशीष दूँगी!

वह कभी कभी मुझे फोन करती हैं या मेरे साथ बात करने में रूचि रखती है। परन्तु पाँच दिनों के भीतर उन्होंने मुझे तीन बार फोन किया था–क्षण भर के लिये ही सही, परन्तु वे मैत्रीपूर्ण फोन थे! पिछले वर्ष भर में उन्होंने मुझे छः बार से अधिक फोन नहीं किया था।

इस महिला ने विचारों की सामर्थ पर मेरे अध्ययन श्रृंखला का आदेश दिया और कहा, "अब मैं देखती हूँ कि अन्य लोगों के विषय में मैं क्या सोचती हूँ।"

हम अन्य लोगों के विषय में असंख्य विचार सोचते हैं, परन्तु हमें इसे अधिक उत्तरदायित्व से करना चाहिये। मैं विश्वास करती हूँ कि विचार आत्मिक क्षेत्र में काम करती है, और यद्यपि उन्हें नंगी आँखों से नहीं देखा जा सकता है, मैं विश्वास करती हूँ कि हमारे विचार दूसरे लोगों के द्वारा महसूस किये जाते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे अंजीर का पेड़ महिला के नकारात्मक विचारों के द्वारा नकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ, मैं विश्वास करती हूँ कि लोग हमारे विचारों के द्वारा प्रभावित होते हैं।

लोगों के विषय में जो हम सोचते हैं व न केवल उन्हें प्रभावित करता है, परन्तु उनके प्रति हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है। यदि मैं गुप्त रूप से सोचती हूँ कि मैं किसी को इतना अधिक पसन्द नहीं करती हूँ और मानसिक रूप से उन सारी गलतियों या त्रुटियों के विषय में सोचती हूँ जो मैं विश्वास करती हूँ वे हैं, तो जब मैं उन्हें देखती हूँ तो मैं उस रूप के अनुसार देखती हूँ जो मैंने उन्हें मन में उनके लिये बनाई है।

एक दिन मैं अपने बेटी के साथ खरीददारी कर रही थी, जो उस समय एक किशोरवय थी। उस दिन उसके चेहरे पर बहुत सारे मुँहासे थे और उसके बाल उलझे हुए थे। मुझे स्मरण है कि उसको जब भी देखती मैं सोचती थी, *निश्चय ही आज तुम बहुत अच्छी नहीं दिख रही हो।* दिन की समाप्ती पर मैंने ध्यान दिया कि वह बहुत अधिक निराश दिख रही थी, अतः मैंने उसे पूछा कि क्या हुआ। उसने कहा, "आज मैं बहुत ही गन्दा महसूस कर रही हूँ।" परमेश्वर ने मुझे उस दिन विचारों की सामर्थ के विषय में एक सबक सिखाया। हम लोगो को अच्छे, प्रेममय, और सकारात्मक विचारों के द्वारा सहायता कर सकते हैं, परन्तु हम उन्हें बुरे, बिना प्रेम के, और नकारात्मक विचारों के द्वारा चोट पहूँचाते हैं।

मैं आपको उत्साहित करती हूँ कि एक दिन में एक व्यक्ति को प्रार्थना प्रोजेक्ट रूप में दें और उनके विषय में प्रार्थना पूर्वक अच्छी बातों में सोचने का अभ्यास करें। दिनभर कुछ कुछ विचारने के सत्र रखें जहाँ आप उस व्यक्ति की सामर्थ और प्रत्येक अच्छी विशेषता पर जो उनके विषय में आप सोच सकते हैं कि उनकी है, उनके वे सारे भले कार्य जो उन्होंने कभी आपके प्रति किये हों और उनकी विषय में कोई भी अच्छी बात जो उनके दिखने के बाहरी स्वरूप के विषय में आप सोच सकते हैं मनन करें। अगले दिन दूसरे व्यक्ति पर अभ्यास करें और आपके जीवन के महत्वपूर्ण व्यक्तिओं के साथ तब तक करते रहें जब तक आप एक अच्छी बात सोचने की आदत न बना लें।

अपने विचारों से लोगों से प्रेम करें, और जब आप ऐसा करते हैं आप उन्हें बनाएँगे और उनके जीवन में सामर्थ जोड़ेंगे।

शब्दों की सामर्थ हमने इस पर विचार किया है कि किस प्रकार से दूसरों को बनाने के लिये और उत्साहित करने और उन्नति देने के लिये हम शब्दों का इस्तेमाल कर सकते हैं, परन्तु मैं इस बिन्दु को लोगों से प्रेम करने के तरीके से जोड़ना चाहती हूँ। हम सब में प्रत्येक बार दूसरों के प्रति प्रेम दर्शाने के लिये शब्दों का इस्तेमाल करने की योग्यता है। कल ही मैंने एक रियल इस्टैट के एजेन्ट से मुलाकात की जिसके पास बहुत सुन्दर नीली आँखें थी और मैं ने उससे कहा कि उसकी आँखें बहुत सुन्दर हैं। मैं आप से कह सकती हूँ कि इस बात ने उसे अपने प्रति अच्छा महसूस करने दिया। इसके लिये मुझे मेरे समय से एक ही क्षण सब सहना पड़ा और एक छोटा सा प्रयास खर्च करना पड़ा। मैंने एक और एजेन्ट को देखा जो असाधारण रूप से आकर्षण थी इसलिये मैंने उससे कहा कि वह बहुत सुन्दर है, और उसने भी बहुत ही प्रशंसात्मक और प्रसन्नचित्त से प्रतिक्रिया दी। मैंने अपने शब्दों को दो व्यक्तियों को निर्माण करने में किया था, और यह मेरे निरन्तर कार्य में स्थान ले लिया था। प्रेम क्रान्तिकारियों के रूप में हमें शब्दों की सामर्थ का इस्तेमाल प्रत्येक दिन अपने चारों ओर के लोगों को प्रेम करने और प्रोत्साहित करने के लिये उपयोग में लाना चाहिये।

कल गोल्फ खेलने के पश्चात् मेरे पति घर में आये पाँच मिनट के भीतर उन्होंने मुझ से कहा कि वे मुझ से प्रेम करते हैं, और मैं अच्छी दिखती हूँ और कठोर परिश्रम करती हूँ। मैं इस पुस्तक पर सात घण्टे से काम कर रही थी और आराम लेने के लिये तैयार थी इसलिये उनके दयापूर्ण शब्द मुझे प्रेम किए जाने और मूल्यवान महसूस कराये। कल रात को हम अपने बेटे, उसकी पत्नी और उसके बच्चे के साथ खाने पर गए। मैंने नीकोल से कहा कि वह एक अच्छी पत्नी और माँ हैं। उसके ठीक पहले मैंने देखा कि मेरा बेटा उसके कानो में फुसफुसा रहा था कि वह उससे प्रेम करता है। ये कुछ बातें हैं जो हमें एक दूसरे से दिन में कहते रहना चाहिये जो आत्मविश्वास बढ़ाने और प्रेम करने के तरीके हैं।

जीवन और मृत्यु की सामर्थ जीभ में है। यह एक अद्‌भुत विचार है। दूसरों के लिये और स्वयं के लिए जीवन और मृत्यु का अधिकार हमारे पास है। दूसरों के प्रति जो हम बोलते हैं वह हमारे जीवन पर भी प्रभाव डालता है।

बाइबल कहती है, "जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा" (नीतिवचन 18:21)।

शब्द सामर्थ के वाहक है, और वे या तो रचनात्मक या तो विनाशात्मक सामर्थ रखते हैं जैसा कि हम चुनते हैं। अपने शब्दों को सावधानीपूर्वक चुनिए और सावधानी से ही उन्हें बोलिए। वे ऐसे सन्देश दे सकते हैं जो जीवन बदलनेवाले हो सकते हैं। अपने शब्दों के द्वारा या तो हम बनाते हैं या फिर एक व्यक्ति के स्वरूप को उसकी दृष्टि में फाड़ डालते हैं। हम शब्दों के द्वारा किसी के सम्मान को नाश कर सकते हैं, इसलिये आप दूसरों के विषय में क्या बोलते हैं इस पर सावधान होइए। एक व्यक्ति के प्रति दूसरे व्यक्ति के विचार को जहरिला मत बनाईए।

कल्पना करें कि आप के शब्द एक माल गोदाम में रखे हुये हैं, और प्रति दिन सुबह आप वहां जाते हैं और सेल्वस् में ढूंढ़ते हैं और उन शब्दों का चुनाव करते हैं जिन्हें आप आज के दिन के लिये संसार में जाते समय अपने पास रखेंगे। शायद आप कुछ एक लोगों को पहले से जानते हैं जिनके साथ आप होंगे इसलिये आप पहले से कुछ शब्दों का चुनाव करेंगे जो उन्हें प्रेम किया जाता महसूस कराएंगे और उन्हें आत्मविश्वास देंगे। प्रत्येक व्यक्ति के लिये शब्द अपने साथ लें जिनके साथ आप दिनभर रहेंगे, पर ह्रदय में तैयार रहिये कि इनमें से प्रत्येक के लिये उनसे आप के कथन के द्वारा प्रेम करने के द्वारा एक आशीष बनें।

प्रतिदिन मैं देखना चाहती हूँ कि मैं कितने लोगों को अपने शब्दों के द्वारा ऊपर उठा सकती हूँ। मैंने निश्चित रूप से अपने जीवन में काफी शब्द व्यर्थ बोलने, अनुपयोगी बात से जो या तो कुछ नहीं किये या तो लोगों को बुरा महसूस कराए कहने के द्वारा व्यर्थ गवाएं हैं। उन व्यर्थ गवाएं शब्दों के लिये मैं खेदित हूँ और अब मैं अपने शब्दों का उपयोग उन नुकसानों के भरपाई के लिये करती हूँ जिन्हें मैंने पिछले दिनों में किया है।

जीभ एक छोटा सा अंग हैं परन्तु यह एक विनाशकारी आग बन सकता है यदि हम सावधान न हों। राजा दाऊद अपने मुँह के शब्दों के विषय में कुछ एक अन्तराल में प्रार्थना किया करता था उसने कहा, "मैंने कहा, मैं अपने चालचलन में चौकसी करूँगा, ताकि मेरी जीभ से पाप न हो" (भजन 39:1)। उसने प्रार्थना की कि उसके मुँह के शब्द और मन के ध्यान परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य और प्रसन्न करनेवाले हो (भजन 19:14 देखिए)। वह जीभ की

सामर्थ को स्पष्ट रीति से जानता था और समझता था कि उसे सही मार्ग पर बने रहने के लिये परमेश्वर की सहायता की जरूरत है। इसमें हमें दाऊद के उदाहरण का अनुकरण करना चाहिये।

सम्पत्ति की सामर्थ हम सब के पास संपत्ति हैं। कुछ एक पास दूसरों से अधिक हैं, परन्तु हम सबके पास कुछ ऐसा है जिसे हम दूसरों के लिये छोटी सी आशीष के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। विचार और शब्द दोनों अद्‌भुत हैं और वे दोनों प्रेम करने में हमारी सहायता करते हैं, परन्तु संपत्ति और भौतिक वस्तुयें भी समान कार्य करती हैं और कुछ एक लोगों के लिये यह बहुत महत्वपूर्ण होता है।

बाइबल कहती है कि यदि हमारे पास दो कुर्ते है तो हमें उनके साथ बाँटना है जिनके पास एक भी नहीं है, और हमारे भोजन के विषय में भी यही सिद्धान्त लागू होता है (लूका 3:11 देखिए)। प्रारंभिक मसीही कलीसिया जिसे हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखते हैं एक अद्‌भुत सामर्थी कलीसिया थी जो प्रति दिन बढ़ रही थी। हर प्रकार के अलौकिक चिन्ह और आश्चर्य और आश्चर्यकर्म उनके बीच में सामान्य बातें थीं। परमेश्वर के सामर्थ उनके साथ थीं और वे एक दूसरे के प्रति संपूर्ण हृदय, मन, बल, और धन के साथ प्रेम दिखाते थे।

"और विश्वास करनेवालों की मण्डली एक चित्त और एक
मन के थे यहाँ तक कि कोई भी अपनी संपत्ति अपनी नहीं
कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का था।"
प्रेरितों 4:32

हम स्वामी हैं या भण्डारी हैं? सब कुछ जो हमारे पास है परमेश्वर से आया है, और वास्वत में यह सब उसका है। हम केवल उसकी संपत्ति के भण्डारी हैं। अक्सर हम चीजों को बहुत जोर से पकड़ लेते हैं। हमें उन्हें धीमें पकड़ना चाहिये कि यदि परमेश्वर को उसकी जरूरत है तो उसे जाने देने में फिर परेशानी न हो। आईये अपने आपको स्मरण दिलाते रहें कि संपत्ति का कोई अनन्त मूल्य नहीं हैं। जो हम दूसरों के लिये करते हैं वही अन्ततः बना रहता है। पौलुस ने कुरिन्थियों से कहा कि गरीबों के लिये उनके उपहार चलते रहना चाहिये और वो अनन्त तक बना रहता है (2 कुरिन्थियों 9:9 देखिए)।

परमेश्वर चाहता है कि हम संपत्ति का आनन्द उठायें, परन्तु वह नहीं चाहता है कि हमारी संपत्तियाँ हम पर अधिकार करे। शायद, एक अच्छा प्रश्न जो लगातार स्वयं से पूछना है वह है, "क्या मैं अपनी संपत्ति पर अधिकार रखता हूँ या मेरी संपत्ति मुझ पर अधिकार रखती है?" आपके पास जो है उसका इस्तेमाल क्या आप लोगों को आशीष देने के लिये कर पाते हैं या क्या आप चीजों को जाने देना कठिन पाते हैं.....वे उससे भी जिनका आप इस्तेमाल नहीं करते हैं?

मैं अक्सर इत्र को उपहार के रूप में पाती हूँ और चूँकि हाल ही में मेरा जन्मदिन था मेरे सेल्फ में पर्याप्त इत्र की शिशियाँ आ गईं हैं। एक दिन मैं ने एक मित्र को आशीष देने का दबाव मेरे ऊपर पाया जिसने मेरे लिये एक कार्य किया था और मैंने स्मरण किया कि वह एक विशेष प्रकार के इत्र को पसन्द करती थी जो मेरे पास था। निश्चय ही मेरे पास बॉडी लोशन के साथ एक नया बोतल भी था और यह मेरा सबसे महँगा बोतल था। मुझे अपने आप से कुछ देर बात करना पड़ा, परन्तु कुछ क्षणों में ही मैं उसे मेरे सेल्फ से उठाने में सक्षम रही, और उसे एक बैग में रखी, और उसके हाथों में रख सकी। इस बात ने उसे बहुत अधिक प्रसन्न किया और मुझे जो खर्चा आया वह मेरी एक संपत्ति थी जिसे मैं प्रतिष्ठापित कर सकी।

मैं आप से अपनी संपत्ति को स्पर्शनीय रीति से लोगों को प्रेम करने के लिये इस्तेमाल करना प्रारंभ करने की विनती करती हूँ। उपहार प्रेम दिखाने के अद्भुत मार्ग हैं। उदाहरण के लिये, एक बार मुझसे मेरे मित्र ने कहा कि मेरे जन्मदिन के उपहार के लिये देरी होगी, क्योंकि वह अब तक समाप्त नहीं हुआ था। जब मैंने अन्ततः उसे प्राप्त किया तो मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह हाथों से बनाया गया मेरे कूत्ते का चित्र था। कुछ ऐसी चीज जिसको मैं वर्षों तक देख कर आनन्दित हो सकती थी। मैं उस चित्र के द्वारा आशीषित हुई परन्तु उसके उस प्रयास से अधिक आशीषित हुई जो उसने उसे मेरे लिये बनाने में किया।

सब कुछ देना अच्छा है, परन्तु जितना आप कर सकते हैं उतना करें, किसी हाथों तक किसी चीज को पहुँचाने के लिये विशेष प्रयास कीजिए जो आप जानते हैं कि उन्हें सचमुच में चाहिये। तो यह सत्य कि आपने यह जानने के लिये ध्यान दिया कि उन्हें क्या पसन्द है और वह वस्तु उन्हें चाहिये और उन्हें बहुत गहरे रूप से आशीषित करेगा। मेरी एक मित्र के पास एक विशेष कुत्ता

था जो पिल्ला रहते ही मर गए। उसका दिल टूट गया और उसके बदले में दूसरा कुत्ता नहीं खरीद सकती थी, अतः मैं उसके लिये एक कुत्ता खरीद सकी और वह आश्चर्यचकित थी। यदि हम उसे माँगते हैं तो परमेश्वर हमें योग्य करेगा कि लोगों को प्रेम दिखाने के लिये हमें एक माध्यम बनायें। वह हमेशा हमारे लिये बहुतायत से प्रबन्ध करता है कि हमारे पास संपत्ति हो और आनन्द मनायें और देने के लिये भी बहुत कुछ हो। यदि हम चीजों को ढ़ीले हाथ से पकड़ते हैं, और देने के अवसर की ताक में रहते हैं।

कभी कभी मैं देती ही जाती हूँ जिसे मैं देने की बीमारी कहती हूँ। मुझ में आशीष बनने की एक अभिलाषा है और अपनी संपत्तियों को प्रेम दिखाने के स्पर्शनीय रीति से इस्तेमाल करना चाहती हूँ, इसलिये मैं अपने घर में खोजती हूँ, अपने दरवाजों में खोजती हूँ, अपनी अलमारी में और अपने आभूषण के डिब्बों में ताकि ऐसी चीजें पाऊँ जिसे मैं दे सकूँ। मैं कभी भी चीजों को पाने में पराजित नहीं होती। यह मुझे आश्चर्यचकित होता है कि मैं किस प्रकार उससे चिपके रहने के लिये परीक्षा में पड़ती हूँ, चाहे मैंने उसे दो या तीन साल से इस्तेमाल भी न किया हो। हम वस्तुओं का स्वामीत्व चाहते हैं, परन्तु अपनी संपत्तियों को किसी और के आशीष के लिये इस्तेमाल करना कितना भला करना है और उन्हें प्रेम किया हुआ और उन्हें मूल्यवान महसूस कराना कितना अच्छा है।

यदि आपको देखने में कठिनाई हो रही हो कि आप क्या दें, परमेश्वर से सहायता माँगिये और तुरन्त ही आप देखेंगे कि आपके पास ऐसी संपत्तियाँ है जिनका इस्तेमाल चोट खाए हुए लोगों के लिये किया जा सकता है। हमारे पास जो है उसका इस्तेमाल एक अच्छे उद्देश्य के लिये करते हैं, तो प्रेम हमेशा बढ़ता है और अन्य बातें जो हमारे साथ शामिल होती हैं, जब हम परमेश्वर के अच्छे भण्डारी के रूप में स्वयं को दर्शाते हैं।

> यह (स्मरण) करें कि जो अपर्याप्तता और कुड़कुड़ाहट के साथ बोता है वह अपर्याप्तता और कुड़कुड़ाहट के साथ काटेगा भी; और जो उदारतापूर्वक (कि किसी को आशीष मिले) बोता है, वह उदारतापूर्वक और आशीष के साथ काटेगा।
>
> हर एक जन वैसा ही (दे) दान करे जैसा मन में ठाना या लक्ष्य किया है; न कुढ़ कुढ़ के, न दुःखपूर्वक और न दबाव

से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष (आनंदपूर्वक, यह करने में उत्साही)
से देनेवाले (जिसका हृदय अपने देने में है) से प्रेम रखता
(उसे प्रसन्नता होती, किसी भी बात से बढ़कर इनाम देता,
और नाश करने के अनिच्छुक या बिना किये नहीं रहता) है।
2 कुरिन्थियों 9:6–7

जब आप अपनी मृत्यु शय्या पर हैं, तो आप अपने बैंक खाते के शेष रकम के बारे में या अपने संपत्ति की सूचि के विषय में नहीं पूछेंगे। आप अपने परिवार और मित्रों को चारों ओर से देखते हुये देखना चाहेंगे जो आप से प्रेम करते हैं। अपनी सारे श्रोतों के इस्तेमाल के द्वारा लोगों से प्रेम दिखाने के द्वारा उन संबन्धों को बनाना प्रारंभ कीजिये।

प्रेम क्रान्तिकारी

पास्टर टॉम्मी बारनेट्ट

क्रान्ति, *संज्ञा* **1:** एक अक्ष में घूमनेवाली खगोलीय पिण्ड के द्वारा कार्य **2:** चक्र **3:** घूमना **4:** एक अचानक, उत्साही या संपूर्ण परिवर्तनः विशेषकर एक सरकार द्वारा उसे उखाड़ फेंकना और दूसरी सरकार द्वारा उसका स्थान लेना।

क्रान्ति के शब्दकोश के सभी या किसी भी परिभाषा जो प्रेम क्रान्ति का भाग बनने के लिये अपने व्यक्तिगत निमन्त्रण पर लागू करना जो परमेश्वर संसारभर में फैला रहा है।

वास्तव में, शब्दकोश एक क्रान्तिकारी को एक ऐसे शब्द के रूप में परिभाषित करता है जो एक क्रान्ति में शामिल है या क्रान्तिकारी सिद्धान्तों का वकालत करनेवाला। प्रेम क्रान्ति सच में एक क्रान्तिकारी सिद्धान्त है क्योंकि संसार प्रेम को कुछ ऐसी वस्तु के रूप में देखता है, जो अवश्य प्राप्त किया जाना और पास में होना चाहिये, जबकि यीशु प्रेम को परिभाषित करने के लिये हमारे कार्यों को क्रान्तिकारी करने का प्रयास करता है, जो हममें से बहता है वह जिसे हमें अवश्य दे देना चाहिये।

इसलिये आप प्रेम के एक अनोखे चक्र में भाग लेने के लिये बुलाये गये हैं! एक ऐसा विस्तृत चक्र जिसका केन्द्र और परिधि एक ही लक्ष्य हैः लोगों से प्रेम करना और यीशु मसीह का अनुकरण करने के लिये लोगों को उत्साहित करना जबकि हम संसार को परमेश्वर के परिवार में स्वागत करने की खोज करते हैं।

प्रेम और प्रोत्साहन का हमारा उत्साही चक्र में बेघर, प्राकृतिक प्रभावितों और मानव निर्मित आपदाओं के प्रभावित, दुर्व्यवहार और गलत संबन्धों के प्रभावित स्त्रीयाँ जो गर्भपात सम्बन्धी बातों से जूझती हैं और मुद्दों और सम्बन्धात्मक चोट से गुजरती हैं, वे जो आर्थिक रीति से अवसर प्राप्त नहीं हैं, या जिनकी नौकरी नहीं है, और जो वस्तुओं का दुर्व्यवहार करते हैं और उन लोगों की भीड़ जिनके चोट जो विशाल हैं और इलाज़ से शामिल हैं। पिछले समयों में अक्सर कलीसियाएँ, ऐसे लोगों को मानवता के नाम पर कलंक के रूप में देखती थी, परन्तु हम उन्हें परमेश्वर के राज्य के भावी खजाने के रूप में देखते हैं या देख रहे हैं।

प्रेम क्रान्ति साधारण हैः यह हममें से प्रत्येक के साथ प्रारंभ होता है और हमारे प्रेम चक्र को बढ़ाता जाता है कि हमारे चारों ओर के लोगों को भी उसमें शामिल करें जो घायल और चोटग्रस्त हैं। बहुत वर्षों तक कलीसियाओं ने नए लोगों को लाने के कार्यक्रमों में जोर दिये हैं। सचेतक संख्याओं में कार्यक्रम आए और गए, परन्तु विस्तृत करने में असफल रहे। इसके विरोध में कलीसियाओं के पास प्रभावित करने के क्षेत्र अकसर छोटे चक्रों में बदल गए हैं। वर्णन करनेवाले कार्यक्रम लोगों पर मसीह की चुनौती को पेस नहीं कर सके हैं जिसने घोषणा की कि हमें एक दूसरे को अवश्य प्यार करना चाहिये।

क्रान्ति की चुनौती

वृत्त, या चक्र, या दूसरों के लिये यीशु के समान जीने की क्रान्ति एक चुनौती है, जो प्रेरित पौलुस ने हमारे सामने रखाः "इसलिये प्रिय, बालको की नाई परमेश्वर के सदृश बनो। और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आपको सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया" (इफिसियों 5:1–2)।

यह प्रेम क्रान्ति की बुलाहट हैः प्रेम में चलना, केवल प्रेम करने का निर्णय लेना नहीं। बहुत से लोग ये जानते हैं कि यह प्रेम करने की सही वस्तु है, परन्तु आप अपने प्रेम चक्र को कैसे बढ़ाते हैं? यह एक दैनिक चाल में सम्भव होता है।

हम सबका प्रभाव का चक्र होता है और हम सब एक चक्र से संबन्धित होते हैं। हममें से अधिकांश मित्र के चक्र का आनन्द उठाते हैं। आपके चक्र का साईज़ क्या है? यह समावेश करनेवाला है या बाहर रोक रखनेवाला है? मैं बहुत से अच्छे लोगों से मिलता हूँ जो अपने चक्र के छोटे से आकार के विषय में जागरूक नहीं होते हैं। यदि हम "मसीह के मन" की तरह जीते हैं, और मसीह का मन हम में है, तो प्रत्येक चक्र को किसी को भी बाहर नहीं रखना है परन्तु हर एक को अन्दर लेना है।

मेरे लिये महत्वपूर्ण, और मेरे चक्र को परिभाषित करना, उन पापियों का मुद्दा है जिन्हें अपने चक्र में लाने के लिये मुझे चुनौती मिली है। मैं पाप के प्रति अपनी घृणा को पापियों के साथ मिलाना आसान पाता हूँ, जो मुझे पापियों से घृणा करने का कारण बनाती है क्योंकि मैं पाप से घृणा करता हूँ। मैंने सिखा है कि परमेश्वर चाहता है कि मैं पाप से घृणा करूँ, परन्तु पापियों

से प्रेम करूँ। कभी–कभी पाप के प्रति हमारा व्यवहार किसी खतरनाक सांप के सामने कर रहे है बच्चे के समान खतरनाक होता है। सांप कुण्डली मारे और आघात करने के लिये तैयार बैठा है। हम सांप से घृणा करते हैं, परन्तु बच्चे से प्यार करते हैं और उस ताकतबर मृत्यु के फन्दे से उसे बचाना चाहते हैं।

हम पाप के परिणाम के प्रति लोगों को चेतावनी देने के लिये मजबूर हैं, परन्तु हमें पापियों को अपने प्रेम चक्र में शामिल करने के लिये प्रभु की दया से भरने की जरूरत है। इसके अलावा बहुत से पापी अपने जीवन में गलत चुनावों से नकारात्मक परिणामों के प्रति जागरूक हैं और वे नहीं चाहते कि कोई आकर उन्हें दोषी ठहराए। बहुत से इस विश्वास के साथ पहले से ही यातना पा रहे हैं कि कलीसिया, क्योंकि परमेश्वर उनकी दिनचर्या आदतें, अविश्वस्थता और बड़ी गलतियों के कारण उनका स्वागत नहीं करेगा।

नेतृत्व में रहनेवाले लोग अक्सर हम से पूछते हैं कि फोईनिक्स और लॉस एन्जल्स में ड्रीम सेन्टर की हमारी कलीसियाएँ क्यों उन प्रेम न करनेवाले और अचाहनीय लोगों के साथ जान बूझकर उद्देश्य पूर्वक काम करती हैं। उन्होंने खराब चुनाव किए हैं। मैंने कभी इस बात पर शक नहीं किया कि परमेश्वर हर किसी को उसके प्रेम चक्र में देखना चाहता है।

यदि हम वही हैं जो स्वयं के बारे में कहते हैं, यीशु मसीह की सच्ची अभिव्यक्ति, तब कोई भी व्यक्ति बाहर नहीं छोड़ा जा सकता। इसमें विभिन्न सिद्धान्तों, अनुभवों, और संप्रदायों के लोग शामिल हैं। हमें प्रोत्साहन करनेवाले और आशा देनेवाले होना चाहिए जो परमेश्वर के निशर्त प्रेम की तरफ लोगों को ले जाए और तब उनके प्रति स्वयं एक प्रमाण बन जाएँ।

मैं उनके लिये उत्तरदायी नहीं हूँ जो मुझे बाहर कर देते या भीतर आने देते हैं। मैं स्वयं के प्रति उत्तरदायी हूँ और उनके प्रति जिन्हें मैं बाहर रखता हूँ। यीशु ने उस विश्वव्यापी कथन में मूल रूप से यह कहा जब वह क्रूस पर लटका हुआ था, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि ये क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34 देखिए)। उसके चक्र में वे लोग शामिल थे जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था। उसके आलोचक भी जो उस पर हँसे थे और जो उसके मुँह पे थूकते थे और क्रूरतापूर्वक उसे सिरका पिलाया था उसने पानी माँगा उसके प्रेम चक्र में शामिल थे।

हमारा चक्र उन लोगों को भी शामिल किया है जिन्होंने हमारे प्रति गलत किया है। मैंने कभी भी अपने चक्र से लोगों के साथ लड़ना नहीं सिखा है।

वहाँ कोई युद्ध नहीं है। मैं सुरक्षित हूँ जब तक मैं सभी लोगों को अपने प्रेम चक्र में शामिल करती हूँ। तब मुझे चोट नहीं मिलेगी।

आप बहुत सारे मित्रों को नहीं बना सकते हैं, परन्तु यदि आपका एक शत्रु है तो आप जहाँ कहीं जाएँगे उस शत्रु का सामना करेंगे। जिससे आप घृणा करते हैं, उससे आप बन्धे हुये हैं। हर किसी को ग्रहण करने के द्वारा, आप परमेश्वर के प्रेम पर विशेषज्ञता हासिल करना प्रारंभ करते हैं। जो कोई भी आपके प्रेम चक्र से बाहर है आपको चोट पहुँचा सकता है, परन्तु जो कोई भी आपके प्रेम चक्र के भीतर है आपको चोट नहीं पहुँचाएगा।

धर्म का कानूनी स्तर जिसे लोग अक्सर ऊँचा करके पकड़ते हैं, वह सब को शामिल न करनेवाला और संकोचित है। प्रेम क्रान्ति का स्तर विश्वव्यापी है। प्रेम चंगा करता है! प्रेम पुनःस्थापना करता है! प्रेम प्रकाशित करता है! प्रेम ऊपर उठाता है! मेरा प्रेम चक्र जितना व्यापक होता है, उतना ही मैं प्रसन्नचित्त होती हूँ और उतना ही अधिक मैं परमेश्वर के प्रेम को दूसरे पर प्रदर्शित कर सकती हूँ।

कार्य रूप में प्रेम क्रान्ति

जब पहली बार हमने लॉस एन्जिलस ड्रीम सेन्टर प्रारंभ किया, हम ने जान बूझकर अप्रेमी क्षेत्र में गए जहाँ सरकार, कलीसिया, यहाँ तक कि पोलिस ने भी आशाहीन करार दिया था। क्योंकि हमने अपने प्रेम चक्र को गिरोह के सदस्यों, भगड़ों, बेघरों, वेश्याओं, कठोर अपराधियों, और तिरस्कृत जवान लोगों को शामिल करने के लिये व्यापक किया था। हमारा प्रेम चक्र इस स्थिति तक बड़ा हो गया था कि ड्रीम सेन्टर संसार में तिरस्कृतों और ऐसे लोगों तक मसीह के प्रेम को सेवा के कार्यों के द्वारा करते हुये पहुँच सके जिनसे प्रेम नहीं किया जा सकता था।

प्रति सप्ताह सैकड़ों प्रेम सेवक लॉस एन्जिलस ड्रीम सेन्टर से एक ब्लॉक को घेर लेते और अपने पड़ोस में जाते (प्रेम क्रान्ति के सैकड़ों पहलुओं में से एक ड्रीम सेन्टर से बाहर जाना) अपने पड़ोसियों की सेवा और उनके बरमदों को साफ करके उनके घरों की मरामत करके और विभिन्न रीति से उनकी सेवा करने के द्वारा करते। यह उन लोगों तक मसीह के प्रेम को दिखाने के लिये सेवा करता है जिन्हें वे जानते तक नहीं हैं।

और एक समय जब लॉस एन्जिलस शहर में अपराध और सामाजिक अवनति बढ़ गया ड्रीम सेन्टर का पड़ोस ने सत्तर प्रतिशत से अधिक अपराध में कमी देखा। जबकि कईयों की भीड़ मसीहियों के विश्वास में आ गई थी। एक रैम्पार्ट विभाग, जो पड़ोस का एक भ्रष्टाचार, अपराध, और पाप के लिये सुप्रसिद्ध था, अब एक ऐसे लोगों का चमकिला उदाहरण है, जो मसीह के प्रेम में चलते हैं। यह एक प्रेम क्रान्ति है!

क्षमा करना और देना

क्या आप क्षमा किए गए हैं? तब क्षमा कीजिए। प्रेम क्षमा करता है, और प्रेम देने के लिये है।

प्रेम देना कठिन कार्यों में से एक है। बहुत तरीके से यह धन देने से भी कठिन है क्योंकि प्रेम को एक खुले हृदय से आना होता है। इसे एक ठण्डा व्यापार नहीं बनाया जा सकता है।

परन्तु हममें से अधिकांश गलत समझते हैं कि प्रेम क्या है। हम सोचते हैं कि यह कुछ ऐसा है जिसे हम प्राप्त करते हैं और एक उपहार के रूप में हमारे पास रख सकते हैं या कुछ ऐसा जिसके हम स्वामी हो सकते हैं। परन्तु वास्तव में प्रेम यह नहीं हैं।

प्रेम कुछ ऐसा है जिसे केवल आप दे सकते हैं, कुछ ऐसा नहीं जिसे आप रख सकते हैं। हममें से कोई भी प्रेम को खरीद नहीं सकता है – हम प्रेम का उपयोग करते हैं। प्रेम के लिये बाइबल का शब्द सकर्मक शब्द है, जिसका तात्पर्य है बदले में दिया गया प्रेम, प्रेम नहीं है।

क्या आप कभी ऐसे व्यक्ति से मिले हैं जिसे प्रेम की जरूरत होती हैं, परन्तु कभी भी पर्याप्त नहीं पाता है। जितना अधिक वे प्रेम पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, वे महसूस करते हैं कि वे इसके हकदार है और उनके पास कम प्रेम उपलब्ध है। वे अपनी कमी पर इतना अधिक ध्यान देते हैं कि उसका आगमन उनके लिये कभी भी पर्याप्त नहीं होता है।

जब घात लोगों की सेवा होती है, हम हर समय ऐसे लोगों से मिलते हैं जो कहते हैं, कि वे किसी के द्वारा प्रेम किया जाना चाहते हैं। मैंने पाया है कि इसका विपरित सत्य है। हमें प्रेम किये जाने की जरूरत उतना नहीं है जितना किसी को प्रेम किये जाने की जरूरत है।

जब हम निशर्त भाव से प्रेम करते हैं, तब हम किसी भी पुरूष या स्त्री के कैद में नहीं होते है। परन्तु जब हम माँग करते हैं कि कोई हम से प्रेम करे, हम उनके गुलाम बन जाते हैं और आसानी से अपने प्रति उनके प्रेम की कमी द्वारा कैद कर लिये जाते हैं।

पाने से देना अधिक महत्वपूर्ण

मैं विश्वास करता हूँ कि लोगों के लिये प्रेम दिखाना प्रेम पाने से अधिक महत्वपूर्ण है। जब आप प्रेम दिखाते हैं यह स्वर्गीय खिड़कियों को खोल देती जहाँ से परमेश्वर हम पर लगातार प्रेम उण्डेलता है। जितना अधिक प्रेम आप दिखाते हैं उतना अधिक प्रेम आप प्राप्त करते हैं और नलकी को खोला छोड़ देना उतना ही आसान होता है और उसे दूसरों तक बहने देना आसान होता है।

प्रेम आपके पास जितनी मात्रा है वह सीधे तौर पर इस बात से प्रभावित होता है कि आप कितना प्रेम देते हैं। यह एक उदाहरण है परन्तु सत्य है। प्रेम को पाने का एक मात्र रास्ता उसे दे देना है।

> प्रेम को पाने का एक मात्र रास्ता उसे दे देना है।

यदि आप लगातार प्रेम को देते हैं, क्या आप हमेशा उस बात पे ध्यान केन्द्रित करते हैं कि आपको क्या देना है और उसका आवक बढ़ेगा। यदि कोई वापस प्रेम न भी करे तब भी आपके पास यीशु के द्वारा प्रेम का एक अन्तहीन आवक होगा और आपको जीवन प्रेम से भरपूर होगा।

जब मैं जवान था, तब मैं लोगों से अब से कम प्रेम किया करता था, परन्तु जब मैंने प्रेम देने का प्रयास किया और पाया कि मेरा स्वयं का आवक बढ़ गया। जब तक मैंने अपने पास उपलब्ध प्रेम को देना जारी रखा परमेश्वर ने अपना गहरा प्रेम देना जारी रखा।

एक जवान व्यक्ति के रूप में मैं छोटे बच्चों से सच में प्यार नहीं करता था, मैं केवल उनकी प्रशंसा किया करता था। परन्तु एक दिन मैं ने उनको प्रेम करने का चुनाव किया। आज मेरा हृदय छोटे बच्चों के प्रति प्रेम से उमड़ता है। अब मैं कह सकता हूँ कि मैं सच में बच्चों से प्रेम करता और आनन्दित होता हूँ और मैं उन्हें आशीष देना पसन्द करता हूँ।

अब मैं बहुतायत से जीवन का आनन्द उठाता हूँ, परन्तु जब मैं एक जवान प्रचारक था मैं उतना अधिक आनन्दित नहीं था। बीस वर्ष पहले मुझ में जितना आनन्द था, उससे बीस गुणा अब है। मैंने अपने मन को मनाया है कि मैं प्रिय होने और आनन्दित होने का चुनाव कर सकूँ और उसी प्रकार मैं आनन्द का चुनाव कर सकूँ। मैंने और अधिक प्रेम को अपने पास आते हुये देखा है जब से मैंहूँने उसे देने का निर्णय लिया है।

मसीह के प्रेम ने प्रेम क्रान्ति के भाग का आना लोगों को यह देखने में सहायता करना है प्रेम को पकड़े रहना, प्रेम के साथ गलत व्यवहार करना है। हमें लोगों की सहायता अपने उदाहरण के द्वारा यह समझने में करनी चाहिये कि प्रेम पाने के लिये उसे खोजने की जरूरत नहीं है, उसे दीजिये।

सच्चा प्रेम किसी व्यक्ति से नहीं आता है यह परमेश्वर से आता है, यहाँ तक कि मेरी पत्नी मार्जा के लिये शुद्ध है क्योंकि मैं ने श्रोत को पाया है। मैं ने सीखा कि प्रेम को देना उसे पाने से अधिक आशीषमय है और जब एक पति और पत्नी सक्रिय रूप से एक दूसरे को प्रेम देते हैं, तो उनका विवाह महान बनता है।

जब मसीह की देह से खोये हुये और मर रहे संसार को प्रेम देना सीखता है हम अपने प्रेम चक्र को व्यापक बनाते हैं और भली बात के लिये अपने समाज को प्रभावित करते हैं और हम अपने समाज को उन्नति देंगे।

क्या आप प्रेम क्रान्ति के लिये तैयार हैं? यहाँ पर प्रेम क्रान्ति के आपकी व्यक्तिगत अनुवाद में मसीह के प्रेम को चलने के लिये कुछ सलाह दिये गए हैं:

1. प्रेम बोलिये। इसे बाहर निकालिये और इसे बोलिये।
एक "प्रेम जलप्रपात" बनिए, जो हमेशा उसे दूसरों पर छिड़कता है। कुछ लोग कहते हैं "मैं इस प्रकार बनाया नहीं गया हूँ।" यदि हर विश्वासी कहे, "मैं प्रेम करता हूँ" तो यह संसार के संबन्ध को और अधिक मजबूत करेगा। इसका प्रयास कीजिए। यदि आप लोगों से कहते हैं कि आप उनसे प्रेम करते हैं, आप उसे वापस सुनेंगे। जब आप हार्दिक रूप से ऐसा कहते हैं, तो "मैं प्रेम करता हूँ" शब्द आपको मसीह के प्रेम में सामर्थी बनाता है।

2. अपने प्रेम को लिखित में कीजिए।
"मैं प्रेम करता हूँ" नामक फाइल रखता हूँ, जिसमें अच्छे पत्र होते हैं जिन्हें मैं

प्राप्त करता हूँ। ये मेरे लिये बहुत मूल्य रखते हैं। आप से प्रोत्साहन के थोड़े से शब्द किसी के लिये बड़ी बात हो सकती है। अपने प्रेम को लिख डालना उसे स्थायी और स्थिर बनाता है। यह किसी के लिये जीवन को संगठित करनेवाला भी हो सकता है यदि वे निराशा में उतरा रहे हों। किसी को परमेश्वर के प्रेम का सन्देश लिखना उन्हें प्रोत्साहित करता है, आपको प्रेरित करता है और परमेश्वर के प्रेम की जागरूकता बढ़ाता है।

3. घोर अपमान के खतरे तक प्रेम रखना

मसीह के प्रेम को अभिव्यक्त करने के लिये लोग जो हम से अपेक्षा करते हैं उससे ऊपर या उससे परे हम जब जाते हैं तो वे प्रेममय कार्य दूसरों के जीवन में कई गुणा परिणाम लाता है। कभी कभी थोड़ा अधिक करना कुछ खतरा मोल लेना पड़ता है – यह प्रेम क्रान्ति का भाग है। स्वयं से पूछिए, ''अभी मैं लोगों से जितना प्रेम करता हूँ क्या मैं उससे थोड़ा अधिक और कर सकता हूँ?'' अपने जीवन को स्मरणयोग्य बनाइये। क्रान्तिकारी हमेशा असाधारण कार्य करते हैं एक साधारण दिन को परमेश्वर के प्रेम को असाधारण रूप से व्यक्त करने के द्वारा असाधारण बनाईये।

4. प्रेम आनन्दित होने और रोने की इच्छा रखता है।

लगातार प्रेम दिखाना किसी ऐसे व्यक्ति के सहायता करने के विषय में है जो आनन्दित होने या खुशी मनाने का मन नहीं रखता है। किसी के साथ दुःख बाँटना या घाटी में उनके साथ चलना प्रेम और भरोसे के गहरी नीव रखता है। यीशु विवाह और शवसंस्कार में जाता था। वह जानता था कि उन दोनों स्थितियों में लोगों की जरूरतें क्या है। हमें अवश्य परमेश्वर के प्रेम को हर परिस्थिति में बाँटना है ताकि हम परमेश्वर के प्रेम को आनन्द और विलाप के समय दिखाने में सुविधाजनक हों।

5. विभिन्न लोगों से विभिन्न तरीके से प्रेम करना सीखें।

लोग प्रेम को विभिन्न रीति से पाते और देते हैं, अतः हमें लोगों से विभिन्न रीति से प्रेम करना सीखना है। हममें से प्रत्येक के लिये यह सीखना अच्छा है कि उन लोगों के साथ जो हमारे निकट हैं किस प्रकार प्रेम को देना और पाना है और यह अनिवार्य है हम सीखें कि उन लोगों को प्रेम किस प्रकार दें जो संसार में हमारे चारों ओर रहते हैं और विशेषतः उन लोगों को जो किसी से प्रेम नहीं पा सकते। लोगों का और परमेश्वर के वचन का अध्ययन

करें, देखें कि यीशु ने इन लोगों से किस प्रकार प्रेम किया जो आप विभिन्न लोगों से विभिन्न रीति से प्रेम करना सीखेंगें जो प्रत्येक को अच्छा महसूस कराता और परमेश्वर को महिमा देता है।

एक प्रेम क्रांतिकारी होना चाहते हैं ?

क्या आज आप एक क्रांतिकारी के समान व्यवहार करेंगें? क्या अब से आपका प्रत्येक दिन इस बात का प्रमाण देगा कि आप प्रेम क्रांति के भाग हैं? यह क्या है जिसके लिए आप स्मरण किए जाएँगें? आपके मजाक? आपकी विद्वता? अंत में प्रेम ही महत्व रखता है। प्रेम ही है जो हमें अनंत मूल्य देता है। हर कोई परमेश्वर के स्वरूप में सृजित आत्मिक प्राणी के रूप में पहचाना जाना चाहता है। और प्रेम यह करने का एकमात्र तरीका है।

ऐसे प्रेम कीजिए मानो आपका प्रेम असीमित हो। और आप पाएँगे कि ऐसा ही है। जब आप किसी व्यक्ति से पहले मिलते हैं तब उससे एकाएक प्रेम नहीं करते हैं। परन्तु यदि आप अपने पास जो प्रेम है उसे देते हैं तब वह बढ़ेगा।

मैं आपको सबसे अधिक प्रेममय व्यक्ति बनने की चुनौती देता हूँ जिसे आप जानते हैं, और मैं पहले से कह सकती हूँ कि यदि आप सब समय प्रेम करेंगें तो आपका श्रोत कभी भी नहीं सूखेगा।

तो फिर आप क्या कहते हैं ? परमेश्वर की सेना की सूची में पुनः दर्ज हो जाईए जिसे आज वह खड़ा कर रहा है और स्वयं को प्रेम क्रांति में पाएँगें!

अध्याय

15

क्या हमें जागृति चाहिए या क्रान्ति?

प्रत्येक व्यक्ति संसार को बदलने के लिये सोचता है, परन्तु
कोई भी स्वयं को बदलने के लिये नहीं सोचता है।
लिओ टॉलस्टॉय

जब कुछ बदलता है, तो पुराना फिर से जीवन में लाया जाता है, और नवीनीकृत ध्यान किसी पर लगाया जाता है। जब समाज नविनीकृत धार्मिक रूचि का अनुभव करता है तो यह जागृति कहलाती है। मेरियान वेबस्टर्स कॉलेजियट डिक्सनरी जागृति को "एक प्रायः उच्च भावनात्मक सुसमाचारीय सभा या सभाओं की श्रृंखला" के रूप में परिभाषित करता है। मसीही के रूप में मेरे संपूर्ण जीवन में मैंने लोगों को जागृति के विषय में बात करते और प्रार्थना करते सुना है। परन्तु मुझे अब और निश्चय नहीं है कि जागृति ही है जो हमें जरूरत है। मैं सोचती हूँ कि हमें इससे कहीं अधिक कुछ और रेडिकॉल की जरूरत है। मैं सोचती हूँ कि हमें एक क्रान्ति की जरूरत है। वेबस्टर्स डिक्सनरी *क्रान्ति* शब्द को "एक अचानक होनेवाले विद्रोहास्मक, या संपूर्ण परिवर्तन" के रूप में परिभाषित करती है।

किसी न किसी प्रकार हम विद्रोहास्मक परिवर्तन की तुलना में पुरानी बातों के साथ जीना हमारे लिये ज्यादा सुविधाजनक है। परन्तु क्या पुरानी जागृतियों ने कलीसिया को और संसार को बदला है?वे निश्चित ही उनके समय के लिये लाभकारी थे, परन्तु इस समय हमें कलीसिया में इस बात की जरूरत है ताकि हम संसार में प्रभावशाली हो सकें। संसार में ज्योति बनने के लिये हम क्या कदम उठाने जा रहे हैं जिसके लिये मसीह ने हमें बुलाया है?

इर्विन मैकमैनस, अपनी पुस्तक *दि बारबरियन वे* में लिखते हैं, ''हमें मानसिक मसीहियत को जाने देना है, और पुराने, सामर्थी, सच्चे, और प्राचीन विश्वास में वापस आना है जो समझौते से बढ़कर क्रान्ति का चुनाव करता है। सुरक्षा से बढ़कर नाश का चुनाव करता है। गुनगुने रहने संसार पोषित धर्मों की तुलना में आवेश का चुनाव करता है।'' मसीह के आवेश ने या उसके उत्साह ने उसे क्रूस पर पहुँचाया। क्या हमारा अवैक कम से कम हमें अपने कुछ पुराने रीतियों का बलिदान करने को प्रेरित करेगा, ताकि आनेवाली पीढ़ी प्रेम क्रान्ति के परिवर्तन करनेवाले सामर्थ का अनुभव कर सके।

यीशु एक क्रान्तिकारी था और निश्चय ही वह परम्पराओं की अकालत करनेवाला नहीं था। वह परिवर्तन करने आया और यह उसके समय के धार्मिक लोगों को नाकवार दिखा। परमेश्वर कभी बदलता नहीं है परन्तु वह दूसरों को बदलता है। मैंने पाया है कि वह रचनात्मकता और नई बातें पसन्द करता है और वह बातों को ताजा और ज्वलन्त बनाये रखता है।

कुछ कलीसियाएँ कुछ भी बदलने के विषय में विचार नहीं करते हैं चाहे वह संगीत की शैली ही क्यों न हो। वे केवल भजन गाएँगे और जब तक उनका अस्तित्व है वे केवल ऑरगान बजायेंगे। वे इस बात को अनदेखा करते हैं कि उनकी सदस्यता घट रही है और अपने समूदाय को जरा भी प्रभावित नहीं कर रहे हैं। उन्हें रविवार की सुबह अपने चारों ओर देखने और खोजने की जरूरत है कि क्यों उनके भवन में हर कोई मध्य वयस्क और बुजुर्ग हैं। जवान लोग कहाँ हैं? उत्साह कहाँ है? जीवन कहाँ है?

वर्षों पूर्व हम ने सम्मेलनों में आंशिक अवनति का अनुभव करने लगे जो हम देश में करते थे और ध्यान दिया कि प्रत्येक मध्य वयस्क या बुजुर्ग से हमारा बेटा जब उस समय चौबीस साल का था उसने हमें उत्साहित करना प्रारंभ किया कि हम संगीत की शैली में, रोशनी व्यवस्था में, सजावट में, और वस्त्रधारण के तरीके में कुछ चित्रहास्मक परिवर्तन लायें। उसने कहा कि इस

पीढ़ी तक बड़े उत्साह के साथ समाचार को पहुँचाये जाने की बड़ी जरूरत है। परन्तु पुराने शैली के धर्म के द्वारा यह कार्य बन्द कर दिया गया है, जो उनके लिये बोर करनेवाली और लकीर के फकीर बन गई है। एक वर्ष तक डेव और मैं हम दोनों बहुत अधिक प्रतिरोध करते रहे। हम ने कहा जो अधिकांश लोग कहते हैं जब वे बदलना नहीं चाहते। "परमेश्वर नहीं बदलता है।" हम ने यह भी महसूस किया कि अब तक हमने जो किया था वह अच्छे से हुआ था, फिर उसे क्यों बदलना है? इसमें बहुत अधिक घमण्ड था और एक चौबीस वर्षीय जवान से जो अभी अभी हमारे साथ काम करने आया था, यह सुनना अत्यधिक कठिन था कि हमें क्या करना चाहिये। परन्तु जब वर्ष गूजरा हम अन्य जवानों की सुनने लगे और हम ने समझा कि हमें आराधना के तरीकों और विधियों की जरूरत नहीं थी। हमारा सन्देश नहीं बदलता है, परन्तु जिस पैकेज में वह आया उसे बदलने की जरूरत थी।

संसार बदलता है, लोग बदलते है, नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी भिन्न रीति से सोचती है और हमें उन तक पहुँचने के लिये विचार करने की जरूरत है। मैं अपने सम्मेलनों में जवान लोगों को देखना चाहती थी, परन्तु मैं ऐसी कुछ भी व्यवस्था नहीं करना चाहती थी जिसमें उनकी रूचि हो। वे जहाँ हैं, मैं उनसे मुलाकात करने को इच्छुक नहीं थी, परन्तु धीरे–धीरे हमारा हृदय खुलता गया कि हम नई बातों का प्रयास करें और हममें बड़े परिणाम दिखे। हम ने न केवल उन लोगों को खोया जो हमारे पास थे परन्तु नये लोग आये और इनमें से अधिकांश जवान और उत्साही थे। यदि हमारे पास पुरानी पीढ़ी की बुद्धि हो और नये की उत्साही रचनात्मकता हो तो हमारे पास दोनों संसार की श्रेष्ठ बातें हैं।

एक दिन हमारे दफतर मैं हमारे नेतृत्व समूह के साथ हमारी बैठक हुई। हमारा बेटा जो परिवर्तन के लिये दबाव डालता रहा, उसने एक विचार रखा जिससे मैं असहमत थी। उसने अपने बात का दबाव बनाये रखा इसलिये मैं ने प्रत्येक व्यक्ति से पूछा कि वे क्या सोचते हैं और वे सब मेरे साथ सहमत हुये। जब मैंने इस बात को सामने रखा कि कमरे में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति मेरे साथ सहमत हैं, तो हमारे बेटे डानियल ने कहा, "निश्चय ही, वे सब आपके साथ सहमत हैं, माँ, क्योंकि वे सब आपके उम्र के हैं।" उस समय मैंने सम्मेलन शुरू किया कि मैं ऐसे लोगों से घिरी हुई हूँ जो मेरे समान हैं, और इस प्रकार करने के द्वारा मैं विभिन्नता को रोक रही थी। हमें हर उम्र के अगुवों की जरूरत थी, न कि ऐसे लोगों की जो सभी एक ही पीढ़ी के हों।

किसी और अवसर पर डानियल हमारे मासीक पत्रीका में कुछ रंगो का इस्तेमाल करना चाहता था, जिसे हम ने कभी भी पहले इस्तेमाल नहीं किया था। मैं ने उस समय पसन्द नहीं किया, इसलिये मैं ने न कर दिया। वह नयें रंगो को इस्तेमाल करने के विषय में उत्साही था और इसलिये आत्मीयता पूर्वक कहा और मैंने कहा, "मैं इन्हें पसन्द नहीं करती हूँ, और हम इन्हें इस्तेमाल करने नहीं जा रहे हैं।" उसने कहा, "मैं नहीं समझता कि आप अपने लिये सेवकाई करने हेतु बुलाई गई हैं। यदि अन्य लोग उन रंगों को पसन्द करते हैं तो क्या होता है?" उस क्षण मुझे आँख खोलनेवाली बात का अनुभव हुआ। मैंने जाना कि मैंने दफतर पर वस्त्रधारण का तरीका बनाके रखा था, जिसे मैं पसन्द करती थी और मैं ऐसे रंगों को पत्रिका में, विज्ञापनों में, और मकानों में इस्तेमाल करती थी जिन्हें मैं पसन्द करती थी। हमारे पास ऐसे संगीत थे जिन्हे मैं पसन्द करती थी। मैं शर्मिन्दा हुई जब मैंने महसूस किया कि मेरे कितने ही निर्णय मेरी अपनी पसन्द पर आधारित थे और मैं जिसके साथ असुविधाजनक थी न कि लोगों की जरूरत के मुताबिक थी।

डेव और मैं दोनों ने समझना शुरू किया कि हम विधिओं की आराधना करते थे और उन विधियों से परमेश्वर को कुछ भी लेना देना नहीं था। वह तो चाहता था कि उसका सन्देश बाहर जाए और निश्चय ही उन सन्देशों का पैकेज बदला जा सकता था। अतः हम ने परिवर्तन लाना प्रारंभ किया और हर कभी से बढ़कर परिवर्तन होने तक ये जारी रहा। हमने अपने वस्त्रधारण के तरीके को एक आधुनिक रीति से बदल डाला है। हमने अपने आराधना बैण्ड को एक ऐसे बैण्ड से बदल डाला है जो अधिक से अधिक जवानों को खींच सके। मैंने निर्णय लिया कि वर्तमान पीढ़ी से प्रेम करूं और उन्हें ऐसे पर्याप्त गीत गाने दें जिससे वे आनन्द उठा सकते थे। हमने अपने सभाओं की लम्बाई को कम किया क्योंकि आज हमारा संपूर्ण समाज चीजें बहुत जल्दी करना चाहता हैं। मैं तीन घण्टे के आराधना सभा की आदी थी परन्तु हर कोई नहीं। इसलिये हम ने मध्य में लोगों से मिलने का निर्णय लिया। हमने अपनी रोशनी की व्यवस्था को और अधिक उत्साही बनाया। हमने एक धुंध पैदा करनेवाली मशीन को भी प्राप्त किया जिसके विषय में वे कहते हैं कि ये माहौल को बनाता है। मैं अब भी सोचती हूँ कि यह लोगों को स्पष्ट देखने में बाधक बनती है, परन्तु मैं उसके साथ व्यवहार कर सकती हूँ यदि लोग मेरे साथ इतना संबन्ध बना सकते हैं कि वे मेरे सन्देश को सुन सकें। स्मरण करें कि पौलुस ने कहा, वह उसे जो कुछ बनने की जरूरत थी वह बना ताकि

लोगों को यीशु मसीह के सुसमाचार के लिये जीता जा सके (1 कुरिन्थियों 9:2–22 देखिए)। उसने विधियों की आराधना नहीं की न ही हमें करनी चाहिये।

बाइबल कहती है कि अन्तिम दिनों में हम एक ऐसी कलीसिया का अनुभव करेंगे जो स्वार्थी और आत्म – केन्द्रित है। लोग नैतिक बातों में अवनत होंगे और वे एक धर्म के स्वरूप थामें रहेंगे परन्तु सुसमाचार के सामर्थ का इन्कार करेंगे (2 तीमुथियुस 3:1–5 देखिए)। हमें अपनी कलीसियाओं में परमेश्वर के सामर्थ्य को देखने की जरूरत है। हमें परिवर्तित जीवनों, चंगाई, पुनर्स्थापित, और छुटकारे को देखने जी जरूरत है। हमें मुक्तभाव से परमेश्वर के प्रेम को बहते हुये देखने की जरूरत है। हमें एक क्रान्ति को देखने की जरूरत है, और मैं इस भाग होने के लिये दृढ़ संकल्प हूँ।

मैं ईमानदारी पूर्वक कह सकती हूँ कि अपने सम्मेलनों में हमने बहुत सारे परिवर्तन किये हैं परन्तु वे ऐसे नहीं हैं जिन्हें मैं व्यक्तिगत रूप से पसन्द करती हूँ। परन्तु मैं प्रति दिन अधिक सीख रही हूँ कि प्रेम अपेक्षा करता है कि हम अपने रास्तों को छोड़ दें और वर्तमान स्थिति के लिये परमेश्वर के रास्तों को खोजूँ। हमारे बहुत सारे परिवर्तन निश्चित ही व्यक्तिगत रूप से बलिदान रहे हैं, परन्तु मैं अपने हृदय में जानती हूँ कि वे सारी सही बातें थीं जिन्हें किया जाना था। ये जितना मूर्खतापूर्ण लगता है एक ऐसा समय भी था जब मैं यह सोचती थी कि यदि कोई वेदी पर से टी–शर्ट पहने हुये लोगों को आशीष देने का प्रयास करते हैं तो परमेश्वर उन्हें आशीष नहीं देगा। तब मैं ने गभीरतापूर्वक सोचा कि सम्भवतः मूसा क्या पहिना था जब वह परमेश्वर के पास दस आज्ञायें पाने के लिये गया और अन्ततः मैंने समझा कि मैं कितनी मूर्ख थी। यूहन्ना बपतिस्मादाता एक अजीब वस्त्रधारण करनेवाला था, उसके खाने की आदतें भिन्न थीं, और वह जंगल को संबोधित करता था, परन्तु उसने क्रान्ति का नेतृत्व किया। उसने मसीह के लिये मार्ग तैयार किया। वह संगठित धर्म का प्रसंशक नहीं था और उसने अपने समय के तत्कालिन धार्मिक अगुवों को साँप के बच्चों कहके संबोधित किया। वह अपने समय के स्वधर्म के धार्मिक लोगों से व्यतीत था जो प्रार्थना करने के लिये मन्दिर जाते थे, परन्तु किसी की सहायता करने के लिये उंगली भी नहीं उठाते थे।

परमेश्वर हृदयों को देखता है, और हमें भी यही कार्य करने के लिये सीखने की जरूरत है। वह उन बातों के विषय में चिन्तित नहीं था कि मूसा

या यूहन्ना कैसे दिखते थे। वह किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ने के लिये उत्साहित था जो एक मृत धर्म के विरोध में क्रान्ति का नेतृत्व कर सके और लोगों को उसके साथ निकटता की ओर ले जाए।

प्रेम बलिदान करता है

बलिदान शब्द ऐसा नहीं है जो प्रायः हमें उत्तेजित करता हो क्योंकि इसका तात्पर्य कुछ ऐसा दे देना है जो हम रखने को प्राथमिकता दे सकते हैं। नया नियम की मूल भाषा में (यूनानी) इस शब्द का अर्थ है "भेंट चढ़ाने का एक कार्य, या वह जो प्रस्तुत किया जाए।" प्रेम अपना मार्ग पर नहीं चलता है (1 कुरिन्थियों 13:5 देखिए)। प्रेम अक्सर कुछ करने में हमारे रास्तों का बलिदान करने की अपेक्षा करता है।

पुराने नियम में "बलिदान" पाप के लिये जानवरों की बलिदान करने की ओर इंगित करता था, परन्तु नया नियम में यह मसीह द्वारा क्रूस की स्वयं की बलिदान की ओर सूचित करता है। नया नियम विश्वासियों से यह भी विनती करता है कि "अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ – यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है" (रोमियों 12:1)।

संसार में उतना अधिक प्रेम नहीं दिखने का मुख्य कारण यह है जितना हमें होना चाहिए इसका कारण यह है कि लोग बलिदान करना नहीं चाहते। हमारी स्वभाविक आदत रख छोड़ने की है न कि बलिदानपूर्वक छोड़ देने की। हम अपने आरामदायक क्षेत्रों की रक्षा करते हैं। हम दे सकते हैं यदि यह आसान हो या सुविधाजनक हो, परन्तु जब बलिदान की अपेक्षा होती है, हम पीछे हट जाते हैं। आपके कितने ही मार्गों पर आप उत्साहपूर्वक चलते रहते है बिना यह पूछे कि "क्या परमेश्वर कि यह करने के लिये मुझ से भिन्न रास्ता अपनाता है?" आखीर, बाइबल कहती है कि उसके मार्ग हमारे मार्ग से श्रेष्ठ हैं (यशायाह 55:8 देखिए)।

धन्यवाद पूर्वक हम नई आदतों को आकार दे सकते हैं और वास्तव में एक त्यागपूर्ण जीवन जी सकते और उसका आनन्द उठा सकते हैं। जब हम दूसरों के प्रति दया दिखाने स्मरण करते हैं, और दयालु होने से इन्कार करने को अनदेखा करते हैं, बाइबल कहती है कि परमेश्वर ऐसे बलिदान से प्रसन्न होता है (इब्रानियों 13:16 देखिए)। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि

उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया" (यूहन्ना 3:16)। प्रेम को अवश्य देना चाहिये, और देने में बलिदान अपेक्षित है!

कुछ भी करने के हम सब के अपने रास्ते हैं, और प्रायः हम सोचते हैं कि हमारे रास्ते सही हैं। धर्म के साथ बड़ी समस्याओं में से समान रूप से एक यह है कि यह अक्सर "पुराने मार्गों" को अपनाती है। जो अब सचमुच में लोगों की सेवा नहीं करती हैं, परन्तु यह बदलने से इन्कार करती है। वह अपनी रीतियों को बदलने से इन्कार करती है।

हाल ही में मेरे एक मित्र ने मुझ से कहा कि वह अपने किशोरवय बेटियों से प्रति रविवार कलीसिया जाने के लिये कहती है, परन्तु वे अक्सर बोर होते हैं और सभा समाप्त होने का इन्तजार नहीं करते हैं। उसने स्वीकार किया कि वहाँ रहकर वे कुछ भी प्राप्त नहीं करते हैं। ये लड़कियाँ शायद परमेश्वर से प्रेम करती हैं, परन्तु उन विधियों से संबन्ध नहीं बना पाती हैं जो कलीसिया में इस्तेमाल की जाती हैं। वे एक नई पीढ़ी से हैं जो नई रीति से कार्यों को करती हैं। दुःखद है कि बहुत से बच्चे जो मसीही परिवार में पलते–बढ़ते हैं बड़े होने पर किसी भी प्रकार के धर्म पर मुँह मोड़ लेते हैं। हो सकता है वे पाखण्ड से निरूत्साहित हो गये हों या लकीर के फकीर होने जैसे नियमों के कारण पीछे मुड़ गये हों या बोर होकर बहुत अधिक निराश हो गये हों। कलीसिया उनके लिये कार्य नहीं करती है, वे कुछ सच्चा और सामर्थी चाहते हैं, वे कुछ रोचक और रोमांचक चाहते हैं, परन्तु वे ऐसे लम्बी सूची अपने सामने पाते हैं जिन्हें वे नहीं कर सकते।

लॉस एन्जल्स ड्रीम सेन्टर का सह–संस्थापक टॉम्मी बारनेट, ने पाया कि उस क्षेत्र के बहुत से जवान लोग स्कैटबोर्ड़ पर चलते हैं। जब उसने सुना कि एक बहुत ही प्रसिद्ध स्कैटिंग करनेवाला व्यक्ति उस क्षेत्र में एक मूवी बनाने आ रहा है और 50,000 डॉलर मूवी के लिये इकट्ठा किया गया है, उसने साहसपूर्वक कलीसिया से पूछा कि इसके समाप्त होने के पश्चात् क्या कलीसिया उस मूवी को प्राप्त करेगी या प्राप्त कर सकती है। उन्होंने उसे वह दिया, वह ड्रीम सेन्टर में लाया गया, और अब किसी भी व्यक्ति को शनिवार के दिन यदि वे चाहते हैं तो स्कैटबोर्ड़ का टिकट दिया जाता है जो उस सप्ताह कलीसियाई सभा में उपस्थित हुये हों। पास्टर बारनेट् की कुछ विद्रोहास्मक और न्याय करने की इच्छा बहुत किशोरवय लोगों को ड्रीम सेन्टर में स्कैट करने के लिये लेकर आया। और बहुत सारे किशोर अन्ततः मसीह को

स्वीकार किए। उन्होंने पुरानी परम्पराओं का बलिदान किया था जो ऐसे बात को अनुमति नहीं दे सकते थे कि स्कैटिन्ग करनेवालों को प्रेम के साथ सुसमाचार दिया जाए। उन्होंने उनकी अभिलाषा को समझा और उसे पूरा करने में सहायता किया। हम जवान लोगों की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं–किसी की भी नहीं, इस बात के लिये – केवल बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने के लिये। लोगों को हँसने और रोचकता और उत्तेजक की जरूरत है और इसे करने के लिये उन्हें संसार में नहीं जाना चाहिए।

पास्टर बारनेट ने कहा कि जब उनके सफेद कपड़े पहिने हुये दो सौ लोगों की गायन – मण्डली "प्रभु महान विचारों कार्य तेरे," गातें हैं तो किशोरवय के लोग सो जाते थे। इसलिये जब किशोरो ने पूछा कि अगले सप्ताह क्या वे कुछ गीत गा सकते हैं, उन्होंने उन्हें अनुमति दिया। जब उन्होंने सप्ताहों में ध्यान दिया उन्होंने जाना कि उन्होंने एक रॉक 'एन' रॉल गीत को आत्मिक गीत को गाया था। सब से पहले उन्होंने सोचा, *हे नहीं, मैंने क्या कर दिया है?* परन्तु बाद में जैसे उसने सुना वह महसूस किया कि गीत पर परमेश्वर की आशीष थी। यह अद्‌भुत है कि परमेश्वर क्या इस्तेमाल करेगा जिसको हम तिरस्कृत कर देते हैं। परमेश्वर इसके पीछे के हृदय को देखता है।

मैं विश्वास करती हूँ कि हमें यह अवश्य सीखना चाहिए कि सुसमाचार का सन्देश ही पवित्र है। वे विधियाँ नहीं जिसका इस्तेमाल हम प्रस्तुत करने के लिये करते हैं। यदि हम यह नहीं सीखते हैं तो हम वर्तमान पीढ़ी के लिये अप्रासंगिक होने के खतरे में हैं और उन्हें खो रहे हैं। उन्हें परमेश्वर के प्रेम को जानने की बहुत अधिक जरूरत है और ऐसा करने के लिये हमें अपने पुरानी विधि का त्याग करना पड़ सकता है।

जब हमने अपने सम्मेलनों में परिवर्तन किया, तब वर्तमान कलीसिया उन बातों को चाहती थी जो हम इन बातों का बलिदान उनकी खातीर किया जिन्हें हम आते हुये देखना चाहते थे? क्या हम उन लोगों के प्रति अविश्वस्थ थे जो लम्बें समय से हमारे साथ थे? मैं नहीं सोचती कि हम अविश्वस्थ थे क्योंकि जो लोग आत्मिक रूप से अधिक परिपक्व हैं उन्हें अन्य लोगों को सत्य को देखते हुए जानने के लिये बलिदान देने हेतु तैयार और इच्छुक होना चाहिए। जब मैंने लोगों को बताया कि मैं क्यों परिवर्तन कर रही हूँ वे सब आनन्दित हुये। लोग वह करना चाहते हैं जो सही है; उन्हें समझ की जरूरत थी। निश्चय ही, ऐसे लोग हमेशा होते हैं जो परिवर्तन का विरोध करते हैं और

वे पीछे छोड़ दिये जाते हैं। वे वहीं रह जाते हैं जहाँ वे हैं, परन्तु परमेश्वर उनके साथ या उनके बिना आगे बढ़ना जारी रखता है।

जब हम प्रेम क्रान्ति की जरूरत के विषय में बात करते हैं, हम अपने जीने के तरीके में विद्रोहास्कत परिवर्तन की बात कर रहे हैं। हमें प्रति दिन परमेश्वर से यह माँगना चाहिये कि हम उसके लिये क्या कर सकते हैं, केवल ये नहीं कि वह हमारे लिये क्या कर सकता है। कोई भी व्यक्ति जो प्रेम क्रान्ति में भाग लेता है उसे दूसरों की खातीर बलिदान करना अपेक्षित है, परन्तु वे बलिदान भी एक नया आनन्द लायेंगे। हमारा ध्यान स्वयं से दूसरों के प्रति बदलना चाहिए। हमे यह सोचने की जरूरत है कि हम क्षा दे सकते हैं न कि क्या पा सकते हैं। जब यीशु अपने शिष्यों के साथ यात्रा करता था, उसने उन्हें जीवन के विषय में सिखाया। मैं सोचती हूँ कि हमें ऐसे सन्देश सुनने की जरूरत है कि प्रतिदिन का जीवन ऐसी रीति से जिया जाए जो परमेश्वर को प्रसन्न करनेवाला है, केवल सैद्धान्तिक मुद्दों पर सन्देश ही नहीं। हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि सन्देश प्रत्येक पीढ़ी के लिये प्रासंगिक हों।

क्या आप मसीह को बहुत लम्बे समय से जानते हैं और फिर भी उसका प्रेम अभी आपके भीतर ही कैद हैं? यदि ऐसा है तो यही समय है उसे साहसपूर्वक बाहर लाने का। हमें परमेश्वर के प्रेम को बाहर की ओर बढ़ने देने के मार्ग पर चलना हैं न कि उन्हें कैद करके रखनेवाले। स्वयं को प्रतिदिन परमेश्वर के उपयोग के लिये उपलब्ध कराईए। मैं आपसे यह प्रार्थना प्रतिदिन करने का साहस करती हूँ। "परमेश्वर, मुझे दिखा कि मैं आज आपके लिये क्या कर सकती हूँ?"

परमेश्वर चाहता है कि हम प्रति दिन अपने आपको जीवित बलिदान के रूप में प्रस्तुत करें (रोमियों 12:1 देखिए)। वह चाहता है कि हम अपनी सुविधाओं और श्रोतों को उसे सौंप दें। एक प्रेम क्रान्ति समय, ऊर्जा, धन, हमारे रास्ते, और हमारे बहुत से अन्य वस्तुयें के बलिदान की अपेक्षा करेगा, परन्तु प्रेम के बिना जीना उस जीवन का बलिदान कर देना है जिसे हमें देने के लिये यीशु मरा।

उस धार्मिक मस्ती से बाहर आईए

क्या आप अपने धार्मिक मस्ती से बाहर आने और वास्तविक लोगों के साथ शामिल होने के लिये तैयार हैं जिनकी वास्तविक समस्याएँ हैं? प्रसन्नता की

कुन्जी प्रेम किये जाने में नहीं हैं; परन्तु प्रेम करने हेतु किसी के होने में हैं। यदि आप सच में प्रसन्न होना चाहते हैं, तो किसी को प्रेम करने के लिये खोजिए। यदि आप परमेश्वर के चेहरे पर एक मुस्कुराहट लाना चाहते हैं तो एक चोट खाये हुए व्यक्ति को लाईये और उसकी सहायता कीजिए।

मैं तीस वर्षों तक कलीसिया में गई परन्तु कभी भी अनाथों, विधावाओं, गरीबों, और पीड़ितों को सम्भालने के अपने बाइबल सम्मत उत्तरदायित्व पर एक भी सन्देश नहीं सुनी। मुझे बहुत आघात पहुँचा जब मैंने अन्ततः समझा कि दूसरों की सहायता के बारे में कितना कुछ कहती है। अपना अधिकांश मसीही जीवन मैंने यह सोचते हुए व्यतीत किया कि बाइबल इस विषय पर आधारित है कि कैसे परमेश्वर मेरी सहायता कर सकता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मैं अप्रसन्न थी।

इस समय मैं आफ्रिका की एक यात्रा की तैयारी कर रही हूँ, जब कि मैं इथिओपिया, रूवाण्डा, और उगाण्डा की दौरा करूँगी। मैं जानती हूँ कि वहाँ पर मैं जरूरतें देखूँगी जो उन किसी भी बात से बड़ी होगी जो मैंने कहीं भी देखा हो। और मैं देने के लिये तैयार और उत्सुक हूँ। यात्रा समय, ऊर्जा, आराम, और धन का बलिदान होगा, परन्तु मुझे जाने की जरूरत है। मुझे उन घायल लोगों को छुने की जरूरत है। मुझे गरीबी और भूखमरी के निकट जाने की जरूरत है, इतना निकट कि मैं घर वापस आने के पश्चात् भी उसे भूल न सकूँ।

मैं बच्चों को गोद में लूँगी जो भूखमरी के कारण कुपोषण के शिकार हैं, और मैं उनकी माताओं की आँखों में दर्द देखूँगी जो उनके मरते हुये बच्चों को देखकर उत्पन्न हुआ है और उसके विषय में कुछ नहीं पाती हैं। परन्तु मैं उनमें से कुछ एक की सहायता करूँगी। शायद मैं उन सब की सहायता न कर सकूँ, परन्तु जो कुछ मैं कर सकती हूँ वह मैं करूँगी क्योंकि कुछ भी न करने से मैं इन्कार करती हूँ! मैं वापस आने और हमारी सेवकाई के सहभागियों के साथ आँखों देखा हाल बताऊँगी कि वे कैसे शामिल हो सकते और लोगों की सहायता कर सकते हैं।

लोग सहायता करना चाहते हैं, परन्तु बहुत से लोग नहीं जानते हैं कि क्या करना है। उन्हें किसी की जरूरत होती है जो उनके लिये यह संगठित करे। क्या आपके पास नेतृत्व क्षमता है? यदि है, तो क्यों ना आप अपने शहर के गरीबों तक पहुँचने के लिये आयोजित किया जाए या आपके लिये और आपके

मित्रों के लिये मिशन में शामिल होने के लिये रास्ते निकालेंगे कि गरीबों और संसार में खोये हुओं तक पहुँचा जा सके? महिलाओं के एक समूह जो कुछ करने के लिये दृढ़ संकल्प थी अपने आस पड़ोस कुछ वस्तुयें इकट्ठा की और एक सेल का आयोजन किया और प्राप्त धन राशी गरीबों की सहायता के लिये दे दिया। वे इतने सफल हुये कि इसे करते रहे, और अब उनके पास एक वास्तविक स्टोर है जो स्वयं सेवकों द्वारा चलाई जाती है। सभी व्यापारिक वस्तुयें जो सेल के लिये आती हैं, वह भेंट में प्राप्त होती है और सारी धन राशी मिशन को दी जाती है। वे एक वर्ष में पैंसठ हजार डॉलर देने योग्य होती हैं। (यहाँ यह कहना भी ठीक रहेगा कि अधिकांश महिलायें साठ साल से ऊपर की हैं, और मैं बहुत ही गर्वान्वीत हूँ कि कुछ रचनात्मक और मूल्यवान कर रही हैं। उन्होंने निर्णय लिया है कि उनके बाद के वर्ष अधिक फलवन्त हों।)

किसी की सहायता करने का निर्णय लें। रचनात्मक बनें! एक धार्मिक मस्ती में रहने के विरोध का नेतृत्व करें जहाँ आप कलीसिया में जाते और घर आते और वापस कलीसिया जाते हैं परन्तु वास्तव में आप किसी की सहायता नहीं करते हैं। कलीसिया भवन में केवल पंक्ति में बैठे और भजन गाते न रहें। घायल लोगों के सहायता करने में शामिल हों। यीशु के शब्दों को स्तरण करें :

> "क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाने को नहीं दिया, मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी नहीं पिलाया। मैं परदेसी था, और तुम ने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था और तुम ने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए; बीमार और बन्दीगृह में था और तुम ने मेरी सुन ली।"
>
> तब वे उत्तर देंगे, कि "हे प्रभु, हम ने तुझे कब भूखा या प्यासा, या परदेसी या नंगा या बीमार या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न कि?"
>
> तब वह उन्हें उत्तर देगा, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम ने जो इन छोटे से छोटे में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।"
>
> *मत्ती 25:42–45*

हमारा विश्वास वचन

मैं तरस को लेता और अपने बहानों का **त्याग** करता हूँ।
मैं अन्याय के विरूद्ध **खड़ा होता**
और परमेश्वर के प्रेम के सामान्य कार्यों को जीने के लिए
समर्पित होता हूँ।
मैं कुछ नहीं करने से **इंकार** करता हूँ।
यह मेरी प्रतिज्ञा है।
मैं प्रेम क्रांति हूँ।

लेखक के विषय

जॉयस मेयर संसार के श्रेष्ठतम बाइबल शिक्षकों में से एक है। वह न्यूयॉर्क टाईम्स के सर्वाधिक बिकनेवाली पुस्तकों की लेखिका हैं। उन्होने अस्सी से अधिक प्रेरणादायी पुस्तकें लिखी हैं जिसमें *कभी हार न मानिए, सच्ची प्रसन्नता के रहस्य, आपके जीवन को आसान बनाने के 100 तरीके,* संपूर्ण *मन की युद्धभूमि* पुस्तकों का परिवार, कहानियों में उनका पहला प्रयास *पैसा* इत्यादि प्रमुख हैं। उन्होने हजारों श्रव्य शिक्षाएँ, साथ ही साथ संपूर्ण दृश्य पुस्तकालय का भी प्रकाशन किया है। *जॉयस प्रतिदिन के जीवन का आनंद लो* रेडियो और टी.वी. कार्यक्रम का संसारभर में प्रसारित किया जाता है और वह संसार भर में सम्मेलनों का आयोजन करती है। जॉयस और उनके पति डेव चार वयस्क बच्चों के माता पिता हैं और सेंट लुइस, मिस्सौरी में निवास करते हैं।

प्रभु के साथ एक व्यक्तिगत संबंध के लिए प्रार्थना

अगर आपने कभी यीशु मसीह जो शांति का राजकुमार है उसको कभी अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रुप में ग्रहण नही किया है तो मैं आपको निमंत्रित करती हूँ कि आप इस समय ऐसा करें। आप निम्नलिखित प्रार्थना को करें और अगर आप इस बात के प्रति वाकई ईमानदार हैं तो आप मसीह में एक नए जीवन को अनुभव करेंगे।

हे पिता,

आपने इस जगत से ऐसा प्रेम रखा कि आपने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए।

आपका वचन कहता है कि हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही बचाए गए हैं और यह आपकी ओर से एक दान है। हम उद्धार को कमाने के लिए कुछ भी नही कर सकते हैं।

मै विश्वास करता हूँ और अपने मूँह से अंगीकार करता हूँ कि यीशु मसीह आपका पुत्र और जगत का उद्धारकर्त्ता है। मैं विश्वास करता हूँ कि क्रूस पर वह मेरे लिए मारा गया और मेरे सारे पापों को उठा कर उनकी कीमत को चुकाया। मुझे अपने हृदय में इस बात का विश्वास है कि आपने यीशु को मृतकों में से जिलाया है।

मैं आपसे अपने पापों की क्षमा माँगता हूँ। मैं अंगीकार करता हूँ कि यीशु मेरा प्रभु है। आपके वचनानुसार, मेरा उद्धार हो गया है और मैं अनन्त काल आपके साथ व्यतीत करुँगा। धन्यवाद पिता, मैं बहुत आभारी हूँ। यीशु के नाम से, आमीन।

इन पदों को देखो यूहन्ना 3:16; इफिसियों 2:8,9; रोमियों 10:9,10; 1 कुरिन्थियों 15:3,4; यूहन्ना 1:9; 4:14-16; 5:1,12,13

Other Books By Joyce Meyer

Books Available In English

A Celebration of Simplicity
Approval Addiction
Battlefield of the Mind - KIDS
Battlefield of the Mind - TEENS
Battlefield Of The Mind Devotional
Be Anxious for Nothing
Be Healed in Jesus Name
Beauty for Ashes
Do it Afraid
Don't Dread
Eat and Stay Thin
Enjoy where you are on the way….
Expect a move of God Suddenly
Filled with the Holy Spirit
Healing the Brokenhearted
Help Me! I'm Married
Help Me, I'm Afraid
How To Succeed At Being Your Self
I Dare you
If not for the Grace of God
In Pursuit of PEACE
Knowing God Intimately
Life in the Word- Devotional
Life in the Word-Journal
Life in the Word-Quotes
Look Great Feel Great
Managing Your Emotions

Me and My Big Mouth

Never Lose Heart

Nuggets of Life

PEACE

The Penny

Power of Simple Prayer

Prepare to Prosper

Reduce Me To Love

Secrets to Exceptional Living

Seven Things That Steal Your Joy

Teenagers Are People Too

Tell them I love Them

The Confident Woman

The Every Day Life BIBLE

The Joy of Believing Prayer

The Secret To True Happiness

When God When

Why God Why

Woman to Woman

Books Available In Hindi

A Leader in the Making

Battle Field Of The Mind - Devotional

Battlefield of the Mind

Beauty For Ashes

Reduce Me To Love

Secrets To Exceptional Living

The Battle Belongs To The Lord

The Power of Simple Prayer

The Secret Power of Speaking God's Word

To contact the author in the United States, please write:

Joyce Meyer Ministries
P.O. Box 655,
Fenton, Missouri 63026
or call: (636) 349-0303
or log on to: www.joycemeyer.org

To contact the author in India, please write:

Joyce Meyer Ministries
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008
or call: 2300 6777
or log on to: www.jmmindia.org